लोक-साहित्य-समिति-ग्रन्थमाला — ३

बुन्देली कहावत कोश

संपादक

श्री कृष्णानन्द गुप्त
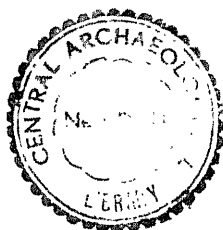
398.9095421
Gup

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रकाशकीय

श्री कृष्णानन्द गुप्त का परिचय देना यहां उद्देश्य भी नहीं है और उन्हें हिन्दी-जगत भलीभांति जानता भी है। बुन्देलखण्ड वीरभूमि कहा गया है। वीररस साहित्यिक प्रेरणा का स्रोत भी बहुत दिनों तक रहा है और आगे भी रहेगा। इस प्रकार जिस भूमि का, जिस क्षेत्र का और जहां के लोगों का साहित्य से इतना घनिष्ट नाता रहा हो, जिनके जीवन में भी यदि उनकी प्रतिभा उनकी लोकवाणी में प्रत्येक क्षण व्यक्त होती रही हो तो इसमें आश्चर्य क्या? यह कहावतें जिनका कि संग्रह इस पुस्तक में किया गया है केवल कहावतें या मुहावरे नहीं हैं बल्कि बुन्देलों के जीवन, आचार और व्यवहार तथा उनके दृष्टिकोण को व्यक्त करती हैं। इतना ही नहीं, वह संसार के अन्य प्राणियों के समान सोचने और विचारनेवाले हैं और उनमें अपनी विशेषता के होते हुए भी एकत्व की अनुभूति है, इसका भी प्रमाण इन कहावतों में मिलता है। इनमें बहुत सी ऐसी कहावतें हैं जो शब्द-भेद से प्रायः सर्वत्र कही-सुनी जाती हैं। इनका संग्रह निष्ठा और परिश्रम से किया गया है यह बात इस पुस्तक के प्रत्येक पाठक को सहज ही सिद्ध होगी। हम आशा करते हैं कि हिन्दी-जगत इस प्रकाशन का स्वागत करेगा और इन कहावतों में रस लेगा। हम अपनी ओर से कृष्णानन्द जी को इस संग्रह के लिए, जो उन्होंने लोक-साहित्य-समिति के लिए तैयार किया, साधुवाद देना चाहते हैं।

भगवतीशरण सिंह

सूचना-संचालक

संपादक का निवेदन

प्रस्तुत बुन्देली-कहावत-कोश में बुन्देली अथवा बुन्देलखंडी भाषा की तीन सहस्र से कुछ अधिक कहावतें, कहावत-वाक्य तथा दोहे संकलित हैं। जहां तक मैं समझता हूं किसी एक जनपद की कहावतों का यह अपने ढंग का सबसे पहला और बड़ा संग्रह है। परन्तु वह संपूर्ण भी है ऐसा सोचना ठीक नहीं होगा। कहावतों का अजस्र भंडार सर्वत्र हमारे चारों ओर बिखरा पड़ा है और किसी भी एक स्थान के कहावत-साहित्य का पूरा लेखा-जोखा लेने के लिए जीवन-व्यापी श्रम और साधना की आवश्यकता है।

कहावतों को यहां उनके प्रथम शब्द के वर्णानुक्रम से सजा कर रखा गया है। केवल ऐसी ही कहावतों को स्थान दिया गया है जो ठेठ बुन्देलखण्डी समझी गयीं। मौखिक रूप में प्रचलित होने के कारण कहावतें प्रायः परिवर्तित होकर विभिन्न शब्दों से आबद्ध हो जाती हैं जैसे, पंच ताँ परमेसुर, जाँ पंच तां परमेसुर; पके पै निबौरी मिठात, निबौरी सोई पके पै मिठात, पराये असगुन खों अपनी नाक कटालो, अपनी नाक कटाकें पराओ असगुन करबो, इत्यादि। ऐसे सब स्थलों पर पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए कहावत का अधिक प्रामाणिक अथवा सुपरिचित रूप ही दिया गया है। साथ ही, जहां आवश्यकता समझी गयी, उसका पाठान्तर भी दे दिया गया है। किसी-किसी कहावत में वाक्य-विपर्यय भी देखने को मिलता है, अर्थात् उसके दो खंडों में से कहीं प्रथम खंड पहले बोला जाता है तो कहीं दूसरा खंड। जैसे, फूटी समें, आंजी न समें, आंजी न समें, फूटी समें। ऐसी कहावत यदि एक खंड के वर्णानुक्रम में पाठकों को न मिले तो वह दूसरे में मिल जायगी।

प्रत्येक कहावत के नीचे उसका परिनिष्ठित हिन्दी रूप दे दिया गया है, कठिन कहावतों का अर्थ स्पष्ट किया गया है, किसी कहावत की यदि कोई अंतर्कथा हुई तो वह दी गयी है, साथ ही अप्रचलित अथवा दुरूह शब्दों, किंवदंतियों वा मूलगत धारणाओं और विश्वासों पर टिप्पणियां दी गयीं हैं। कहावतों के विषय में एक बड़ी रोचक बात यह है कि एक ही प्रकार की कहावतें थोड़े से रूप भेद के साथ हमें अपने देश के विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित मिलती हैं। हमारे देश की संस्कृति एक और अखंड है—उसमें चाहे जितने प्रान्तीय भेद और पार्थक्य हमें क्यों न दृष्टिगोचर होते हों, इन कहावतों के तुलनात्मक अध्ययन से यह सिद्ध किया जा सकता है। पाठकों पर इस तथ्य को प्रकट करने के लिए बुन्देलखंडी कहावतों से मिलती-

जुलती बंगला, गुजराती और मराठी भाषाओं की कहावतों के प्रचुर उदाहरण दिये गये हैं। ऐसी अनेक कहावतें हैं जिनकी कथाएं हमें जातक, पंचतंत्र, कथा सरित्सागर अथवा महाभारत में उपलब्ध होती हैं। यथास्थान इस तथ्य का उल्लेख किया गया है। आशा है मेरे इन सब प्रयत्नों से संग्रह की उपयोगिता बढ़ी होगी और वह साधारण पाठकों से लेकर इस विषय के प्रेमी विद्वानों और शोधकर्त्ता विद्यार्थियों तक के लिए समान रूप से रोचक एवं पठनीय सिद्ध होगा।

संग्रह में ऐसी कहावतों को छोड़ दिया गया जो बहुत अधिक अश्लील थीं अथवा जिनमें किसी जाति या देश पर कटाक्ष किया गया था।

इन कहावतों के संग्रह-कार्य को मैंने आज से लगभग सत्तरह वर्ष पूर्व प्रारंभ किया था। उसमें मुझे समय-समय पर अपने विभिन्न मित्रों और साहित्यिक-कार्यकर्त्ताओं, तथा अपने निवास-स्थान के अनेक ग्रामवृद्ध सज्जनों और कृषकों से जो सहायता मिली उसके लिए उन सबको पृथक-पृथक धन्यवाद देना मेरे लिए बड़ा कठिन है। उनमें से अधिकांश इस कार्य के मूल्य को नहीं जानते। वे यही समझते रहे कि या तो मैं विक्षिप्त हो गया हूं जो लोगों से इन देहाती 'टहूकों' अथवा 'कहनातों' या 'अहानों' को पूछता फिरता हूं अथवा फिर उनके परिवर्त्तन में मुझे कोई बहुत बड़ी निधि मिलने वाली है। परन्तु मैं उन्हें बता नहीं सकता कि एक कितने बड़े उपयोगी और महत्वपूर्ण कार्य में उन्होंने मेरा हाथ बंटाया। जिनसे मुझे एक कहावत भी प्राप्त हुई उनका मैं बहुत अनुगृहीत हूं।

संग्रह की पाण्डुलिपि तैयार करने में मेरे मझले पुत्र चि० विनोद कुमार ने विविध रूपों में मेरी बड़ी सहायता की। उसके लिए वह मेरे निकट धन्यवाद की अपेक्षा नहीं रखता। वह बीमार पड़ा है। वह चिरायु हो और साहित्य-सेवा में उसकी रुचि बढ़े। भगवान से यही मेरी प्रार्थना है।

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश के संचालक श्री भगवतीशरण सिंह ने मेरे इस संग्रह को इतने सुन्दर ढंग से अपने विभाग से प्रकाशित करने की जो कृपा की है उसके लिए मैं उनके प्रति अपना आन्तरिक आभार प्रदर्शित करता हूं। साथ ही यहां अपने आदरणीय मित्र पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी के निकट भी मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट किये बिना रह नहीं सकता। उनकी सतत सौहार्दमयी प्रेरणा के बिना यह ग्रन्थ मैं तैयार भी कर सकता और वह प्रकाशित भी होता, इसमें मुझे सन्देह है।

गरौठा (झांसी)
३ मार्च, १९६०

कृष्णानन्द गुप्त

बुन्देली कहावत कोश

बुन्देली कहावत कोश

अ

अँखियन ओट पहाड़ ओट।

आँख से ओझल हुए तो मानों पहाड़ की ओट हो गये। कोई मनुष्य जब तक आँख के सामने रहता है तभी तक हमें उसका ध्यान रहता है।

काडी आड गेला तो पर्वता आड गेला।—मराठी
(तिनका ओट हुए तो पहाड़ ओट हुए।)

अंड कौ मृदंग।

एरंड का मृदंग बनाना। बेतुका काम करना।

एरंड की लकड़ी बड़ी कमजोर और रेशेवाली होती है। उसका मृदंग तो क्या कोई वस्तु नहीं बन सकती।

अँदरन में काने राजा।

अंधों में काने राजा।

अँदरा कबै पतयाय जब आँखन देखे।

अंधे को किसी बात का तभी विश्वास होता है जब आँखों से देखे। मूर्ख को हर बात का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहिए।

अँदरा की सूद।

अंधे की सीध। बेअंदाज का काम।

अँदरा खोदे काँदी मेव गिने ना आँदी।

अंधा आदमी घास खोदते समय न तो मेह की परवा करता है, न आँधी की। आँख मूँद कर काम करना।

अँदरा बाँटे जेवरी[1] पाछें बछरा खाय।

(१—मूँज की रस्सी।) अंधा रस्सी बँट रहा है और पीछे बछड़ा खा रहा है। जब मनुष्य अपने परिश्रम से उपार्जित धन की रक्षा न कर सके और दूसरे उसका उपभोग करें तब कहते हैं।

अँदरा बाँटे रेवड़ी चीन चीन कें देय।

किसी वस्तु को बाँटते समय हेर-फेर कर अपने जान-पहिचान वालों को ही देना।

अँधियारी गई कै चोर।

अँधेरी रात आने पर चोर चोरी करता ही है। जब कोई मनुष्य खोटा काम करके छिपाये तब कहते हैं। तात्पर्य यह कि तुम्हारी तो आदत पड़ गयी है, मौका पाते ही तुम फिर वही बुरा काम करोगे, तब पता चल जायगा।

अंधे पीसें कुत्ते खायें।

दे० क० अँदरा बाँटे जेवरी।

अंधेर नगरी चौपट्ट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा[1]।

(१—एक प्रकार की मिठाई) जहाँ शासन में कोई विधि-व्यवस्था न हो वहाँ कहते है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस पर एक बढ़िया प्रहसन लिखा है, जिसका सारांश है—

किसी समय एक गुरू और उनका चेला तीर्थयात्रा को बाहर निकले। एक नगर में पहुँच कर गुरू ने चेले को आटा लाने के लिए बाजार भेजा। चेले ने सभी चीजें एक ही भाव पर बिकते देख कर मिठाई खरीद ली। गुरू ने यह देख कर ऐसी अंधेर नगरी में रहना पसंद नहीं किया और चेले को वहीं छोड़ वे दूसरी जगह चले गये। इधर उनका चेला अंधेर नगरी में बढ़िया-बढ़िया मिष्ठान्न और दूध-मलाई खाकर खूब मोटा-ताजा हो गया। संयोगवश

उस नगर में किसी का खून हो गया। बहुत तलाश करने पर भी जब खूनी का पता नहीं चला तो राजा ने इसी मोटे चेले को फाँसी की आज्ञा दी। गुरू को पता चला तो वे चेले को छुड़ाने आये और बोले—यह निर्दोष है। खून मैंने किया है। इस पर गुरू को ज्यों ही फाँसी दी जाने लगी त्यों ही चेला चिल्ला उठा—नहीं, नहीं, खून मैंने ही किया है। गुरू जी निर्दोष हैं। इस प्रकार घंटों वाद-विवाद होने के पश्चात् दोनों की रिहाई हो गयी।

अँसुआ न मसुआ, भेंस कैंसे नकुआ

व्यर्थ रूठने और नाक फुलाने वाले बच्चों के लिए कहते हैं।

अक्कल उधार नईं मिलत।

अक्ल उधार नहीं मिलती।

अक्कल के दुस्मन

अक्ल के दुश्मन। मूर्ख।

अक्कल के पाँच टका लगत

अक्ल के पाँच टके लगते हैं। अर्थात् बुद्धि पाने में पैसे खर्च होते हैं।

अक्कल के पाछें लट्ठ लयें फिरत

अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरते हैं। बुद्धि को तिलाञ्जलि दे रखी है।

अक्कल कोऊ की बाँटी नइयाँ

भगवान् ने बुद्धि सब को दी है। वह किसी एक आदमी के हिस्से नहीं पड़ी अथवा बुद्धि किसी को बाँटी नहीं जा सकती।

अक्कल कौ अजीरन।

अक्ल का अजीर्ण। (१) समझबूझ कर काम न करना। (२) बहुत बुद्धिमानी प्रकट करना।

अक्कल पै पथरा पर गये

अक्ल मारी गयी।

अक्कल बड़ी के भेंस।

बड़ा या बलवान होना ही सब कुछ नहीं, वरन् बुद्धि इन सबसे बड़ी वस्तु है।

अक्ल बड़ी कि बहस।—फैलन

अक्कल बड़ी चीज।

इसलिए कि उससे सब काम बनते हैं।

अक्कल बजार में मिलै तौ कोऊ मूरख काये खाँ रये।

अक्ल बाजार में मोल मिले तो कोई मूर्ख क्यों रहे ? अर्थात् अक्ल पैसे से नहीं खरीदी जा सकती ।

अक्कल बिन पूत लठेंगर[1] से। लरका बिन बऊ डेंगुर[2] सी।

(१—लकड़ी का लट्ठा, कुंदा । २—भगोड़े बैल या ढोर के गले में लटका हुआ लकड़ी का मोटा डंडा, जिसका दूसरा सिरा जमीन पर पड़ा रहता है और ढोर के चलने के साथ घसिटता हुआ चलता है, उसके कारण ढोर भागने नहीं पाता; लंगर; डेंगना; भार-स्वरूप वस्तु ।)

बुद्धि के बिना लड़का ठूँठ की तरह है और पुत्र के बिना बहू डेंगुर की तरह अर्थात् एक विपत्ति।

अक्कल सें खुदा पहिचानों जात।

परमेश्वर बुद्धि से पहचाना जाता है ।

अक्कल सें सब काम बनत।

बुद्धि से सब काम बनते हैं।

अकुलाएँ खेती, सुसताएँ बंज।

खेती में तुर्त-फुर्त और व्यापार में धैर्य से काम लेने पर ही सफलता मिलती है ।

अकेलो हरदसिया सबरो गाँव रसिया।

एक वस्तु के अनेक ग्राहक।

एक अनार सौ बीमार—फैलन

अकेले सुभान रोवें कै कबर खोदें।

अकेला आदमी क्या-क्या करे ।

अकेलो चना भार नईं फोरत।

अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता । परस्पर सहयोग से सब काम होता है ।

अकौआ सें हाती नईं बँदत।

आक वृक्ष से हाथी नहीं बँधते। बड़ों का काम छोटों से नहीं निकलता।

अक्का कोदों नीम बन, अम्मा मौरें धान।
राय करौंदा जूनरी उपजै अमित प्रमान॥

जिस वर्ष अकौआ में खूब फूल आता है उस वर्ष कोदों, जिस वर्ष नीम खूब फूलता है उस वर्ष कपास, जिस वर्ष आम में खूब बौर आता है उस वर्ष धान, और जिस वर्ष रायकरौंदा खूब फलता है उस वर्ष ज्वार की फसल अच्छी होती है। कृषि-संबंधी लोक-विश्वास।

अगनौआ[१] बतर[२] पाऊँ तौ गेहूँ गाय बताऊँ।

(१—अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से ८वाँ नक्षत्र, पुष्य नक्षत्र। २—वर्षा के दिनों में धूप निकलने पर खेती के काम के लिए मिलने वाला अवकाश) किसान कहता है कि भादों के महीने में यदि मुझे जोतने-बखरने का अवकाश मिल जाय तो मैं गेहूँ की बढ़िया फसल पैदा करके बताऊँ। कृ०।

अगहन दार कौ अदहन।

अगहन के महीने के दिन उसी तरह शीघ्र निकल जाते हैं जिस प्रकार दाल के पानी का उफान शीघ्र शान्त हो जाता है।

अगारी तुमाई, पछारी हमाई।

आगे का हिस्सा तुम्हारा, पीछे का हमारा। ऐसे स्वार्थी व्यक्ति के लिए जो किसी वस्तु का सबसे बड़ा भाग स्वयं लेना चाहे।

कथा—दो भाइयों ने साझे में भैंस खरीदी। उनमें से एक बड़ा होशियार था। उसने दूसरे से कहा—देखो भाई, हम लोग इस भैंस का आधा-साझा कर-लें तो हम लोगों में फिर कभी किसी बात का झगड़ा नहीं होगा। भैंस का आगे का हिस्सा तुम ले लो और पीछे का मुझे दे दो। दूसरे ने इस बँटवारे को स्वीकार कर लिया। उसके अनुसार वह तो भैंस को चारा दाना खिलाया करता और दूध दूसरा भाई दुह लिया करता।

अगिया[1] कहै पाँवर[2] सें रोय। तोरे मोरे रहे का खेती होय।

(१–फसल को हानि पहुँचानेवाली एक प्रकार की घास। २–एक छोटा जंगली पौधा, पँवार।) जिस खेत में अगिया और पँवार पैदा हो जाता है उसमें फसल अच्छी नहीं होती। कृ०।

अग्गम सोचे बानिया।

वैश्य हर काम सोच-विचार कर करता है।

अजगर के दाता राम।

भगवान् सबको देता है।

अजगर करैं न चाकरी, पंछी करें न काम।
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम॥

अटकर की फातियाँ[1] पड़बो।

(१–फातिहा, मुसलमानों के यहाँ मरे हुए लोगों के नाम पर पढ़ी जाने वाली प्रार्थना) अटकल की फातिहा पढ़ना। ऊटपटाँग हाँकना। बेअंदाज बात करना।

अटकर पंच्चूं डेढ़ सौ।

बिना जाने समझे बात कहना। गप्प हाँकना।

अटन[1] की टटन[2] में, टटन की अटन में।

(१–टटन का अनुप्रासमूलक शब्द अथवा अटा अटारी २–टटा का बहुवचन, बाँस की फंचियों या पतली टहनियों की बनी टट्टी।) इधर की वस्तु उधर रखना। बे सिर-पैर का काम करना।

अड़की ऊँट लगौ, पै अड़की तौ चइये।

अड़की में ऊँट बिकता है, पर अड़की तो चाहिए।
पैसा न होने पर सस्ती चीज भी मँहगी लगती है।

अड़की को डुकरो टका मुड़ावनी।

लाभ तो थोड़ा और खर्च अधिक। चीज तो सस्ती, पर उसकी देखभाल या मरम्मत में असल से ज्यादा खर्च होना।

अड़की की हँड़िया फूटी सो फूटी, कुत्ता की जात तौ पैंचानी।

हानि हुई तो हुई, पर किसी एक व्यक्ति के स्वभाव से परिचित तो हुए।

अड़की की हँड़िया ठोक-बजा कें लई जात।

अड़की की हाँड़ी भी ठोक-बजा कर ली जाती है। सस्ती से सस्ती वस्तु भी देखभाल कर खरीदनी चाहिए। हर काम समझ-बूझ कर करना चाहिए।

अड़की के नौनियाँ[1] कों नौ दमरीं[2] लगतीं।

(१-ग्रीष्म ऋतु में होने वाला एक हरा साग, कुलफा। २-दमड़ी, पैसे का आठवाँ हिस्सा।) किसी चीज का खरीदना आसान होता है, पर उसे व्यवहार योग्य बनाने या उसके रख-रखाव में असल से अधिक खर्च हो जाता है।

अड़की कौ दूद खपरिया में खोवा।

जैसा थोड़ा काम वैसा उसका परिणाम। जैसा साधन वैसी सामग्री।

अड़ाई दिन के बादसा।

अढ़ाई दिन के बादशाह। संयोगवश थोड़े समय के लिए किसी ऊँचे पद पर पहुँच कर रोब दिखाने वाले के लिए व्यंग्य में प्रयुक्त। विवाह के अवसर पर दूल्हे को अढ़ाई दिन का बादशाह कहते हैं।

अड़ी कौ पाँसौ।

चौपर के खेल में गोट मारने के लिए ३, ४, ९, १०, १५ आदि के दाव मुश्किल से पड़ते हैं, और इन संख्याओं वाले पाँसे अड़ी के पाँसे कहलाते हैं। उसी से कहावत बनी। दो आदमियों के बीच बेढब तरीके से कोई बात अटक जाने पर प्रयुक्त।

अड़ुआ नातो, पड़ुआ गोत।

जैसा नाता वैसाही गोत। बे पते-ठिकाने के ऐसे व्यक्ति के लिए जो जबर्दस्ती अपना रिश्ता निकालता फिरे।

अत कौ फूलौ सोजनों[1] डार पात सें जाय।

(१-एक वृक्ष विशेष, सहजन।) अति करने वाला नाश को प्राप्त होता है।

अत बुरई होत।

अति बुरी होती है ।

अत कौ भलौ न बोलनो अत की भली न चुप्प।
अत कौ भलौ न बरसबो अत की भली न घुप्प॥

बोलना, चुप रहना, वर्षा और धूप ये चारों बातें आवश्यकता से अधिक अच्छी नहीं ।

अतै सो खपै।

अति करने वाला मारा जाता है ।

अथाई[1] के लोग टिड़कना[2] और नकटा नाऊ।

(१—बैठने का स्थान, घर के सामने का चबूतरा, चौबारा। २—तिनकने वाले, बुरा मानने वाले ।) गाँव का नाई नकटा है और अथाई के लोग उसे देख कर तिनकते हैं क्योंकि नकटे को देखने से अशकुन होता है।

जब किसी आदमी को देख कर चिढ़ लगती हो, परन्तु उससे पिंड न छुड़ाया जा सके तब कहते हैं ।

अदकुचले साँप।

ऐसा दुष्ट व्यक्ति जिसे पूरा दण्ड दिये बिना छोड़ दिया गया हो ।

अदियाँ आप घर, अदियाँ सब घर।

पूरे में से आधा अपने लिए और आधा सब घर के लिए। लालची व्यक्ति के लिए।

अध-जल गगरी छलकत जाय।

ओछा आदमी इतरा कर चलता है ।

उथल पाण्याला खळखळी फार व दुबले माणसाला वदाई फार। **—मराठी**
(उथला पानी बहुत खलबलाता है, दुबला आदमी बहुत जोर दिखाता है।)

अधरम सें धन होत है बरस पाँच कै सात।

अन्याय से कमाया गया धन बहुत दिनों नहीं रहता।

अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते एकादशे वर्षे समूलं च विनश्यति॥

अधिक स्याने को बाँसे[1] सें उड़ाई जात।

(१—नाक के ऊपर की हड्डी।) अधिक स्याने की नाक बाँसे समेत काटी जाती है। जो जितना चतुर होता है वह उतना ही अधिक धोखा भी खाता है।

अधीरे कौ लेवे नईं, उछीने कौ खावे नईं।

उतावले से कभी ऋण न ले, ओछे का कभी अन्न ग्रहण न करे; क्योंकि उतावला आदमी जल्दी पैसा वापिस माँगेगा, और ओछा खिलाने-पिलाने का अहसान जतायेगा।

अनगायें खेती, बनगायें बंज।

किसी गाँव में खेती और किसी दूसरे में व्यापार, यह नीति ठीक नहीं।

अनबद खैला।

बिना बँधा बछड़ा। स्वतंत्र व्यक्ति।

अन बियानी कौ घी बांधत।

जो गाय बियानी नहीं उसके घी की आशा करना,

अनमाँगें मोती मिलें माँगें मिलै न भीख।

बिना माँगे मोती मिलते हैं, माँगने से भीख भी नहीं मिलती। माँगना बुरा है।

अनी[1] चूकें हजार बरस की आरबल[2]।

(१—सं० अणि, अवधि, संकट की घड़ी। २—आयुर्बल, उम्र।) सिर पर आयी विपत्ति टल जाने पर मानों हजार वर्ष की आयु मिली।

अनोखी नान[1], बाँस की नहन्नी।

(१—नाइन, नाई की स्त्री।) कोई नया अनोखा शौक करने पर।

अन्न-जल की बात है।

अन्न-जल कहाँ ले जाये इसका कुछ ठीक नहीं।

अन्न तारै, अन्नई मारै।

अन्न से ही जीवन की रक्षा होती है, और अन्न ही प्राण-घातक भी होता है।

अन्न-धन अनेक धन, सोनो-रूपो कितेक धन।

अन्न ही सच्चा धन है, सोना-चाँदी उसके सामने कुछ नहीं।

अन्न-धन अनेक धन, सोनो-रूपो आधो धन, पूँछ डुलावन कछू नईं।

अन्न-धन ही सच्चा धन है, सोना-चाँदी आधा धन है और पूँछ डुलाने वाले —गाय बैल आदि—तो उसके सामने किसी गिनती में नहीं।

अपनी अटकें गदा सें दद्दा कनें परत।

गरज पड़ने पर छोटे आदमी को भी हाथ जोड़ने पड़ते हैं।

बखत आवे बाँका तो गधे कुं कहेना काका। —**गुजराती**

अपनी अपनी जोन[1] में सब सुखी।

(१—योनि, देह, शरीर।) अपनी स्थिति में सब प्रसन्न रहते हैं।

अपनी-अपनी ढफली, अपनो-अपनो राग।

मन माना काम। नियम-व्यवस्था का अभाव।

अपनी अपनी दार, न्यारी न्यारी टार।

अपना-अपना काम स्वयं देखो।

अपनी-अपनी परी आन, को जावे कुरयाने कान।

सब अपनी-अपनी मुसीबत में हैं, कुरयाने कौन कहने जाय, अर्थात् कौन दूसरों की फिक्र करे ? कुरयाना। कोरियों का मुहल्ला।

अपनी-अपनी बुद्ध।

हर आदमी की बुद्धि दूसरे से भिन्न होती है।

अपनी असल पै आ गये।

अपनी असलियत खोल दी कि हम कैसे हैं।

अपनी करनी पार उतरनी।

अपने ही हाथ काम पूरा होता है।

अपनी इज्जत अपने हाथ।

ओछे के मुँह नहीं लगना चाहिए।

अपनी खालें और और की खालें तौ का देओ ?

अपना हिस्सा खा जायें और दूसरे का तो क्या दोगे ?
स्वार्थी या तिकड़मी के लिए कहते हैं ।

अपनी जाँघ उघारो, अपनी लाजन मरो।

घर वालों का कोई दोष प्रकट होने से स्वयं ही लज्जित होना पड़ता है।

अपनी टेक भँजाई, बलमा की मूँछ कटाई।

अपनी हठ को पूरा करने के लिए अपनों को हानि पहुँचाने वाले के लिए।

कथा–किसी समय एक पुरुष और उसकी स्त्री में इस बात को लेकर बहस हुई कि स्त्री और पुरुष दोनों में कौन बुद्धिमान और चालाक है। स्त्री अपनी जाति की प्रशंसा करती और पुरुष अपने को श्रेष्ठ बताता। एक बार स्त्री बीमारी का बहाना करके लेट रही। उसके पति ने बहुत इलाज किया, परन्तु आराम नहीं हुआ। एक दिन स्त्री ने कहा, तुम अपनी मूँछ मुड़ा डालो तो मैं अच्छी हो जाऊंगी। पति ने ऐसा ही किया। दूसरे दिन ही स्त्री चारपाई से उठ बैठी और मजे में चक्की पीस कर गाने लगी—

अपनी टेक भँजाई, बलमा की मूंछ कटाई।

सुन कर पति को पता चल गया कि, अरे, यह तो मेरे साथ चालाकी कर गयी। वह अपनी ससुराल गया और सास से बोला कि तुम्हारी लड़की बहुत बीमार है। तुम सब यदि अपना सिर मुड़ा कर और गधे पर सवार होकर उसके सामने चलो तो वह अच्छी हो सकती है। इसके अतिरिक्त कोई और उपाय नहीं। माँ को लड़की बहुत प्यारी होती है। उसने अपना और अपनी बहुओं तथा लड़कियों का सिर मुड़वा लिया और सबके साथ गधे पर सवार होकर लड़की के दरवाजे आयी। उस समय चक्की पीसते हुए वह अपना वही गीत गा रही थी कि—'अपनी टेक भँजाई, बलमा की मूंछ कटाई।' तभी उसके पति ने सामने जाकर कहा— 'देख री लुगाई, जा मुँड़ियन की पलटन आई।' सुन कर और अपनी मा बहिनों और भावजों को ऐसी बुरी अवस्था में देख कर स्त्री बड़ी लज्जित हुई।

अपनी डाढ़ी कों मुसरका[1] पैलें दओ जात।

(१—मलने या मसोसने की क्रिया।) अपनी दाढ़ी पहिले मली जाती है। अपनी विपत्ति टालने का प्रयास पहिले किया जाता है।

इस पर एक चुटकुला है—एक बार अकबर और बीरबल बैठे अपनी-अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर रहे थे। अकबर ने सहज में पूछा—बीरबल, यदि हम दोनों की दाढ़ी में आग लग जाय तो तुम क्या करोगे? बीरबल ने तुरंत उत्तर दिया — 'अन्नदाता अपनी दाढ़ी को पहिले मुसरका दिया जाता है।'

अपनी दाढ़ी सब बुझाते हैं—**फैलन**

अपनी तौ जा देहिया नईंयाँ।

अपनी तो यह देह भी नहीं। संसार में कोई वस्तु अपनी नहीं।

अपनी देरी[1] पै कुत्ता नाहर।

(१—देहरी, दरवाजा।) अपने घर पर सभी बलवान बन जाते हैं।

अपनी नाक कटा कें दूसरन खों असगुन करबो।

अपनी नाक कटा कर दूसरों को असगुन करना।
दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए अपनी हानि कर डालना।

निजेर नाक केटे परेर यात्रा भंग। —**बंगला**

अपनी नींद सोवें, अपनी नींद जगें।

स्वतंत्र। किसी से कोई मतलब नहीं।

अपनी पीठ अपुन खों नईं दिखात।

अपने दोष अपने को नहीं दिखायी देते।

अपनी ब्याई कौ का लुवाइयत?

अपनी विवाहिता स्त्री को लिवाने क्या जाना? जो वस्तु अपनी है उसे किसी से क्या माँगना?

अपनी मताई सें कोऊ भट्टी नईं कत।

अपनी माँ को कोई बुरा नहीं बताता।

अपनी लाज अपने हाथ।

अपने सम्मान की रक्षा का स्वयं ही ध्यान रखना चाहिए।

अपनी लार तौ सिमटत नइयाँ जगत्तर कौ भारौ बाँदें।

अपनी लार तो सिमटती नहीं, जगत का भार उठाने को तैयार हैं। अपना काम तो बनता नहीं, दूसरे का करना चाहते हैं।

अपुनईं गावें अपुनईं बजावें।

अपने रँग में आप मस्त।

अपनें अटकें सौत के मायके जाने परत।

अपनी गरज पड़ने पर सौत के मायके भी जाना पड़ता है। गरजमन्द आदमी सब कुछ करता है।

अपनें अपनें भाग्गन सब खात।

सब अपने अपने भाग्य से खाते हैं।

इस पर एक कथा है जो इस प्रकार है—एक राजा के चार लड़के थे। एक दिन उसने उनको बुला कर पूछा—तुम सब किसके भाग्य से खाते हो। तीन ने उत्तर दिया—हम सब आपके भाग्य से खाते हैं। परन्तु चौथे से जब यही प्रश्न किया गया तो उसने उत्तर दिया—संसार में सब मनुष्य अपने भाग्य से जन्मते और अपने भाग्य से खाते-पीते हैं। मैं भी अपने भाग्य से खाता हूँ। लड़के की यह बात राजा को बहुत बुरी लगी और उसे घर से निकाल दिया कि देखें तुम किस प्रकार अपने भाग्य से खाते हो। लड़का कुछ दिनों इधर-उधर घूमने के पश्चात एक राजा के राज्य में पहुँचा जहाँ संयोग से उसकी पुत्री के साथ उसका विवाह हो गया और दहेज में आधा राज्य भी मिल गया। उसके पिता को जब यह समाचार मिला तो उसे स्वीकार करना पड़ा कि वास्तव में सब अपने-अपने भाग्य से खाते हैं।

अपनें आँगें सब कोऊ राजे डाँड़त।

अपने आगे सब राजा को भी दंड देते हैं। पीठ पीछे सब दूसरों को बुरा-भला कहते हैं।

अपनें कान अपनें हातन नईं छेदे जात।

१-स्वयं अपने हाथ कष्ट नहीं भोगा जाता। २-जो काम जिसका है वही करता है।

अपनें घर के सब राजा।

अपने घर में सब बड़े होते हैं।

अपनें चना पराई पौर में नईं चबाये जात।

अपने चना दूसरे की पौर में ले जाकर नहीं चबाये जाते।
अपना पैसा खर्च करके दूसरों को यश देना समझदारी नहीं।।

अपनें दये कौ का लियत ?

दी हुई वस्तु का क्या माँगना ? जो वस्तु अपनी ही है उसका क्या लेना ?

अपनें दाम खोटे तौ परखैये का दोस ?

जब घर का ही आदमी बात न सुने अथवा खोटा काम करे तब दूसरों से क्या कहा जाय ?

जा है कीरत नंद बाबा की
लै गई मोह कन्हैये।
अपने खोटे दाम ईसुरी
दोस कौन परखैये।

अपनें बाप की सौ बहोर लईं।

अपने बाप से सौ बार क्षमा माँगी जा सकती है, पर दूसरों के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता।

अपनें मठा कों कोऊ पतरो नईं कत।

अपने मठे को कोई पतला नहीं बतलाता। अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं कहता।

अपनें मरे बिना सरग नईं दिखात।

अपने हाथ से किये बिना काम नहीं होता।

आप मुवा बिना स्वर्ग न जवाय—गुजराती
अफू मर्‍यां बिना स्वर्ग नि दिखदें—गढ़वाली

अपनें मों धनाबाई।

अपने मुँह से अपनी प्रशंसा करना।

अपनें हातन अपनी आरती।

स्वयं अपने को बड़ा बताना।

अपनें हातन अपने पाँव पै कुलरिया मारबो।

अपने हाथ अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना। अपनी हानि आप ही करना।

अपनें हातन पाँव पै पथरा पटकबो।

आपही अपनी हानि करना।

अपनों अपनों कमाओ, अपनों अपनों खाओ।

जब किसी परिवार के लोग मिल-जुल कर नहीं रहते, अथवा एक साथ काम नहीं करते तब।

अपनों अपनों दुख सब रोऊत।

अपना-अपना दुखड़ा सब रोते हैं।

अपनोंईं राग अलापत।

अपनी ही बात कहते हैं। दूसरों की नहीं सुनते।

अपनों कायदा अपने हात।

अपने सम्मान की रक्षा का ध्यान स्वयं ही रखना चाहिए।

अपनों खता अपने हातन नईं फूटत।

अपनी व्याधि अपने हाथ दूर नहीं होती।

अपनों खाओ, परोसी खों डराओ।

अपनी कमाई खाओ, पड़ौसी से डरो।

अपनों घर देखो।

अपना काम सँभालो। इधर-उधर की बातों में मत पड़ो।

अपनों घर सबै सूजत।

अपना घर सबको सूझता है। (१) अपने नफे-नुकसान पर सबकी नजर रहती है। (२) समय पर अपना घर सबको याद आता है।

अपनों दूर सें सूजत।

अपना दूर से सूझता है। अपने आदमी का सब ध्यान रखते हैं।

अपनों पूत, पराओ ढटींगर[१]।

(१—फालतू आदमी, आवारा।) अपना पुत्र तो पुत्र, दूसरे का ढटींगर। अपने पुत्र को लोग जितना प्यार करते हैं उतना दूसरे के पुत्र को नहीं।

अपनों पेट तौ कुत्ता भर लेत।

अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।
स्वार्थी व्यक्ति के लिए।

अपनों मरन, जग हाँसी।

अपना तो मरना और दूसरे केवल हँसते हैं। दुःख में कोई साथ नहीं देता।

अपनों मों चीकनों करें फिरत।

अपना मुँह चिकना किये फिरते हैं। केवल अपनी ही चिन्ता करना जानते हैं।

अपनों रूप और पराओ धन सबै भौत दिखात।

अपना रूप और पराया धन सबको बहुत दिखायी देता है।

अपनों लैने का, पराओ देने का?

अपना लेना क्या, पराया देना क्या? दोनों में कोई अहसान नहीं।

अपनों सूप मोय दै, तें हातन फटक।

अपना सूप मुझे दे, तू हाथों से फटक।
केवल अपना ही हित देखनेवाले के लिए कहते हैं।
अपना नयना मुझे दे तू घूम फिर के देख। **—फैलन**

अपनों सो अपनों, पराओ सो सपनो।

समय पर अपना आदमी ही काम आता है, दूसरा नहीं।

अपनों सौ मों लैकें रै गये।

अपना सा मुँह लेकर रह गये। अर्थात् चुप हो गये। कुछ कहते नहीं बना।

अपनों हात, जगन्नाथ कौ भात।

अपने हाथ से बना भोजन मानों जगन्नाथ का भात।
अपने हाथ का कार्य सर्वोत्तम होता है।

अपुन खायें, औरे ग्यास बतायें।

स्वयं तो खायें, दूसरों से कहें एकादशी-व्रत रखो।
स्वयं आचरण न करके दूसरों को सीख देना।

अपुन तौ पाँड़े अठाई[1], औरे गैल बतायें।

(१—आततायी, उपद्रवी।) स्वयं तो उपद्रवी, दूसरों को मार्ग बताते हैं।

अपुन बीती कयें कै पर बीती ?

अपनी बीती कहें या पर बीती ? अर्थात् अपनी बात क्या कही जाय ?

अपुन हता, जगन्नथा।

१—अपने हाथ से काम करने वाला मानों संसार का मालिक है। २—अपने हाथ का काम सबसे बढ़िया होता है।

अपुन हतू पनपथू[1] ।

(१-हाथ की बनी मोटी रोटी जो पानी लगा कर बनायी जाती है।) अपने हाथ से मोटी रोटी ही बना ली। अपने हाथ से चाहे जैसा कार्य कर लिया वह अच्छा ही होता है।

अफरो भूँके की कदर का जाने ?

जिसका पेट भरा है वह भूखे की वेदना को क्या समझे ?

अफरो रोज[1] बीघा भर चर जात।

(१—नीलगाय।) रोज का पेट भरा हो तौ भी वह बीघा भर खेत चर जाता है। खर्च होने वाले काम में और अधिक खर्च होता ही है। ऐसे पेटू आदमी के लिए भी कहते हैं जो कहे "मैं कम खाता हूँ"।

अब कें मारौ तौ जानें।

डरपोक के लिए प्रयुक्त।

अब मौसी सी मर गई।

अब चुप हो गये। कुछ कहते नहीं बना।

अबै कौन पुरबिया बूढ़ौ हो गओ।

अभी हम कौन शक्तिहीन हो गये। अब भी हम में काम करने की सामर्थ्य है। पुरबिया अपने जीवट और लड़ाई-झगड़े के लिए प्रसिद्ध हैं।

अबै तौ बिटिया बापई की।

अभी तो बेटी बाप ही की है। अर्थात् अभी कुछ नहीं बिगड़ा। बात अब भी सँभाली जा सकती है। हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार जब तक वर के साथ कंन्या की पूरी सात भाँवर नहीं पड़ जाती तब तक उसे पत्नीत्व प्राप्त नहीं होता और उस पर अपने पिता का ही अधिकार माना जाता है। उसी से कहावत बनी।

अबै पराई मताई कौ मौं नइँ देखो।

अभी पराई माँ का मुँह नहीं देखा। लाड़-प्यार से पली लड़की के प्रति माँ का कथन, कि मेरे पास मनमाना करती हो, ससुराल जाओगी तब पता चलेगा, सास अक्ल दुरुस्त करेगी।

अभागी की पतरी में छेद।

भाग्यहीन को सब जगह विपत्ति भोगनी पड़ती है।

अमरौती खाकें को आओ ?

अमर होकर कोई नहीं आया।

अमानसाई ठेका रखायें, कई, पैलें उन जैसो मों तौ कर लो।

अमानसिंह जैसी दाढ़ी रखायेंगे, कहा, पहिले उन जैसा मुँह तो कर लो। अपने से बड़ों की चाल-ढाल का गलत अनुकरण करने पर प्रयुक्त। अमानसिंह पन्ना-नरेश हृदयशाह के प्रपौत्र और सभासिंह के पुत्र थे। (१८०९-१८१५) ये बुन्देला राजाओं में अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं।

भव-सागर पैर कें पार भये,
जिन पायो रकार मकार कौ टेका।
जग आयकें कीनों न दीनों कछू,
कहे राख दे मेरें अमान सो ठेका।

—कवि जुगलेश

अरे दरे खों गुपला नउआ।

इधर-उधर के फालतू काम के लिए गुपला नाई।
हर काम के लिए जब किसी एक ही व्यक्ति से कहा जाय तब कहते हैं।

अलख पुरुख की माया, कऊँ धूप कऊँ छाया।

ईश्वर की लीला जानी नहीं जाती।

अल्ला देवे खाने को, तौ कुतका जाय कमाने को।

मुफ्त का खाने को मिले तो कमाने कौन जाय?

असाड़ कौ पजो लड़इया, भादों कहै भौत बरसा भई।

असाढ़ में तो गीदड़ का जन्म हुआ, भादों में कहता है बहुत वर्षा हुई! ऐसे अनुभवहीन व्यक्ति के लिए प्रयुक्त जिसने दुनिया का कुछ देखा-सुना न हो, फिर भी जो बड़ी शेखी मारे।

असी कोस ससरार गेंवड़े[1] सें काँछ खोलें।

(१–गेंवड़ा–गाँव के बाहर का हिस्सा जहाँ लोग शौचादि के लिए जाते हैं।) ससुराल के लिए अस्सी कोस तो चलना है पर गेंवड़े से ही काँछ खोल दी। अर्थात् कार्य आरंभ होने के पूर्व ही हिम्मत हार दी।

अस्सी की आमद चौरासी कौ खर्च।

आमदनी कम और खर्च ज्यादा।

अष्ट कपाली[1] दालुद्री, जब चालै तब सिद्ध।

(१–अभागा।) शकुन और मुहूर्त्त तो धनवान के लिए हैं, जो जन्म से ही दरिद्री और अभागा है उसे यात्रा का मुहूर्त्त आदि क्या देखना। वह तो जब चल दे तभी शुभ।

भद्रा वा घर होयँगे जिनके हैं नौ निद्ध।
अष्ट कपाली दालुद्री जब चालै तब सिद्ध॥

आँएँ तौ गाँव की सुवासिन[1], पै चिंदरती[2] हैं।

(१–विवाह के पश्चात् भी पिता के घर आकर रहने वाली लड़की। २–चिंदरना=जान-बूझ कर अनजान बनना।) गाँव की लड़की होकर भी इस प्रकार बात करती है मानों कुछ जानती ही नहीं। किसी विषय को जानते हुए भी अनजान बनने पर कहते हैं।

आँक, टाँक अर काजरे। देव टका भर आगरे।

अक्षर, सिलाई के टाँके और काजल, ये टका भर अगरे, अर्थात् थोड़े गहरे होना चाहिए, तभी ये ठीक रहते हैं।

आँखन के आँदरे, नाव नैनसुख।

नाम तो अच्छा पर गुण उसके विपरीत।

आँखन कौ काजर।

अत्यधिक प्रिय वस्तु।

आँखन कौ काजर रन-बन हो गओ।

रोते-रोते आँखों का काजल धुल गया। अर्थात् बहुत विकल।

आँखन कौ काजर चुराउत।

आँखों का काजल चुराता है; ऐसा चालाक है।

आँखन कौ सनेह् है।

मुँह-देखी प्रीत है।

आँखन देखत कुआ में गिरे।

जान-बूझ कर हानि की।

आँखन देखत माछी नईं खाई जात।

जान-बूझ कर बुरा काम नहीं किया जाता।

आँखन देखी झूठी परी।

आँखों देखी बात झूठी हुई।

आँखन देखी मानें, कै कानन सुनी।

आँखों देखी बात सच मानें या कानों सुनी ?

आँखन देखो चेतनो, मों देखो ब्योहार।

दुनिया में आँख के सामने आये का स्नेह, और मुँह देखा व्यवहार होता है, अर्थात् सच्चा प्रेम कम देखने में आता है।

आँख फूटी पीर निजानी।

विपत्ति का कारण दूर होने पर विपत्ति से भी छुट्टी मिल जाती है।

आँख मींचें भुनसारो होत।

आँख मूंदे सबेरा होता है। समय जाते देर नहीं लगती।

आँखें न साँखें, कजरौटा नौ ठउआ।

व्यर्थ का आडंबर दिखाना।

आँख एकौ नहीं कजरौटा नौ ठौल।

आँग की माँछी नईं उड़ा पाउत।

शरीर की मक्खियाँ नहीं उड़ा पाता ऐसा काहिल है। निकम्मे और आलसी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

आँगें बेर[1], पाछें कुआ।

(१—बावड़ी।) दोनों ओर विपत्ति।

आँगू हेरत बेर ईसुरी पाछूँ कुआ दिखावे।

आँगें लगीं माँछीं।

शरीर से लगी मक्खियाँ। घर के बूढ़े-पुरानों के अंग लगे बच्चों के लिए प्रयुक्त।

आँतरे रोजे कसरत करे। राम न मारें आपुई मरै॥

कसरत नियम से करना चाहिए, अन्यथा उससे हानि होती है।

आँदरन की लोड़ कितऊँ लगे।

अंधे की गुलेल कहीं लग सकती है।

आँदरी घुरिया, फँफूड़े चना। चले आउन दो घना के घना॥

घोड़ी अंधी है, और चने भी फफूंड़े हैं, फिर क्या है उसे चाहे जितना खिलाते चले जाओ।(१) जैसे को तैसा मिलना। (२) मूर्ख को गुण की पहिचान नहीं होती।

आँधी के आम।

(१) सस्ती चीज जो यकायक मिल रही हो। (२) बहुत दिनों न टिकने वाली वस्तु।

आँधी कौ मेव, बैरी कौ सनेव।

आँधी का मेह उसी प्रकार क्षणस्थायी होता है जैसे बैरी का स्नेह।

आँधी बाव चलाबो।

उपद्रव मचाना।

आँयँ जाँयँ काम चलत।

आने-जाने से ही काम चलता है। हम दूसरों के यहाँ जायेंगे, तो दूसरे भी हमारे यहाँ आयेंगे।

आई गई पार परी।

किसी तरह झगड़ा निपटा। काम से छुट्टी पायी।

आई बऊ, आओ काम, गई बऊ, गओ काम।

जितने आदमी हों उतना ही काम बढ़ता है।

आईं बाईं[1] दै गईं झाँईं।

(१—माँ। बहिन। सखी-सहेली।) बाई आयीं और झलक दिखा कर चली गयीं। काम से जी चुराने वाली स्त्री के लिए कहते हैं।

आई सतुअन की बहार, बालम मूँछें मुड़ा डारो।

क्योंकि सत्तू मूँछों में लगता है। एक लोकगीत की कड़ी।

आऊत लच्छमी खों टटा देत।

आती लक्ष्मी के लिए दरवाजा बंद करते हैं। अनायास प्राप्त पैसे को ठुकराते हैं।

आऊती बऊ, जनमतो पूत।

आती बहू, जन्मता पूत; ये सबको अच्छे लगते हैं।

आग जानें, लुहार जानें, धौंकनहारे की बलाय जानें।

अर्थात् कुछ भी हो, हमें किसी बात से कोई मतलब नहीं।

आग में गओ हाते नईं आऊत।

आग में गयी वस्तु हाथ नहीं आती। नष्ट हुई वस्तु फिर नहीं मिलती।

आग लगा तमासो देखबो।

झगड़ा करा कर आनंद लेना।

आग लगे पै कुआ खोदबो।

काम बिगड़ जाने पर यत्न के लिए दौड़ना। पहिले से प्रबंध न करना।

आग लगा पानी खों दौरें।

झगड़ा करा कर फिर मेल का उद्योग करना।

आग लगै तोरी पोथिन में। जिउ धरौ मोरो रोटिन में।

भूख के सामने पढ़ना नहीं सूझता।

आग लगै, मँड़वा धुँधुआय; दूला-दुलैया सरगे जाय।

दूसरे के नफे-नुकसान की परवाह न करना। लड़ाई-झगड़े से तटस्थ रहना।

आगली सोचें पाछली होत।

सोचते आगे का हैं, पर काम और पिछड़ता है। होनहार की बातें।

आगी रोज लै गईं, कंडा कभऊँ न दै गईं।

स्वार्थी स्त्री के लिए कहते हैं।

आगी होती तौ का पाहुनो मूँछें लैकें चलो जातो !

यदि हम समर्थ होते तो कुछ कर न दिखाते !

कथा—कोई स्त्री पड़ौस में किसी दूसरी स्त्री के यहाँ आग लेने गयी। संयोग से उस समय उसके यहाँ आग नहीं थी, साथ ही उसके यहाँ कई दिन से एक मेहमान आया था जो अभी-अभी घर से गया था। उसकी मेहमानदारी से वह झल्लायी बैठी थी, अतः उसने उत्तर दिया—आग घर में होती तो मैं मेहमान की मूँछ न जला देती।

आज मरे काल पितरन में।

मरने के बाद कोई किसी की चिन्ता नहीं करता।

आज मरे काल दूसरो दिन।

मरने के बाद कुछ भी होता रहे हमें क्या चिन्ता !

> आज मरले काल दु' दिन ह्वे, मरले कुल की संगे जावे—**बंगला**
> (आज मरने पर कल दो दिन बीतेंगे, मरने पर कुटुम्ब-परिवार क्या साथ जायेगा ?)

आज इतै, तौ काल उतै, परों पराये देस।

ससुराल जाती हुई लड़की के लिए प्रयुक्त।

आजे न बाजे, दूला आन बिराजे।

बिना साज-बाज का काम।

आटे में नोन समा जात, पै नोन में आटो नईं समात।

आटे में नमक समा जाता है, पर नमक में आटा नहीं। अर्थात् झूठ अधिक नहीं बोलना चाहिए।

आठऊ गाँठ कुम्मैत[1]।

(१—घोड़े का एक रंग जो गहरी स्याही लिये लाल होता है, उन्नाबी रंग। घोड़े का यह रंग सब रंगों में श्रेष्ठ माना जाता है। आठों गाँठ कुम्मैत उस घोड़े को कहते हैं जो सिर से पैर तक एक हो, कुम्मैत रंग का हो। अत्यन्त चतुर और चालाक व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।)

आठ गौन[1] राज-रास[2], नौ गौन अकरियाँ[3]।

(१—पाँच मन के लगभग की अनाज की एक माप। २—कटी हुई फसल से प्राप्त गल्ले का मुख्य ढेर। ३—भूसे के मोटे डंठल जिनमें अनाज के दाने मिले होते हैं।)

खलिहान में जो गल्ला हाथ लगा है वह तो केवल आठ गौन है, और भूसे के डंठल हैं नौ गौन। लाभ से हानि अधिक।

आठ बार, नौ त्यौहार।

बारहों मास आनंद से बीतना।

आठ हात ककरी नौ हात बीजा।

अनहोनी बात।

आठ हात काकड़ी नऊ हात बी—**मराठी**

आड़ी सें ठाँड़ी सींक नईं करत।

आड़ी से खड़ी सींक नहीं करता। अर्थात् बड़ा आलसी है।

आतुर खेती, आतुर भोजन, आतुर करिये बेटी ब्याह।

खेती के काम में शीघ्रता, भोजन में शीघ्रता और बेटी के विवाह में भी शीघ्रता से काम लेना चाहिए।

आदमियन में नौआ, और पंछियन में कौआ।

मनुष्यों में नाई और पक्षियों में कौआ ये बड़े चतुर होते हैं।

नराणांनापितोधूर्तः पक्षिणांचैववायसः।
चतुष्पदांशृगालस्तु स्त्रीणांधूर्ताचमालिनी।।

—चाणक्य-नीति

आदमी जानिये बसें, सोनों जानिये कसें।

आदमी की परख निकट सम्पर्क में रहने और सोने की परख कसौटी पर कसने से होती है।

आदमी चलो जात, पै बात रै जात।

आदमी चला जाता है, पर बात रह जाती है।

आदे गाँव दिवारी,[1] आदे गाँव धमार[2] ।

(१–दीपावली उत्सव पर गाये जाने वाले ग्रामीण गीत। २–होली के गीत। एक राग।) आधे गाँव में दिवाली मनायी जा रही है और आधे में होली। सहयोग से काम न होना।

आप काज महा काज।

अपने हाथ से किया काम ही सर्वोत्तम होता है।

आप खायँ हरवकत, बाँट खायँ बरक्कत।

अकेले खाना ठीक नहीं, बाँट कर खाने से धन-दौलत की बढ़ती होती है।

आप गये और आस-पास।

अपना भी सर्वनाश किया और पड़ोसियों का भी।

आप चले तौ पाती काय की।

जब स्वयं ही जा रहे हैं तो पत्र की क्या आवश्यकता ?

आप जायँ अदियाँ, परोसी जायँ सबियाँ।

अपने किसी कार्य की स्वयं उपेक्षा की जाय तो पड़ोसी तो उसमें बिलकुल ही रुचि नहीं दिखायेंगे।

आप डुबन्ते पाँड़े, लै डूबे जजमान।

अपनी भी हानि की, अपने मित्रों की भी।

आप तौ आप और बगल चाप।

(१) खा भी लिया और बगल में दबा भी लिया। (२) आप भी गये, दूसरों को भी ले गये।

आप न जावे सासरे औरन खाँ सिख देय।

आप न करे, दूसरों को उपदेश दे।

आप कहें नाहीं करे, ताको यह है हेत।
आप न जावे सासरे, औरन को सिख देत॥
—वृन्द

आप भला तौ जग भला।

स्वयं अच्छा तो संसार अच्छा।

आप मरे, जग परलै।

अपने मरने के बाद प्रलय हो जाय तो हमें क्या ?

आप मियाँ मंगते, दुआर खड़े दरवेस[1]।

(१—दरवेश, फकीर।) जो स्वयं दूसरों का मुखापेक्षी है वह किसी की क्या सहायता करेगा ?

आप हान, जग हाँसी।

अपनी तो हानि हुई और संसार हँसता है।

आपुन ठाँड़े गैल में, करें और की बात।

स्वयं तो दुनिया से जाने की तैयारी में हैं दूसरों की चिन्ता करते हैं।

आबर्दा तौ भौत, पै रँड़ापो तौ रोको।

आयु तो लंबी है, पर रँड़ापा तो रोको। जीवन सुख से न बीते तो दीर्घायु किस काम की ? किसी के द्वारा लाभ के साथ जब हानि भी हो रही हो तब प्रयुक्त।

आबे की एक, जाबे की चार।

पैसे के आने का एक रास्ता होता है तो जाने के चार।

आ बैल मोय मार।

आ बैल मुझे मार।

जानबूझ कर विपत्ति बुलाना।

आम खानें कै पेड़े गिनने।

अपने काम से मतलब, या इधर-उधर की बातों से ?

आम फलै नीचौ नवै।

बड़ा आदमी विनम्र होता है।

आय न साय चून चाल कें दै पओ।

घर में तो कुछ है नहीं, फिर भी कहते हैं कि चून चाल कर रोटी बनाओ।

आये ते हर भजन कों औंटन लगे कपास।

आये थे किसी और काम को और करने लगे कुछ और।

आये न गये, घरईं रये।

सीधे-सादे अनुभवहीन व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

आरे बंडा[1], अरो[2] करियें, कई, मैं तौ पूँछई उठायें।

(१–पूँछ-कटा बैल। २–उपद्रव।)

एक बैल ने दूसरे से कहा—आ रे बंडा! उपद्रव करें, तो उत्तर दिया, मैं तो पूँछ उठाये पहिले से तैयार हूँ!

ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त जो कुछ कर-धर तो सकता न हो, फिर भी लड़ने-झगड़ने को सदैव प्रस्तुत रहता हो।

आलसी निगइया, असगुन की बाट हेरें।

आलसी चलने वाला अशकुन की प्रतीक्षा करता है (कि मुझे चलना न पड़े) काम न करने के लिए बहाना ढूँढ़ने पर।

आंला[1] कौ का गाइये, सुघर लबार[2] चाइये।

(१–बुन्देली भाषा का प्रसिद्ध वीर-काव्य आल्हा। २–झूठा, लंब-तड़ंगी हाँकने वाला) आल्हा का क्या गाना, उसके लिए तो बस कोई सुघड़ गप्प हाँकने वाला चाहिए। अभिप्राय यह कि चतुराई से काम लेने पर झूठ बात को भी सत्य बनाया जा सकता है।

आला गाऊँ कै परमाला[1]।

(१–परमाल का यश; परमाल रासौ, जिसमें महोबे के चंदेलराज परमाल या परमर्दिदेव की कथा वर्णित है।) मैं क्या-क्या कहूँ?

आ बरा[1] मोरे मों में पर।

(१–उड़द की पीसी हुई दाल का बना हुआ एक प्रकार का पक्वान। बटवृक्ष का फल।) आ बरा मेरे मुंह में आकर गिर। निपट आलसी के लिए प्रयुक्त।

आव बहिन कौ भाई, भीतर जाय दर्राई।

भाई जब अपनी बहिन की ससुराल जाता है तो बे रोक-टोक सीधा बहिन के पास चला जाता है, किसी से कुछ पूँछता-ताँछता नहीं ।

आसई आसा में प्रान गये।

मन की इच्छा पूरी नहीं हुई। आशा-आशा में ही प्राण निकल गये।

आस बिरानी जे करें होतन ही मर जायें।

दूसरों की आशा करने की अपेक्षा तो जन्मते ही मर जाना अच्छा।

आसरे सें सासरो लगो।

लाभ की आशा से ही ससुराल का महत्व है।

आसा की बेल पहाड़े चढ़त।

आशा की बेल पहाड़ पर चढ़ती है। आशा में बड़ी शक्ति है।

आसा कौ बाप, निरासा की माँ, होते की बहिन, अनहोते कौ मीत।

सुख में पिता, दुख में माता, सम्पत्ति में बहिन और विपत्ति में मित्र काम आता है।

यह एक प्रसिद्ध बुन्देली लोककथा की गाथा है जिसने कहावत का रूप धारण कर लिया है।

आसा कौ मरै, निरासा कौ जिये।

आशा में रहने से आदमी मरता है, परन्तु पहिले से निराश हो जाये, अथवा किसी से कोई आशा न रखे, तो सुखी रहता है।

आसा सें आसमान टँगो।

आशा के बल पर ही आसमान टँगा है।

आहार चूके बे गये, ब्योहार चूके बे गये।
दरबार चूके बे गये, ससुरार चूके बे गये।।

स्पष्ट।

आहारे ब्योहारे लज्जा न कारे।

भोजन और लेन-देन में संकोच नहीं करना चाहिए।

आहारे व्यबहारे च त्यक्त लज्जा सुखी भवेत् ।—**चाणक्य नीति**

इ

इक तो नागिन उर पंख लगायें।

एक तो नागिन और ऊपर से पंख ! पहिले ही भयंकर थी, अब और भी विकट हो गयी।

इक लख पूत सवा लख नाती। ती रावन घर दिया न बाती॥

धन, यौवन और बड़े कुटुम्ब का गर्व नहीं करना चाहिए। ईश्वर का कोप होने पर सब पल भर में विलीन हो जाता है जैसे रावण का हुआ।

एक लक्ष पुत्र तोर सवा लक्ष नाती।
केह न रहिल आर वंशे दिते बाती।
—बंगला

इकल सुँगरा।

अकेला रहने वाला सुअर। स्वार्थी व्यक्ति।

इकहरिए मिलौ न ताव[1]। परकड़ुए मिलौ न भाव॥

(१—तुर्त-फुर्त काम करने का अवसर। काम की गर्मी।) ऐसा किसान जिसके पास केवल एक हल हो समय पर जुताई-बुवाई का काम नहीं कर पाता, उसी तरह दूसरे का ऋण लेकर काम करने वाला किसान भी गल्ले को उचित भाव पर नहीं बेच पाता, क्योंकि साहूकार का ऋण चुकाने के लिए मनमाने भाव पर दे देना पड़ता है।

इतके बराती, न उतके न्योतार।

कहीं के भी नहीं।

इत्ते की कमाई नईं जित्ते कौ लाँगा चिंथ गओ।

इतने की तो कमाई नहीं, जितने का लहँगा फट गया।
लाभ से हानि अधिक।

इत्ते की तौ भगत नईं जित्ते के मँजीरा फूट गये।

इतना तो देवी की पूजा से प्रसाद नहीं मिला जितने के मँजीरा फूट गये।

इतै कौन कोऊ ताते पानी कौ सपराव हैं?

यहाँ कौन कोई गरम पानी का नहलाया हुआ है। अर्थात् हम भी सुकुमार नहीं।

इतै कौन तुमाई जमा गड़ी।

अर्थात् यहाँ तुम्हारा क्या अधिकार ?

इतै धरीं इँदरसे[1] की जरें !

(१—पीसे हुए चावल की बनी एक प्रकार की मिठाई।) प्रायः ऐसे ऊधमी बच्चों के लिए प्रयुक्त जो घर आकर माँ को तंग करते और इधर-उधर की चीजें खाने को माँगते हैं।

इनईं आँखन बसकारो काटो ?

इन्हीं आँखों से वर्षा के चार महीने काटोगे ? सामने रखी हुई वस्तु भी न दिखायी दे तब प्रयुक्त ।

इन तिलन में तेल नइयाँ।

इन तिलों में तेल नहीं। अर्थात यहाँ कुछ पाने की आशा न रखो।

इमली के पत्ता पै कुलाँट खाओ।

अर्थात मौज करो। चैन की बंसी बजाओ। अवसर चूके व्यक्ति के लिए प्रायः व्यंग्य में प्रयुक्त।

ईंगुर हो रईं।

खा-पी कर लाल हो रही हैं।

ईंट कौ घर माटी कर दओ।

ईंट का घर मिट्टी कर दिया। बना बनाया काम बिगाड़ दिया।

ईंट खिसकी सो खिसकी।

दीवार की एक ईंट खिसक जाय तो फिर सँभालना मुश्किल होता है। उसी प्रकार एक बार बिगड़ा काम फिर नहीं सँभलता।

ईंट सें ईंट बज गई।

लड़ाई छिड़ गयी।

ईख लौं खेती, हाथी लौं बनज।

ईख की खेती से बढ़ कर खेती नहीं; हाथियों के व्यापार से बढ़ कर व्यापार नहीं।

ईमान कौ सौदा है।

ईमान का काम है।

उ

उँगरकटा नाव धर दओ।

उँगली काट खाने वाला नाम रख दिया। व्यर्थ बदनाम कर दिया।

उँगरियन उँगरियन कौंचा[1] भारी होत।

(१—हथेली, कलाई।) उँगलियों-उँगलियों कौंचा भारी होता है। थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है।

उँगरिया पकर कें कौंचा पकरबो।

उँगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना। थोड़ा सहारा पाकर गले पड़ जाना।

उअते खों सब पाँ लागत।

उगते सूर्य को सब नमस्कार करते हैं। उन्नतिशील के आगे सब झुकते हैं।

उकताने काम नसाने, धीरज धरो सयाने।

जल्दबाजी में काम बिगड़ता है, इसलिए चतुरों को धैर्य से काम लेना चाहिए।

उखरी में मूँड़ दओ, तौ मूसरन कौ का डर।

जब कोई भला या बुरा काम करने पर उतारू ही हुए तो फिर डर किस बात का?

ईसुर मूँड़ दयें उखरी में, मूसर कौ का डर है।
—ईसुरी

उजरऊ[1] के संगे कपला[2] कौ नास।

(१—उजाड़ करने वाली, चोरी से दूसरों का खेत चरने वाली गाय। २—कपिला—सीधी गाय।) बुरे के साथ सीधे आदमी को भी कष्ट भोगना पड़ता है।

उजरे गाँव में अरंडई रूख।

जहाँ कोई वृक्ष नहीं होता वहाँ अरंड को ही लोग बड़ा वृक्ष मानते हैं।

उजरे गाँव में मातेन[१] कचरिया !

(१—कचरी की एक जाति जो आकार में बड़ी और मीठी होती है।) उजड़े गाँव में श्रेष्ठ जाति की कचरिया ! आश्चर्य का विषय।

उठते पाँव दुनिया तकत।

पदच्युत होते हुए व्यक्ति पर सबकी दृष्टि रहती है। सब उसकी संकटापन्न स्थिति से लाभ उठाना चाहते हैं।

उठाई जीब तरुआ सें दै मारी।

जो मन में आया सो कह दिया।

उपाडी जीभ ने लगाडी तालवे—**गुजराती**
उचलली जीभ लावली टाळ्यास।—**मराठी**

उठी हाट आठयें दिना लगत।

उठी हाट आठवें दिन लगती है, (इससे जो कुछ लेना हो सो आज ही ले लो।) तात्पर्य यह कि अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए।

उठौवल चूल्हो।

ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त जिसके रहने का कोई पक्का ठिकाना न हो।

उड़त चिरइयाँ परखत।

उड़ती चिड़ियाँ परखता है अर्थात बहुत होशियार है।

उड़ौ चून पुरखन के नाव।

चक्की पीसते समय जो चून उड़ गया या नष्ट हो गया वह पितरों को समर्पित ! किसी को ऐसी वस्तु देकर अहसान करना जो अपने काम न आये।

उधियाइल सतुआ पितरन के दान—**भोजपुरी**

उजार चरें और प्याँर खायें !

चोरी से दूसरों का खेत चरने जायें, फिर भी कोदों के डंठल खायें ! बुरा काम भी करें और पूरा लाभ न उठायें !

उतराई[१] कैसो टका दै राखो।

(१—नदी से पार होने का महसूल।) चुपचाप किसी की रकम का भुगतान कर देने पर प्रयुक्त।

उधरे पै सुधरै।

सिले हुए कपड़े को उधेड़ कर ही फिर से ठीक किया जा सकता है।

उधार कौ खाबो और फूस कौ तापबो।

उधार का खाना और फूस का तापना बराबर होता है। जैसे फूस की आग अधिक देर नहीं ठहरती वैसे ही उधार लेकर खाना भी बहुत दिनों नहीं चल सकता।

उधार देओ और बैर बिसाव !

किसी को ऋण देना ठीक नहीं। माँगने से बुराई पैदा होती है।

उधार दीजे दुश्मन कीजे—फैलन

उधारवारो पासंग[1] नईं देखत।

(१–तराजू के दोनों पलड़ों का बराबर न होने की स्थिति) उधार लेने वाला इस बात की परवाह नहीं करता कि सौदा ठीक तौल कर दिया गया है अथवा नहीं, क्योंकि उसे तो किसी प्रकार सौदा लेना है।

उनकी पईं काऊ ने नईं खाईं।

उनके हाथ की बनी रोटी कोई नहीं खा पाया। स्वार्थी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

उन बिगर कौन मँड़वा अटको।

उनके बिना क्या विवाह का मंडप गड़ने को रुका है ? जब कोई व्यक्ति बुलाने से भी न आये तब प्रयुक्त। तात्पर्य यह कि नहीं आते तो न आयें, उनके बिना काम पड़ा नहीं रहेगा। तुल० जहाँ मुरगा नहीं होता वहाँ क्या सबेरा नहीं होता ?

उपास के न तिरास के, फरार[1] कों जम से।

(१–फलाहार।) काम का तो बूता नहीं, पर खाने को बहादुर हैं।

उपेटो लगत सो आँख खोल कें चलत।

जिसे ठोकर लगती है वह आँख खोल कर चलता है।

उरदनईं खों जोतत।

उर्दों को ही जोतते हैं। एक ही बात की रट लगाये हैं।

उरबतिया[1] कौ पानी मँगरी[2] नइँ चड़त।

(१–छप्पर के ढाल का आगे का हिस्सा जिससे वर्षा का जल नीचे टपकता है; ओलती। २–छप्पर के ऊपर का हिस्सा।) ओलती का पानी मँगरी पर नहीं चढ़ता, वह तो नीचे धरती पर ही आता है। असंभव बात संभव नहीं होती।

उलट धरे की बीदी।

मामला उल्टा फँस गया।

उल्टी आँतें गरें परीं।

गये थे सुलझने, उल्टे उलझ गये।

उल्टो चोर गुसैयें डाँटे।

अपराध करके स्वयं उसी मनुष्य को झिड़कना जिसका नुकसान हुआ हो।

ऊ

ऊँगत् ती और बिछी पाई।

नींद आ रही थी और बिछी चारपाई मिल गयी। अर्थात मनचाही हुई।

ऊँगतो बोले, जागतो न बोले।

जिससे सावधान होने की आशा नहीं वह तो सतर्क है, और जिसे सावधान रहना चाहिए वह चुप है।

ऊँग न देखे टूटी खाट। प्यास न देखे धोबी घाट॥
प्रेम न देखे जात कुजात। भूँक न देखे जूठो भात॥

क्षुधाय चाय ना सुधा, पिरीते चाय ना जाती।
घूमे चाय ना खाट-पालंग, वाह्ये चाय ना बाती। —**बंगला**

(भूख को अमृत नहीं चाहिए, प्रेम को जाति नहीं चाहिए, नींद को खाट पलंग नहीं चाहिए, शौच को दीपक नहीं चाहिए।)

ऊँची दुकान फीको पकवान।

दिखावट तो बहुत पर तत्त्व कुछ नहीं।

ऊँट की चोरी निहुरे निहुरे।

बड़े काम चोरी छिपे नहीं होते।

ऊँट की पीर गदा नईं दागो[1] जात।

(१–दागना=पीड़ा के स्थान को गरम धातु या मुद्रा से जलाना।) ऊँट को पीड़ा होने से गधा नहीं दागा जाता। जिसको कष्ट हो उसका ही इलाज किया जाता है।

ऊँट की पूँछ सें ऊँट बँदो।

एक के सहारे एक बँधा है। ऊँटों की पंक्ति चलने पर एक की पूँछ दूसरे की नकेल से बाँध दी जाती है जिससे वे इधर-उधर भागने न पायें।

ऊँट के गरे में बिलाई।

बेमेल जोड़। किसी काम में ऐसा अड़ंगा लगा देना जिससे वह हो न सके।

कथा—किसी समय एक व्यक्ति का ऊँट खो गया। उसने प्रतिज्ञा की कि यदि ऊँट मिल गया तो उसे दो पैसे में बेंच डालूँगा। संयोग से ऊँट मिल गया। तब उस धूर्त ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के बहाने से ऊँट के गले में एक बिल्ली बाँध दी और बिल्ली के उतने ही दाम रखे जितने उस ऊँट और बिल्ली दोनों के मिला कर होते थे। साथ ही यह शर्त भी लगा दी कि दो पैसे में ऊँट खरीदने वाले को बिल्ली भी खरीदनी पड़ेगी। परंतु जब वह ऊँट को बाजार में ले गया तो उसकी शर्त सुन कर कोई उसे खरीदने को तैयार नहीं हुआ। इस तरह उसका ऊँट उसके पास रह गया और उसकी प्रतिज्ञा की रक्षा भी हो गयी।

ऊँट के मों में जीरो।

बहुत खाने वाले को थोड़ी वस्तु देना।

ऊँट कैसी चम्मक।

ऊँट जैसी मजबूत पकड़। ऊँट के विषय में कहा जाता है कि एक बार किसी को पकड़ लेने पर वह उसे आसानी से नहीं छोड़ता।

ऊँट कौ चूमा ऊँटई लेत।

ऊँट का चूमा ऊँट ही लेता है। बड़ों का काम बड़ों से ही सटता है।

ऊँट चढ़ें कुत्ता नें काटो।

अर्थात् अनहोनी घटना घटित हुई। जब कोई मनुष्य अपने को विपत्ति से सब प्रकार से बचाता रहे, परन्तु फिर भी वह उसमें पड़ ही जाय तब कहते हैं ।

ऊँट जब लौं पारबा तरें नईं जात तब लों बो समजत कै मो सें बड़ो कोऊ नैयाँ।

अपने से अधिक बुद्धिमान के मिलने पर ही अपनी अल्पज्ञता का बोध होता है।

ऊँटन खेती नईं होत।

ऊँटों से खेती नहीं होती। हर काम के लिए उपयुक्त साधन की आवश्यकता होती है ।

ऊँट पै चढ़कें सबैं मलक आउत।

ऊँट पर चढ़के सभी को मलकना आ जाता है। उच्च पद प्राप्त होने पर सभी को गर्व हो जाता है।

ऊँट पै सलीता लदै कुरिया[१] पर पर जाय।

(१—कोरी, एक बुनकर जाति ।) ऊँट पर तो माल का बोरा लद रहा है और कोरी चिल्लाता है कि हाय राम मरे ! परिश्रम तो किसी को करना पड़े और कष्ट किसी को हो।

ऊँट बये बये फिरें, गाड़र थाय लेय।

ऊँट तो बहे जा रहे हैं, गाड़र थाह लेती है। अनुचित साहस।

ऊँट बिलाई लै गई तौ हाँजू हाँजू करना।

ठकुर सुहाती कहना। बड़े आदमियों की हाँ में हाँ मिलाना।

ऊँठ को बिल्ली उठा ले जाय यह बिलकुल असंभव है। परन्तु बड़े आदमी ने कहा तो खुशामदी ने जवाब दिया कि हाँ, मैंने भी देखा था।

ऊँट मरै तब पछायँ खाँ मों करै।

ऊँट जब मरता है तब पश्चिम को मुँह करता है। अंत समय सभी को अपना घर याद आता है। राजस्थान और अरब की मरुभूमि जो ऊँट का निवासस्थान है, पश्चिम की ही ओर है। इसीलिए ऊँट के संबध में ऐसा कहते हैं। जब कोई आदमी ऊट-पटाँग काम करता है तब भी प्रयुक्त।

ऊँट लदै गदा पर पर जाय, राम जौ बोझा को लै जाय !

किसी के कष्ट की किसी को चिन्ता।

ऊअते खों सब नमत, अथये खों कोऊ नइँ।

उगते सूर्य को सब सिर झुकाते हैं, डूबते को कोई नहीं।

ऊजर गाँव अंड कौ प्या[१], बेई माते, बेईब्या[२]।

(१—अनाज नापने का बर्तन जो पाव भर का होता है। २—अनाज तौलने वाला।) अंधेर की जगह।

ऊटपटाँग हाँकबो।

ऊटपटाँग बात करना।

ऊदल ब्याहन कों ना रैहें, बातें कैबे कों रै जैहें।

अर्थात किसी एक व्यक्ति विशेष के बिना काम अटका नहीं रहेगा, परन्तु बात कहने को रह जायगी कि अवसर पर साथ नहीं दिया।

प्रसिद्ध वीर-काव्य आल्हा में ऊदल के विवाह के लिए आल्हा जब नरवर की लड़ाई पर जाने से इन्कार कर देता है तब मलखान का कथन—

मोहरा मरिहैं हम नरपति कौ औ ऊदन कों लैहें ब्याय।
ऊदन ब्याहन कों रहिहें ना यहु दिन कहिबे कों रह जाय॥

ऊधौ कौ लैन, न माधौ कौ दैन।

ऐसे निश्चिन्त मनुष्य का कथन जिसे किसी का कुछ लेना-देना नहीं।

ऊधौ बन आये की बात।

कार्य सफल होने पर लोग प्रशंसा करते हैं, अन्यथा वे ही लोग बुराई करने लगते हैं।

ऊनें सो बरसेइँ।

बादल जब घिरे हैं तब बरस कर ही रहेंगे।

ऊपर बरछी नेंचें कुआ, तासें बानिया फारकत हुआ।

विवश हो कर काम करना।

कथा—किसी व्यक्ति को एक बनिये का बहुत सा रुपया उधार देना था। ऋण चुकाने का कोई उपाय न देख एक दिन उसने बनिये को अपने घर बुलाया

और उसे मार डालने की धमकी देकर फारखती लिखा ली। परन्तु बनिया बड़ा होशियार था। फारखती की पुर्जी की पीठ पर चुपचाप लिख दिया—

ऊपर बरछी नैचें कुआ।
तासें बनिया फारकत हुआ।।

और बाद में अदालत में नालिश करके रुपये वसूल कर लिये।

ऊपर सें राम राम, भीतर कसाई के काम।

पाखंडी आदमी।

ऊमर कौ बिरमांड।

ऊमर का ब्रह्मांड। साधारण काम को जबरदस्ती महत्त्व देना।

ऊमर फोरो न पखा उड़ाओ।

न कोई बुरा काम करो और न उसका परिणाम भोगना पड़े।

ऊसरा कौ बीज।

ऊसर का बीज। व्यर्थ परिश्रम। ऊसर जमीन में बीज बोने से नहीं उगता।

ऊसर बरसे तृन नहिं जामे—**तुलसी**

ए

एक अहारी सदा व्रती।

एक बार भोजन करने वाला संयमी ही माना जाता है।

एक लठिया सें सबै हाँकत।

एक लाठी से सबको हाँकते हैं।

एकई साधें सब सधे सब साधें सब जाय।

(१) एक बार में एक काम ही करना चाहिए। (२) किसी काम के लिए एक आदमी का आश्रय ग्रहण करना ही ठीक होता है।

एक कओ, न दो सुनो।

किसी से न एक बुरी बात कहो, न दो सुनो।

एक काम में दो काम।

काम को बढ़ाना।

एक कान सें सुनीं दूसरे सें निकार दई।

किसी बात पर ध्यान न देना।

पा० जा कान सुनीं बा कान निकार दई।

ऐक काने सांमलीने बीजे काने काह्डबुं—गुजराती।

एक की दो बनाउत।

एक की दो बनाते हैं। झूठा दोषारोपण करना।

एक के पुन्न सें सबरो गाँव तर जात।

एक आदमी के अच्छे काम का सब पर प्रभाव पड़ता है।

एक कुँजरिया न आहै तौ का हाट न भरहै?

एक कुँजड़िन यदि नहीं आयेगी तो क्या हाट नहीं भरेगी? किसी एक आदमी के बिना काम पड़ा नहीं रह जायगा।

एक घड़ी कौ बुरआसन[1] जनम भरे कौ सुक्ख।

(१—बुराई।) नाहीं करने से कोई बुरा मान जाय तो मान जाय, पर हमेशा के लिए बला तो टल जाती है।

एक घर तौ डाँकन बरका देत।

एक घर तो डायन भी छोड़ देती है। दुष्ट आदमी के हृदय में भी कुछ-न-कुछ दया होती है।

एक जनें सें दो भले।

कहीं यात्रा में जाना हो तो एक से दो अच्छे।

एक जीव दो कठारा।

एक जीव, दो देह। घनिष्ठ प्रेम।

एक टका दायजो, नौ टका उपरंती।

दहेज में तो एक टका मिला, और पुरोहित को दक्षिणा देनी पड़ी नौ टका। लाभ से हानि अधिक।

एक तबा की रोटी, का छोटी का मोंटी।

समान वस्तुओं में छोटी-बड़ी का क्या प्रश्न।

एक तो गड़ेरिन[1] और लासन खायें।

(१—गड़रिया की स्त्री।) गंदगी में और भी गंदगी।

एक तौ बाई नाचनी और घुँघरू पैरें बाजनी।

एक तो नाचने का शौक, और ऊपर से पैरों में घुँघरू पहिन रखे हैं। फिर क्या पूछना? मनचीती हो गयी।

एके बऊ नाचनी ताय खेमटार बाजनी—**बंगला**

(एक तो बहू को नाचने का शौक, ऊपर से खेमटे के नृत्य की घुँघरू पहिन रखी है।)

एक तौ रोउत्तीं और मुंस नें मारो।

एक तो पहिले से रो रही थी, फिर पति ने मार दिया। रोने का और बहाना मिल गया। ऊँघते को ठेलते का बहाना।

एक थैलिया के चट्टा-बट्टा।

सब एक से। कोई घट-बढ़ नहीं।

एक दाँत कौ मोल करौ, बत्तीसऊ खोल दये।

व्यर्थ दाँत निकालने पर प्रयुक्त।

एक दिना कौ पावनों, दो दिना कौ पई[1], तीसरे दिना रये तौ बेसरम सई॥

(१—पथिक।) मेहमानदारी तो एक दिन की ही ठीक होती है, दो दिन रहे तो मुसाफिर है, और तीन दिन रहने वाला बेशरम।

एक दिन का पाहुना, दूसरे दिन अनखावना—**फैलन**

एक दोन दिवस पाहुणा, तिसरे दिवसीं लाजिरवाण—**मराठी**

एक नकटा सौ खों नकटा कर देत।

एक बुरा आदमी सौ को बुरा बना देता है।

एक नाइँ सौ दुख टारे।

एक नाहीं सौ दुख दूर करती है।

एक नाक वो छींक। काम बने भौत ठीक॥

छींक के संबंध में लोक-विश्वास। यदि एक नाक से एक के बाद एक, दो छींकें हों तो कार्य सफल होता है।

एक नारी सदा ब्रह्मचारी।

एक स्त्री वाला भी सदा ब्रह्मचारी ही माना जाता है।

एक पंथ दो काज।

किसी एक काम के लिए जाने पर दूसरा काम बनना अथवा दुहरा लाभ होना।

चलो सखी वहँ जाइये जहाँ मिलें ब्रजराज।
गोरस बेचन हरि मिलन एक पंथ दो काज।।

एक पाख दो गहना, राजा मरै कै सहना[1]।

(१—शहना। अ० शिहनः शासक, कोतवाल, कर-संग्रह करने वाला।)
ग्रहण के संबंध में लोक-विश्वास। यदि एक पखवारे में दो ग्रहण पड़ें तो राजा मरे या शासक।

एक पूत जिन जनमो माय। घर सूनो जो बाहर जाय।।

एक पुत्र का होना अच्छा नहीं। उसके बाहर जाने पर घर सूना रहता है।

पा० एक पूत जिन जनमों माय। घर रहै कै बाहर जाय।।
अेक घेर तो घेर मां नहि ने एक दीकरो तो दीकरा मां नहिं
ने से रुप्या ते रुप्या मां नहि। **—गुजराती**

एक पै एक ग्यारा।

एक के स्थान पर दो आदमी मिल जायें तो बड़ा काम कर सकते हैं। संघ में बड़ी शक्ति होती है।

एक बिछौना सोओ और आँग सें आँग लगै नईं।

कोई काम करो भी और उसके परिणाम से भी बचना चाहो, ये दोनों संभव नहीं।

एक बेर जोगी, दो बेर भोगी, तीन बेर रोगी।

योगी दिन में एक बार, और भोगी दो बार शौच जाता है, इससे अधिक बार जाय तो उसे रोगी समझना चाहिए।

एक म्यान में दो तरवारें नईं रतीं।

किसी एक ही वस्तु पर दो का अधिकार नहीं हो सकता।

एक म्यान में कैसें पटतीं, ईसुर दो तरवारें।

एक मिलै काना तौ लौट घरे आना।

रास्ते में काना मनुष्य मिल जाय तो फिर लौट कर घर आ जाना चाहिए। काने के संबंध में अंध-विश्वास।

एक साँड़ के हगें बिटा नइँ जुरत।

एक साँड के गोबर से कंडों का ढेर इकट्ठा नहीं होता।

एक रती[१] बिन नहीं रती कौ।

(१–रति, धन, प्रतिष्ठा।) मान-सम्मान के बिना मनुष्य कौड़ी काम का नहीं।

एक सो आदो, दो सो चार।

एक तो आधे के बराबर है, और यदि एक से दो हो जायें तो उनमें चार की शक्ति आ जाती है।

एक लिखता सौ बकता।

एक लिखने वाला, सौ बकने वाले के बराबर है। कलम में बड़ी ताकत होती है।

एक हर हत्या, दो हर पाप। तीन हर खेती, चौ हर राज॥

एक हल की खेती तो मुसीबत है, दो हल की पाप है, तीन हल की खेती को खेती कहा जा सकता है, और चार हल की खेती हो तो क्या पूछना, वह तो राज्य के तुल्य है। कृ०।

एक हात की तारी नइँ बजत।

झगड़ा कभी एक ओर से नहीं होता। दो मनुष्यों में यदि एक लड़ाकू न हो तो कभी लड़ाई नहीं हो सकती।

एकान्त बासा, झगड़ा न झाँसा।

अकेला रहना सबसे अच्छा।

ऐ

ऐरे-गैरे पचकल्यान[१]।

(१–घोड़े की एक किस्म। वह घोड़ा जिसके चारों पैर घुटनों तक शरीर के रंग से भिन्न हों और पैर का रंग थुथनी पर भी हो।) इधर-उधर के लतू आदमी।

ऐसी कईं कै धोई न छूटें।

ऐसी बात कहना जो मन में चुभ जाय।

ऐसी होतीं कातनहारी[1], तौ काय-खाँ फिरतीं आँग उघारीं।

(१—कातने वाली।) जो काम में चतुर न हो ऐसी स्त्री के लिए प्रयुक्त।

ऐसों बंज साव न करै। दानो खाय लीद हग भरै॥

बनिया ऐसा व्यापार नहीं करता कि जिससे लाभ के बजाय उलटे हानि हो।

इसकी एक कथा है कि किसी व्यक्ति को एक बनिये का रुपया उधार देना था। उनके चुकावरे में उसने बनिये को अपनी घोड़ी देनी चाही। इस पर बनिये ने कहा कि भाई मुझे तो अपने रुपये चाहिए। मैं ऐसी वस्तु को लेकर क्या करूँगा कि गाँठ का दाना खिलाना पड़े और बदले में लीद मिले।

ऐसी सुहागिन सें तौ राँड़ई भले।

बहुत अहसान से कोई वस्तु मिले तो उससे तो न मिलना अच्छा।

ऐसे जीबे सें तौ मरबो भलो।

किसी के कोई अत्यन्त अनुचित काम करने अथवा बहुत दुःखी होने पर प्रयुक्त।

ऐसें न मरे तौ जहर सें का मरे ?

किसी आदमी पर यदि कहने का असर न हो तो डाटने-डपटने या मारने से क्या होगा ?

ऐसे बूढ़े बैल कों कौन बाँध भुस देय।

अकर्मण्य व्यक्ति के लिए कहते हैं।

ऐसे होते कंत तौ काय कों जाते अंत।

यदि किसी योग्य होते तो घर छोड़ बाहर क्यों जाते ?

ओ

ओंधे मों डरे।

परास्त हुए पड़े हैं।

ओई पतरी में खायें, ओई में छद करें।

जिसका खायें उसी को हानि पहुँचायें।

ओई बाँस के डला टोकना, ओई के चलनी सूप।

उसी बाँस के डलिया-टोकरी बनता हैं, और उसी के चलनी-सूप। दो सगे भाइयों अथवा भाई-बहिनों में परस्पर प्रेम जताने के लिए कहते हैं।

बुन्देलखंड के प्रसिद्ध कथारौ गीत 'अमानसिंह कौ राछरौ' की एक पंक्ति। अमानसिंह, जो पन्ना के राजा थे, एक साधारण सी बात पर अपने बहनोई से अप्रसन्न होकर उसके विरुद्ध युद्ध की तैयारी करते हैं तब उनकी मां कहती है —

ओई बाँस के डला टोकना, ओई के चलनी सूप।
ओई कूँख के कैये राजा अमान जू, ओई कूँख की सहोद्रा बैन।

ओछी पूँजी खसमें खाय।

थोड़ी पूँजी धनी को खा जाती है।

ओछी पूँजी धणी ने खाय—**गुजराती**
छोट्टी पूँजी खसम खाँदा—**गढ़वाली**

ओझा कमिया, बैद किसान। आँड़ू बैल अर खेत मसान॥

ओझागिरी करने वाला हलवाहा, वैद्य किसान, बिना बधिया किया बैल, और श्मशान का खेत, ये चारों विपत्ति के कारण होते हैं।

ओर न छोर बड़ार[१] काय पै हो रई।

(१—भाँवर के दूसरे दिन की बड़ी पंगत।) विवाह का तो अभी कुछ ओर-छोर नहीं लगा, फिर पंगत की तैयारी किस बात पर हो रही है? पूरे प्रबंध के बिना किसी कार्य को शुरू कर देने पर प्रयुक्त।

ओली में गुर फोरबो।

लुके-छिपे काम करने का प्रयत्न।

ओस के चाटें प्यास नईं बुझत।

जहाँ अधिक की आवश्यकता है वहाँ थोड़े से काम नहीं चलता।

औंगन[1] बिना गाड़ी नईं ढँड़कत।

(१—गाड़ी की धुरी में लगायी जाने वाली चिकनाई जिससे पहिया आसानी से फिरे।) औंगन के बिना गाड़ी नहीं चलती। अर्थात पैसा दिये लिये बिना काम नहीं चलता।

घर चाही गाडा ओंगण वांचून चालत नाहीं—**मराठी**

औगुन तब खाँ सेंतिये, गुनें न पूँछे कोय।

अवगुण से तभी काम लो जब कोई गुण को न पूछे।

औसर के गीत औसर पै गाये जात।

अवसर के अनुकूल ही काम अच्छा लगता है।

औसर कौ चूको किसान और डार कौ चूकौ बँदरा।

किसान यदि अवसर पर काम करने और बंदर एक डाल से दूसरी डाल पर उछलते समय चूक जाय तो फिर वह सँभलता नहीं।

पा० असाड़ कौ....

औसर चूकी डोमनी,[1] गावे ताल बेताल।

(१—डोम की स्त्री)

जब कोई उत्तेजित होकर ऊट-पटांग काम करने लगे या बकने लगे तब प्रयुक्त।

औसर चूके पुन का पछतान।

स्पष्ट।

क

कंडी कंडी जोरें बिटा जुरत।

थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा करके बहुत होता है।

कन कन जोरें मन जुरै।

कंत न पूँछे बात मेरो धरो सुहागन नाँमें।

जब कोई झूठ-मूठ ही अपने को घर के मालिक का विश्वासपात्र बताये या अपने को घर का मालिक कहे तब प्रयुक्त।

कऊँ की इंट कऊँ कौ रोरा। भानमती[1] ने कुनबा जोरा॥

(१—ये दक्षिण देश की एक जादूगरनी थीं। कुछ लोग इन्हें राजा भोज की पत्नी भी बतलाते हैं।) इधर-उधर की वस्तु इकट्ठी करके कोई चीज तैयार करना।

कऊँ डूबे, कऊँ उखरे।

कहीं डूबे, कहीं निकले। कुछ कहा, कुछ किया।

कऊँ पनइँयन साँप मरे हैं?

कहीं जूतों से भी साँप मरे हैं? दुष्ट को मारने के लिए तो पूरा साधन चाहिए।

कओ बाई, काये पै रूठीं? कई—सूप चल्लाँ पैं।

पूछा—क्यों बहिन क्यों रूठी हो? कहा—सूप चलना पर। व्यर्थ रूठनेवाली स्त्री के लिए प्रयुक्त।

ककरा नच रओ।

बड़ा रौब-दाब है।

ककरा सें गाड़ी अटक गई।

नाम मात्र की बाधा से कार्य की प्रगति रुक गयी।

ककरी के चोर खों गतकन समझा लो।

ककरी के चोर को घूँसे मार कर ठीक कर लो। जैसा अपराध है वैसा दंड दे लो।

चाहिए कठोरता न एती बरजोर ऊधो,
काकरी के चोरन कटारी मारियतु है।

काकड़ीची चोरी बुक्यां चा मार।—**मराठी**
काकड़ी को चोर मुठगि धौ।—**गढ़वाली**
ककरिहा चोर का का गढ़िहा मारै?—**बघेली**

कखरी लरका गाँव गुहार।

घर में वस्तु रखी रहने पर भी बाहर तलाश करना।

कच्चौ काम।

ऐसा काम जो मजबूत नहीं।

कछवारें[1] बगार नईं लगत।

(१—तरकारी का खेत।) जहाँ का काम वहाँ ही किया जाता है। बघार हँड़िया में ही लगता है, कछवारे में नहीं।

कछू इन मूँछन की निभाओ।

कुछ मेरी भी लाज रखो।

कछू झार झरौ, कछू प्याँर झरौ।

कुछ झाड़ से दाना निकला और कुछ भूसे से ! कुछ तो काम पहिले हुआ और कुछ अब ! व्यंग में।

कछू बसंतन की खबर है !

कुछ आगे का भी ध्यान है।

कटी उँगरिया पै नईं मूतत।

कटी उँगली पर नहीं मूतता है। समय पर जरा भी काम नही आता है। लोगों का विश्वास है कि कटी उँगली पर तुरंत पेशाब करने से पीड़ा कम हो जाती है, और घाव भर जाता है। किसी व्यक्ति के समय पर काम न आने पर प्रयुक्त।

कटे पै नोंन मिर्च भुरकबो।

जले को और भी जलाना।

कठवा की हँड़िया एकई बेर चड़त।

काठ की हाँड़ी एक ही बार चढ़ती है।

कड़वारे के कोदों खायँ, ठसक के मारें मरी जायें।

उधार लेकर कोदों खाती हैं, फिर भी ठसक के मारे मरी जाती हैं।

कड़वारो काड़ तीजा करी।

उधार लेकर हरतालिका व्रत किया ! उधार लेकर काम चलाने वालों पर व्यंग।

कड़ाकड़ बजें थोथे बाँस।

निकम्मे और बातूनी आदमी के लिए कहते हैं।

कड़ी[1] मुराई ना मुरै, बरिन खाँ हाथ पसारें।

(१—कढ़ी, दही और बेसन से बना भोज्य पदार्थ।) कढ़ी तो दाँतों से चबाते नहीं बनती, पकौड़ियों को हाथ फैलाते हैं। छोटा काम तो बनता नहीं, बड़ा काम सिर पर लेना चाहते हैं।

कड़ी क दाँत नहीं, फुलैरी का हाथ पसा—रें—**बघेली**
रस गला लाग, हाड़ सुं हाथ पसारनुं—**गढ़०**
(शोरबा तो गले में अटकता है, हड्डी को हाथ फैलाते हैं)

कड़ी हमें खान दो कै बगराउन दो।

कढ़ी हमें खाने दो या फैलाने दो!
हमें कुछ न कुछ करने दो। जबर्दस्ती गले पड़ना।

कड़ेरे[1] कें ब्याव कुँदेरो[2] हात जोरत फिरे।

(१—कड़ेरा एक जाति। २—कुँदेरा एक अन्य जाति जो खराद का काम करती है।) कड़ेरे के यहाँ शादी और कुँदेरा हाथ जोड़ता फिरता है।

कड़ेरे कें लरका कुँदेरे कें बधाई।

बेमेल काम।

कतकी कोंरीं[1] टटोउत की करीं।

(१—कोंरी शब्द में श्लेष है। उसका एक अर्थ मुलायम है और पानी में उबाले हुए उन गेंहुओं को भी कोंरी कहते हैं जो शादी-विवाह के अवसर पर स्त्रियों को बाँटे जाते हैं।) कहने को मुलायम, पर टटोलने में कड़ी। अर्थात् व्यवहार में मधुर, पर हृदय की कठोर।

कतन्नी सी जीब चलत।

बहुत बातूनी।

कत्थर गुद्दर सोवें, मरजादी[1] बैठे रोवें।

(१—मर्यादा वाले, प्रतिष्ठावान्) जिनके पास ओढ़ने को फटे-पुराने च थड़े हैं वे उनमें ही सुख की नींद सोते हैं, परन्तु बड़े आदमी बैठे रोते हैं, इसलिए कि उनके पास कीमती कपड़े नहीं। तात्पर्य यह कि गरीबों का काम थोड़े में चल जाता है, अथवा संतोष बड़ी चीज़ है।

कथनी सें करनी बड़ी।

कहने की अपेक्षा काम करना अच्छा।

कथरी कौ मुड़ायछो[1] बाँदें, गुलाल खाँ ठिनके फिरें।

(१—पगड़ी के ऊपर बाँधा जाने वाला दुपट्टा।) कथरी का मुड़ायछा बाँध रखा है, और कहते हैं, हम भी गुलाल लगवायेंगे। किसी वस्तु के पाने का उपयुक्त अधिकारी न होने पर भी उसकी माँग करने पर।

कथरी के टोपी, अबीर के झोंका मारै—**बघेली**

कथा सुन भागत सुन, भौत भई खुसी।
हृदय ज्ञान लागो नहीं, चिन्ता राँड़ घुसी।।

चिन्ताग्रस्त आदमी को कोई बात नहीं सुहाती।

कनक न कंडा, कोरे गुंडा।

गाँठ में न आटा है, न ईंधन, शेखी बड़ी बघारते हैं।

कन कन जोरें मन जुरत।

कन कन जोरे मन जुरे, खाते निबरे सोय—**वृन्द**

कनवाँ सें कनवाँ नईं कई जात।

काने से काना नहीं कहा जाता।

कनवाँ सें कनवाँ कओ तुरतईं जावे रूठ।
हराँ हराँ कें पूछिये कैसें गई ती फूट।।

काने से काना कहने से वह तुरन्त नाराज़ हो जाता है। उससे तो धीरे-धीरे पूछना चाहिए कि भाई तुम्हारी यह आँख कैसे फूट गया।

कपड़ा पैरैं जग भाता, खाना खैये मन भाता।

वस्त्र दूसरे की रुचि का पहने और भोजन अपनी रुचि का करे।

कपड़ा पैरैं तीन बार, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्रवार।

नया वस्त्र पहिनने के संबंध में व्यवस्था।

राजस्थान में यह कहावत इस प्रकार प्रचलित है—कपड़ा पहरे तीन 'बार, मंगल, बुध अर थावरवार[1]'। (१—शनिवार।)

कपास तौ ओंटबेई कों बनो।

कपास तो ओटे जाने के लिए ही बना है। दीन-हीन तो पीड़ित होने के लिए ही बने हैं।

कपासमल कों तौ कऊँ उटने।

कपास को तो कहीं उँटना। दीन-हीन कहीं भी जायें, सर्वत्र उन्हें कष्ट उठाना है।

कपूत सें तौ निपूतेई भले।

कपूत से तो निपूते ही अच्छे।

कपूतन सें पिंड की आस!

अयोग्य पुत्र से सहायता की आशा व्यर्थ है।

कपूर खुआयें सत्त नईं चड़त।

कपूर खिलाने से सत्त नहीं चढ़ता। कुछ अपना भी गुण चाहिए।

किसी स्त्री या पुरुष के सिर जब देवी आती हैं तब उसके आगे कपूर का होम किया जाता है। फिर भी यदि देवी न आयें तो कपूर खिलाने से तो काम नहीं चल सकता। तात्पर्य यह कि जिसके सिर देवी आने वाली हैं उसमें भी कुछ पात्रता होनी चाहिए।

कफन कों बैठे।

कफन के लिए बैठे हैं। बिलकुल गरीब हैं। कफन के लिए भी पैसा नहीं।

कबसें राजा[१] ईसुर भये, कोदों के दिन बिसर गये।

(१—भैया के अर्थ में व्यंग्य में प्रयुक्त।) भैया कब से जगदीश्वर बन गये? क्या वे दिन भूल गये जब कोदों खाकर रहते थे। छोटा आदमी बड़े पद पर पहुँच कर डींग मारने लगे तब कहते हैं।

कभऊँ नाव गाड़ी पै, कभऊँ गाड़ी नाव पै।

भिन्न-भिन्न प्रकार के दो मनुष्यों को भी आपस में एक दूसरे की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। नाव जब बन कर तैयार हो जाती है तब उसे गाड़ी पर लाद कर ही नदी में ले जाते हैं और गाड़ी जब नदी पार उतारी जाती है तब नाव पर चढ़ा कर ही।

कभऊँ सक्कर घना, कभऊँ मुट्ठक चना।

कभी खूब शक्कर और कभी केवल मुट्ठी भर चने। संसार में सब दिन एक से नहीं जाते, ईश्वर जो कुछ दे उसी में संतोष करना चाहिए।

कदे घी घणा कदे मुट्ठी चना—राजस्थानी

कम कूबत गुस्सा ज्यादा।

कमजोर आदमी को गुस्सा अधिक आता है।

कमरा कमरा की गाँठ नईं लगत।

कम्बल कम्बल की गाँठ नहीं लगती। बड़ों में समझौता कराना कठिन होता है।

कमरी कौ खुड्ड मारें, अबीर कों ठिनकी फिरें।

किसी वस्तु के पाने के योग्य न होकर भी उसे माँगना।

कयें कयें धोबी गदा पै नईं चड़त।

आदमी कोई काम सदैव भले ही करता रहे, पर कहने से वही काम नहीं करता।

कयें खेत की सुनें खरयान की।

कुछ कहा जाय और कुछ समझा जाय।

देखति हौं ब्रज की लुगाइन भयौ धौं कहा,
खेत की कहे तें खरियान की समझतीं—ठाकुर

कर खेती परदेसे जाय। ताको जनम अकारथ जाय॥

खेती करके जो परदेश चला जाय उसका जन्म व्यर्थ जाता है, अर्थात् खेती के काम में सफल नहीं होता।

कर गुजरान गरीबी में।

गरीबी में संतोष से काम लेना चाहिए।

करघा छोड़ तमासें जाय। नाहक चोट जुलाहा खाय॥

अपना काम छोड़ कर दूसरे के झगड़े में पड़ने से हानि उठानी पड़ती है।

इसकी एक कथा इस प्रकार है—एक बार किसी शहर में, जो एक छोटी नदी के किनारे बसा हुआ था, खूब वर्षा हुई। उससे नदी में बाढ़ आ

10293

गयी। लोग बाढ़ का तमाशा देखने जा रहे थे। किसी जुलाहे से उसके मित्रों ने कहा—चलो तुम भी बाढ़ का तमाशा देखो । जुलाहे ने इन्कार किया और कहा कि करघे में थान चढ़ा हुआ है, और इस समय कुछ बूँदा-बाँदी भी हो रही है, परन्तु मित्रों के बार-बार कहने से विवश होकर वह भी उनके साथ हो लिया। जिस रास्ते वे लोग जा रहे थे उस पर एक पुराना मकान था। रास्ते में पानी जोर का बरसने लगा। जब वे उस मकान के नीचे होकर निकले तो संयोग से उसकी रास्ते की तरफ की दीवार उन पर गिर पड़ी। और लोग तो बच गये परन्तु गरीब जुलाहे को गहरी चोट आयी और बेचारा मरने को हो गया। लोग उसे चारपाई पर लाद कर घर लाये। इस पर वहीं एक व्यक्ति ने, जो इस सारे किस्से से परिचित था, उक्त वाक्य कहा।

करतब की विद्या है।

विद्या अभ्यास करने से आती है।

करता सें करतार हारो।

कर्मठ व्यक्ति के सामने ईश्वर भी हार मानता है।

कर तौ डर, ना कर तौ डर।

कोई बुरा काम करे तो डरे, न करे तो भी ईश्वर के कोप से डरता रहे। दोनों ओर संकट उपस्थित होने पर प्रयुक्त। कोई काम करो तो मुसीबत, न करो तो भी मुसीबत॥

कर देखो दगा, जो बच जाय सगा।

किसी को धोखा देना अच्छा नहीं, उससे सदैव हानि उठानी पड़ती है।

करनी के न करतूत के, खावे कों अढ़ाई सेर। (अथवा करनी न करतूत, खावें कों मजबूत।)

निकम्मे नौकर या लड़के के लिए प्रयुक्त।

करम छिपें ना भभूत रमायें।

साधू का वेश बना लेने पर भी बुरे कर्म नहीं छिपते।

करमन की गत कोऊ नें नईं जानी।

भाग्य का लिखा कोई नहीं जान पाता।

करम लौट जाय, पै खाद न लौटे।

कर्म में लिखा भले ही लौट जाय, परन्तु खेत में डाली गयी खाद व्यर्थ नहीं जाती। उसका अवश्य फसल पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

करमहीन खेती करैं। बैल मरें कै सूखा परैं॥

कर्महीन के कोई कार्य सफल नहीं होते।

करम बिनानो खेती करे, बलद मरै कै सुक्खण परे—गुजराती

कर लओ सो काम, भज लओ सो राम।

संसार में आकर जितना काम कर लिया और भगवान का जितना नाम ले लिया उतना ही अच्छा। आलस करना ठीक नहीं।

करिया अच्छर भैंस बरोबर।

अपढ़ के लिए प्रयुक्त।

करिया के आँगें दिया नईं जरत।

काले सर्प के आगे दीपक नहीं जलता। अर्थात धूर्त्त व्यक्ति के सामने किसी की नहीं चलती। लोगों का विश्वास है कि काले सर्प के आगे दीपक बुझ जाता है।

करिया कौ मंत्र मिल जै, पै गड़ेंता[१] कौ नईं मिलत।

(१—एक जाति का जहरीला सर्प, जिसके शरीर पर पूँछ से लेकर सिर तक सफेद अथवा हलके पीले रंग के घेरे पड़े रहते हैं। कहीं-कहीं इसे कौड़ीला और कहीं चित्ती कहते हैं। बंगाल में यह करैत के नाम से प्रसिद्ध है। यह शान्त प्रकृति का, परन्तु फणधर की अपेक्षा कहीं अधिक जहरीला होता है और चुपचाप काटता है।) काले सर्प का मंत्र मिल जाता है, परन्तु गड़ेंता का नहीं मिलता। अतः धोखे से गहरी मार मारने वाले व्यक्ति के लिए कहावत का प्रयोग करते हैं।

करिये मन की, सुनिये सब की।

बात सब की सुननी चाहिए, परन्तु करनी मन की चाहिए।

करी और करकें न जानी।

एक तो खोटा काम किया और फिर वह भी चतुराई से नहीं।

करा और करन जाना मैं होती तौ कर दिखाती।—**फैलन**

करी कराई सब माटी में मिला दई।

बना-बनाया काम बिगाड़ दिया।

करी कमाई खो बैठे।

परिश्रम व्यर्थ गया।

करी न खेती, परे न फंद। घर घर डोलें मूसरचंद॥

काम में मन न लगाने वाले अल्हड़ और स्वतंत्रता-प्रिय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

करील कौ काँटो, साढ़े सोरा हात लाँबो।

गप्प हाँकना।

करुआ[१] तरें ठाँड़े।

(१—नीम का वृक्ष। एक ग्रामीण देवता, जिनका निवास नीम अथवा आम के वृक्ष पर माना जाता है। इसके संबंध में एक दोहा है—

आम नीम करुआ बसै, ऊमर बसत मसान।
भैंसासुर डाबर बसें, सिंह जु प्यासे जायँ।)

शपथ के रूप में कहावत का प्रयोग होता है कि हम करुआदेव के वासस्थल के नीचे खड़े हैं जो झूठ बोलते हों।

करें न धरें सनीचर लगो।

कुछ करते-धरते तो हैं नहीं, ग्रहों को दोष देते हैं।

करेला और नीम चढ़ो।

एक तो किसी मनुष्य का स्वभाव पहले से ही खराब हो, और फिर कुसंगत में पड़ कर अथवा ऊँचा पद पाकर वह और भी खराब हो जाय तब कहते हैं।

एक त (अ) तितलउकी दूसरे चढ़लि नीमी पर—**भोज०**

करें बनत कै दयें बनत।

कोई काम या तो स्वयं अपने हाथ से करने से होता है अथवा पैसा देने से।

करौ खेती और भरो दंड।

खेती करो और लगान दो, अथवा नाना प्रकार की अन्य मुसीबतें सहो।

कसाई कौ सुकैनों और पड़ा खा जाय !

कसाई का धूप में सूखने डाला गया अनाज जानवर खा जाय, यह कैसे संभव है ? टेढ़े आदमी का अनिष्ट करने से सब डरते हैं।

कहता सो कहता, सुनता सरेख चाहिए।

बात कहने वाला तो ठीक है, परन्तु सुनने वाला भी सुघड़ चाहिए।

कहते हैं करते नहीं बे हैं बड़े लबार।

कह कर जो करते नहीं वे बड़े झूठे हैं।

कहूँ कहूँ गोपाल की गई सिटल्ली भूल।

काबुल में मेवा कियो, ब्रज में कियो करील।

जिस वस्तु की जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ वह न हो, और अन्यत्र प्राप्त हो तब प्रयुक्त।

कहै दुरकन[1] सुन पिय काँस[2]।
तुम लागौ दतुआ[3], हम लागै पाँस[4]।
बड़ै बड़ै बैल खुटारी[5] पाँस।
का करै दुरकन का करै काँस।

(१—एक प्रकार की मजबूत बेल जिसकी जड़ें बड़ी गहरी जाती हैं, और जो खेत में फैलकर फसल को हानि पहुँचाती है। २—एक प्रकार की घास। ३—बखर में लगे हुए लकड़ी के खूँटे, जिनमें पाँस फँसी रहती है। ४—बखर में लगी हुई लोहे की चौड़ी धारदार पत्ती जो लगभग ३० अंगुल लंबी और ५ अंगुल चौड़ी होती है। ५—ऊँची धार वाली।)

दुरकनू कहती है कि हे प्रियतम काँस सुनो, तुम तो बखर के दँतुआ से चिपटो और मैं पाँस में फँसूँगी, जिससे खेत में जोताई बखराई न हो पाये। इस पर किसान कहता है—मेरे बड़े-बड़े बलवान बैल हैं और पाँस भी मजबूत धार वाली है, मेरा क्या तो दुरकनू बिगाड़ सकती है, और क्या काँस ?

काँ कौ पँवारो लगाओ।

कहाँ का पँवारा लगाया ? अर्थात कहाँ का लंबा-चौड़ा किस्सा छेड़ दिया !

काँख कौ बाघ हो गओ।

घर का आदमी ही शत्रु बन गया।

काँख बल सो निज बल।

अपने शरीर का बल ही सच्चा बल है।

काँटे की तौल।

बिलकुल ठीक बात।

काँटे से काँटो निकरत।

काँटे से काँटा निकलता है। जैसे को तैसा मिल जाय तभी काम चलता है

कण्टकेनैव कण्टकम्—**सं०**

काँटे सें काँटो बिदो।

काँटे से काँटा बींधा है। मामला अटक गया है। जैसे को तैसा मिल गया है।

काँटो साले करील कौ, उर बदरौटा घाम।
लरका साले सौत कौ, उर साजे कौ काम॥

करील का काँटा, बदली का घाम, सौत का लड़का और साझे का काम, ये चारों कष्टदायक होते हैं।

काँठे[1] सें पूँछ नइयाँ, चेंरिया[2] नाव।

(१–जानवर की रीढ़ की हड्डी का वह स्थान जहाँ से पूँछ शुरू होती है। २–वह गाय जिसकी पूँछ का सिरा सुरा गाय की पूँछ के बालों की तरह श्वेत तथा शरीर का रंग उससे भिन्न हो। चँवरी।) काँठे से तो पूँछ नहीं, फिर भी नाम है चँवरी। नाम के अनुसार गुण नहीं।

काँधें कबरा पुट्ठन सेत, इनके बये जमे ना खेत।

जो बैल कंधे पर चितकबरा और पुट्ठों पर सफेद हो उसके बोये हुए बीज नहीं जमते। तात्पर्य यह कि इस तरह का बैल बड़ा कमजोर होता है और उसके द्वारा जोताई-बोवाई का कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न नहीं किया जा सकता। विचार त्याग दिया हो ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

काँ राजा भोज, काँ डूँठा तेली।

कहाँ राजा भोज, कहाँ डूँठा तेली।

जब दो व्यक्तियों अथवा दो वस्तुओं में कोई समानता न हो तब व्यवहृत।

यह कहावत हमारे देश के विभिन्न प्रांतों में विभिन्न रूपों में प्रचलित है। ये सब रूप यहाँ दिये जा रहे हैं।

कोथाय राजा भोज कोथाय गंगाराम तेली—बंगला
कहाँ राजा भोज कहाँ गंगु तेली—मराठी
कठै राजा भोज, कठै गांगलो तेली—राजस्थानी
कां राजा भोज कां गंगवा तेली—कुमायुँनी

काँ राम राम काँ टें टें।

जहाँ दो बातों की कोई तुलना न की जा सके, एक अधिक अच्छी और दूसरी नितान्त बुरी हो।

काँसे[1] कौ सुर काँसे मँई रन दो।

(१–एक मिश्रित धातु जो ताँबा और जस्ते के संयोग से मिल कर बनती है; कसकुट। इसके बने बर्त्तन थोड़ी सी ठोकर लगने से खनकते हैं।) काँसे का सुर काँसे में ही रहने दो, अर्थात घर की बात घर में ही रहने दो, बाहर उसको प्रकट करना ठीक नहीं।

काऊ की बऊ, कोऊ बरा[1] बदलावे।

(१–टेहुनी से ऊपर हाथ में पहिनने का चाँदी या सोने का आभूषण।) किसी की बहू और कोई शराफ की दूकान पर उसका बरा बदलवाने जाय। जब कोई अनुचित रूप से किसी के काम में हस्तक्षेप करे, अथवा बुरी नीयत से किसी की सहायता को उद्यत हो।

काऊ खों भटा बायले काऊ खों पित्त करें।

बैंगन किसी के लिए तो वायुवर्द्धक होते हैं और किसी की भूख बढ़ाते हैं।

एक ही वस्तु किसी के लिए हानिकर और किसी के लिए गुणकारी होती है।

पा० काऊ खों भटा बायले काऊ खों पथ्य बिरोबर

कागज को भसम किन भसमन में। करौ खसम किन खसमन में।।

कागज की भस्म की जिस प्रकार कोई गिनती नहीं, उसी प्रकार किया हुआ दूसरा पति भी किस गिनती में ? अर्थात वह किसी काम का नहीं।

कागद के फूल।

बनावटी चीज़।

कागद थोरो हित घनो।

कागज में स्थान इतना कम है कि लिख कर प्रेम प्रकट नहीं किया जा सकता।

कागद होय तौ बाँचिये, करम न बाँचे जायें।

कागज में लिखे हुए को तो पढ़ा जा सकता है, परन्तु कर्म में लिखे को कोई नहीं पढ़ सकता। एक लोकगीत की कड़ी।

यह कहावत ठीक इसी रूप में, थोड़े से शब्द परिवर्त्तन के साथ, गुजरात में भी प्रचलित है।—

तन खाँ होय तो तोड़िअे रे, प्रीत न तोड़ी जाय।
कागज होय ते बाँचिअे रे, करम न बाँचा जाय।

का खाँड़ के घुल्ला[1] हौ जो कोऊ घोर कें पी लै (ए)।

(१—घोड़ला, घोड़ा। मकर-संक्रान्ति के अवसर पर बनने वाले शक्कर के घोड़े और खिलौने।) क्या शक्कर के खिलौने हो जो कोई घोल कर पी लेगा ?

जब कोई मनुष्य अतिरिक्त लज्जावश किसी के सामने जाने में संकोच करे तब उसके लिए प्रयुक्त।

काछें काछ और, नाचें नाच और।

एक काम के लिए कमर कसी और दूसरा करने लगे।

काजर की कोठरी में कैसोहू सयानो जाय,
एक रेख काजर की लागि है पै लागि है।

बुरे के साथ बुराई हाथ आती ही है।

काजर लगाउतन आँख फूटी।

काजल लगाते आँख फूटी। अच्छा करते बुरा हुआ।

काजर सब कोऊ लगाऊत पै चितवन में फरक होत।

काजल सब लगाते हैं, पर चितवन में फर्क होता है।

अनियारे दीरघ नयन किती न तरुनि समान।
वह चितवन औरे कछु जिहि बस होत सुजान॥——**बिहारी**

काटन लागे चारौ, जैसोइ जेठ तैसोइ बसकारो।

जब घास ही काटने बैठे तो जैसी जेठ मास की कड़ी धूप, वैसी ही वर्षा की झड़ी। जब छोटा काम ही करने लगे तो कष्टों का क्या विचार?

काटबो छोड़ दओ तौ फुंकारत तौ जाओ।

काटना छोड़ दिया तो फुंकारते तो जाओ, अर्थात थोड़ा-बहुत भय तो दिखाते जाओ!

इसकी एक कथा है कि एक समय किसी सर्प ने एक साधू के उपदेश से काटना बिलकुल छोड़ दिया। इस पर लोग उसे बड़ा तंग करने लगे। जो आता ढेला मारता। गुरू को जब इसका पता चला तो उन्होंने कहा, भाई काटना छोड़ दिया, ठीक किया। परन्तु थोड़ा-बहुत फुंकारते जाया करो, जिससे लोग तुमसे डरते रहें, क्योंकि उसके बिना दुनिया में काम नहीं चलता।

काटे कटै, न मारें मरै।

किसी वस्तु से किसी प्रकार पिंड न छूटना।

काठ छीलो चीकनो, बात छीलो रूखो।

बाल की खाल निकालना ठीक नहीं।

काड़-मूँस कें कड़आ देय, फूटे घर खाँ तारौ।
सारे संगे बहिनी पठवे, तीनऊँ कौ मों कारौ॥

जो कर्ज लेकर कर्ज चुकाये, फूटे घर में ताला दे, और साले के साथ बहिन भेजे, ऐसे तीनों मनुष्य अंत में हानि उठाते हैं।

कातिक जो आँवर तर खाय। कुटुम सहित बैकुंठे जाय॥[1]

१—कातिक के महीने में आँवला विशेष रूप से पवित्र माना जाता है। कार्त्तिक-स्नान के दिनों में स्त्रियाँ उसकी पूजा करती हैं और आँवला-नौमी तथा देवोत्थान एकादशी को उसके नीचे भोजन करने जाती हैं।

कातिक भोर दिवारी, ठेलमठेल करै ब्यारी।

कातिक बीतने के बाद खूब भर पेट ब्यालू करै तौ भी उससे कोई हानि नहीं होती, क्योंकि रातें बड़ी होने से भोजन पच जाता है।

कानखजूरे कौ एक गोड़ो टूट जाय तौं लूलौ नईं हो जात।

कानखजूरे का एक पैर टूट जाय तो वह लँगड़ा नहीं हो जाता। बड़े आदमी का यदि थोड़ा बहुत नुकसान हो जाय तो वह उसे नहीं अखरता।

घोणीचा एक पाय मोडला तरी लँगड़ी होत नाहीं।—मराठी

कान छिदाय सो गुर खाय।

जो कष्ट उठायेगा उसे आराम भी मिलेगा।

कान-धरी छेरी।

ऐसा मनुष्य जो पूर्णरूप से दूसरे के वश में हो और जो कहा जाय वही करे। प्राय: क्वाँरी लड़की के लिए प्रयुक्त। बकरी का कान पकड़ लेने से वह फिर भागने नहीं पाती।

कान में ठेंठे लगा लये।

अर्थात किसी की बात नहीं सुनते। अथवा सब ओर से तटस्थ हैं।

कानी अपनो टेंट[1] तौ निहारै नईं, औरन की फुली[2] पर पर झाँके।

(१—आँख पर का उभरा मांस-पिंड। २—आँख पर का सफेद धब्बा जो चोट लगने अथवा चेचक में आँख के नष्ट होने पर पैदा हो जाता है।) कानी अपना टेंट तो देखती नहीं, दूसरे की फुली लेट-लेट कर झाँकती है। स्वयं अपना बड़ा दोष न देख कर दूसरे की साधारण त्रुटि को देखते फिरना।

कानी की आँख में कुस गओ, कानी कों मिस भओ।

कानी की आँख में तिनका गया तो उसे बहाना मिल गया कि तिनके से मेरी आँख फूट गयी।

कानी के ब्याव में सौ जोखों।

जिस कार्य के पूरा होने में शंका हो उसमें विघ्न भी बहुत पड़ते हैं।

कानी खों कानोईं प्यारो, रानी खों राजा प्यारो।

अपना आदमी सबको प्रिय होता है।

कानी बिटिया खुटइँ खुटें गई।

कानी लड़की खुटे-खुटे ही अर्थात टोके-टोके ही गयी। एक तो काना होना ही बुरा, फिर हर आदमी पूँछता है कि आँख कैसे फूट गयी।

काबुल गये मुगल बन आये बोलन लागे बानी।
आब आब कर मर गये खटिया तर रओ पानी।

जब कोई अपने घर में इस प्रकार की भाषा बोले जिसके सुनने के लोग अभ्यस्त न हों तब कहते हैं।

काबुल में का गधानीं नईं होत ?

काबुल में क्या गधे नहीं होते ? जानकारों में भी मूर्खों की कमी नहीं होती।

काम खों काम सिखा लेत।

काम करने से ही काम करना आ जाता है।

काम के न दंद के डेढ़ सेर अन्न के।

निकम्मे और निठल्ले व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

कामकाज कूँ थर-थर काँपै, खाने कूँ मरदानी—ब्रज०

काम के नाव बज्जुरवारी चढ़त।

काम के नाम से वज्र-ज्वर चढ़ता है, ऐसा आलसी है।

काम परे कछु और है काम सरे कछु और।
तुलसी भाँवर के परे नदी सिरावत मौर॥

काम निकल जाने पर आदमी का रुख बदल जाता है।

काम परे पै जानिये जो नर जैसो होय।

काम पड़ने पर ही मनुष्य की पहिचान होती है।

काम प्यारो होत, चाम प्यारो नईं होत।

काम प्यारा होता है, आदमी की सूरत शकल नहीं। प्रायः ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो मनोनुकूल काम नहीं करता।

का मरतनइँ साईं[1] पर जै (ए)।

(१–ढोरों के सड़े हुए घाव में पड़ने वाला एक कीड़ा।) क्या मरते ही साई पड़ जायगी? अर्थात क्या कार्य इतने शीघ्र बिगड़ जायगा कि सँभाला न जा सके।

काम में काम नइँ।

काम में काम नहीं। साधारण से काम को बड़ा बताना।

काम सरौ, दुख बिसरौ।

काम निकल जाने पर दुख भूल जाता है।

काम सरा दुख बीसरा, छाछ न देत अहीर।

काया राखें धरम।

शरीर बना रहे तभी धर्म की रक्षा होती है।

शरीरमाद्यं खलु धर्म्म साधनम्
(धर्म करने का मुख्य साधन शरीर ही है)

कारज धीरें होत है काहे होत अधीर।

धैर्य धारण करने से ही काम बनता है।

कारी कबरी कछू तौ करौ।

अर्थात मुँह से कुछ कहो या करो तो।

कारे कोसन।

काले कोसों, अर्थात बहुत दूर।

काल करंता आज कर, आज करंता अब्ब।
पल में परलै होत है, फेर करेगा कब्ब॥

जिस काम को करना है उसे तुरंत करना ही चाहिए।

काल की काल सें लगी।

कल की कल से लगी। आज का काम आज देखो, कल का कल देखा जायगा।

काल के जोगी कलींदे कौ खप्पर।

जब कोई तुच्छ व्यक्ति बड़े आदमियों का अनुकरण करे।

ये अब सूबहु आवैं सिवा पर, 'कालिह् के जोगी कलींदे को खप्पर'—**भूषण**

तिन दिनेर जोगी तार पा पर्यन्त जटा।—**बंगला**

(तीन दिन के जोगी और पैर तक जटा)

काल के दिन तेर करबो।

किसी प्रकार समय काटना। मौत की घड़ी गिनना।

काल के हात कमान, बूढ़ौ बचै न ज्वान।

मृत्यु से कोई नहीं बचा।

काल कौ भरोसो आज नइयाँ।

कल क्या होगा इसका आज भी ठीक निश्चय नहीं किया जा सकता, फिर पहिले से उसका निश्चय तो और भी कठिन है।

काल की कौनें जानी।

कल क्या होने वाला है इसे कौन जान सकता है?

किलो फतें कर आय।

किला फतह कर आये। बड़ा भारी काम कर आये। प्रायः व्यंग्य में प्रयुक्त।

किसमत कौ खेल है।

सब भाग्य का खेल है।

की की छाती में बार हैं?

किसकी छाती में बाल हैं? अर्थात कौन इतना वीर है? प्रायः चुनौती के रूप में प्रयुक्त।

कौनें अपनी मताई कौ दूद पिओ।

किसने अपनी माँ का दूध पिया है? कौन इतना बहादुर है?

कौनें तुमें पीरे चाँवर दये ते?

तुम्हें पीले चावल किसने दिये थे? अर्थात तुम्हें यहाँ कौन बुलाने गया था?

ब्याह आदि में पीले चावल और हल्दी की गाँठ देकर सगे-संबंधियों को न्योतने की प्रथा बुन्देलखंड में प्रचलित है। उसी से कहावत बनी। जब कोई

अनधिकृत रूप से दूसरे के काम में हस्तक्षेप करने पहुँच जाय और मना करने पर भी न माने तब कहते हैं।

कील काँटे सें दुरुस्त।

पूरी तरह तैयार।

कुअन में बाँस डारबो।

कुओं में बाँस डालना। किसी वस्तु की गहरी छानबीन करना।

कुआ की छाँयरी कुअई में रत।

कुएँ की छाया कुएं में ही रहती है। बड़े आदमियों के घर की बात घर में ही रहती है, बाहर नहीं जा पाती।

बात प्रेम की राखिये अपने मन ही माँहि।
जैसे छाया कूप की बाहर निकसत नाँहि।—वृन्द

कुआ की माटी कुअई खों नईं होत।

कुआँ खोदने पर जो मिट्टी निकलती है वह कुएँ में ही लग जाती है। जहां का पैसा वहीं खर्च हो जाता है।

दराची माती दरास पूरत नाही —**मराठी**
(गड्ढे की मिट्टी गड्ढे के लिए पूरी नहीं होती)

कुआ के मेंदरे।

कुएँ का मेंढक। अनुभवहीन व्यक्ति।

कुआ कौ गिरौ सूको नईं कड़त।

कुएँ में गिरा सूखा नहीं निकलता। बुरा काम करने पर कुछ-न-कुछ बदनामी हो ही जाती है।

कुआ में भाँग परी।

सबकी बुद्धि मारी गयी है।

कुआ-बावरी नाँकत फिरत।

कुआँ-बावरी लाँघते फिरते हैं। मारे-मारे फिरत हैं।

कुजाँगा खाता और ससुर बैद।

बुरे स्थान पर फोड़ा हुआ है और इलाज करना है ससुर को! किसी लज्जा-जनक बात को किसी के आगे प्रकट न किया जा सके, पर किये बिना काम भी कैसे चले?

कुजगा दुखणो जेठाणो बैद—**गढ़वाली**
कुठोड़ खाई रे सुसरो वैद—**राजस्थानी**
अडचणीचें ठिकाणीं दुःख आणि जांवई वैद्य—**मराठी**
(अड़चन के स्थान पर पीड़ा और जमाई वैद्य)

कुटी दबाई और मुड़ो सन्यासी।

पिसी दवा और मुड़ा सन्यासी (इनको पहिचानना कठिन है।)
वैद्याचें वाटलें आणि सन्याशाचें मुंडलें कोणास समजत नाहीं—**मराठी**

कुठिया[१] धोएँ काँदो हात।

(१—अनाज रखने का मिट्टी का कुठीला।) कुठिया धोने से केवल कीचड़ हाथ आती है। छोटे आदमी को तंग करने से कोई लाभ नहीं होता।

कुतियाँ प्रागै जेयँ तौ हँड़िया को चाट?

कुतियाँ प्रयाग जायेंगी तो फिर हाँड़ी कौन चाटेगा? यदि छोटे आदमी बड़ा काम करने लगें तो फिर छोटों का काम कौन देखेगा?

सकल कुकुर स्वर्गे जावे कारा तवे एँटो खावे—**बंगला**

कुत्तन के भिरे में कनक कौ दिया।

कुत्तों के बीच में कनक का दिया! यदि रख दिया जाय तो वे उसे तुरंत खा जायेंगे।

कुत्ता की चाल जाओ, बिलैया की चाल आओ।

शीघ्र जाओ, शीघ्र आओ।

कुत्ता की पूँछ बारा बरसें पुंगरिया में राखी, जब निकरी तब टेड़ी की टेड़ी!

कुत्ते की पूँछ बारह वर्ष तक नली में रखी गयी, परन्तु जब निकली तब टेढ़ी की टेढ़ी। किसी मनुष्य की बुरी आदत कठिनाई से छूटती है।

कुकुरेर लेज घि दिये उल्लेओ सोजा हय ना—**बंगला**
(कुत्ते की पूँछ घी लगा कर सूँतने से भी सीधी नहीं होती)
कुत्र्याचें शेंपुट किती ही दिवस नलकांडयांत घातलें तरी अखेरीस वांकडें तें वांकडें—**मराठी**
कुतरांनी पुछडी छ महीना नली मां (अथवा भोंय मां) राखे, तो पण वांकी ने वांकी—**गुजराती**
कूकुर के पोंछ बारह बरस गाड़ी तबहू टेढ़ के टेढ़—**भोजपुरी**

कुत्ता के पेट में घी नईं पचत।

ओछे आदमी के पेट में कोई बात नहीं रहती। अथवा ओछे के पास पैसा हो जाय तो वह उसे छिपा कर नहीं रख सकता।

कुत्ता खों ईंटई सूजत।

कुत्ते को ईंट ही सूझती है। बुरे का ध्यान बुरी ओर ही जाता है।

कुत्ता घसीटी में परबो।

ऐसे काम में पड़ना जिसमें व्यर्थ की खींचातानी सहनी पड़े।

कुनेंते[१] से पड़ा बँधो।

(१—कुनेंता धान दलने की चक्की जिसका नीचे का पाट मिट्टी का और ऊपर का पत्थर का होता है। यह हौले से चलायी जाती है। उसे पड़ा अथवा किसी अन्य जानवर से खिंचवाना मूर्खता है।) कुनेंते से पड़ा बँधा है, अर्थात दो वस्तुओं का बेमेल जोड़ है।

कुमाँर कभहुँ साजे बासन में नईं खात।

कुम्हार कभी अच्छे बर्त्तन में खाना नहीं खाता। अच्छे और साबित बर्त्तन वह बेचने के लिए रखता है।

कुम्हेंड़े कैसे जउआ[१]।

(१—लौकी, कद्दू आदि के मादा-फूल की बौंड़ी।) कुम्हड़े के जौए की तरह सुकुमार।

कुरयाऊ हाट लगी।

कोरियों की हाट लगी है। अर्थात बड़ा शोरगुल हो रहा है।

कुरयाने पावन भई।

कोरियों के मुहल्ले में त्यौहार हुआ। विलक्षण बात हुई।

कूकुर कौ मुंस लड़इया[1]।

(१–गीदड़।) एक के लिए दूसरा बढ़ कर।

कै कढ़ें मरम मिलत, कै मरें।

या तो स्वयं करने से किसी बात का ज्ञान प्राप्त होता है, या फिर अपने को बिलकुल खपा देने से।

कैंकरे कौ जाव माटी कुकेरत।

केंकड़े का बच्चा पैदा होते ही मिट्टी कुरेदता है। जिसका जो जन्मगत स्वभाव होता है वह नहीं छूटता।

कै उठैं, कै भाँवर पारैं।

किसी काम के लिए जल्दी मचाना।

कै खाय घोड़ा, कै खाय रोरा।

या तो घोड़ा रखने में खर्च होता है, या मकान बनवाने में।

कै नौ मैदा की, कै फिर ठनका की।

या तो नौ मैदा की चाहिए, या फिर बिलकुल भूखे रहेंगे।

खाईनतर तुपाशीं नाहीं तर उपाशी—**मराठी**

(खायेंगे तो चुपड़ी नहीं तो उपासे)

कै बर्स भीतरी, कै बर्स तीसरी।

द्विरागमन के संबंध में प्रचलित नियम कि वह या तो विवाह के उपरान्त एक वर्ष के भीतर हो जाना चाहिए, अथवा फिर तीसरे वर्ष।

कै बसै हजारी, कै बसै कबाड़ी।

बड़े शहर में या तो धनाढ्य ही रह सकता है या फिर कबाड़ी।

कैबे की लाज, न सुनबे की सरम।

निर्लज्ज के लिए।

कँबे कँबे में भाँत है।

बात के कहने-कहने में अन्तर होता है।

कँ सोवे राजा कौ पूत, कै सोवे जोगी अबधूत।

संसार में राजा-महाराजाओं या जोगी अवधूतों को छोड़ कर ऐसे बहुत कम मनुष्य होते हैं जिन्हें कोई चिन्ता न हो।

कँ हंसा मोती चुगे, कै लंघन मर जाय।

बड़े आदमी अपनी आन-बान को नहीं छोड़ते।

कोऊ कौ घर जरै कोऊ तापै।

किसी की तो हानि हो और कोई दूसरा उससे लाभ उठाये।

कोऊ कौ मों चलै कोऊ कौ हात चलै।

कोई गाली बकता है तो कोई मार बैठता है।

कोणाचें तोंड चालतें कोणाचें हात चालतो—**मराठी**

केअरी जीभ चालै केओीरा हाथ चालै—**गुजराती**

कोऊ गिनें ना गूँथे, मैं लालन की बूआ।

कोई मनुष्य जब जबर्दस्ती किसी विषय में अपनी टाँग अड़ाये तब।

आवै न जावै हूँ लाडैरी भूवा—**राज०**

कोऊ नाचै कैसउई, ऊधौ नाचें ऊसउईं।

कोई किसी प्रकार नाचे, पर ऊधौ तो उसी प्रकार नाचेंगे, अर्थात अपनी टेक नहीं छोड़ेंगे; बार-बार वही बात कहेंगे।

कोऊ मताई के पेट सें सीक कें नईं आऊत।

कोई माँ के पेट से सीख कर नहीं आता। अर्थात करने से ही सब काम आता है।

कोऊ मरै काऊ कौ घर भरे।

किसी की हानि से किसी को लाभ होना।

कोऊ मरै कोऊ मलार गावै।

कोई तो विपत्ति से मर रहा है और कोई मल्हार गाता है। संसार में कोई दुखी है तो कोई सुखी।

कोऊ मरै, कोऊ मोरीं बाँधै।

कोई तो मरता है और कोई उसे जलाने के लिए लकड़ियों का बोझ बाँध कर ले जाता है। संसार की विचित्र गति है।

कोऊ राजा कौ सारो, कोऊ रानी कौ सारो।

कोई राजा का निकट संबंधी है तो कोई रानी का। किसको प्रसन्न किया जाय ? किस किस की बात मानी जाय ?

कोऊ रोबे मुँड़ावनी, कोऊ रोबे मूँड़।

सब अपना-अपना दुख रोते हैं।

कोठन कोठन जी दुकाउत।

कोठे-कोठे जी छिपाते हैं। काम से जी चुराते हैं। जिम्मेवारी से भागते हैं।

कोठे कोठे की बुद्धि।

अपनी-अपनी बुद्धि।

कोढ़ और कोढ़ में खाज।

विपत्ति में और विपत्ति।

कोदन की रोटी और कल्लू लुगाई।
पानी के मयरे[1] में राम की का थराई।।

(१–महेरा, मट्ठे के साथ पकाया गया ज्वार या मक्के का दलिया जिसे गुड़ या नमक-मिर्च के साथ खाते हैं।) कोदों की रोटी, काली-कलूटी स्त्री और मठे की जगह पानी में पका महेरा, भला इसमें भी राम का क्या अहसान ?

कोरी की बिटिया केसर कौ तिलक।

हैसियत के विरुद्ध काम।

कोरी की भैंस ने कबै पसर[1] चरी।

(१–प्रसर, विस्तार, खुला मैदान। ढोरों को रात्रि के समय खुले मैदानों अथवा खेतों पर ले जाकर स्वतंत्रतापूर्वक चरने के लिए छोड़ देने को पसर चराना कहते हैं। पसर प्रायः चोरी से ही चरायी जाती है। दूसरों के खेतों की मेंड़ों पर चुपचाप ढोर छोड़ दिये जाते हैं।) कोरी की भैंस में

इतना साहस कहाँ जो रात्रि में दूसरों के खेतों पर घास चरने जा सके ? सीधे और दब्बू मनुष्य से साहसपूर्ण कार्य की आशा व्यर्थ है।

कोरी कें बियाव कड़ेरो[१] पर पर जाय।

(१–बाँस की लाठी आदि बेचने वाली एक जाति।) कोरी के यहाँ तो विवाह है और कड़ेरा लोगों की खुशामद करता फिरता है। काम तो किसी का अटका है और चिन्ता दूसरे को है।

काजी जी दुबले क्यों, शहर के अंदेशे।

कोरी कें लरका खों सरगई में बेगार।

कोरी के लड़के को स्वर्ग में भी बेगार। गरीबों और सीधे-सादे लोगों की हर जगह मुसीबत।

ढेंकी स्वर्गे गेलेओ धान भाने—**बंगला**
(मूसल स्वर्ग में जाकर भी धान कूटता है)

कोरी कौ सुआ का पढ़ै ?—तगा-पौनी।

कोरी का तोता क्या पढ़ता है ?—सूत और पौनी ? जो जिसका धंधा होता है उसके घर में उसी की चर्चा रहती है।

कोरी कौ बेगारी कुचबँदिया[१]।

(१–बुन्देलखंड की एक घुमक्कड़ जाति जो मूँज की रस्सी, सींके तथा कोरियों के काम आने वाले कूँच आदि बना कर जीवन-निर्वाह करती है। ये लोग धीरे-धीरे अब मजदूरी और खेती करने लगे हैं।) कोरी को जब बेगार के लिए किसी की आवश्यकता होती है तब वह कुचबँदिया को पकड़ता है। जैसे को तैसा मिल ही जाता है।

कोरे के कोरे रैं गये।

जैसे खाली हाथ थे वैसे ही रह गये।

कोरो बतबन्ना।

कोरी बातें बनाना।

कोलू के बैल।

ऐसा मनुष्य जिसे दिन-रात काम में जुता रहना पड़ता हो।

कोलू के बैल कों घरई में पचास कोस की मजल।

कोल्हू के बैल को घर में ही पचास कोस की मंजिल तै करनी पड़ती है। जिसके भाग्य में कष्ट भोगना बदा है, वह घर में भी चैन से नहीं बैठ पाता।

पा० तेली के बैल....

कोलू के बैल कों नाहर खाय, अपनी घानी[1] उतर जाय।

(१—तिलहन की वह मात्रा जो एक बार में कोल्हू में पेरने के लिए डाली जाती है।) हमारा काम बन जाय फिर चाहे दूसरे की हानि भले ही हो। स्वार्थी व्यक्ति के लिए।

कोस-कोस लौं गोड़े धोवे, दो-दो कोस पै खाय।
ऐसो बोले भड्डरी, चाय जहाँ लों जाय॥

पैदल यात्रा में थोड़ी-थोड़ी दूर पर शीतल जल से पैर धोने और कुछ खा लेने से थकान दूर होती है।

कोस कोस पै पानी बदले, बारा कोस पै बानी।

कोस-कोस पर पानी और बारह कोस पर भाषा बदल जाती है।

को हाथी मारै को दाँत उखारै

कठिन काम कौन करे?

कौंड़ी के तीन-तीन होबो।

मारा-मारा फिरना। बरबाद होना।

कौंड़ी कौंड़ी माया जुरे।

थोड़ा-थोड़ा करके बहुत इकट्ठा हो जाता है।

कौअन[1] के कोसे ढोर नईं मरत।

कौओं के कोसने से पशु नहीं मरते।

कावळ याचें श्रापेनें ढोरें मरत नाहींत—**मराठी**

कागडाने श्रापे ढोर न मरे—**गुज०**

कौआ कान लै गओ, टटोये तौ दोऊ लगे।

कौआ कान ले गया, टटोले तो दोनों लगे हैं। सुनी-सुनायी बात पर जब कोई दृढ़ विश्वास कर ले तब।

इस पर एक दृष्टान्त है। किसी मूर्ख से लोगों ने कहा, तुम्हारा कान कौआ ले गया। इस पर वह तुरन्त कौए के पीछे दौड़ पड़ा। लोगों ने पूछा, भाई यह क्या कर रहे हो? उसने उत्तर दिया—मेरा कान कौआ ले गया है। उसी को छीनने जा रहा हूँ। तब वहीं खड़े एक आदमी ने कहा, तुम्हारे कान तो दोनों लगे हैं। कौआ कौन सा कान ले गया? उसने जब टटोल कर देखा तो अपनी मूर्खता पर बड़ा लज्जित हुआ।

कौआरौरो।

कागारोल। कौओं की तरह का बेहद शोरगुल।

नगर कनबज की बरिया तरें ठाँड़े सबरे सूरमा सो कौआ रौरो होय।

—एक लोकगीत

कौआ हाड़ न लैजें।

कौआ हड्डियाँ नहीं ले जायेंगे।. मरने पर कहीं ठिकाना नहीं लगेगा।

कौन अकेली तुमाई मताई नेईं सोंठ-बिसवार[1] खाई।

(१—सोंठ, पीपल, अजवाइन आदि का मसाला जो गुड़ के साथ प्रसूता को खाने को दिया जाता है।) अकेली तुम्हारी माँ ने ही सोंठ-बिसवार नहीं खायी है, हमारी माँ ने भी खायी है। हम भी कुछ बूता रखते हैं।

कौन इतै तुमाओ नरा[1] गड़ो।

(१—नाल, रक्त की नलियों तथा एक प्रकार के मज्जातंतु से बनी रस्सी के आकार की वह डोरी जो एक ओर तो गर्भस्थ बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय की दीवार से मिली होती है। बच्चा पैदा होने पर इसे काट कर अलग कर देते हैं और सूतिकागृह में ही गड्ढा खोद कर गाड़ देते हैं।) तुम्हारी कौन यहाँ नाल गड़ी है? अर्थात तुम्हारा यहाँ क्या हक है? किस बूते पर तुम यहाँ अपने अधिकार की बात करते हो? तुम्हारा तो यहाँ जन्म भी नहीं हुआ।

कौन कान में कौर जात।

कौन कान में कौर चला जायगा। किसी कार्य के लिए जल्दी मचाने पर।

कौन कौन गुन गायें अपने राम के।

किसी की करतूतों का बखान करते समय व्यंग्य में। अर्थात हम इनकी क्या क्या बात कहें।

कौन जनम भरे की साई[1] लई।

(१—वह रकम जो मजदूरों को काम पर नियुक्त करने के उद्देश्य से बयाने के रूप में पेशगी दी जाती है।) क्या काम करने का जन्म भर का ठेका लिया है? उस समय प्रयुक्त जब किसी आदमी से बारबार किसी एक काम को करने के लिए कहा जाय।

कौन तुमाई टाँक[1] सें टाँक जोर कें खानें।

(१—जाँघ।) हमें कौन तुम्हारी जाँघ से जाँघ मिला कर बैठना और खाना है। अर्थात हमें तुमसे क्या मतलब? क्यों हमें आँखें दिखाते हो?

कौन तुमईं अकेले ने मताई कौ दूध पिओ।

कौन तुम्हीं अकेले ने माँ का दूध पिया है। अर्थात तुम्हीं बड़े शूरवीर नहीं हो। हममें भी कुछ बूता है।

कौन तुम इतै गुना[1] गोंठ रये।

(१—एक पकवान विशेष जो मोटा और कुंडलाकार होता है और जिसे दर्शनीय बनाने के लिए किनारों पर चारों ओर से गोंठते हैं। यह प्रायः दहेज के साथ देने को बनता है।) अर्थात कौन तुम यहाँ बड़ा भारी काम कर रहे हो। जब घर का कोई छोटा व्यक्ति कोई काम करने या कहीं जाने से इन्कार कर दे प्रायः तब।

कौन तुम इतै म्यांर[1] कौ मूड़ा साद रये।

(१—घर के छप्पर को साधने के काम आनेवाली वह मोटी लकड़ी जिसके सहारे बड़ेरे की लकड़ी रखी जाती है। भारी होने के कारण इसे दीवारों पर उठा कर रखने के लिए कई आदमियों की आवश्यकता पड़ती है।) कौन तुम यहाँ म्याँर का सिरा साध रहे हो? अर्थात तुम यहाँ कौन सा महत्वपूर्ण काम कर रहे हो।

कौरई कौरा कौ पुन्न।

थोड़े-थोड़े का ही बहुत पुण्य होता है। अथवा थोड़े-थोड़े का ही पुण्य सही।

कौरयाऊ कुतिया मखमल की झूल।

पा० खौरियाऊ कुतिया....

कौरा खाने वाली कुत्ती और उसके लिए मखमल की झूल!

क्वाँर करेला, कातिक दही। मरै नहीं तौ परै सही।

क्वाँर में करेला और कातिक में दही खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकर होता है।

क्वाँर के झला,[1] साव के लला।

(१—यकायक आ जाने वाला पानी का हलका झोंका।) क्वाँर के महीने में पानी के झोंके उसी प्रकार सहसा रह-रह कर आते हैं जिस प्रकार बड़े आदमी का निठल्ला लड़का गाँव की गलियों में कभी इधर से निकल जाता है, कभी उधर से।

क्वाँरी कन्या कों सौ बर।

क्वाँरी कन्या के लिए वर की कमी नहीं रहती। मिल ही जाता है।

क्वाँरी कन्या कों बर और धरती कों बीज मिलई जात।

क्वाँरी कन्या के लिए वर और खेत में बोने के लिए बीज कहीं न कहीं से मिल ही जाता है।

ख

खजुइ गदहया खों सोने की खुजौरी।

अपात्र को बढ़िया वस्तु।

खटपाटी लयें परे।

खटपाटी लेकर पड़े हैं, अर्थात रूठे हुए हैं।

किसी विषय पर अप्रसन्न होकर अथवा किसी से रूठ कर घर के किसी एकान्त-स्थान में चारपाई पर चुपचाप करवट लेकर लेट जाने और बात न करने को खटपाटी लेकर पड़ना कहते हैं। भारतीय लोक-कथाओं में

जगह-जगह इसका उल्लेख मिलता है। इसे कोप-भवन में जाकर बैठने का ही एक लोक-प्रचलित रूप समझना चाहिए।

खट्टयाऊ[1] चपिया, ऊमर कौ अथानौ[2]।

(१–खटाँद देने वाली, बुरी, बदबूदार। २–अचार।) गूलर का अचार, वह भी बदबूदार बर्त्तन में रखा गया। एक तो वस्तु पहिले से ही बहुत अच्छी नहीं, और यदि उसमें कुछ अच्छाई भी थी तो उसको भी नष्ट कर दिया गया।

खता[1] मिट जात पै गूद बनी रत।

(१–क्षत, फोड़ा, घाव।) फोड़ा भर जाता है परन्तु उसका चिह्न बना रहता है। मन में चुभी बात कभी दूर नहीं होती।

खता में खता, ढका में ढका।

पीड़ा के स्थान में और भी पीड़ा आकर उत्पन्न होती है, हानि में और भी हानि होती है।

खर[1] खाई और कुत्तन जूँठी।

(१–तेल निकाल लेने पर तिलहन की बची हुई पीठी, खली।) एक तो खर खाई और वह भी कुत्तों की जूँठी। एक तो अशोभन कार्य किया, वह भी ठीक ढंग से नहीं।

खराउचेल पारबो।

तवा पर से गरम-गरम रोटी उचेलना। किसी काम में जल्दी मचाना।

खरी कहइया डाढ़ो जार।

खरी बात कहने वाले को कोई पसंद नहीं करता।

खरी मजूरी चोखो काम।

पूरी मजदूरी देने से काम भी अच्छा होता है।

खरे खोटे की राम जानें।

किसी विषय की जिम्मेवारी न लेना।

खरे माल के सौ गाहक।

अच्छी वस्तु को चाहने वालों की कमी नहीं रहती।

खरौ खेल फरुक्खाबादी।

स्पष्ट और खरे लेन-देन के संबंध में प्रयुक्त।

फरुखाबाद के रुपये की चांदी किसी समय बहुत शुद्ध और खरी मानी जाती थी। उसी से कहावत चली।

खसम करौ सुख-सारे कों। लग गये झकरा दुआरे कों॥

विवाह तो सुख भोगने के लिए किया, परन्तु उल्टा दुःख माथे आया।

खाँड़ खने जो और को बाको कूप तयार।

दूसरों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करने वाला स्वयं हानि उठाता है।

खाँड़ बिना सब राँड़ रसोई।

शक्कर के बिना भोजन किसी काम का नहीं।

खाईं गकरियाँ[1] गाये गीत। जे चले चैतुआ[2] मीत॥

(१-हाथ की बनी छोटे आकार की मोटी रोटी, बाटी। २-चैत की फसल काटने वाले मजदूर, जो फसल के दिनों में झुंड के झुंड बाहर निकलते हैं, जहाँ तक काटने के लिए खड़ी फसल मिलती है आगे बढ़ते जाते हैं और कटाई का काम समाप्त हो जाने पर फिर घरों को लौट जाते हैं।) स्वार्थी अथवा निर्मोही व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

दिन चार कौं प्रीत लगाकें धनी,
अब जे भले चैतुआ मीत चले।

—कवि जुगलेश

खाईं गकरियाँ गुर घी सें। डुकरा लग गओ हमाय जी सें॥

निकम्मे और बूढ़े आदमी के लिए।

खाओ उतै तौ अचेइयो इतै।

जल्दी आने का आदेश देते अथवा अनुरोध करते हुए कहते हैं।

खाओ न पिओ ऐसेंईं जिओ (अथवा खाँओ न पिओ जुग जुग जिओ।)

जब कोई आदमी किसी से काम तो पूरा लेना चाहे परन्तु खिलाने-पिलाने में कंजूसी करे तब काम करने वाले की ओर से उपालम्भ।

खाकें पर रइये, मार कें भग जइये।

खाकर लेट जाय, मार के भाग जाय।

खाकें मूतै, सोवे बायें। ताकें बैद कबहुँ ना जायें॥

भोजन के बाद तुरंत पेशाब करने और बायीं करवट सोने से आदमी कभी बीमार नहीं पड़ता।

खा खा कें घर पोलो करो।

खा-खा कर घर खोखला कर दिया। घर के निकम्मे लड़के के लिए कहते हैं।

खा खा कें बोरो।

खा-खा कर घर डुबो दिया।

खा खा कें मों चीकनों करें फिरत।

छैल-चिकनिया बने फिरते हैं।

खा खा कें संडा परे।

केवल खाना काम कुछ न करना।

खा जाने सो पचा जानें।

जो खाना जानता है, वह हजम करना भी जानता है।

खात के अपने, अचेउत के पराये।

खाने भर के लिए हमारे, और हाथ-मुंह धोने के लिए दूसरे के। अर्थात केवल मतलब के दोस्त हैं। भोजन हमारे यहाँ किया और तुरन्त ही उठ कर चले गये दूसरे के यहाँ।

खाद परै तौ खेत, नईं तौ कूरा रेत।

खाद के बिना खेत कूड़ा-रेत का ढेर है।

खादी कूरा ना टरै, करम लिखौ टर जाय।

दे० करम लौट जाय....

खाने कै गिरम्म[1] गेरने।

(१–गिरमा, ढोर बाँधने की रस्सी, पगैया।) तुम्हें खाना है या रस्सी का चक्कर काटना है? अर्थात तुम्हें अपने काम से मतलब या हमें व्यर्थ परेशान करना है।

खाबे कों पूत, लड़बे कों भतीजे।

मतलब के यार।

खाबे कों मौआ, पैरबे कों अमौआ[1]।

(१–एक प्रकार का खाकी रंग जो आम के पत्तों से बनता है। आम के पत्तों से बने हुए रंग में रँगा कपड़ा।) खाने को महुआ, पहिनने को अमौआ। संतोषी का कथन।

खायँ पियें होओ तौ बने रओ।

खा-पी कर आये हो तो बने रहो। जब किसी आदमी को खाने-पीने के लिए न पूछा जाय तब उसकी ओर से व्यंग्य में।

खाय खेले तो पिराय का?

खाता-खेलता रहे तो पीड़ा कहाँ से हो? ऐसे बच्चों के लिए जो सदैव बीमार रहते हों।

खाय दिल बोर, लड़ै सिर फोर।

भोजन करने में और लड़ने में कसर नहीं रखनी चाहिए।

खायें खसम कौ गायें यारन कौ।

खाना किसी का और गीत किसी के गाना।

खायें खायें पार बड़ात।

खाते-खाते पहाड़ भी बिला जाता है। बैठे-बैठे खाने से चाहे जितना धन क्यों न हो, एक-न-एक दिन खत्म हो जाता है।

खायें गदयानें[1], भोंकन जायें चमरयाने।

(१–गदयाना=धोबियों का मुहल्ला, जहाँ गधे रहते हैं।) खायें धोबियों के मुहल्ले में और भोंकने जायें चमारों के मुहल्ले में। खायें किसी का, काम किसी का करें।

खाली हातन आये, खाली हातन जाने।

संसार में न तो कोई कुछ लेकर आया और न यहाँ से कोई कुछ लेकर जाता है।

खालो पीलो सो अपनो।

खाया-पिया ही संसार में काम आता है और तो सब नष्ट हो जाता है।

खावें-पीवें लरका बिटियाँ, सत्त कों डुकरियाँ।

माल-मसाले तो उड़ायें जवान लड़के और लड़कियाँ, और व्रत-उपवास या कठिन कार्य के लिए बूढ़े आदमी! जब घर या समाज में किसी एक व्यक्ति पर ही किसी काम की सारी जिम्मेवारी छोड़ दी जाय और दूसरे व्यक्ति आराम से बैठे तमाशा देखें तब प्रयुक्त।

खावे कों मलाई, बोलबे कों म्याऊँ।

खाने को माल-मसाले काम के वक्त आँख दिखाना।

खासी तोरी घर-घिनौची[1] खासी तोरी चाल।

(१—पानी रखने का स्थान, जलधरा।) अनहोना काम करने पर व्यंग्य।

खिसयानी बाई पुँआर[1] लौंचें।

(१—एक छोटा जंगली पौधा, जिसकी जड़ बड़ी मजबूत होती है।) लज्जित होकर क्रोधित होना, अथवा किसी का गुस्सा किसी पर उतारना।

खिसियानी बिल्ली खंभा नौंचे—**फैलन**

खिसयानो भाँड़ दिवारी[1] गावे।

(१—दीपावली के अवसर पर गाये जाने वाले गीत, जो चिल्ला कर ऊँचे स्वर में गाये जाते हैं।) जब कोई आदमी किसी न किसी प्रकार अपना क्रोध शान्त करना चाहे, या गुस्से में ऊट-पटाँग बात करे।

खीर में सोंज, महेरी में न्यारे।

स्वार्थी व्यक्ति।

मित्र न ऐसौ करै सपनें,
रहै खीर में सौंज महेरी में न्यारो।
—**जुगलेश**

खीसा तर तौ जो भावे सो कर।

पैसे से सब कुछ होता है।

खुंस[1] में मुंस नईं मिलौ तौ कौन काम कौ?

(१—क्रोध, अप्रसन्नता।) क्रोध में यदि दूसरा पति तलाश नहीं कर लिया तो बाद में किस काम का? अथवा क्रोध में पति को तलाश करके उस पर अपना गुस्सा नहीं उतारा हो तो बात ही क्या रही?

खुआवे, पियावे कौ नाव नईं, मारवे कौ नाव।

खिलाने-पिलाने का तो नाम नहीं मारने का नाम। दूसरे के बालक को चाहे जितना लाड़-प्यार से रखो, उसे तो कोई नहीं देखता, परन्तु थोड़ा भी पीट देने से अपयश हाथ आता है।

खुदा मिले और नंगे सिर।

अपने ही मतलब की बात करना, दूसरे की न सुनना।

खुरदरी भींत पै चितेउर करत।

खुरदरी दीवाल पर चित्रकारी करते हैं। ऊटपटाँग काम करते हैं।

खुरपी कों टेढ़ो बेंट मिलई जात।

खुरपी को टेढ़ा बेंट मिल ही जाता है। जैसे को तैसा मिल जाता है।

खुरपी के ब्याव में हँसिया के गीत।

बे अवसर का काम।

खुली किवरियाँ डरीं।

खुली खिड़की पड़ी है। अर्थात सदैव तुम्हारा स्वागत है। कभी भी आ सकते हो।

खुसामद सें आमद है।

खुशामद से ही पैसा मिलता है।

खुसी कौ सौदा।

कोई जबर्दस्ती नहीं। लेना हो लो, न लेना हो, न लो।

खूंटा के बल बछरा नाचे।

किसी के बल-बूते पर ही आदमी किसी बड़े काम को करने की हिम्मत करता है।

खूब खाई ताती-ताती।

खूब गरम-गरम खायीं! आदर-सत्कार न होने पर व्यंग्य में कहते हैं।

खेत कबीरा लुन लये, सिला बीन लये सूर।
बची खुची तुलसी लई, जगत बटोरे धूर।।

फसल तो कबीर ने काट ली, दाने सूर ने बीन लिये। बचा-खुचा तुलसी ने लिया। अन्य कवि तो अब केवल धूल बटोरते हैं।

खेत के बिजूका[१]।

(१—पशु-पक्षियों को डराने के लिए खेत में खड़ा किया गया घास-फूस का ऐसा ढाँचा जो दूर से देखने पर आदमी सा जान पड़ता है।) ऐसा व्यक्ति जो न स्वयं खाय और न खाने दे।

खेत न जोते राड़ी, ना जनी मरद की छाँड़ी।
न भैंस बिसाहे पाड़ी, ना बिपदा लेवे आड़ी।।

ऊसर का खेत नहीं जोतना चाहिए, दूसरे पुरुष की छोड़ी हुई स्त्री नहीं करनी चाहिए, बिना गाभिन हुई भैंस नहीं खरीदनी चाहिए, और जान-बूझ कर कोई विपत्ति भी मोल नहीं लेनी चाहिए।

खेत बिगारैं खरतुआ सभा बिगारैं दूत।

खर-पतवार से खेत बिगड़ता है, और चुगलखोर से सभा का आनंद।

खेत बिगारचो खरतुआ, सभा बिगारी कूर।
भक्ति बिगारी लालची, ज्यों केसर में धूर। —**कबीर**

खेत राखे बारी खों, बारी राखे खेत खों।

एक यदि दूसरे का ध्यान रखे तो दूसरा उसका भी ध्यान रखता है।

खेती आप सेती।

खेती को स्वयं न देखा जाय तो उससे कोई लाभ नहीं।

खेती कर आलस करै, भीख माँग सुस्ताय।
सत्यानास की का चली, अठ्यानास कों जाय॥

खेती के काम में आलस ठीक नहीं।

खेती करें अधिया, बैल ना बधिया।

अधिया-बँटिया से खेती करना चाहते हैं, परन्तु गाँठ में न बैल है न बधिया।

खेती करै ऊख कपास। घर करै व्यवहरिया पास॥

खेती ऊख कपास की करना चाहिए और घर साहूकार के पास बनाना चाहिए ताकि वह समय पर काम आ सके।

खेती करै न बंजै जाय। विद्या के बल बैठो खाय॥
खेती करै बनज खाँ धावै। ऐसा डूबा थाह न पावै॥
खेती करै साँझ घर सोवे। काटे चोर मूंड़ धर रोवे॥
खेती तौ थोरी करै मेहनत करे सिवाय।
राम चहें वामनुस कों टोटा कबहुं न आय॥
खेती धन कौ नास, जो धनी न होवे पास।
खेती धन की आस, धनी जो होवे पास।

स्पष्ट।

खेती, पाती, बीनती औ घोड़े कौ तंग।
अपने हात सँवारिये लाख लोग होय संग॥

सब काम अपने हाथ का ही ठीक होता है।

पा० खेती, पाती, बीनती और खुजावन खाज।
घोड़ा आप पलानिये जो पिय चाहो राज॥
खेती बारो झक मारे। हँसिया बारो खों[1] गाड़े॥

(१–खंती, जिसमें अनाज संग्रह करके रखा जाता है।) खेती से स्वयं किसान को इतना लाभ नहीं होता जितना फसल काटने वाले मजदूरों को, क्योंकि उन्हें तो परिश्रम के पैसे मिलते हैं, गाँठ से कुछ लगाना नहीं पड़ता।

खेती राज रजाये, खेती भीख मँगाये।

खेती सदा सुख देती।

खेतें गयें किसनई।

खेती का काम तो खेत पर जाने से ही हो सकता है।

खेते बारी खाय तौ बिध सें कहा बसाय।

स्वयं बाड़ ही यदि खेत को खाने लगे, अर्थात् रक्षक ही यदि भक्षक बन जाय तो फिर उसके लिए क्या किया जाय ?

खेल में काये के लालाजी[1]।

(१—बुन्देलखंड में लाला दामाद और देवर को कहते हैं।) खेल में छोटे-बड़े सब बराबर हैं।

खों गाडें और कौरा माँगत।

कंजूस के लिए।

खो गओ लाँगा नंदई खों भयो।

खो गया लँहगा नंद के लिए ही हुआ। किसी को कुछ न देकर व्यर्थ का अहसान करना।

खोटो पइसा और खोटो लरका बखत पै कामें आऊत।

खोटा पैसा और खोटा लड़का समय पर काम आता है।

खोदंत पानी, घोकंत विद्या।

खोदने से ही पानी निकलता है, अभ्यास से ही विद्या आती है।

खौरियाऊ[1] कुतिया मखमल की झूल।

(१—खौरही, गंजी, खजेलू।) दे० कौरयाऊ कुतिया...

ग

गंगा की की खुदाई ?

मूर्खतापूर्ण प्रश्न।

गंगा की गंगा सिवराजपुर की हाट।

किसी काम में एक साथ दो लाभ।

गंगा की गैल में मदारन[1] के गीत।

गंगा के रास्ते मदार के गीत। वे अवसर का काम।
(१—शाह मदार मुसलमानों के एक पहुँचे हुए फकीर हो गये हैं। उनका जन्म सन् १०५० में फर्रुखाबाद में हुआ था। कहा जाता है वे ४०० वर्ष जीवित रहे और सन् १४३३ में मरे। कानपुर जिले में मकनपुर में उनकी समाधि है और प्रतिवर्ष वहाँ मेला लगता है। मुसलमान उन्हें जिन्दा शाह कहते हैं और आज भी उन्हें जीवित मानते हैं।)

गंगा गयें गंगादास जमना गयें जमनादास।

जब जैसा अवसर देखा तब तैसा बन जाना।
काशीस गेला काशीदास मथुरेस गेला मथुरादास—**मराठी**

गंगा गयें मुंडायें सिद्ध।

सामने आ गये काम को पूरा कर डालने में ही समझदारी है।

गंगाज़ी की धारा, पाप काटवों कों आरा।

गंगा की महिमा का बखान।

गंगा नहावो।

झगड़े से छुट्टी पाना। किसी काम की जिम्मेवारी से मुक्त होना।

गँवार की अक्कल चेंथरी में।

गँवार पिटने से ही मानता है।

गँवार कों पापर।

अयोग्य को कोई अच्छी वस्तु देना।

गई परथन लैन, कुत्ता पींड़[1] लै गओ।

(१—गुँदे हुए आटे की पिंडी।) एक काम करने गये तब तक दूसरा चौपट हो गया।

गई गुजरी हुई।

जो होना था हो गया, उसकी चर्चा क्या ?

गओ धन आधोई पाओ।

गया धन आधा ही पाया।

गओ मरद जीनें खाई खटाई, गई राँड़ जीनें खाई मिठाई।

गगरी में नाज गँवारे राज।

घर में खाने को होने पर गँवार सीधे बात नहीं करता।

गड़वाँत[१] के पथरा।

(१—गाड़ी के आने-जाने का कच्चा रास्ता।) ऐसा निरीह और असहाय व्यक्ति जिसे चाहे जो रौंदता और कुचलता चला जाय।

गढ़ै कुमाँर बरते संसाराँ

एक के परिश्रम से सबको लाभ होता है।

गदन की गोनें[१], मनन की झोलें।

(१—गोन का ब० व०, बड़ी खेस जिसमें लगभग पाँच मन अनाज आता है।) थोड़े हिसाब-किताब में लंबी-चौड़ी भूल।

गदन की बातें, लड़इयन की लातें।

गधों की बातें और गीदड़ों की लातें। मूर्ख की बेतुकी बात।

गदा के कान गदई खुजाउत।

गधा के कान गधा ही खुजाता है। ओछों की मित्रता ओछों से ही होती है।

गदन खाओ खेत पाप न पुन्न।

मूर्खों को खिलाना-पिलाना व्यर्थ है।

गाढवाने खाल्लें पाप न पुण्य—**मराठी**
(गधों के खाने से पाप न पुण्य)

गदा गदइया सें जीते नई, रेंगटा[१] के कान मरोरे।

(१—गधा का बच्चा।) गधा गधी से तो जीतता नहीं बच्चे के कान ऐंठता है।

गदा धोये सें घोड़ा नई होत।

प्रयत्न करने पर भी किसी की प्रकृति नहीं बदली जा सकती।

गदा दाखें खा गये।

मूर्खों के खिलाने पिलाने में पैसा खर्च हुआ।

गदा न सई रेंगटा सई।

गधा न सही रेंगटा सही। व्यर्थ तर्क-वितर्क के समय प्रयुक्त।

गनेस जू खों चौक पूरो, मेंदरे जू आन बिराजे।

किसी के स्थान पर कोई बैठ गया।

गम्म बड़ी चीज है।

गम खाना बड़ी बात है।

गयें हान न मरें पछतान।

ऐसी वस्तु के लिए प्रयुक्त जिसके खो जाने या चले जाने से कुछ बनता-बिगड़ता न हो। ऐसे व्यक्ति के लिए भी जिसके मरने पर कोई रोने वाला न हो।

गर (अ) ओ पथरा चूम कें छोड़ दओ जात।

भारी पत्थर चूम कर छोड़ दिया जाता है। जो काम अपने सामर्थ्य से बाहर हो उसे चुपचाप छोड़ देना।

गरज परे पराई मताई सें मताई कने परत।

गरज पड़ने पर दूसरे की मां से मां कहना पड़ता है।

गरज बुराई होत।

गरज बुरी होती है।

गरजें सो बरसें का।

गरजने वाले बादल बरसते नहीं। बकवादी आदमी से काम नहीं होता।

गरब कियो रतनाकर सागर नीर कर डारो खारो।
गरब कियो चकवा चकवी रैन बिछोहा पारो॥

एक लोकगीत की पंक्तियां जो ठीक इसी रूप में गुजरात में भी प्रचलित हैं।
गरब कियो रतनाकर सागर नीर कर डालो खारो,
गरब कियो चकवा चकवी रैन बिछोहा डारो। **—गुजराती**

गरब कोऊ कौ नई रओ।

गर्व किसी का नहीं रहा।

गरब तौ रावन कौ नई रओ।

गर्व तो रावण का भी नहीं रहा।

गरया बैल करारा खों।

निकम्मा बैल करार से पटकने के लिए! किसी तरह पिंड तो छूटे!

गरीब की लुगाई, सब की भौजाई।

गरीब को सब दबाते हैं।

गरीब की हाय, सरबस खाय।

गरीब की हाय सर्वस्व नाश कर देती है।

गरीब कौ खाय बाको सत्यानाश जाय।

गरीब का खाने से सर्वनाश होता है।

गरें परो (ढोल) बजायें सिद्ध।

जो काम सिर पर आ गया उसे तो किसी प्रकार पूरा करना ही पड़ता है।

गर्रानो सो अर्रानो।

बहुत घमंड करने वाला नष्ट होता है।

गाँज बरें, पूरन कौ लेखो।

घास के ढेर-के-ढेर तो जल जायँ, और एक-एक पूले का हिसाब रखा जाय। फिजूलखर्ची करके अनुचित मितव्ययिता से काम लेना।

अशर्फियाँ लुटें और कोयलों पर छाप।

गाँठ की गंठयावन देखो।

गाँठ का भी पैसा खो बैठना।

गाँव के खदरा तौ गाँव कौई अँदरा जानत।

गाँव के गड्ढे तो गाँव का ही अंधा जानता है। किसी स्थान की त्रुटियाँ तो वहाँ का असली निवासी ही जान सकता है।

गाँव कौ जोगी जोगिया अनगाँव कौ सिद्ध।

आदमी की अपने घर में क़द्र नहीं होती, अथवा अपरिचित स्थान में पहुँचने पर गुणहीन व्यक्ति भी विद्वान् मान लिया जाता है।

गाँव कौ समधी, पोंदन की ओट।

गाँव के समधी की कहाँ तक लाज शरम की जाय? सामना होने पर पीठ फेरी और निकल गये। निरंतर समीप रहने से मान-सम्मान कम होता है।

गाँव न्योतें, गाँठ में कौंड़ी नाईं।

बिना पैसे के बड़प्पन दिखाना।

गाँव में आई डोरी, का माते, का कोरी।

गाँव में लैनडोरी आयी है, तब फिर क्या महते और क्या कोरी, सबको ही रसद बेगार देनी पड़ेगी।

ब्रिटिश शासन-काल के प्रारंभिक दिनों में लोगों को आतंकित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में होकर प्रायः गोरों की पैदल पलटनें निकला करती थीं। इनके आगे रसद आदि का प्रबंध करने के लिए एक छोटी पलटन चलती थी। वह लैनडोरी या संक्षेप में डोरी कहलाती थी। लैनडोरी जहां पड़ाव डालती थी वहाँ रसद और बेगार से कोई आदमी बचता नहीं था।

गा गा कें भुवानी बुला लईं।

जानबूझ कर विपत्ति मोल ले ली।

गाँव में जब किसी के सिर भवानी आने को होती हैं तो उसके पूर्व ढोल और झाँझ के साथ माता के भजन गाये जाते हैं। कहावत में उसी से अभिप्राय है कि गा-बजाकर कर देवी को बुला लिया। बैठे-ठाले विपत्ति मोल ले ली।

गाजर की पुंगी, बजी तौ बजी, नईं तो टोर खाई।

ऐसे अवसर के लिए कहते हैं जब काम बन जाय तौ अच्छा, न बने तौ भी अच्छा।

गाजरन की तुला दई, बिमान की बाट हेरें।

गाजरों का तुलादान किया और प्रतीक्षा इस बात की कर रहे हैं कि स्वर्ग से विमान लेने आयेगा। नाममात्र का खर्च करके बड़े यश या लाभ की आशा करना।

गाजर की सदा दैकें तुला,
उर बैंठो विमान की बाट कों हेरत।
—**कवि जुगलेश**

गाजे-बाजे से आये हैं।

बड़ी धूमधाम से आये हैं (व्यंग्य में)।

गाड़र गाड़र मैं तोय जड़ाउर सिमाँउत, कई—मोरी ऊन न कतर लियो।

गाड़र-गाड़र, मैं तेरे लिए जाड़े के कपड़े सिलवाऊँगा—गाड़र ने कहा—मेरी ऊन मत काट लेना। स्वार्थी व्यक्ति के उपकार से सतर्क रहना चाहिए।

गाड़र आनी ऊन कों लागी चरन कपास।

लाभ के लिए काम करने पर हानि हुई,

स्वामी होनो सहज है दुर्लभ होनो दास।
गाडर आनी ऊन को लागी चरन कपास॥ —**तुलसी**

गाड़ी अटक गई।

कार्य में विघ्न पड़ गया।

गाड़ी देख लाड़ी[1] के पांव फूले।

(१—लड़ैंती, लाड़ली लड़की।) सुविधा देखकर सब आराम चाहने लगते हैं।

गाडुं देखी लागे थाक,
घोड़ा देखी थाके पाग।—**गुजराती**

गाड़ीवारे की नार जनम दुखिया।

क्योंकि गाड़ी वाले को प्रायः बाहर ही रहना पड़ता है और उसकी स्त्री घर में अकेली रहती है।

गाड़े सें पाड़ो जिन बाँधो।

गाड़ी से पड़ा मत बाँधो। बेतुका काम मत करो।

गायें गायें बियाव होत।

ब्याह जैसा कठिन कार्य भी जब गाने-बजाने से हो जाता है तब दूसरे कार्य भी आसानी से किये जा सकते हैं। हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

गाये गीत कौ का गाइये। रँधे भात कौ का राँधिये॥

गाये गीत का पुनः क्या गाना? रँधे भात का फिर क्या राँधना? अर्थात् किसी विषय के पृष्ठपेषण से क्या लाभ।

गावो रोवो को नईं जानत?

गाना रोना कौन नहीं जानता?

गा (ह) क और मौत कौ का ठीक, कबै आ जाय!

मौत की तरह गाहक का भी ठीक नहीं कि कब आ जाय, इसलिए दूकानदार को दूकान नहीं छोड़नी चाहिए।

गिरदौना की दौर मँगरे[१] लौं।

(१—मगरी, छप्पर के ऊपर का वह हिस्सा जहाँ से वर्षा का पानी नीचे को लुढ़कता है।) जहाँ तक जिसकी पहुँच होती है वह वहीं तक जा सकता है। शक्ति से बाहर कोई काम नहीं कर सकता।

गिर परे की डंडौत।

इच्छ न रहते हुए भी संयोगवश किसी एक अच्छे काम को करने का अवसर मिल जाना। अथवा हानि में से ही लाभ की कोई बात निकल आना।

उलटून पडली खरी म्हण ती सूर्यास दंडवत करी—**मराठी**

(औंधे गिरे तो सूर्य को दंडवत किया)

गिरा घेरें।

ग्रह घेरे हुए हैं। बुरे दिनों का चक्कर है।

गिरी अटारी मढ़ा बिरोबर।

गिरी अटारी कोठे के बराबर। धनी आदमी बिगड़ेगा भी तो कहाँ तक गरीब होगा?

गिरे में सब चार लातें मारत।

दुर्बल को सब सताते हैं।

गिलोय और नीम चढ़ी।

बुराई में और भी बुराई।

गीलीं सूकीं सब जरतीं।

गीली-सूखी सब जलती हैं। चीज अच्छी हो या बुरी सब काम आ जाती है।

गुन न हिरानो, गुन गाहक हिरानो है।

संसार में गुण वालों की कमी नहीं, कमी है गुणग्राहकों की।

गुरई खों माँछी लगतीं।

गुड़ को ही मक्खियाँ लगती हैं।

गुर के बाप कुलुआ।

गुड़ के बाप कोल्हू। अर्थात् सब उपद्रवों की जड़।

गुर खाने और पाग राखने।

अच्छा खा-पीकर भी अपनी इज्जत रखनी है।

गुर खाने उर पाग राखने
जे हैं काम सुघर के।—ईसुरी

गुर खायें पुअन कौ नेम करें।

दिखावटी परहेज़ करना।

गुर गुर बिद्या सिर सिर अक्कल।

सबकी अपनी अलग-अलग समझ होती है।

गुर चुरैउत की हँड़िया फूट गई।

गुड़ पकाने की हाँड़ी फूट गयी। बना-बनाया काम चौपट हो गया। लाभ का मुख्य साधन मिट गया।

गुर डिगरियन घी उँगरियन।

गुड़ तो एक-एक डली करके ग्राहकों द्वारा उठाये जाने से नष्ट होता है और घी उँगलियों में लेने से।

गुर भरौ हँसिया।

ऐसी वस्तु जिसे न तो छोड़ते ही बने और न ग्रहण करते ही।

गुर में होयँ सवा, तऊ न करै रवा। नोन में होयँ पौन, तऊ न छाँड़े नौन।।

गुड़ में यदि सवाये भी होते हों तौ भी उसे खरीद कर न रखे, परन्तु नमक में रुपये के बारह आने भी होते हों तौ भी उसका संग्रह करे, इसलिए कि गुड़ को चींटे खा जाते हैं, ग्राहक भी एक-एक डली करके उठा लेते हैं। जबकि नमक में नष्ट होने की ऐसी कोई संभावना नहीं रहती।

गुरु बिन मिले न ज्ञान, भाग बिन मिले न संपत।

स्पष्ट।

गुरु बिन ज्ञान भेद बिन चोरी। बहुत नहीं तो थोरी थोरी।।

गुरु के बिना ज्ञान और भेद के बिना चोरी नहीं होती।

गुरू कीजे जान कें, पानी पीजै छान कें।

गुरू देखभाल कर और पानी छान कर पीना चाहिए।

गुरू करवे जेने
जल खावे छेने—**बंगला**

गुरू की विद्या गुरूई खों फली।

गुरू ने जो कुछ किया उसका परिणाम उनको ही भोगना पड़ा।

गुरूची अक्कल गुरूलाच फळली।—**मराठी**

गुरू गुरइ रयें, चेला सक्कर हो गये।

गुरू से चेला अधिक बढ़ गया।

गुरू न गुरु भैया, सब सें बड़ो रुपैया।

संसार में रुपया सबसे बड़ी वस्तु है।

गुरू सें चेला सवाओ।

गुरू से चेला सवाया।

गुरू सें कपट मित्र से चोरी। कै हो निर्धन कै हो कोढ़ी।।

स्पष्ट।

गूजर तके ऊजर।

गूजर ऊज़ड़ स्थान में रहना पसंद करता है, इसलिए कि उसके ढोर बिना रोक-टोक चर सकें।

गेंवड़ें आई बरात, बौंडार[1] कातबे बैठे।

(१—कन्या के विवाह के अवसर पर दहेज में दिये जाने वाले कपड़े।)
ऐन मौके पर कोई काम करने बैठना।

गवड़ें खेती, गाँव सगाई, जिनकर, जिनकर जिनकर भाई।

यह कहावत बुन्देलखंड में इतनी ही सुनने को मिलती है। परन्तु पूरी इस प्रकार है:—गेंवड़ें खेती गाँव सगाई, तिलगुर भोजन तुरुक मिताई, पैलें सुख पाछें दुखदाई, जिनकर जिनकर जिनकर भाई।

गेंवड़ें खेती हम करी कर धोबिन सों हेत।
अपनो करौ कौन सें कइये चरौ गदन ने खेत॥

किसी किसान का एक धोबिन से प्रेम हो गया। उसके कहने से उसने गाँव के बाहर गेंवड़ें में ही खेती की। परिणाम यह हुआ कि सब फसल उस धोबिन के गधे ही चर गये।

गेंवड़ें पीपर, मेंड़े महुआ, बन में तिली, राँड़ में रहुआ[1]।

(१—ऐसा नौकर जो केवल रोटियों पर रखा गया हो)। गाँव के बाहर, जहाँ लोग शौचादि के लिए जाते हैं पीपल, खेत की मेंड़ पर महुआ, कपास में तिली, और राँड़ के घर में रहुए का होना ठीक नहीं।

गै गै पृथिवी भारी है।

पग पग पर पृथिवी भारी है। अर्थात् एक से एक बढ़ कर वस्तुएँ संसार में भरी पड़ी हैं। रत्नगर्भा वसुंधरा।

इसकी एक कथा है कि एक पहलवान को कमनैती का बड़ा शौक़ था। वह नित्य प्रातःकाल उठ कर अपनी पत्नी की नथ में से तीर चलाया करता और कहा करता कि कहो संसार में मुझसे बढ़कर कोई धनुर्धर नहीं। स्त्री बेचारी डर के मारे इन शब्दों को दुहरा दिया करती। परन्तु एक दिन खीझ कर बोली—तुम्हीं अकेले धनुर्धर नहीं। गै गै पृथिवी भारी है। स्त्री की यह

बात पहलवान को बहुत बुरी लगी और वह उसी समय घर से बाहर निकल पड़ा। चलते-चलते रास्ते में एक ऐसे पहलवान से उसकी भेंट हुई जो एक साँस में दस हजार डंड और बैठक लगाता और कलेवा में दस मन सत्तू घोल कर पी जाता था। फिर एक ऐसा तीरंदाज मिला जो आकाश में इन्द्र के अखाड़े तक अपना तीर फेंक सकता था। फिर एक ऐसे व्यक्ति से भेंट हुई जो एक लाख योजन की वस्तु देख सकता था, और सब पशु-पक्षियों की बोली समझ लेता था। इन सबको देख कर पहलवान को मन ही मन इस बात का चेत हुआ कि उसकी स्त्री ने वास्तव में ठीक कहा था कि गै गै पृथिवी भारी है। उसका यह दंभ चूर हो गया कि वही संसार में सबसे बड़ा गुणी है और वह अपने घर लौट आया।

गैल कौनऊँ जायें, बैल घरई के आयँ।

किसी आदमी के बैल भटक गये। उसके साथी ने कहा—देखो, तुम्हारे बैल कहाँ जा रहे हैं ? इस पर उसने उत्तर दिया—चिन्ता की बात नहीं, बैल घर के ही हैं। किसी रास्ते जायें। भूलेंगे नहीं। ढोरों की स्मरण-शक्ति के संबंध में कहावत।

गैल में ठाँड़े।

अर्थात संसार का सब झगड़ा छोड़ चुके हैं। जाने को तैयार खड़े हैं। हमें किसी बात से क्या मतलब ?

गैल में पाई फकीरनी[1], गुर बाँटो न सिन्नी।

(१—वह रंगीन डोरा जो मुहर्रम के दिनों में ताजिए पर गुड़, शर्बत या मिठाई चढ़ाने के बाद प्रसाद के रूप में गले में पहिनने को मिलता है। यह छोटे बच्चों को पहिनाते हैं।) रास्ते चलते फकीरी मिल गयी, न गुड़ बाँटना पड़ा और न मिठाई। अर्थात मुफ्त में काम हो गया।

गोंऊँ खेत में, लरका पेट में, पासनी कौ दिन धरई दो।

गेहूँ खेत में खड़े हैं, अभी कटकर नहीं आये, लड़का पेट में है, फिर भी अन्न-प्राशन का दिन निश्चत ही कर दो। किसी एक अनिश्चित कार्य की योजना पहिले से बनाना।

अजातपुत्र नामोत्कीर्तन न्यायः ।—**संस्कृत**
घऊँ खेत में, बेटा पेट में,
ने लगन पांचमनां लीधां।—**गुजराती**

गोंऊअन के संगे घुन पिस गओ।

गेहुओं के साथ घुन पिस गया।

गोकुल गाँव कौ पेंड़ो[१] न्यारो।

(१—रास्ता।) अपनी अलग निराली बात चलाने पर कहते हैं।
'सुंदर' कोउ न जान सकै यह गोकुल गाँव कौ पेंड़ोइ न्यारो।

गोदी लरका गाँव गुहार।

दे० कखरी लरका....

गोपी तें चिकनियाँ[१] रामदास।

(१—चिकने, कंजूस)। सब एक-से-एक बढ़ कर हैं।

गोबर के गनेस जी पटा पै बैठत बई खों नईं फोर पाउत।

गोबर-गनेस जिस पटे पर बैठते हैं, उसको ही तोड़ने की सामर्थ्य नहीं रखते।

गोबत गनेस।

बुद्धू आदमी।

गोबर गिरत तौ कछू लेई कें उठत।

गोबर गिरता है तो कुछ लेकर ही उठता है। उसमें जमीन की मिट्टी लग जाती है। जब कोई आदमी विवश होकर किसी के सामने झुकता है, अथवा किसी को कोई सुविधा प्रदान करता है, तो उससे भी वह अपना कोई न कोई मतलब निकाल ही लेता है।

गोबर मैला नीम की खली। यातें खेती दूनी फली।।

गोबर, मैला और नीम की खली की खाद देने से खेती को विशेष लाभ होता है।

गोली कौ घाव भर जात, पै बोली कौ नईं भरत।

गोली का घाव भर जाता है। पर बोली का नहीं भरता।

गोली सें बचै, पै बोली सें न बचै।

गोली से बचना आसान है, परंतु बात की चोट से नहीं बचा जा सकता।

गौर रूठें तौ अपनी सुहाग लें, का कोऊ कौ भाग लें(एँ)।

गौर रूठेंगी तो अपना सुहाग लेंगी, क्या किसी का भाग्य लेंगी ?

जब कोई व्यक्ति घर के किसी आदमी से अनुचित रूप से अप्रसन्न होता है अथवा अपने किसी आश्रित या नौकर से नाराज़ होकर उसे निकालने की धमकी देता है तब अपनी स्वाधीनता प्रकट करने के लिए वह आदमी अपने आगे कहता है कि नाराज़ होते हैं बला से गौर रूठेंगी तो........।

घ

घँघरिया कौ चीलरा[1]।

(१—चीलर, एक प्रकार का छोटा जुआँ, जो प्राय: गंदे कपड़ों में पैदा हो जाता है। कपड़ों में इसे खोज निकालना बड़ा कठिन होता है।) घाँघरे का चीलर अर्थात् मुसीबत की चीज़ अथवा मुँह लगा ऐसा आदमी जिससे पिंड छुड़ाना कठिन हो।

घटती बढ़ती छाया है।

संसार में सुख-दुख लगा है।

घर आय नाग न पूजें, बाँमी पूजन जायँ।

अवसर से लाभ न उठाना।

घरइया कों घर बाँद आऊत।

घर-गृहस्थी वाले आदमी को घर का सब प्रकार का प्रबंध करना आता है।

घरई की अछरू माता, घरई के पंडा।

जब कोई व्यक्ति आपस वालों से अनुचित लाभ उठाये, अथवा जहाँ मालिक और नौकर एक दूसरे की सलाह से कोई चीज़ दूसरों को दे रहे हों वहाँ प्रयुक्त।

अछरू माता का मंदिर वर्त्तमान मध्यभारत के टीकमगढ़ जिले के पृथ्वीपुर नामक स्थान में है। यहाँ प्रतिवर्ष बड़ा मेला लगता है। यह स्थान

अपने एक जलाशय के लिए प्रसिद्ध है जिसके संबंध में कहा जाता है कि पंडा से प्रसाद में जो वस्तु माँगो वही उसमें तैर कर ऊपर आ जाती है। इसी से कहावत की सार्थकता है। मंदिर अछरू माता का इसलिए कहलाता है कि उसे अछरू नाम के किसी अहीर ने बनवाया था।

घरई की कुरइया[१] सें आँख फूटत।

(१—छप्पर के छावन में लगने वाली लकड़ी। यह प्रायः ओलती से बाहर निकली रहती है और ओलती यदि नीची हो तो उसके आँख में लगने का डर रहता है।) घर के आदमी से ही अधिक हानि पहुँचती है।

घरई के नंद बाबा, घरई की जसोदा।

दे० घरई की अछरू माता....

घरई के सूरबीर हो।

घर में ही बहादुरी दिखाने वाले के लिए कहते हैं।

घर कये मोय खोल देख। ब्याव कये मोय कर देख॥

घर की मरम्मत और ब्याह में सदैव अंदाज से अधिक खर्च होता है।

घर किनई कों दबा पाओ।

घरवालों को ही दबा पाया। अर्थात घर के लोगों पर ही वश चलता है। बाहर कुछ नहीं कर पाते।

घर की आधी भली।

घर की थोड़ी वस्तु भी बहुत।

घर की खाँड़ किरकिरी लागै, बाहर कौ गुर मीठो।

घर की वस्तु की क़द्र नहीं होती।
घर की मुर्गी दाल बराबर।

घर की खेती।

अनायास पैदा होने वाली वस्तु।

घर की घूँस।

घर में घुसी रह कर चुपचाप माल-मसाले खाने और घर को बर्बाद करने वाली ।

घूँस चूहे की जाति का जानवर होता है जो घर में बड़े-बड़े बिल बना कर दीवालों को खोखली कर देता है।

घर की दाही बन गई, बन में लागी आग।
बन बिचारो का करै, करमें लागी आग।।

भाग्य ही प्रतिकूल हो तब कोई क्या करे ?

घर की मूँछेंई मूँछें हैं।

घर में ऐंठ और अकड़ के सिवा और कुछ नहीं।

घर के खपरा बिक जेयें।

बर्बाद हो जाओगे।

घर के घर और बायरें।

घर के घर और बाहर। जब कोई आदमी घर में जैसा काम करे वैसा बाहर भी करना चाहे तब प्रयुक्त।

घर के घरईं न समायें ढटिंगर पाउने आये।

जब किसी के घर में इतने आदमी हों कि उनका निर्वाह होना कठिन हो, और ऊपर से बाहर के लोग आ जायें तब कहते हैं।

घर के जान बराते गये, आलीपुरा[1] कठवा[2] में दये।

(१–देशी राज्यों के विलीनीकरण के पूर्व की मध्यभारत की एक छोटी रियासत। २–लकड़ी का मोटा कुंदा या बेड़ी जिसमें अपराधी को दंड देने के लिए उसका पैर फँसा दिया जाता था।) अधिकांश देशी रियासतों में उन दिनों जो अंधेरगर्दी और स्वेच्छाचारिता विद्यमान थी कहावत उसका स्मारक है। कोई सज्जन घर वालों के जान तो बरात में गये। परंतु आलीपुरा में वे बिना किसी अपराध के कठवा में फँसा दिये गये। कहने की आवश्यकता नहीं कि कहावत में, आलीपुरा नाम केवल एक प्रतीक के रूप में व्यवहृत हुआ है।

घर के पीरन खों गुर कौ मलीदा।

घर के आदमियों की अपेक्षा बाहर वालों का अधिक आदर-सत्कार करना।

घर कों उसारो, लरकें सारो।

घर में आँगन चाहिए और लड़के के साला।

घर कौ कुआ है, तौ का कोई डूब कें मरत !

किसी वस्तु का केवल इसलिए दुरुपयोग नहीं किया जाता कि वह घर की है।

घर कौ घर स्वाहा कर दओ।

सब घर बर्बाद कर दिया।

घर कौ गुर घरइ में फोर लो।

घर की बात बाहर मत जाने दो। चुपचाप काम कर लो।

घर कौ चून चुखरियाँ खायें, पराये खाँ डुबकैयाँ लेयें !

जब घर में सब प्रकार का सुभीता होते हुए भी कोई आदमी इधर-उधर खाने-पीने की फिक्र करे तब कहते हैं।

घर कौ परसइया, अँदियारी रात।

एक तो अँधेरी रात, दूसरे परोसने वाला अपना, जितना चाहो खाओ और उठा ले जाओ, कोई देखने वाला नहीं। अथवा घर का परसने वाला और अँधेरी रात, इसलिए पंगत में घरवालों को मनमाना परसता है, दूसरों को छोड़ देता है।

घर कौ बालक चोरी करै, कओ राम घर कैसें चले ?

जब घर के लोग ही हानि पहुंचायें तो फिर घर की रक्षा कैसे हो सकती है।

घर कौ भूत सात पैरी के नाव जानत।

यहाँ घर के भेदी से मतलब है। जिस प्रकार घर का भूत सात पीढ़ी तक के लोगों के नाम जानता है, उसी प्रकार भेदिए को भी घर की सब भीतरी बातों का पता रहता है। इसलिए उससे सावधान रहना चाहिए।

घर कौ भेदी जो मिले, जरा मूँर सें लेय।

घर का भेदी जड़-मूल से नाश करता है।

घर कौ भेदी लंका जार।

घर की फूट से सर्वनाश होता है।

घर खावे आरौ, कै सारौ।

आले के होने से तो दीवाल कमजोर होती है, और साले के होने से घर बर्बाद होता है क्योंकि अपनी बहिन के कारण, वह मनमाना खाता-पीता है।

घर खीर तौ बाहर खीर।

बड़े आदमी का सब जगह आदर-सत्कार होता है, अथवा घर जैसा सम्मान बाहर भी चाहते हैं जो संभव नहीं।

घर खोवें और आसपास, तिनको नाव रामदास।

जो अपना और दूसरों का भी काम चौपट कर दे, ऐसे आदमी के लिए प्रयुक्त।

घर गुन बहू, सार[१] गुन बच्छा।

(१—ढोर बाँधने का घर, पशुशाला।) बहू जैसे घर की होती है वैसे ही गुण उसमें आते हैं, उसी तरह बछड़ा भी जैसी सार में बँधता है वैसे ही अच्छे या बुरे लक्षण उसमें प्रकट होते हैं।

घर घर के निपट लो, बराती भौत हैं।

घर-घर के जीम लो, बराती बहुत हैं। पहिले अपना काम बनाओ, फिर दूसरों की चिन्ता करना।

घर घर कयें, कै नाँउन[१] सें।

(१—नाइन, नाई की स्त्री।) यदि बात-घर-घर पहुँचानी है तो नाइन से कहना ठीक होगा। इधर की उधर भिड़ाने वाले पर व्यंग।

नाइन छोटे-बड़े सभी घरों में बेरोक-टोक जाती है और वह प्रायः एक घर की बात दूसरे घर जाकर कह दिया करती है। कहावत में उसी का संकेत है।

घर घर मटया चूले हैं।

सब घरों का एक सा हाल है, अथवा सब घरों में कुछ-न-कुछ भेद की बात रहती है।

घर, घोड़ा, गाड़ी, इन तीनन के दाम खड़ा खड़ी।

घर, घोड़ा, गाड़ी, इन तीनों के दाम तुरन्त ले लेना चाहिए।

घर फूँक तमासो देखबो।

नामवरी के पीछे घर उजाड़ देना।

घर बरो सो बरो, चोंखरन की ऐंड़ तौ खुल गई।

घर जला तो जला, चोंखरों की अकड़ तो खुल गयी। घर के जलने से वे भी जल गये अथवा भाग गये। जब कोई थोड़े से लाभ के लिए अपनी बड़ी हानि कर बैठे तब उस पर व्यंग।

घरबारो मेंड़ में, मेंड़-कटा खेत में।

खेत का मालिक तो मेंड़ पर खड़े होकर खेत की रक्षा कर रहा है, परन्तु मेंड़ पर की घास को चोरी से काट कर ले जाने वाला खेत में घुसा है और अधिक स्वच्छंदता पूर्वक चोरी कर रहा है।

घर बेंच तीरथ करे।

एक लाभ के लिए दूसरी हानि की।

घर बैठें गंगा आईं।

अनायास कार्य सफल हुआ।

घर बैठें मुतियन चौक पूरत।

घर बैठे ही मोतियों के चौक पूरते हैं। काम-धंधा न करके बैठे-बैठे मंसूबे बाँधते हैं।

घर बैठें सब कोऊ राजे डाँड़त।

दे० अपने आँगें सब कोऊ. . . .

घर भर के ऊँट छोर लये।

घर का घर नष्ट कर दिया, अथवा घर भर को बदनाम कर दिया।

घर भरबो।

मुफ्त का पैसा लाकर घर में रखना।

घर में आई लुगाई, भूले बाप मताई।

स्पष्ट।

घर में खावे खों नई, ढाबे पै धुंआ करें।

घर में तो खाने को नहीं, छत पर धुआँ कर रहे हैं जिसमें लोग समझें कि कुछ पक रहा है।

घर में नइयाँ चून चनन कौ, ठाकुर बरी करावें।
मो दुखनी कों लाँगा नइयाँ कुत्तन झूल डरावें।।

घर में खाने को न होने पर भी ठाट-बाट का दिखावा करना।

घरांत नाहीं दाणा व मला श्रीमंत म्हणा।—**मराठी**
घरे नेई भात दोरे चँदोया।—**बंगाली**

घसया घोड़ा, रुटया चाकर।

केवल घास खाकर रहने वाला घोड़ा, और रोटियों पर रखा गया नौकर, ये दोनों ही निकम्मे होते हैं।

घरी में घर जरै, नौ घरीं भद्रा[१]।

(१—बाधा, फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जिसमें कोई काम करना ठीक नहीं माना जाता।) ऐन मौके पर जब कोई टालमटोल करे, अथवा कोई अप्रत्याशित बाधा आ जाय तब कहते हैं।

घरी भरे कौ बुरआसन, सब दिन कौ आराम।

किसी को किसी वस्तु के लिए नाहीं करने से केवल थोड़ी देर की बुराई अवश्य पैदा होती है, परन्तु उससे सदैव के लिए झगड़े से छुट्टी मिल जाती है क्योंकि वह फिर दुबारा माँगने नहीं आयेगा।

घरै आई बरात, बऊ पीपरें।

घर में तो बरात आयी है और बहू पीपल तले गयी है।

घवा[१] में घवा डार दओ।

(१—घाई, दो उँगलियों के बीच का स्थान।) पंजे में पंजा डाल दिया।

घाट घाट कौ पानी पिये हैं।

बड़े अनुभवी हैं। दुनिया देखे हुए हैं।

बारा बंदर चें पाणी प्याला—मराठी
(बारह बंदरगाह का पानी पिये हुए हैं)।

घायल की गत घायल जानें।

दुखी का दुख दुखी आदमी ही समझ सकता है।

घास-फूस कौ तापबो।

क्षणस्थायी वस्तु का उपयोग।

घिऊ न सिऊ, पक्की बने।

घर में तो घी नहीं और पकवान खाने का मन !

घिना लड़इया छींट कौ बागौ।

घिनौना गीदड़ और छींट का जामा।

घियाने पूतन कुलवंती बनी फिरतीं।

किसी वस्तु का अनुचित गर्व करना।

घिसे पिसे (अथवा घिसे मँजे) हैं।

बड़े होशियार हैं।

घिसे बिना चिलक नईं आऊत।

आदमी को दबाये बिना काम नहीं निकलता। घिसने का अर्थ खुशामद करना भी हो सकता है। खुशामद किये बिना काम नहीं बनता।

घी किते गओ ? कई खिचरी में।

जो वस्तु जहाँ खर्च होने को थी वहाँ खर्च हो गयी।

घी के कुप्पा सें लगे।

ऐसे स्थान पर पहुँच जाना जहाँ खूब खाने को मिले।

घी खिचरी हो रये।

दोनों का एक गुट हो रहा है।

घी गुर मीठौ कै बऊ।

घी गुड़ मीठा या बहू?

पैसे से ही सब काम बनता है। आदमी का कोई महत्व नहीं होता।

घी देतन नर्रयात। अथवा **घी देतन बामन नर्रयात।**

भलाई करते बुराई मानते हैं। जाड़े के दिनों में घोड़े को स्वस्थ रखने के लिए घी दिया जाता है, जिसे वह आसानी से नहीं खाता।

घी नई तौ कुप्पई बजाओ।

निराश के प्रति व्यंग।

घी सँवारे रसोई नाव बऊ कौ।

दे० घी-गुर मीठो. . . .

घी सुधारे सालना बड़ी बहू कौ नाम।

घुल्ला जा पार कै बा पार।

घोड़ा इस पार या उस पार। परिणाम कुछ भी हो, काम करना ही है।

घुसया हाकिम मुसया चाकर।

रिश्वतखोर हाकिम और चोर नौकर ये दोनों अच्छे नहीं।

घूंघट लौं की लाज।

एक बार लाज-शरम टूटी सो टूटी।

घूँटे नउत तब पेटई कों।

घुटने पेट ही को नवते हैं। आत्मीय जनों का सब पक्ष लेते हैं।

घूरन घूरन फिर हो।

मारे-मारे फिरोगे।

घोड़न कौ चारौ गदन कों नईं डारौ जात।

अयोग्य को अच्छी वस्तु नहीं दी जाती।

घोड़ा की पछारी और हाकिम की अँगारी। (इनसें बचें चइये)

घोड़े के पीछे खड़े होने से दुलत्ती लगने का डर रहता है और हाकिम के आगे चलना धृष्टता है। इनसे बच कर चलो।

घोड़ा की लात घोड़ई सऊत।

घोड़े की लात घोड़ा ही सहन कर सकता है। बड़ों की ठोकर बड़े ही सहन करते हैं।

घोड़ा घास सें यारी करै तौ खाय का?

प्राय: रिश्वतखोरों के लिए व्यंग में कहते हैं।

घोड़ा चलै चार घड़ीं, ब्याज चलै आठ घड़ीं।

मूल पर ब्याज बराबर बढ़ता रहता है।

घोड़ा जोड़ा मिलै भाग सों।

सवारी के लिए घोड़ा और अच्छी स्त्री भाग्य से ही मिलती है।

घोड़ा दूर, कै मैदान?

न घोड़ा दूर, न मैदान। सब वस्तु तुम्हारे सामने है, परीक्षा करके देख लो।

घोड़ै घी, मर्दै तमाखू।

घोड़े को घी चाहिए और मर्द को तमाखू।

घोसिया[१] घोकत रओ, कमरिया[२] ब्या लै गओ।

(१–दूध-दही का व्यापार करने वाली एक जाति। २–अहीरों की एक जाति।) घोसी तो सोच-विचार में ही पड़ा रहा और कमरिया उस स्त्री को ब्याह कर ले गया जिसके साथ घोसी विवाह करना चाहता था। काम न करके केवल मन के लड्डू खाना।

घोर, मोर, सोर,[१] पानी पियें बड़े भोर।

(१–शवर जाति के लोग, सहरिया।) घोड़ा, मोर और सहरिया ये तीनों प्रात:काल उठ कर पानी पीने के अभ्यस्त होते हैं।

•

च

चंग पै चढ़ावो।

इधर-उधर की बात करके अपने अनुकूल बनाना। मिजाज बढ़ा देना।

चंडाल चौकड़ी।

दुष्टों की जमात।

चटू कें ब्याव, भँड़ू न्योतें आई।

चटोर स्त्री के यहाँ ब्याह में चोट्टी न्योते आयी। जैसे के यहाँ तैसे ही आते हैं। अथवा जैसे को तैसे मिलते हैं।

चट्ट राँड़ पट्ट ऐबाती।

किसी बात के लिए उतावली मचाने पर कहते हैं।

चढ़ जा बच्चा सूली पै, भली करेंगे राम।

किसी को बढ़ावा देकर झगड़े में फँसा देना और स्वयं अलग रहना।

चढ़ाये की नान।

चढ़ावे के समय की नाइन। विवाह के दिन जब वरपक्ष की ओर से लड़की के लिए चढ़ावा चढ़ने आता है तब नाइन विशेष रूप से सजी-बजी तो नजर आती ही है, पर उसके साथ ही वह बहुत व्यस्त भी रहती है। विवाह संबंधी कार्यों के लिए उसे बार-बार इधर से उधर जाना पड़ता है। अतः कहावत बनी-ठनी स्त्री, अथवा ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त जो किसी का संदेश-वाहक बनकर आये।

ऊधो तुमें दिन केते भये,
सु इतै करौ बोध, उतै परौ पाँयन।
उनकी हमसों, हमरी उनसों,
जे बातें कहौ कहा जी ललचाइन।
द्वारका वे तो अमीर भये,
'जुगलेश' भई कुबजा ठकुराइन।
हम तौ मन मार कें बैठीं घरे,
बनकें तुम आये चढ़ाये की नाइन।।

चढ़े घोड़ें आबो।

घोड़े पर चढ़े आना। उतावली मचाना।

चढ़ो ददा जू, चढ़ो कका जू, कोसक घुरिया रीती गई।

ददाजू आप चढ़ें, ककाजू आप चढ़ें, इसी में एक कोस तक घोड़ी खाली ही गयी। झूठे शिष्टाचार में समय नष्ट करना।

चतुर कों चौगुनी, मूरख कों सौगुनी।

दूसरे की संपत्ति चतुर को चौगुनी और मूरख को सौगुनी प्रतीत होती है।

चतुर चार जाँगाँ चूकत।

चतुर चार जगह चूकते हैं। बहुत चतुराई करने वाला भी कभी-कभी धोखा खा जाता है।

चतुर चार जाँगाँ सें ठगाए जात।

दे० ऊपर

अति चालाकेर गलाय दड़ि, अति बोकाय पाये बेड़ी—**बंगला**

(बहुत चालाक के गले में फंदा और बहुत मूर्ख के पैरों में बेड़ी)

चतुर होय सो चेते।

चतुर थोड़ा इशारा पाते ही सावधान हो जाता है।

चतुराई चूल्हे परी।

कोई चतुराई काम नहीं आयी।

चनन के धोकें कऊँ मिर्चें न चबा जइयो।

चनों के धोखे कहीं मिर्चें मत खा जाना। अर्थात काम उतना आसान नहीं जितना समझ रखा है। समझ-बूझ कर हाथ डालना।

रारि परी नागर में एक ब्रज नागरि सों,
रोकौ ना डगर कान्ह दान दधि पैयो ना।
लूटौ रस गोरस काहू गूजरी गँवारन कौ,
वाही के धोखे ब्रजराज भूलि जैयो ना।
कहैं 'जुगलेश' जा कहौंगी प्रान प्रीतम सौं,
बोलियो सम्हार पर नारि कर गैयो ना।
कहौगे एक तौ सुनौगे अनेक श्याम,
चनन के धोखे कहूँ मिरचें चबैयो ना।।

चना और चुगल मों लगे अच्छे नइँ होत।

चना खाने में अच्छे लगते हैं, उसी प्रकार चुगली की बात भी सुनने में अच्छी लगती है। परन्तु बाद में दोनों कष्टकर होते हैं।

चना चिरौंजी हो रये।

चना चिरौंजी की तरह मँहगे हो रहे हैं। अथवा इतने दुष्प्राप्य हैं कि चिरौंजी की तरह मीठे लगते हैं। खाद्य-वस्तुओं के बहुत मँहगे होने पर कहते हैं।

चना चिरौंजी हो रये, गोऊँ हो गये दाख।
घर में गहने तीन हैं, चरखा, पीढ़ी, खाट।।

चमचोल[1] के बाप बकलफोर।

(१–ऐसी वस्तु जो मुलायम होते हुए भी कठिनाई से टूटे।) कंजूस।

चमार[1] के कोसें ढोर नइँ मरत।

१–पा० कौवा।

चरखा अब नइँ चलत।

यह शरीर अब नहीं चलता।

चरमाक के चार हींसा।

चालाक सदैव मुनाफे में रहता है।

चलत बैल खों अरई[1] गुच्चत।

(१–बैल हाँकने की लकड़ी जिसमें एक नुकीली कील और चमड़े की बधियाँ लगी रहती हैं।) काम करते हुए आदमी को छेड़ते हैं।

चलती के पौ बारा।

प्रभावशाली आदमी अपने हर काम में सफल होता है।

चलती कौ नाव गाड़ी।

गाड़ी जब तक चलती है तभी तक गाड़ी है, अन्यथा काठ-कबाड़ का ढेर है। ऐसे आदमी के लिए प्रयुक्त जिसकी बात लोग मानते हों अथवा जिसके हर काम आसानी से होते हों।

चाललातर गाडा नाहीं तर खोडा—**मराठी**

चलती गाड़ी में औंगन सब कोऊ देत।

लाभ की आशा से ही खर्च किया जाता है।

चलती रोजी पै लात मारत।

मूर्खतावश बँधी-बँधायी नौकरी छोड़ते हैं।

चलतो घोड़ो आप दानों माँग लेत।

काम करने वाले को स्वयं पैसा मिलता है।

चल न पावें, कूँदन[1] नायें।

(१—कूदने वाले।) चल तो पाते नहीं, नाम है कूदन। गुण के विपरीत नाम।

चलनी में दूद दोयें, कपारै खोर देयें।

चलनी में दूध दुहते हैं, और दोष देते हैं भाग्य को!

चलबो भलो न कोस को, बेटी भली न एक।
माँगन भलो न बाप को, जो बिध राखे टेक॥

स्पष्ट।

चलिए फिरिए बैठ न रइये, करिये गोड़ापाई।
दूद-दही नित खाये बिलइया, कब कब भैंस बिसाई॥

मनुष्य को सदैव कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।

चलीं चलीं बिजमक्खो आईं।

इधर-उधर की झूठी खबर फैलाने अथवा गप्प हाँकने वाले के लिए प्रयुक्त।

फैलन ने इस कहावत को इस प्रकार लिखा है—चली चली बी माखो आईं' जो अशुद्ध है। वास्तव में बिजमक्खो एक खेल है, जिसमें खेलनेवाला एक लड़का पहिले कहता है—चली चली बिजमक्खो आईं, और फिर दूसरा उससे पूछता है—कहाँ से आईं? काहे पर सवार हैं? क्या पहिने हुए हैं? क्या खाती हैं? इत्यादि। इन सब प्रश्नों का उत्तर पहिले लड़के को ऐसे शब्दों में देना पड़ता है जो सब एक ही अक्षर से प्रारंभ होते हों। न दे सकने पर उसे खेल में हार माननी पड़ती है। इस रोचक खेल को लोग भूल चले हैं। पर कहावत के रूप में उसकी स्मृति शेष है।

चलै बहुत सो बीर न होई।

बहुत परिश्रम करने वाला बहादुर नहीं माना जाता। उसके परिश्रम में कुछ सार भी होना चाहिए।

चलौ जान दो ढला-चला।

जिस तरह लस्टम-पस्टम काम चल रहा है उसी प्रकार चलने दो; बोलो मत।

चलौनयाऊ[1] हो रईं।

(१—गौने में आई हुई नववधू।) बहुत सजी-बजी स्त्री के लिए।

चाँदी कटबो।

चाँदी कटना। किसी काम में खूब मुनाफा होना।

चाँदी कौ जूता मारबो।

पैसा खर्च करके काम बनाना।

चाँवर की कनी और भाला की अनी।

पकने में चावल यदि कच्चा रह जाय तो उसकी कनी भाले की नोंक की तरह हानिकर होती है।

चाँवर बेंच कुदई[1] लई, जा अक्कल तोय कौन् ने दई?

(१—कोदों, सावाँ की तरह एक मोटा अनाज।)

चाकर खों ठाकुर भौत, ठाकुर खों चाकर भौत।

नौकर को मालिकों की कमी नहीं रहती और न मालिक को नौकरों की।

चाकर सें कूकर भलो, सोवे अपनी नींद।

चातुर खों चिन्ता घनी, नहिं मूरख खों लाज।
सर-औसर जानें नहीं, पेट भरे सों काज॥

स्पष्ट।

चामें तेल, गुलामें रोटी।

तेल लगाने से जिस तरह चमड़ा मजबूत रहता है, उसी तरह भर पेट खाना खिलाने से नौकर भी ठीक काम करता है।

चारऊ उरियाँ चुचात।

चारों ओलती टपकती हैं। सब ओर से घर का नाश हो रहा है।

चार कलेवा, आठ दुपर कीं, नौ ब्यारी की देओ गोपाला।
इतने में कऊँ फेर परै तौ, जा लेओ कंठी, जा लेओ माला।।

चार चुअना[1] कौ चौमासो। दो नकटयावनें[2] कौ ब्याव।।

(१—छप्पर में हो जाने वाला वह छिद्र जिससे वर्षा का पानी भीतर चुए। वर्षा के पानी का टपकना। २—नकटयावना=नाक कटना, बदनामी होना।) वर्षा ऋतु में यदि छप्पर दो चार जगह से टपकने भी लगे तौ भी वर्षा के चार मास तो किसी न किसी प्रकार बीत ही जाते हैं, इसी प्रकार विवाह में भी यदि किसी बात को लेकर कुछ झंझट या बदनामी हो तो भी विवाह तो होकर ही रहता है और उन बदनामी की बातों को भी लोग शीघ्र भूल जाते हैं। अत: चिन्ता किस बात की?

चार चोर, चौरासी बानिया, एक एक कें लूटे।

चार चोरों ने चौरासी बनियों को एक-एक करके लूट लिया। एका न होने से हानि उठानी पड़ती है।

चार जनन नें धर दओ धरो। बिटिया पकरें बाप कौ गरो।।

चार आदमियों के सिखाने से लड़की बाप के गले से जाकर लग गयी। (कि मैं ससुराल नहीं जाऊँगी, अथवा मेरे लिए अमुक कार्य तुम कर ही दो) दूसरों के कहने-सुनने से जब कोई हठ पकड़ ले तब प्रयुक्त।

चार दिना तौ आयें नईं भये, और सोंठ बिसाउन लगीं।

अभी चार दिन तो ससुराल आये नहीं हुए, और सोंठ अभी से खरीद कर रखने लगीं। किसी अनिश्चित कार्य का पहिले से सिलसिला बाँधना।

चार दिनां की चाँदनी फिर अँधियारी रात।

मन मोहन को हिलिबो मिलिबो दिन चार की चाँदनी ह्वै गई री।—**ठाकुर**

चार दिना खों मउआ हमें दै दो, फिर तौ तुमाय अई आयँ।

दूसरों को मूर्ख बना कर अपना काम बनाना। महुओं में जब फूल आते हैं तब दस-पाँच दिन के भीतर ही टपक कर समाप्त हो जाते हैं। उन्हीं दिनों के

लिए—कोई कहता है कि—महुए हमें दे दो, फिर तो तुम्हारे हैं ही। अर्थात उनका मुख्य लाभ हमें उठा लेने दो।

चार बेद एक कुदाईं,[१] चातुरी एक कुदाईं।

(१ ओर, तरफ) चातुरी बड़ी चीज है।

चार बेद, पाँच (अ) ओं लबेद।

चार वेदों से भी बढ़ कर पाँचवी बकवाद अथवा गप्प।

चार मइना ताल कौ, चार मइना हाल कौ।

चार महीने तो तालाब का पानी पिया जा सकता है, परन्तु वर्षा-ऋतु में कुएँ का ताजा पानी पीना चाहिए।

चारू सो भारू।

जो ढोर अधिक चारा चरता है वह अधिक बोझ भी ढो सकता है।

चारू कभी न हारू।

चारे सें बैर करौ चरो का।

स्पष्ट।

चालीस सेरी बात।

बिलकुल ठीक बात, जिसमें लाग-लपेट न हो।

चाव घटे नित के घर जायँ, भाव घटे कछु मुख सें माँगें,
रोग घटे कछु औषध खायँ, ज्ञान घटे कुसंगत पायें।

चाहत की चाकरी कीजे। अनचाहत कौ नाव न लीजे॥

जो प्रेम से रखे उसी की नौकरी करनी चाहिए।

चिंटा मारो, पानी कड़ौ।

चींटी को मारा तो पानी निकला। एक तो बुरा काम किया और कुछ मिला भी नहीं। गुनाह बे लज्जत। गरीब को सताने से कोई लाभ नहीं होता।

चिंटी कों कन। हाती खों मन॥

भगवान देता है।

चिंटी कों रथ सजो।

किसी साधारण कार्य के लिए बड़ा आडंबर।

चिंटी पै मनन कौ बोझ।

असमर्थ पर बड़ा बोझ।

चिंटी होकें घुसे, मूसर होकें कड़े।

बातें बना कर अधिकार जमा लेना, और फिर मुश्किल से छोड़ना।

चित्त कौंड़ी है।

खूब लाभ हो रहा है।

चित्त चँदेरी, मन मालयें।

चित्त तो चँदेरी में और मन मालवे में। अस्थिर चित्त।

चत चंगेडी मन मालवे, हियो हाड़ोती जाय।—राज०

चित्त तुमाई, पट्ट तुमाई।

सब प्रकार से अपना ही हित देखना।

चित्त मोरी, पट्ट मोरी, अंटा[1] मोरे बाप कौ।

(१—ऐसी कौड़ी जो न तो पूरी चित्त हो, न पट्ट।) ऐसे आदमी के लिए व्यंग में प्रयुक्त जो हर तरह से अपना ही लाभ चाहता हो।

चित्त में, न पट्ट में।

अर्थात किसी में नहीं।

चित्रा गोऊँ, अद्रा धान, न उनकें गिरुआ, न इनकें घाम॥

क्वाँर में चित्रा नक्षत्र में गेहूँ और भादों के महीने में आर्द्रा में धान बोने से न तो गेहूँ को गिरुआ लगता है और न धान को धूप सताती है।

चित्रा बरसें तीन गये, कोदों, तिली, कपास।
चित्रा बरसं तीन भये, गोऊँ, सक्कर, मास॥

क्वाँर के महीने में चित्रा नक्षत्र में पानी बरसने से कोदों, तिली, कपास, इन तीनों की फसल को हानि पहुँचती है, और गेहूँ, ईख तथा उर्द को लाभ होता है।

चिरई के मों में सोनो।

चिड़िया के मुँह में सोना। बड़े आदमी के मुँह से जो निकल जाय वही ठीक।

चिरई चौंके, न बाज फरके।

घोर निस्तब्धता।

चींटी चाँवर लै चली बिच में मिल गई दार।
कहें कबीर दोऊ ना मिलें, जा लै बा लै डार॥

स्पष्ट।

चीकने घैला।

ऐसा बेशर्म आदमी जिस पर कोई उपदेश काम ही न करे।

चीकनो मों सब कोऊ देखत।

बड़े आदमी का सब सम्मान करते हैं।

चीकनों मों करें फिरत।

चिकना मुँह किये फिरते हैं। केवल अपना स्वार्थ देखते हैं। अथवा छैल-चिकनियाँ बने हैं।

चीकने गाल तिलनियाँ के, जरे-बरे भरभुँजिया के।

जो जैसा काम करता है उसके अनुसार उसका शरीर भी बनता है।

चील के घेंचुआ में माँस काँ?

चील के घोंसले में माँस कहाँ? उड़ाऊ-खाऊ के पास पैसा कहां?

चीलरन के दुखन कथरी नईं छोड़ी जात।

दुष्टों की परवा नहीं करनी चाहिए।

चील से मँडरा रये।

किसी वस्तु की ताक-घात में रहने पर।

चुखरियाँ दुलत्तीं खेलतीं।

चूहे दुलत्ती खेलते हैं। घर में कुछ भी खाने को नहीं है। बहुत गरीबी का होना।

चुगल चुगली सें नईं चूकत।

चुगलखोर चुगली से नहीं चूकता।

चुगली लग जात, पै बिनती नईं लगत।

चुगलखोर चुगली करके काम बना लेता है, परन्तु प्रार्थना काम नहीं आती।

चुटैया तौ हमाये हात में तौ जैये काँ।

चोटी जब हाथ में है तो जायगा कहाँ ?

चुन चुन गये मोरा। बींद गओ लिड़बोरा[1]।।

(१–लिड़ौरा, नर मोर।) मोरनियाँ थीं, चुन चुन कर चली गयीं, मोर फँस गया। होशियार आदमी तो काम बना कर चलता बना, मूर्ख चक्कर में आ गया।

चुपर कें और चार ठउआ।

वस्तु अच्छी भी माँगना और अधिक भी।

चुरियाँ लादीं पाठें परीं। खाँड़ लादी दौ में परी।।

सब प्रकार से दुर्भाग्य। किसी आदमी ने चूड़ियों का व्यापार किया तो जिस बैल पर वह उन्हें लाद कर लिये जा रहा था, एक चट्टान पर उसका पैर फिसल गया। चूड़ियाँ नीचे गिर पड़ीं और फूट गयीं। इसी प्रकार जब वह एक बार शक्कर लाद कर ले जा रहा था तो उसे एक नदी पार करनी पड़ी और बैल के बिदकने से सब शक्कर पानी में गिर पड़ी और घुल गयी।

चून न मून, चाल कें दै पओ।

झूठी भड़क दिखाना।

चूमचाट कें खा लओ।

घर साफ कर दिया। सब खा लिया।

चूले की नकरियाँ चूलेई में जरतीं।

चूल्हे की लकड़ी चूल्हे में ही जलती हैं। जहाँ की वस्तु वहीं काम आती है।

चुलीचें लांकूड चुलींत बरें—मराठी

चूले खों लूगर बताउत।

चूल्हे को जलती हुई लकड़ी बतलाते हैं। जानकार को सिखाना; अथवा जो आदमी जिस बात का अभ्यस्त है उसे उसी बात का भय दिखा कर डराना।

चूले में बिलइयाँ डंडोतें करतीं।

चूल्हे में बिल्लियाँ दंडवत करती हैं। घर में खाने को नहीं।

चूले में मूँड़ दओ तौ लूगरन कौ का डर?

दे० उखरी में मूँड़....

चूलो खोदें खाट बिछत।

घर में स्थान की इतनी कमी है कि चूल्हा खोद डालने पर ही खाट बिछ सकती है।

चेंथरी पै आँखें चड़ीं।

अंधे बन कर काम करते हैं। भला-बुरा कुछ न सूझता।

चेरी कौ चित्त महेरी में। (कि कब बने और कब खाऊँ)

बार-बार अपने ही मतलब की बात करना।

चैत सोवे रोगी, क्वाँर सोवे भोगी।

दिन में चैत के महीने में रोगी और क्वाँर के महीने में भोगी सोता है।

चैत मीठी चीमरी बैसाख मीठो मठा।
जेठ मीठी डोभरी[1] असाढ़ मीठे लटा[2]।।
सावन मीठो खीर-खांड़ भादों भुंजे चना।
क्वाँर मीठो काकरी ल्याव कोंरो टोर कें।
कातिक मीठो कुदई दहिया डारो मोय कें।
अगहन खाव जूनरी भुर्रा[3]-नीबू जोर कें।।
पूस मीठी खीचरी कछू गुर डारो फोर कें।
माघ मीठे पोंड़ा बेर फागुन होरा बालें।
समय समय की मीठी चीजें सुघर खवैया खावें।

(१—महुओं की खीर, जो महुओं को चावल या सिमई के साथ पानी में पका कर बनायी जाती है। २—भुने हुए महुओं को गुड़ के साथ कूट कर बनाया गया पदार्थ, यह तिलपट्टी की तरह होता है। ३—नमक।)

चैते गुर बैसाखे तेल, जेठे महुआ, असाढ़े बेल।
सावन भाजी, भादों मही, क्वाँर करेला, कातिक दही।
अघने जीरो, पूसे धना, माघे मिसरी, फागुन चना।
इतनी चीजें खैहो सभी, मरहो नहीं तो परहो सही।।

चैन की बंसी बजा रये।

मौज कर रहे हैं।

चोंटिया लेओ, न बकौटो भराओ।

न किसी को चुटकी लो और न वह तुम्हें हथेली से नोंचे।

चोंखरे कौ जाव बिलई करकोरत।

चूहे की संतान बिल ही खोदती है। जिसके घर में जो काम होता रहता है वह बचपन से उसी को सीखता और करता है।

चोंखरे दंड पेल रये।

—दे० चुखरियाँ दुलत्ती खेलतीं।

चोर के घरै छिछोर।

चोर के घर भी दूसरे छोटे-मोटे चोर घुस ही जाते हैं। अथवा चोर के घर भी छछोवा करने वाले घुस जायँ तो यह एक आश्चर्य की ही बात है।

चोर के पाँव (अ) ईं किते?

चोर के पैर ही कितने। दोषी जाँच करने पर नहीं ठहरता।

चोर खों चोर बसात।

चोर को चोर की गंध आती है। अर्थात चोर चोर को पहिचान लेता है।

चोर चोर मौसयायते भैय्या।

एक पेशे या एक स्वभाव के लोगों में आपस में शीघ्र मित्रता हो जाती है। एक की झूठ बात का जब दूसरा समर्थन करे तब।

चोर चोरी सें गओ, तौ का टारा-फेरी सें गैओ।

किसी का जन्मजात स्वभाव आसानी से नहीं छूटता।

इसकी एक कथा है कि एक चोर ने कई बार पकड़े जाने और दंड पाने के कारण चोरी करना छोड़ दिया और साधू हो गया। भला साधुओं के पास

चोरी करने के लिए क्या रखा था? परन्तु उसे तो अपने मन को शान्त करने के लिए कुछ न कुछ करना था। इसलिए जब सब साधू सो जाते तब वह उनके दंड-कमंडल ही इधर के उधर कर दिया करता। एक दिन साधुओं को पता लग गया कि यही मनुष्य हम लोगों की चीजों को अस्त-व्यस्त कर देता है। जब उससे पूछा गया कि तू ऐसा क्यों करता है तो उसने उत्तर दिया—मैं पहिले चोर था, यद्यपि मैंने चोरी करना छोड़ दिया। परन्तु क्या करूँ, अपनी आदत से लाचार हूँ। चोरी न करूँ, तो क्या टारा-फेरी भी न करूँ?

चोर जाने चोर की घाई।

चोर ही चोर की घात जानता है।

चोरन कुतिया मिल गई पहिरो कहु को देय।

घर का आदमी ही यदि विरुद्ध हो जाय तो काम कैसे चले?

चोर सें कयें चोरी कर, साव सें कयें जगत रौ।

दोनों पक्षों को उकसाना।

चोर ने केह के खातर पाड ने साहुकार ने केह के जागतो रेह—**गुज०**

चोरी और मों जोरी।

अपराध करके उल्टे जवाब देना।

चोरी-चोराँ खेती करी, जोतो का मँझोटो?

चोरी से खेती करके क्या आँगन जोतोगे? बड़ा काम चोरी-छिपे नहीं होता।

चोली[१] के पान।

(१—चुलिया, बाँस का बना छोटा डिब्बा) सुकुमार वस्तु, विशेषकर दूध पीते छोटे बच्चों के लिए प्रयुक्त। पान जिस प्रकार जल्दी सूखते हैं उसी प्रकार छोटे बच्चों को भी रोग जल्दी सताते हैं।

चौका सो झार बैठे।

सब पैसा साफ कर बैठे।

चौदा विद्या निधान।

सब कलाओं में प्रवीण। व्यंग में।

चौपर के खिलैया।

शतरंज के खिलाड़ी, चतुर व्यक्ति।

चौबे गये छब्बे होबे, दुबेई रै गये।

चौबे छब्बे होने गये, दुबे ही रह गये।

चौमासे के रिपटे और राज के पिटे कौ का डर।

चौमासे में रिपट कर गिर पड़ने और राज्य के द्वारा पिटने का डर क्या ?

चौमासे कौ जुर और राजा कौ कर।

इनसे पीछा नहीं छूटता।

छ

छछूँदर[१] छोड़बो।

(१—एक छोटी आतिशबाजी जो आग लगने पर बहुत तेज चक्कर काटती हुई जमीन पर भागती है।) ऐसी बात कह देना जिससे दो आदमियों में बैठे-ठाले झगड़ा हो जाय।

छटी कौ खाव-पिओ सब निकर गओ।

छटी का खाया-पिया सब निकल गया। बड़ा परिश्रम करना पड़ा। छठी का दूध याद आ गया।

छटी कौ लिखो नईं मिटत।

भाग्य का लिखा नहीं मिटता।

छट की सातें करें फिरत।

छठ की सातें किये फिरते हैं। अनियमित काम करते हैं।

छयपती, घटे पाप, बढ़े रती।

छींक आना, कुछ विशेष अवस्थाओं में, अशुभ मानते हैं। अतः किसी के छींकने पर छींक के दोष को दूर करने के लिए कहते हैं।

छप्पन टका।

बड़ी रकम। व्यंग में।

छल-छंद बगराबो।

चालबाजी दिखाना।

छाती के जम।

ऐसा आदमी जो टाले से न टले।

छाती पेरबो।

जानबूझ कर किसी को कष्ट देना।

छाती पै उर्दा (मूँग या कोदों) दरबो।

किसी के सामने ही ऐसा काम करना जिससे उसका जी दुखे।

छाती पै कोऊ नईं धर देअ (ए)।

धन-दौलत कोई साथ नहीं रख देगा।

छाती पै पथरा धरो।

छाती पर पत्थर रखा है। ऐसा भारी दुःख है जिसे प्रकट नहीं किया जा सकता।

छाती पै पथरा धर लओ।

दुःख सहने के लिए हृदय को कड़ा कर लिया।

छाती पै धर कें कोऊ नहीं लै जात।

धन के लिए कहते हैं।

छाती पै होरा भूँजत।

छाती पर होला भूनते हैं। जानबूझ कर जी दुखाते हैं।

छाती में गमको मार लओ।

दुःख को पीकर रह गये।

छिगुरी पकर कें कौंचा पकरबो।

थोड़ा सहारा पाकर गले पड़ जाना।

छिदाम की हँड़िया ठोक बजा कें लेत।

हर चीज देखभाल कर खरीदनी चाहिए।

छिन सीरे, छिन ताते।

घड़ी-घड़ी में मिजाज बदलना।

छिपनी सें समुन्दर उलीचत।

सीपी से समुद्र उलीचते हैं। असंभव कार्य।

छिरिया[1] के गोड़े बुकरिया में, बुकरिया के गोड़े छिरिया में।

(१–बकरी का बच्चा) इधर की चीज उधर मिलाना। ऊट-पटाँग काम करना।

छींकतईं नाक कटी।

छींकते ही नाक कटी। बिना किसी अपराध के ही कलंक लगा।

छींकत नहाइये, छींकत खैये, छींकत रहिये सोय।
छींकत पर घर न जाइये, चाय सर्व स्वर्न कौ होय॥

छींक संबधी विश्वास।

छींके की टूटन, बिलइया की लपकन।

छींके का टूटना और बिल्ली का लपकना। संयोग से कोई अच्छा काम बन जाना। बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा।

छींट की घँघरिया गजी[1] कौ तना[2]।

(१–खादी। २–घाँघरे के ऊपर की वह गोट जिसमें डोरा डालते हैं।) बेमेल काम।

छुपे रुस्तम।

ऐसा व्यक्ति जिसके गुणों का लोगों को पता न हो।

छुरी, छड़ी, छतरी, छला, सदा राखिये पास।

छूंछी हँड़िया बजे टन टन।

घर में कुछ खाने को नहीं। अथवा गुणहीन बहुत बात करता है।

छूंछे काऊ न पूंछे।

धनहीन को कोई नहीं पूछता।

छूछो फटको उड़ उड़ जाय।

मूर्ख के पास से कोई सार की बात पल्ले नहीं पड़ती। अथवा मूर्ख बड़ा घमंडी होता है।

छूटी घोड़ी भुसौरे ठाँड़ी।

जिसे जो आदत पड़ जाती है वह मुश्किल से छूटती है। अथवा जिसे कोई और ठिकाना नहीं होता वह घूम-फिर कर अपने स्थान पर ही आता है।

छूटौ बैल भुसौरी में।

छेरी अपने जी सें गई, राजा कयें अरौनी भई।

बकरी की तो जान गयी, और राजा कहते हैं—इसमें नमक कम है। कोई आदमी किसी के लिए मर-मिटे और वह उसके प्रति थोड़ा भी कृतज्ञ न हो तब कहते हैं।

बकरी जान से गयी खाने वाले को मजा न आया।—**फैलन**

छँ मईना कौ सकारौ करत।

छः महीने का सबेरा करते हैं। वादाखिलाफी करना। समय पर काम करके न देना।

छोटे-बड़े, सब कें दो कान।

क्या छोटे, क्या बड़े, सब बराबर होते हैं। सबके दो कान हैं।

छोटे बिगरें तब बड़न सें।

छोटे बड़ों का अनुकरण करके ही बिगड़ते हैं।

छोटो मों ऐंठे कान। जई बरद की है पहचान॥

अच्छे बैल की पहिचान यही है कि उसका मुँह छोटा और कान ऐंठे हुए हों।

छोटो सब सें खोटो।

लड़कों से व्यंग में।

छोड़िये न जबान, खेंचिये न कमान। खेलिये न जुआ, फाँदिये न कुआ॥

पा० हूज़िये न जमान......

छोड़ी राम अजुध्या, जो चाहे सो लेय।

किसी बात से कोई मतलब न रखना। रुपये-पैसे का मोह छोड़ कर झगड़े से अलग होना।

गढ़ सौंपा बादल कहँ, गये टिकठि बसि देव।
छोड़ी राम अजोध्या जो भावै सो लेव——जा०

छोड़े गाँव कौ नातौ का?

जिस बात से कोई प्रयोजन नहीं उसकी चर्चा क्या?

ज

जंगी घोड़ा कों भंगी असवार।

जैसे को तैसा मिलने से ही काम चलता है।

ज़गजानी देस बखानी।

सबकी देखी-सुनी प्रसिद्ध बात।

जग दरसन कौ मेला।

संसार में सबसे मिलजुल कर रहने का ही आनंद है।

जगन्नाथ के भात कों जगत पसारे हात।

श्रेयस्कर वस्तु को लेने की इच्छा सभी करते हैं। पुरी जगन्नाथ जी के मंदिर में भात का प्रसाद बँटता है और सभी वर्णों तथा जातियों के लोग प्रेम पूर्वक एक साथ बैठ कर खाते हैं।

जनम के आँदरे, नाव नैनसुख।

गुण के विपरीत नाम।

जनम के कोढ़ी।

सदा के रोगी। प्रायः गंदी आदतों वाले आदमी के लिए प्रयुक्त।

जनम के दुखिया नाव सदासुख।

दे० जनम के आँदरे....

जनम कौ कंटक टरौ।

सदा की विपत्ति टली। किसी अवांछनीय व्यक्ति से पिंड छूटने पर।

जनम कौ कोड़ एक ऐंतवार में नईं जात।

कोई बुरी आदत एक दिन में नहीं छूटती।
चर्मरोग से मुक्ति पाने के लिए सूर्य भगवान की उपासना करते हैं और इतवार का व्रत रखते हैं। उसी से अभिप्राय है।

जनम कौ सब कोऊ साथी होत, करम कौ कोऊ नईं।

जनम भरे में रूप धरौ बोई कोड़ी कौ।

भूले-बिसरे कोई अच्छा काम करने बैठे तो वह भी बेतुका।

जब अपने लरकई में लच्छन नइयाँ तब दायजे की का आसा करत?

जब अपना लड़का ही निकम्मा है तब दहेज की क्या आशा की जाय?

जब की जब तें लगी।

अर्थात अवसर आने पर देखा जायगा।

जब के बूढ़े अब के ज्वान। अब के हूँहें और निकाम॥

पुरानी पीढ़ी के बूढ़े लोगों का स्वास्थ्य जितना अच्छा है उतना आज कल के नौजवानों का नहीं, और अब जो लड़के हैं उनका स्वास्थ्य आगे चल कर और भी खराब होगा। वर्त्तमान समय के दुबले-पतले, क्षीणकाय नवयुवकों के संबंध में उक्ति।

जब जैसो तब तैसो।

जब जैसा समय हो तब वैसा ही करना चाहिए।

जब नटनी बाँसे चढ़ी तब काहे की लाज।

जब कोई काम करने ही लगे तो फिर उसमें संकोच क्या।

जब नचबे निकरीं तौ घूँघट काय पै।

दे० ऊपर

जब बिगरे तब सुघर नर, का बिगरेंगे कूर।
मठा बिचारे का बिगरें, जब बिगरें तब दूद।।

जब बोलें तब उबाँड़े।[1]

(१–टेढ़े।) सीधे तौरपर उत्तर न देने पर।

जब बोलें तब बाँ-आँ-आँ।

जब बोलते हैं तब ढोर की तरह। सीधी तरह न बोलना।

जबर कौ पैंड़ो मूँड़ पै।

जबर्दस्त का बोझ सिर पर। बलवान के आगे सब झुकते हैं।

जबर मारे रोउन न देय।

जब लाद लई तौ लाज काय की।

जब बेशरमी ही लाद ली तो फिर शरम किस बात की।
जब ओढ़ लीनी लोई तो क्या करेगा कोई।

जब सबरी नठ जात तब बिटिया कौ खात।

सब नष्ट होने पर ही बेटी का धन खाते हैं।

जब सें जानी तब से मानीं।

किसी बात की जानकारी होने पर उसे मान लेना पड़ता है।

जबा जर गये भुँजाई धर गये।

हानि की हानि हुई और गाँठ से भी देना पड़ा।

जबान हारी तौ सब हारौ।

वचन दिया तो सर्वस्व दिया।

जमी न जाँगा, अचलपुर के राजा।

झूठी तड़क-भड़क ।

जरयाने उर काँस में खेत करौ जिन कोय।
बैला दोऊ बेंचकें करौ नौकरी सोय।।

झरबेरी और काँस की जगह खेती नहीं करनी चाहिए। इससे तो बैल बेच कर नौकरी कर लेना अच्छा।

जरे पै फोरा पारबो।

दु:खी को और अधिक दु:ख पहुचाना।

जल में खोट करम में कीरा। जाँ देखो ताँ कीरई कीरा।।

संसार में कोई वस्तु निर्दोष नहीं।

जलेबी कौ पेंच।

जलेबी बनाने में जिस तरह के पेंच डाले जाते हैं उस तरह की टेढ़ी-मेढ़ी धूर्त्तता-पूर्ण बात।

जलै और कुलै मिलतन झेल नईं लगत।

जल और एक कुल के आदमियों को परस्पर मिलने में विलंब नहीं लगता।

जहर खाबे की फुर्सत नइयाँ।

बिलकुल अवकाश नहीं।

जाँ की माटी उतईं ठिकाने लगत।

जहाँ मरना बदा होता है अंत समय आदमी वहीं खिंच कर पहुँचता है।

जाँ चार बासन होत सो खटकतई हैं।

जहाँ चार आदमी इकट्ठे रहते हैं वहाँ आपस में खटपट हो ही जाया करती है।

जाँ जाँ चरन परें संतन के ताँ ताँ बंटाढार।

कोई आदमी जहाँ पहुँचे वहाँ ही काम चौपट हो जाये तब व्यंग में उसके लिए कहते हैं।

जाँ जाँ संत मठा कों जायँ, भैंस पड़ा दोऊ मर जायें।

दे० ऊपर।

जाँते पै बैठ कें सबे गा आउत।

चक्की पर बैठ कर सबको गाना सूझता है।

जाँतो फूटो, नातो टूटो।

जाँता फूटा और नाता टूटा। विवाहिता लड़की की मृत्यु हो जाने पर उसकी ससुराल वालों से प्राय: फिर कोई विशेष संबंध नहीं रहता। रिश्ता एक प्रकार से टूट जाता है। इस अर्थ में कहावत का प्रयोग।

जाँ दूला ताँ बरात।

जाँ देखें गुना-पुरीं, ताँ जायें लुरीं लुरीं।

जहाँ माल-मसाला खाने को देखा वहीं पहुँच गये।

जाँ न पोंचे रवि ताँ पौंचे कवि।

जहाँ सूर्य की पहुँच नहीं वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है।

जाँ पंच ताँ परमेसुर।

पंचों में परमेश्वर होते हैं।

जाँ बऊ कौ पीसनों, उतईं ससुर की खाट।

जहाँ बहू को सबेरे उठ कर पीसना है वहीं ससुर लेटा हुआ है। लाज-शर्म या अड़चन की बात।

जाँ मिलीं दो, तईं रये सो।

जहाँ खाने को मिलता है वहाँ सब जाते हैं।

जहाँ देखे तवा परात। वहाँ गावे सारी रात।।

जाँ मुरगा नईं होत ताँ का भोर नईं होत।

किसी के बिना किसी का काम नहीं रुका रहता।

जाँ रूख नईं उतै अरंडई रूख।

जहाँ कोई विद्वान नहीं होता वहाँ साधारण व्यक्ति को ही लोग बड़ा मानते हैं।

जाँ साठ, ताँ सत्तर।

थोड़े खर्च के लिए काम बिगड़ रहा हो तब प्रयुक्त कि और सही।

जाँ सेर, ताँ सवा सेर।

दे० ऊपर

जाओ पूत दक्खिन, बेई करम के लच्छन।

अकर्मण्य का कहीं ठिकाना नहीं लगता। अथवा कहीं भी जाओ प्रारब्ध साथ चलता है।

जा कान सुनी, बा कान निकार दई।

इस कान सुनी, उस कान निकाल दी। किसी बात पर ध्यान न देना।

जाकी जाति के जौन हैं, ताकी पाँत के तौन।
बाघ, बाज के बाचवा, धरे सिखावे कौन।

जाकी देखी जूनरी[1] ताकी न्योती चूल।[2]
जाकी नइयाँ जूनरी, ताकी गई सुध भूल।।

(१—ज्वार। २—चूल न्योतना=घर भर को भोजन के लिए आमंत्रित करना।) जिसके घर में ज्वार नहीं उसे न्योतना भूल गये। तात्पर्य यह कि पैसे वाले का सब आदर-सत्कार करते हैं।

जाके पाँव न फटी बिवाई। सो का जानें पीर पराई।।

जिसने स्वयं कभी कष्ट नहीं भोगा वह दूसरों के कष्ट का क्या अनुभव करेगा?

जाको ऊँचो बैठबो जाको खेत निचान।
ताको बैरी का करे जाको मींत दिवान।।

जो बड़ों की संगत में बैठता है, जिसका खेत नीचा है अर्थात जिसमें वर्षा का पानी भरता है, और राजा के मंत्री से जिसकी मित्रता है उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है।

जाग जगन्ते पारुआ, लाग लगंते और।

पहरुए जागते ही रहते हैं, चोरी करने वाले अपना काम बना ले जाते हैं।

जागै जो कोऊ धन कौ धनी। जागै जी कों चिन्ता घनी।।
जागैं रात अँधेरी चोर। जागै भर बरसाते मोर।।
जागै जीके घर में साँप। जागै जो बिटिया कौ बाप।।
जागै जो कोउ जपै जगदीस। जागै जीकों देनें सीस।।
जागै जी के देह में दुक्ख। जागै जी कों लागी भुक्ख।।

जागै सो पावे, सोवें सो खोवे।

सावधान रहने से ही लाभ होता है।

जा घर के सब नकटई नकटा।

किसी घर में एक से निर्लज्ज अथवा विलक्षण व्यक्तियों का होना।

जाड़ो ठाँड़ो गैल में करे हेत की बात।
मोरे बैरी तीन हैं, रुई, प्याँर[1] उर आग।।

(१—कोदों या धान का भूसा।)

जाड़ो जाय रुई सें कै दुई सें।

जाड़ा या तो रुई से जाता है या दो से।

जात खाय, कै जाँतो।

जात-बिरादरी के लोग खा पाते हैं या चक्की खाती है। कई जातियों में हर छोटे-छोटे मामले में बिरादरी वालों को खिलाना पड़ता है। उसीसे अभिप्राय है।

जात सें परजात भली।

जाति वालों से दूसरी जाति वाले अच्छे।

जान न चिनार, चार मइना साझे में रै जान दो।

जान न पहिचान, चार महीने साझे में रह जाने दो। बिना पूर्व-परिचय के ही निकट का संबंध स्थापित करना।

जान न पहिचान, बड़ी बीबी सलाम।

जान न चिनार हतयार भीतरे धरौ।

बिना जान-पहिचान के अपनी चीज दूसरे को सौंप दो।

जान-समज कें कुआ में गिरे।

जान-बूझ कर हानि की।

जान-समज कें कुआ में ढकेल दओ।

प्रायः लड़की के लिए कहते हैं कि जान-समझ कर अयोग्य वर को सौंप दी।

जानहार पैसा मुठी में सें चलौ जात।

जो हानि होने वाली होती है वह होकर रहती है।

जानहार बऊ, बड़ैरे[1] खों खोर।

(१—वह लट्ठा जिस पर छप्पर के छावन की लकड़ियाँ रखी जाती हैं।) बहू तो मरने को थी, दोष देते हैं बड़ेरे को, कि उसके गिरने से मरी। होनहार के लिए दूसरे को दोष देना।

जानि न जाय निसाचर माया।

दुष्ट मनुष्य का भेद जानना कठिन होता है।

जाने सो बूझे कहा, आद अंत बिरतंत।

समझदार को बहुत बताने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

जाप के बिरतें पाप।

धर्म की ओट में बुरे काम करना।

जा बात बा बात धर टका मोरे हात।

बार-बार अपने मतलब की ही बात करना।

जा बेरा ना बा बेरा, गधे नोंन दै दो।

न तो यह वक्त, न वह वक्त, गधे को नमक दे दो। बेवक्त काम करना।

जामिन न होय चोर कौ, सींग न पकरै ढोर कौ॥

चोर की जमानत नहीं देनी चाहिए, ढोर का सींग भी नहीं पकड़ना चाहिए।

जामें जित्ती बुद्धि है उत्ती देय बताय।
वाको बुरौ न मानिये, और कहाँ सें लाय॥

जायें उत्तर, बतायें दक्खिन।

कुछ का कुछ बताना।

जाये की पीर मताई खों होत।

माता ही प्रसव की वेदना जानती है। अथवा माता को ही संतान के सुख-दुख की चिन्ता होती है।

जार[1] खों जेरी,[2] गँवार खों लठा। कोंदन की रोटी खों भैंस को मठा॥

(१—झरबेरी के कँटीले झाँखड़। २—झाड़-झंखड़ उठाने की लंबी, दुफँसी लकड़ी।) झाड़-झंखाड़ को उठाने के लिए जेरी, गँवार के लिए लट्ठ और कोदों की रोटी के लिए मठा चाहिए।

जाही बिध राखे राम ताही बिध रहिए।

जिअत जिअत के सब सँगाती, मरे कौ कोऊ नइयाँ।

जिअत जिअत कौ नातौ है।

जीते जी के ही सब नाते हैं।

जिअत महोबे हम ना जैहें कागा मरे हाड़ लै जायँ।

किसी काम को न करने का दृढ़ निश्चय।

बुन्देली काव्य 'आल्हा' में आल्हा का परिमाल से उस समय का कथन जब परिमाल उसके पास कन्नौज से महोबा चलने के लिए उसे मनाता है।

जिअे पिया चायँ बई सुहागिन।

जिसे पिया चाहें वही सुहागिन।

जितै जाय भूखा उतै परै सूखा।

दुःखी को सब जगह दुःख ही मिलता है।

जितै पौनी उतै तगा।

जहाँ पौनी वहाँ धागा। दो का घनिष्ट संबंध।

जितै नइयाँ सुनवइया, उतै मरौ कहवइया।

जहाँ कोई सुनने वाला नहीं वहाँ कहने वाला बेमौत मरता है।

जित्ते उन्ना उत्ती (अ) ई ठंड।

जितना कपड़ा उतनी ही ठंड।

जित्ते की तौ मजूरी नईं जित्ते कौ लाँगा चिथ गओ।

दे० इत्ते की तो कमाई नई.....

जित्ते मों उत्ती बातें।

जितने मुँह उतनी ही बातें।

जित्तो करम में लिखो उत्तो कऊँ नईं जात।

जितना भाग्य में लिखा है उतना मिल कर ही रहता है।

जित्तो खात उत्त (औ) ई ललात।

जितना खाता है उतना ही ललाता है। छोटे लालची बच्चों के लिए।

जत खाय तत ललाय—बंगला

जित्तो खावे सबरी बरात। उत्तो खावे दूला कौ बाप॥

किसी एक आदमी के आदर-सत्कार में बहुत खर्च हो जाना।

जित्तो गुर डारो उत्तोई मीठो होत।

जत मेघ तत वृष्टि जत गुड़ तत मिष्टि—बंगला

जित्तो छोटो उत्तोई खोटो॥

उपद्रवी बालक के लिए कहते है।

जित्तो पानी पियाउत उत्तोई पियत।

किसी के बिलकुल अधीन बन जाना।

जिन घर सास न नंदा, तिन घर बड़े अनंदा।

घर में सास और ननद न होने पर बहू को चैन ही चैन रहता है।

जिन पै नौबतें बजीं, बे उपलन सें का छरकें।

जिन पर नौबत बजीं वे कंडों की मार से क्या भयभीत होंगे? कठिन दुःख जिसने झेले वह साधारण कष्टों की क्या परवा करेगा?

जियें मेरो भैय्या। घर घर भौजैय्या॥

साधन हो तो कार्य भी हो जाता है।

जी की गूजर खीर खाय, बई की भैंस छोर लै जाय।

कृतघ्न के लिए प्रयुक्त।

जीकी बात कौ ठीक नईं, बाके बाप कौ ठीक नईं।

जीकी बैन अंदर। ऊको भाई सिकंदर॥

भाई जब ससुराल में अपनी बहिन के पास जाता है तो उसे खूब खाने पीने को मिलता है? और बहिन के कारण वह किसी की परवाह नहीं करता।

जीकी भीतर बाई। ऊ की राम बनाई॥

दे० ऊपर

जीकी इतै चाह्ना, ऊ की उतै चाह्ना।

जिसकी संसार में चाह होती है उसे भगवान् भी चाहते हैं।

जाकी यहाँ चाहना है वाकी वहाँ चाहना है,
जाकी यहाँ चाह ना वाकी वहाँ चाह ना है।
—ग्वाल

जीके जाँ सींग समात सो जात।

जिसका जहाँ ठिकाना लगता है, सो जाता है।

जीके जैसे बाप मताई तीके तैसे लरका।
जीके जैसे नदिया नारे, तीके तैसे भरका[1]॥

(१– नदी किनारे के बड़े गड्ढे, खड्डी।) संतान अपने माता-पिता के ही अनुरूप होती है।

ठाय तेवी ठीकरी ने माअे तेवी दीकरी—**गुजराती**
(जैसा बर्त्तन वैसी ठीकरी, मा वैसी बेटी।)
खाण तशी माती आणि आत तशी माची—**मराठी**
(जैसी खान, वैसी उसकी मिट्टी, जैसी काकी वैसी भतीजी।)

जीकौ जौन सुभाव जाय नईं जी सें।
नीम न मीठे होयँ खाओ गुर घी सें॥

जीकौ पेट पिरात सो अजवान ढूँढ़त।

जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वह उसे स्वयं खोजता फिरता है। (बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ अजवायन खाती हैं। उदर-विकारों की तो वह एक बढ़िया औषध है ही।)

जार माथा भांगे सेई चून खोंजे—**बंगला**
(जिसका सिर फूटता है वही चूना खोजता फिरता है।)

जीकौ मरै सो रोवै। गंगादास मढ़ी में सोवै॥

किसी से कोई मतलब न रखना।

जीकौ लरका घूंटइ-घुंट्यन ऊकी बरात कौ का पूंछने।

जिसका लड़का घुटनों चलता है अर्थात अबोध या लँगड़ा है उसकी बरात का क्या पूंछना? वह अवश्य विलक्षण होगी। थोड़ा देख कर बहुत समझना।

जीके माथें परत सोई जानत।

जिस पर बीतती है वही जानता है ।

जीकौ आँड़ू बिकै, बो बधिया काय खों करै।

जिसका आँड़ू बैल ही बिके वह बधिया क्यों करै। जिसका काम आसानी से हो जाय, वह उसके लिए फिर अधिक कष्ट क्यों उठाये?

जीकौ काम ओई खाँ छाजै। गद्धा मूँड़ डेंड़का बाजै।

जिसका काम उसी को शोभा देता हैं। दूसरा करै तो उसे हानि उठानी पड़ती है।

जीकौ खाइयें भतवा, ऊकौ गाइये गितवा ।।

जिसका अन्न-जल खाय उसकी प्रशंसा करे।

जीकौ खावे, ऊकौ गावें (अथवा बजावे)।

दे० ऊपर।

जीकौ ढँड़क जात, सो रूखो खात।

जिसका घी गिर जाता है वही रूखा खाता है। जिसकी हानि उसी को भुगतनी पड़ती है।

ढँड़क जात घी जीकौ ईसुर तेई खां रूखौ खानें—ईसुरी

जीं घर नइयाँ बड्डा, सो घर डिग्गमडिग्गा।

बूढ़े-पुराने आदमी के बिना घर का प्रबंध ठीक तौर से नहीं चलता।

जीनें चोंच दई सो चुन दे (ए)।

जिसने पैदा किया वह खाने को भी देगा। भगवान का भरोसा।

जीनें बिटिया दई तीनें सब कछू दओ।

जिसने बेटी दी, उसने सब कुछ दिया।

जी पतरी में खायें ओई में छेद करें।

कृतघ्न के लिए।

जी पै बीतत सोई जानत।

दे० जीके माथें परत।

जीभ कैसो रहबो है।

जिस प्रकार दाँतों के बीच में जीभ रहती है उसी प्रकार परवश होकर रहना।

जीभ कौ स्वाद।

केवल जीभ के स्वाद के लिए कोई वस्तु खाना।

जीभ जरी, न स्वाद पाओ।

कष्ट भी उठाया और कोई विशेष लाभ न हुआ।

जी में जो आ गओ।

चैन मिल गया।

जी सें जहान लगो।

जान है तो जहान है।

जुग फूटौ, नर्द[1] मरी।

(१–चौसर की गोट।) जब तक एका है, तभी तक बल है। अलग हुए और पिटे। चौसर के खेल में जब तक दो गोटें एक घर में रहती हैं तब तक उन्हें कोई मार नहीं सकता।

जुत जुत मरें बैलवा, बैठे खायें तुरंग।

बैल बेचारे खेत जोत-जोत कर मरते हैं और घोड़े आराम से बैठे खाते हैं।

जुर, जाचक, उर पाउनों, चौथो माँगनहार।
लांघन तीन कराय दे, फेर न आवे द्वार॥

ज्वर, भाट, पाहुना, और भिखारी, इनको तीन दिन भूखों मारे तो ये फिर दरवाजे पर लौट कर नहीं आते।

जूँठो खैये मीठे खों।

मीठा खाने के लिए कभी-कभी जूँठा भी खाना पड़ता है।

जेंकें छोड़े पाउनो, जी लै छोड़े ब्याध।

पाहुना भोजन करके और पुराना रोग प्राण लेकर ही पिंड छोड़ता है।

जेठ के भरोसें पेट।

दूसरे के भरोसे काम करने पर प्रयुक्त।

जेठे की जिठाई राख दई।

बड़ों का बड़प्पन रख दिया।

जेवरिया कौ साँप बनाउत।

रस्सी का साँप बनाते हैं।

जैसी करनी, ऊसी भरनी।

कर्म का फल भोगना पड़ता है।

जैसी गंगा नहाओ ऊसी सिद्धि।

जैसा काम करो वैसा फल मिलेगा।

जैसी देखी गाँव की रीत। ऊसी उठाई अपनी भींत॥

लोकरीति के अनुसार काम करना पड़ता है।

जैसी देवी तैसे पंडा।

एक से लोगों का मिल जाना।

जैसी देवी तैसे धमार[१]।

(१—होली के गीत।) जैसी देवी हैं वैसे ही उनके गीत भी गाये जा रहे हैं।

जैसी नकटी नचनारी, ऊसोई टिड़का बजैया।

दोनों एक से।

जैसी बहे बयार पींठ तब तैसी दीजे।

समय के अनुसार चलना चाहिए।

जैसी बेटी गवनारी हैं ऊसी नचनारी होतीं तो ना जाने का करतीं।

बेटी गाने में जैसी प्रवीण हैं वैसी नाचने में होतीं तो न जाने क्या करतीं?

जैसी मत तैसी गत।

जैसे असू तैसे बसू, न इनकें कछू न उनकें कछू।

दोनों एक से निकम्मे।

जैंसे कंता घर रहे तैंसे रहे बिदेस।

निकम्मा आदमी जैसा घर रहा वैसा बाहर, सब बराबर।

जैंसे खों तैंसो मिल जात।

जैसे को तैसा मिल जाता है।

जैंसे कों तैंसो मिलो, मिली खीर में खाँड़।
तें जात की बेड़नी, मैं जात कौ भाँड़॥

कथा—एक ग्रामीण वेश्या ने पितृ पक्ष के दिनों में ब्राह्मणों को अपने घर भोजन कराना चाहा। परन्तु कोई उसके घर आने को राजी नहीं हुआ। बहुत ढूँढ़-खोज के बाद तिलक-छापा लगाये और गले में माला पहिने हुए एक ब्राह्मण मिला। उसे वह अपने साथ लिवा लायी और बड़े प्रेम से भोजन कराया। अंत में दक्षिणा देकर बोली—महाराज, मेरा अपराध क्षमा कीजिएगा। मैं जाति की बेड़नी हूँ। ब्राह्मण-भोजन कराने की बड़ी इच्छा थी, इसलिए आपको लिवा लायी। ब्राह्मण बोला—कोई बात नहीं। मैं भी भाँड़ हूँ। ब्राह्मण का वेष बनाये फिर रहा था। सोचा चलो आज इस प्रकार ही कहीं बढ़िया माल खाने को मिल जायगा और उसने ऊपर का दोहा कहा।

जैंसे खों तैंसो मिले मिले कुलरियें बेंट,
कानी खों कनवा मिले धरें आँख पें टेंट।

जैंसे को तैसा मिल जाता है।

जैंसे गुरू तैंसे चेला।

जैंसे नब्बें तैंसे सौ।

जहाँ अधिक खर्च हो रहा है वहाँ थोड़ा और सही।

जैंसे नागनाथ तैंसे साँपनाथ।

दोनों एक से।

जैंसे नैना आज के, तैंसे नित के होयँ।

सदैव एकसा प्रेमभाव रखने का आग्रह।

जैंसे बाई के कोदों तैसी हौंग हमार।

जैसा तुमने हमारे ऊपर खर्च किया वैसा हम कर रहे हैं।

जैसो अन्न खाओ ऊसी (अ) ई डकार आऊत।

मनुष्य जैसा भोजन करता है उसके शरीर में वैसे ही लक्षण प्रकट होते हैं।

जैसो अन्न खाओ ऊसोई मन होत।

भोजन का मन पर प्रभाव पड़ता है।

जैसा अनजल खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी बानी होय।

जैसो काम तैसो दाम।

काम के अनुसार दाम दिये जाते हैं।

जैसो देस तैसो भेस।

जिस देश में रहे वहाँ की रीति ग्रहण करनी पड़ती है।

जैसो नचाओ तैसो नचने।

तुम्हारे अधीन हैं। जैसा कहोगे करना है।

जैसो भैंय्या कौ मसालो, तैसोई बैंन कौ बघार।

दे० जैसे बाई के कोदों।

जो आपकों न चाय, बाके बापकों न चाय;
जो आपकों चाय, बाके गुलाम कों चाय।

जो आओ है सो जै (ए)।

जो आया है सो जायगा।

जो उगो सो अथैहे।

उदय के साथ अस्त भी लगा है।

जो कऊँ बरसें ऊतरा, कुदई न खायें कूतरा।

उत्तरा नक्षत्र में पानी बरसने से कोदों की फसल अच्छी होती है।

जो कोऊ जिये सो खेले होरी।

जो जीवित रहे वही जीवन का आनंद उठाये।

जो कोऊ हमें देखकें जरै बरै ऊकी आँखन में राई नोंन परै।

टोटका करते समय स्त्रियाँ कहती हैं।

जोग में जोग मिल गओ।

जैसे को तैसा मिल गया।

जो गरजत सो बरसत नैयाँ।

जोगी कीके मीत।

जोगी किसी के मित्र नहीं होते। वे तो हमेशा घूमते रहते हैं।

जोगी कैसी फेरी।

प्रियजनों का आना-जाना कम हो जाना।

जोगी कौ डेरा कुँमाँर के घरैं।

जैसे की संगत तैसे के साथ ही होती है।

जोगी जुगत सें जुग जुग जिये।

योगी संयम से रह कर ही दीर्घायु पाता है।

जो गुर खाय सो कान छिदाये।

लाभ के लिए कष्ट उठाना पड़ता है।

जो गैल बतावे सो आँगें होय।

जो चढ़ै सो गिरै।

जो जस करै सो तस फल चाखा।

जो जाके मन में बसे सो सपने दरसाय।

मन की बात सपने में दिखायी देती है।

जो जामें जानें नईं सो काय खाँ जाय।

चोंच कपे में खप गई ऊपर पंख दिखाय।।

एक कौए ने किसी किलकिले को मछली का शिकार करते देखा। उसका अनुकरण करके उसने भी पानी में डुबकी लगायी। परंतु उसकी चोंच पानी में फँस गयी और पंख ऊपर फड़फड़ाते रह गये।

जो जैसो सो तैसो।

जो जैसा है सो वैसा भोगेगा।

जो जैसी करनी करे, सो तैसो फल पाय।
बेटी पहुँची राज घर, बाबे बँदरा खाय॥

इसकी एक कथा है कि एक साधू किसी राजा की लड़की को देख कर उस पर मोहित हो गया और उसे प्राप्त करने के उद्देश्य से उसने राजा से कहा कि यह लड़की बड़ी कुलच्छनी है। इसे आप एक कठघरे में बंद करके नदी में बहा दीजिए, अन्यथा इससे आपके राज्य का नाश होगा। साधू की बात मान कर राजा ने ऐसा ही किया। उसी नदी के किनारे जिसमें कठघरा बहाया गया दूर जंगल में साधू की कुटी थी। इसलिए उसने सोचा था कि कठघरा जब बहते-बहते कुटी के सामने पहुँचेगा तो उसे वह बाहर निकाल लेगा, और इस प्रकार बिना किसी कठिनाई के उसे राजकुमारी मिल जायेगी। परन्तु संयोग से इसके पूर्व कि कठघरा उसकी कुटी के दरवाजे पहुँचता वह एक दूसरे राजा के लड़के के हाथ पड़ गया जो उस समय अपने दल-बल के साथ जंगल में शिकार खेलने आया था। कठघरे में राजकुमारी को बैठा देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसका सब हाल सुन कर उसे तो उसने तुरन्त अपने राजमहल में भिजवा दिया और उसके पश्चात कठघरे में उसके स्थान पर एक भयावने बंदर को बंद करके उसे फिर ज्यों का त्यों नदी में छुड़वा दिया। कठघरा जब बहते-बहते साधू की कुटी के सामने पहुँचा तो उसने चेलों की सहायता से उसे बाहर निकाल लिया और चेलों से कहा कि देखो इसके भीतर एक भयंकर भूत बंद है। रात्रि के समय कुटी का दरवाजा बंद करके मैं इसे अपने वश में करूँगा। संभव है उस समय भूत कुछ उपद्रव करे और चीखे-चिल्लाये, तो तुम लोग इसकी कोई चिन्ता मत करना और न कुटी के पास ही आना। चेलों ने ऐसा ही करने के लिए कह दिया। रात्रि होते ही कुटी का दरवाजा बंद करके ज्यों ही साधू ने उत्सुकतापूर्वक कठघरे को खोला तो उसमें से राजकुमारी के स्थान पर क्रोध से खों-खों करता हुआ भयंकर बंदर निकल पड़ा और उस पर टूट पड़ा। कुटी के भीतर से शोरगुल और चीत्कार की आवाज सुन कर चेलों ने समझा कि यह सब भूत की करामात है इस कारण डर के मारे कोई पास नहीं आया। किसी प्रकार रात्रि बीती। प्रातःकाल जब कुटी का दरवाजा खोला गया तो बंदर तो निकल कर भाग गया और चेलों ने देखा कि साधू वहाँ मरा पड़ा है।

जो दओ खाओ सोई अपनो।

जो दूसरों को दिया अथवा स्वयं खाया वही सार्थक।

जो धन दीखे जावतो आधो दीजे बाँट।

नष्ट होते हुए धन को बाँट देने में ही समझदारी है।

जो धावे सो पावै।

प्रयत्न करने वाले को ही लाभ होता है।

जो नजर सें न मरै बो मार सें का मरै ?

बेशरम के लिए प्रयुक्त।

जो न भावै आपै, सो देय बहू के बापै।

जो वस्तु स्वयं अच्छी न लगे उसे दूसरे के मत्थे मढ़ना।

जो न मानें बड़न की सीख, लै खपरिया माँगै भीख॥

बड़ों की सीख न मानने पर हानि उठानी पड़ती है।

जो पाँडे के पत्रा में सो जजमान के मों में।

किसी के मन की बात पहिले से ताड़ लेना।

जो बिटियाँ सौ साठ तौऊ बाप की नाठ।

किसी आदमी के सौ बेटियाँ भी हों तो भी एक पुत्र के बिना वह निःसंतान ही माना जाता है।

जो मूँदे कंबल के छेद। सो जाने जाड़े कौ भेद॥

कंबल पर एक पतला चादर भी डाल लेने से वह अधिक गरमाता है।

जाड़ राड़ के कवन चिरउरी कम्मर पर जब होय पिछउरी।—**भोजपुरी**

जो मोय जोते टोर मरोर। बाकी कुठिया देहों फोर॥

खेत कहता है, जो किसान मुझे अच्छी तरह तोड़-मरोड़ कर जोतता है अन्न से मैं उसका कुठला भर देता हूँ।

जो मोरें है सो काऊ कें नइयाँ।

व्यर्थ गर्व करना।

जो मोरें है सो राजा कें नइयाँ।

दे० ऊपर।

जोर जोर मर जायेंगे माल जमाई खायेंगे।

कंजूस के लिए प्रयुक्त।

जोरा तँगोरी कौ ब्याव, चचा लटकनियाँ।

जोड़-तँगोड़ कर किसी प्रकार तो लड़की का विवाह किया और वह कहती है—चचा, लटकन बनवा दो !

जोरिया से ऐंठत।

रस्सी-से ऐंठते हैं। व्यर्थ अकड़ते हैं।

जोरू चिकनी, मियाँ मजूर।

जिसकी स्त्री बहुत बन-ठन कर रहती हो उसके लिए व्यंग में।

जोरू न जाँता अल्ला मियाँ से नाता।

बेफिक्र आदमी।

जौ सबकों हुइये सो हमाओ हुइये।

जो सबका होगा सो हमारा होगा। सबके साथ हम भी परिणाम भुगतने को तैयार हैं।

जो हतिया पूँछ डुलावे। तौ पैसा पइली बिकावे।।

हस्त नक्षत्र में पानी बरसने पर रबी की फसल को लाभ होता है।

जौ घर बाबनईं बाबन खों भओ।

यह घर बाबों ही बाबों को हुआ। फिजूलखर्ची करने पर प्रयुक्त।

जौ घर सौतनईं सौतन कों भओ।

दे० ऊपर।

जौ नईं तौ और कर लओ, मोरो राम नें का कर लओ।

एक पति के मर जाने पर मैंने दूसरा कर लिया। राम ने मेरा क्या कर लिया ? स्वावलंबी व्यक्ति का कथन।

जौनईं दुखन मूँड़ मुड़ाओ, तौनईं दुक्ख आगें आँव।

जिस विपत्ति से बचना चाहा वही सामने आयी।

जौन गाँव जानें नईं बाको गली का पूछनें ?

जिस काम को करना नहीं उसकी चर्चा से क्या प्रयोजन ?

जौन दुक्ख छोड़ी भेलसी, तौनईं तेली मिलौ परोसी।

दे० जौनईं दुखन मुंड़ मुड़ाओ।

जौन नीम कौ कीरा, तौनईं में मानत।

जिस आदमी को जैसे वातावरण में रहने का अभ्यास पड़ जाता है वह उसी में सुखी रहता है।

जौन रूख के जुआँ[1] बनें तरेईं हो काय खों कड़नें।

(१—जुआ, संस्कृत युग, गाड़ी के आगे लगी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है।) जिस वृक्ष की लकड़ी के जुआँ बने उसके नीचे से ही क्यों निकलना ? अर्थात जिस आदमी को हानि पहुँचायी है उसके समीप ही क्यों जाना ? उससे तो बच कर रहना अच्छा।

जौन बर देखें मोय ताप चढ़ै तौनईं बर ब्याहन आय।

जिस बात से चिढ़ वही सामने आयी।

जौ बौ गुर नइयाँ जिये चींटा खा जायें।

जौलों गाड़ी ढँड़के तौलों ढँड़कायें जाओ।

जब तक काम चले चलाये जाओ।

जौलों फूलै केतकी तौलों बिलम करील।

जब तक मनचाहा कार्य पूरा न हो तब तक कुछ-न-कुछ करते रहना चाहिए।

जौलों भटा-भाजी तौलों बिरजो काकी।

मतलब की दोस्ती।

जतक्षण दूध ततक्षण पूत—**बंगला**

कामा पुरता मामा आणि ताकी पुरती आजीबाई—**मराठी**

(काम बने के मामा और मठा मिले की आजीबाई)।

जौलों भूत गंगाजुए गये तौलों मरघटा जुत गये।

जब तक एक काम करने गये तब तक दूसरा चौपट हो गया।

जौलों लरका बारे, तौलों बिगनई[1]।

(१—बिगनों का आक्रमण। बिगना=भेड़िया।) जब तक लड़के छोटे हैं तभी तक भेड़ियों का डर है। पास में जब तक पैसा रहता है तब तक लूट-खसोट करने वाले भी मौजूद रहते हैं।

जौलों लालाजू पाग सँवारत तौलों दरबारइ उठो जात।

अवसर पर विलंब करने पर।

जौलों साँस तौलों आस।

ज्यों केला के पात में, पात पात में पात।
त्यों ज्ञानी की वात में, बात बात में बात॥

ज्यों ज्यों कंचन ताइये त्यों त्यों निरमल होय।

विपत्ति में ही सज्जन पुरुषों के गुण प्रकट होते हैं।

ज्यों ज्यों भींजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय।

मनुष्य संसार में जितना ही लिप्त होकर रहता है उतना ही पाप का बोझ बढ़ता जाता है।

ज्वानी के सौ यार।

ज्ञान घटै जड़ मूढ़ की संगत, ध्यान घटै बिन धीरज ल्यायें।

ज्ञानी मारे ज्ञान सें रोम रोम भिद जाय।
मूरख मारे डेंड़का टूट कनपटी जाय॥

ज्ञानी सें ज्ञानी मिलै करै ज्ञान की बात।
गद्धा सें गद्धा मिलै, मारै लातईं लात॥

झ

झंडा गाड़बो।

पूर्ण रूप से अधिकार करना। प्रभाव जमाना। अपनी बात ऊँची रखना।

झरबेरी कौ काँटौ।

दुष्ट प्रकृति का आदमी। झरबेरी का काँटा अत्यन्त तीक्ष्ण और टेढ़ा होता है।

झरे में कूरा फैलाबो।

गड़बड़ पैदा करना।

झल्लन खेती हल्लन न्याव।

अच्छी खेती के लिए थोड़ा-थोड़ा पानी और झगड़े के लिए शोरगुल चाहिए।

झाँसी गरे की फाँसी, दतिया गरे कौ हार।
ललतपुर कबहुँ न छोड़िए, जब लग मिलें उधार।।

ललितपुर में किसी समय रुपये का लेन-देन बहुत होता था।

झाम झंपट, घी संपट।

डाँट-डपट कर किसी की वस्तु झपट लेना।

झूँठइ लेना, झूँठइ देना, झूँठइ भोजन, झूठ चबैना।

झूठे व्यक्ति के लिए।

झूँठन के बादसा।

बहुत झठा।

झूँठी न बोलो तौ खाई रोटी न पचै।

झूठे व्यक्ति के लिए।

झूँठे के आँगें सच्चो रो मरै।

झूठे के आगे सच्चे की नहीं चलती।

झूँठे ब्याव, साँचे न्याव।

विवाह झूठ बोल कर ही होता है। न्याय में सत्य से काम लेना पड़ता है।

ट

टँगपुछिया, उर ओछे कान। हिरन पेटिया लगी मुतान॥
सींग अँगोइया चौरी छाती। बैल न जानों बेटा हाती॥

ऐसा बैल जिसकी पूँछ टाँगों तक लटकती हो, कान छोटे हों, मूत्रस्थली हिरन की जैसी, पेट से चिपकी हो, सींग आगे को मुड़े हों, और छाती चौड़ी हो, काम करने में हाथी की तरह मजबूत होता है।

टंटौ मोल लै लओ।

झगड़ा मोल ले लिया।

टकन के चाकर।

पैसों के गुलाम।

टकन खों न पूँछे जेओ।

कोई टके को नहीं पूछेगा। मारे-मारे फिरोगे।

टकसाली बात।

पक्की, खरी बात।

टका धरौ, पइसा उठाऔ।

टका रखोगे और पैसा उठाओगे। उलझन में पड़ोगे।

टका न खरचें गांठ कौ नित्त बराते जायें।

मुफ्तखोरों के लिए।

टका बनाबो।

पैसे सीधे करना। रुपये कमाना।

टका में टका, ढका में ढका।

पैसे में पैसा आता है, विपत्ति में विपत्ति और बढ़ती है।

टका लगै, चाय टाँची[1] बिकाय।

(१—रुपये रखने की लंबी और पतली थैली जो कमर में लपेटी जाती है।)
टका खर्च हो, और चाहे टाँची बिक जाय। कुछ भी हो, काम पूरा करके ही छोड़ा जायगा।

टका सी सुनाबो।

खरी-खरी सुनाना।

टका सौ जुवाब दै दओ।

खरी चुका दी।

टका सौ मों लै कें रै गये।

चुप हो गये। कुछ कहते नहीं बना।

टकै गज की चाल चलबो।

धीमी चाल चलना। मंद-गति से काम करना।

टटोबें बेटी अपनो कपार।

बेटी अपना कपाल टटोलती हैं। घर का कोई छोटा आदमी—लड़का या लड़की, जब अपने हाथ से अपना कोई बड़ा अनिष्ट कर लेता है तब दुःख, क्षोभ और व्यंग में कहते हैं।

टठिया, न लुटिया, खेयें दार भात।

थाली न लोटा, खायेंगे दाल भात।

टठिया में खाओ, तौ कई खपरा में खेयें।

थाली में खाओ, तो कहा, खप्पर में खायेंगे। हित की कहने पर कोई उल्टा चले तब।

टठिया हिरात तौ गगरी में हात डारौ जात।

थाली खोने पर गगरी में हाथ डाला जाता है। गरज पड़ने पर ऐसी जगह भी जाना पड़ता है जहाँ से काम पूरा होने की कोई आशा न हो।

टाँकी बज रई।

मकान शीघ्र बन रहा है व्यंग में।

टाँड़े में हो लुखरो[1] कढ़ गईं नैकानजू कुँआँवन लगीं।

(१—लोखरी, लोमड़ी।) एक बार एक लोमड़ी बनजारों के एक दल के बैलों के नीचे होकर खुलक कर निकल गयी। अपने इस वीरतापूर्ण कार्य के लिए

उसका नाम पड़ गया 'नैकानजू' अर्थात 'लाँघ कर निकल जानेवाली' साधारण सी करनी के लिए जब कोई अपनी प्रशंसा का ढोल पीटे तब कहते हैं।

टाँग तरे हो निकर जें।

हार मान लेंगे। तुम्हारे चाकर बन जायेंगे।

टाँय-टाँय फिस्स।

आडंबर तो बहुत, परंतु अंत में काम कुछ नहीं।

टिकली सेंदुर सें गये तौ का खाबे मेंईं बज्जुर परै!

बनाव-श्रृंगार की सामग्री से गये तो क्या पेट भर भोजन भी नहीं मिलेगा?

टीप-टाप करबौ।

बिगड़े हुए काम को इधर-उधर से बनाने का प्रयत्न करना।

टूटी तान कसौरिया[1] पै।

(१—देहाती बाजों के साज में मृदंग और इकतारे के साथ काँसे की एक कटोरी भी रहती है, जो एक छोटी लकड़ी से बजायी जाती है। यह कसावरी कहलाती है और उसे बजाने वाला कसौरिया।) बेसुरा तो हुआ कोई, परन्तु सारा गुस्सा उतरा कसौरिया पर। अर्थात काम तो किसी से बिगड़ा और उसका दोष मढ़ा गया किसी दूसरे के सिर।

टेड़ी खीर है।

जब कोई मामला बेढब तरीके से उलझ जाय और उसे सुलझाना बहुत कठिन हो तब कहते हैं।

कथा—किसी मनुष्य ने एक जन्म के अंधे से पूछा कि खीर खाओगे? उसने कहा—खीर कैसी होती है? उस मनुष्य ने जवाब दिया कि सफेद रंग की। अंधे ने फिर पूछा—सफेद रंग कैसा होता है? जवाब मिला—जैसा बगला। अंधे ने पूछा—बगला कैसा होता है? इस पर उस मनुष्य ने अपना हाथ टेढ़ा करके कहा—ऐसा होता है। उस अंधे ने टेढ़े हाथ को टटोल कर और सिर हिला कर कहा—नहीं बाबा, मुझसे ऐसी टेढ़ी खीर नहीं खायी जायगी। यह तो मेरे गले में ही अटक जायगी।

टेढ़ जान संका सब काहू।

ठ

ठंडो नहाय, तातौ खाय। ताकें बैद कबहुँ ना जाय॥

नित्य ठंडे पानी से नहाने और गरम खाना खाने से कभी वैद्य की आवश्यकता नहीं पड़ती।

ठगाये सेईं ठाकुर।

धोखा खाकर ही आदमी सयाना बनता है।

ठठेरें ठठेरें बदलाई नइँ होत।

एक-सा काम या व्यवसाय करने वालों में आपस में लेन-देन का झगड़ा क्या?

ठनठनपाल मदनगोपाल।

रुपये-पैसे से शून्य।

ठवाकुरो[१] पड़वा जबरईं चोंखत।

(१—ठोकरी भैंस का पड़ा। ऐसा पड़ा जो उम्र में एक वर्ष से अधिक का हो और जिसकी माँ ने दूध देना बन्द कर दिया हो अर्थात कम दूध देती हो।) भैंस का एक वर्ष का पड़ा स्वाभाविक रूप से मजबूत होता है और वह ज़बर्दस्ती माँ के थनों में मुँह डाल कर कुछ-न-कुछ दूध चोंख ही लेता है। अतः जब कोई आदमी बल-प्रयोग करके दूसरे से कुछ छीन ले और दूसरा कुछ कह न सके तब कहते हैं।

ठाँड़ी खेती गाभिन गाय। तब जानों जब मों में जाय॥

खड़ी फसल के अनाज को घर में लाने और गाभिन गाय के दूध को प्राप्त करने के मार्ग में सैकड़ों बातें बाधक हो सकती हैं, अतः जब ये खाने को मिल जायँ तभी समझो कि वे वास्तव में उत्पन्न हुईं।

ठाँड़े तिलक मधुरिया बानी। दगाबाज की येई निसानी॥

दिखावटी पूजा-पाठ करने वालों पर व्यंग।

ठाँड़ो बैलखूँदे सार।

बेकार बँधा हुआ बैल अपने बँधने के स्थान को ही खोदता है। निठल्ले आदमी को व्यर्थ के उपद्रव सूझते हैं।

ठाँव गुन काजर, ठाँव गुन कारख।

एक ही वस्तु स्थान के प्रभाव से अच्छी और बुरी बन जाती है। आँखों में आँजें जाने के लिए इकट्ठा किया गया वही धुआँ काजल कहलाता है, और वही दूसरी जगह लगने से कालिख समझा जाता है।

ठाकुर हते सो गये, ठग रै गये।

भले आदमी तो चले गये, केवल ठग रह गये।

ठाली नाइन मूँड़ै पटा।

निठल्ला आदमी, यह बताने के लिए कि मैं बहुत व्यस्त और कामकाजी हूँ, व्यर्थ इधर-उधर का काम करता है।

ठाली बऊ के नोंनई में हात।

दे० ऊपर।

ठाले[1] सें बेगार भली।

(१–पा० बैठे सें।) आदमी को कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।

ठालौ बानियाँ का करै, जा कुठिया कौ धान बा कुठिया में धरै।

दे० ठाली नाइन।

ठालौ बानियाँ का करै, सेर बाँटई तौलै।

दे० ऊपर

ड

डंडा सब कौ पीर है।

डंडा सबसे बड़ा है।

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

डरी डरी कामें आऊत।

बेकार वस्तु भी पड़ी-पड़ी काम आ जाती है।

डाँड़ी मारें साव कहावें, हर हाँकै सो चोर।
चुपर-चुपर कें बाबा खावें, जिनकें ओर न छोर।।

तराजू की डंडी मार कर अर्थात लोगों को धोखा देकर पैसा कमाने वाले तो साहूकार कहलाते हैं, साधू-सन्यासी, जिनके घरबार का ठिकाना नहीं, घी चुपड़ी खाते हैं, और हल हाँकने वाला किसान, जो परिश्रम की रोटी खाता है, चोर समझा जाता है।

डायन खाय तौ मों लाल, न खाय तौ मों लाल।

डायन को खाने को मिलै तो रक्त से मुँह लाल रहता है, न खाने को मिलै तो गुस्से से लाल रहता है। कठोर प्रकृति के दुष्ट आदमी के लिए।

डार के टूटे।

ताज़े, हाल के टूटे हुए फल आदि।

डिलारौ खेत सबकों परत।

ढीमें वाला खेत जोतने के लिए सबके पल्ले पड़ता है। एक पर पड़ने वाली विपत्ति कभी-न-कभी दूसरों पर भी पड़ती है।

डींग हाँकनई है तौ हलकी पतरी का हाँकै ?

डींग हाँकनी ही है तो छोटी-मोटी क्या हाँके ?

डीलन चले तौ पाती काय पै ?

जब स्वयं ही जा रहे हैं तो पत्र की क्या आवश्यकता ? इसे कभी-कभी इस प्रकार भी कहते हैं—डीलन चले तौ सँदेसो काय पै ?

डुकरो मरीं सो मरीं, जम द्वारो देख गये।

एक बार किसी तरह एक आदमी से पिंड छूटा, पर हमेशा के लिए उसके आने का रास्ता खुल गया।

डूँड़ा[1] हर कौ, न बखर कौ, दायें[2] कों टायँ टायँ।

(१—ऐसा बैल जिसके सींग टूट कर गिर गये हों। २—कटी हुई फसल का दाना निकालने के लिए उसे जमीन में बिछा कर बैलों से कुचलवाने की क्रिया।) डूँड़ा बैल न तो हल में जोतने के काम का होता है और न बखर में; दायें के लिए तो टायँ-टायँ करता ही है। निकम्मे और बूढ़े आदमी के लिए।

डूबा साद कें रै गये।

डुबकी साध कर रह गये। चुप्पी साध ली। ऐन मौके पर गायब हो गये।

डूबो बंस कबीर कौ उपजे पूत कमाल।

ऐसी अयोग्य संतान के संबंध में जिससे कुल को बट्टा लगे।

कमाल कबीर के पुत्र थे। कहते हैं कि वे सदैव कबीर के वचनों का खंडन किया करते थे। कबीर जो कुछ कहते वे ठीक उससे उल्टी बात का प्रचार करते। इसीलिए कबीर ने क्रुद्ध होकर उक्त बात कही थी।

डेरे हिरन दायनें जायँ। लंका जीत राम घर आयँ॥

यात्रा में यदि हिरन बायीं ओर से दाहिनी ओर जाते मिलें तो कार्य सफल होता है।

ढ

ढका में ढका लगत।

धक्के में और धक्का लगता है। हानि में और हानि होती है।

ढब सें खेती, ढब सें न्याव। ढब सें होवे बूढ़े कौ ब्याव॥

ढंग से खेती, ढंग से न्याय और ढंग से ही बूढ़े का विवाह होता है। तात्पर्य यह कि इन सबमें चतुराई से काम लेना पड़ता है।

ढाक के सदऊँ तीन पात।

सदा एक सी स्थिति रहना।

ढिगाँ मातनो दूर पानी दूर मातनो ढिगाँ पानी।

वर्षा ऋतु में चंद्रमा के चारों ओर बना प्रभा-मंडल यदि आकार में छोटा हो तो समझना चाहिए कि पानी देर से बरसेगा और बड़ा हो तो शीघ्र बरसेगा।

ढिड़वारौ मचा राखौ।

व्यर्थ का झगड़ा मचा रखा है। ढिड़वारा ढेढ़ों के मुहल्ले को कहते हैं। ढेढ़ चमारों की तरह की एक छोटी जाति है। बुन्देलखंड में यद्यपि ये बहुत कम हैं परन्तु यह शब्द यहाँ प्रचलित है और उसका अर्थ मूर्ख या गँवार लगाते हैं।

ढेड़ ढेड़ई सें मानत।

ढेढ़ ढेढ़ से ही मानता है। गँवार गँवार से ही मानता है।

ढोंगे, काय डरे भौमें, दयें हुयें कछू गों में।

चालाक और स्वार्थी के लिए कहते हैं।

एक चालाक आदमी था। उसका नाम था ढोंगे। एक बार वह जमीन पर औंधा गिर पड़ा। किसी ने पूछा—तुम इस तरह क्यों पड़े हो? एक और दूसरे आदमी ने उत्तर दिया—किसी मतलब से ही पड़े होंगे। बात असल में यह थी कि वहाँ जमीन पर एक रुपया पड़ा हुआ था, जिसे उठाने के लिए वह जान-बूझ कर गिर पड़ा था, जिसमें कोई उसे रुपया उठाते देख न ले।

ढोर से नर्रयात।

ढोर की तरह चिल्लाते हैं। किसी के बुरी तरह चिल्लाने पर।

ढोल के भीतर पोल।

बाहरी आडंबर तो बहुत पर भीतर से खोखले।

त

तकदीर सूदी तौ सब कछू।

भाग्य प्रबल है तो सब कुछ।

ततैया[1] से नचत फिरत।

(१—बर्रं।) बहुत व्याकुल।

तनक कौ मनक करत।

थोड़े का बहुत करते हैं। बात का बतंगड़ बनाते हैं।

तनक तमाखू गजब करावे, जगन्नाथ कौ भात।
जिनके पुरखन भीख न माँगी, सोई बड़ावें हात।।

तमाखू पीने वालों पर व्यंग।

तनक सी कानियाँ, सबरी रात।

क़िस्सा तो थोड़ा, उसमें सारी रात बिता दी।

तनक सी किल्ली,[1] नौ मन काजर।

(१—एक छोटा कीड़ा जो ढोरों के शरीर से चिपक कर उनका रक्त चूसा करता है।) साधारण व्यक्ति जब कोई बड़ा आडंबर करे तब कहते हैं।

तन पै नइयाँ लत्ता, पान खायें अलबत्ता।

घर में खाने को न होने पर भी शौक करना।

तन सुखी, तौ मन सुखी।

तपा तप रये।

भीषण गर्मी पड़ रही है। जून के महीने में जेठ दशहरा से जेठ सुदी १५ पूर्णिमा के दिन तक कहलाते हैं।

तपै जेठ तौ बरसा होय भर पेट।

जेठ में खूब गर्मी पड़ने से वर्षा अच्छी होती है।

तब लौं झूँठ न बोलिये, जब लों पार बसाय।

जब तक वश चले तब तक झूठ नहीं बोलना चाहिए।

तबा की तोरी, मटेलनी[1] की मोरी।

(१—रोटी रखने का मिट्टी का बना बासन।) तवे पर जो रोटी सिंक रही है वह तुम्हारी और जो बन चुकी हैं वह मेरी। स्वार्थी के लिए।

तबा कैसी बूंद।

शीघ्र नष्ट हो जाने वाली वस्तु।

तबा पै बूँद परी और छनक गई।

ऐसे व्यक्ति के लिए जिस पर किसी बात का कोई असर न हो।

तरघुन्ना[1] सें काम परौ।

(१–ऐसा व्यक्ति जो किसी के प्रति अपनी अप्रसन्नता को मन में रखे रहे और उसे प्रकट न होने दे।) तरघुन्ना से काम पड़ा है। ऐसे आदमी से काम पड़ा है, जिसके मन की बात जानना कठिन है।

तर धरती ऊपर राम।

शपथ के समय कहते हैं।

तरवन सें तौ दमार लगी।

तलवों से तो आग लगी है। इसके पीछे एक कथा है। दो व्यक्तियों का अदालत में जमीन का एक मामला चल रहा था और फैसला मुखिया के बयानों पर निर्भर करता था। जिस दिन अदालत में उसकी गवाही होने को थी, उन दो व्यक्तियों में से एक ने उसे प्रसन्न करने के लिए चुपचाप उसके स्वाफ़े में एक अशर्फी बाँध दी। दूसरे व्यक्ति ने ताड़ लिया कि मुखिया को रिश्वत दी गयी है। तब उसने एक के स्थान पर दस अशर्फियां उसके जूतों में रख दीं। हाकिम के सामने गवाही के लिए पहुँचने पर पहिले व्यक्ति ने अशर्फी की ओर मुखिया का ध्यान आकृष्ट करने के उद्देश्य से कहा —"दाऊजू, स्वाफा में कछू लगौ है, झार कें देख लओ जाय।" इस पर दूसरे व्यक्ति ने तुरंत कहा—"अरे तुम स्वाफा की लगायें फिरत। उतै तरवन सें तौ दमार लगी।" अर्थात तुम स्वाफा की बात करते हो। वहाँ तलवों से तो आग लगी है।

जब किसी मामले-मुकद्दमें में दो पक्षों में से एक पक्ष के लोग किसी बड़े आदमी या हाकिम को प्रसन्न करके उसे अपने अनुकूल बना ले तब।

तरवन सें लग गई।

बात हृदय में गहरी चुभ गयी।

तरवार कौ घाव भर जात, पै बात कौ नईं भरत।

तलवार का घाव भर जाता है, पर बात का नहीं भरता।

तरवार मारै एक बेर, अहसान मारै बेर बेर।

तलवार का घाव तो एक ही बार लगता है, और अच्छा भी हो जाता है, परन्तु जब कोई आदमी किसी का उपकार करता है तो वह बार-बार उसका स्मरण कराके उसे दबाता है, जिससे मन को दु:ख पहुँचता है।

तरे के दाँत तरैं और ऊपर के ऊपर रैं गये।

तले के दाँत तले और ऊपर के ऊपर रह गये। अर्थात कुछ बोलते नहीं बना। चुप हो गये।

तरे कौ रोबे नई ऊपर कौ रो रो देय।

अत्याचार पीड़ित तो रोता नहीं, अत्याचारी शोर मचाता है।

तला खुदौ नइयाँ, मगर सुसानईं लगे।

तालाब तो खुदा नहीं, और मगर पैर पसार कर सोने के लिए आ गये! अर्थात कोई वस्तु बन कर तो तैयार नहीं हुई और चाहने वालों की भीड़ लग गयी।

तला पै जाकें कोऊ प्यासो नईं आऊत।

तालाब पर जाकर कोई प्यासा नहीं लौटता।

तला में रै कें मगर सों बैर।

किसी बड़े आदमी के आश्रित रह कर उससे बुराई मोल नहीं ली जाती।

ताँत बाजी, राग पहचानो।

सारंगी या सितार के बजते ही पता चल जाता है कि यह कौन सा राग है। उसी तरह किसी मनुष्य के बोलते ही उसके मन के असली भाव अथवा उसकी योग्यता का पता चल जाता है।

ताँबे की मेख, तमासो देख।

पैसे के जोर से संभव-असंभव सब कुछ हो सकता है। पैसा ताँबे का ही बनता है और ताँबे की कील जितनी लंबी हो उतनी ही गाड़ते चले जाओ।

ताताथेई मचा दैबो।

ताताथेई मचा देना। उतावली पाड़ देना। आफत कर देना।

ताती उचेलत।

तवे पर से गरम-गरम उठाते हैं। किसी कार्य में जल्दी मचाने पर ।

तारिया दोऊ हातन सें बजत।

ताली दोनों हाथों से बजती है।

ताल तौ भोपाल ताल और सब तलइयाँ।
रानी तौ कमलापत[1] और सब रजइयाँ।।
गढ़ तौ चित्तौर गढ़ और सब गढ़इयाँ।
राजा तौ छत्रशाल और सब रजइयाँ।।

(१—छत्रशाल की रानी का नाम था।)

ताल न तलैया, बोओ सिंगारे भैय्या।

न ताल है, न तलैया; सिंघाड़ों की खेती करेंगे ! उपयुक्त साधन के बिना काम करना हँसी की बात है।

तिन चोर सो बज्जुर चोर।

जैसा तिनका चुराने वाला छोटा चोर, वैसा बड़ा चोर। चोर तो हर हालत में चोर कहलायेगा।

तिरिया चरित जानें नहिं कोय। खसम मार कें सत्ती होय।।

स्त्रियों के चरित्र को जानना कठिन है।

तिरिया तो में तीन गुन, औगुन हैं लख चार।
मंगल गावे सत रचे, कोखन उपजें लाल।।

तिरिया रोवे पुरुष बिना। खेती रोवे मेह बिना।।

पुरुष के बिना जैसे स्त्री का जीवन व्यर्थ है वैसे ही वर्षा के बिना खेती व्यर्थ होती है।

तिल कौ ताड़ बनाबो।

छोटी सी बात को बहुत बढ़ा कर कहना।

तिली, तमाखू, सावनी। फिर मन समझावनी॥

तिली और तमाखू सावन म ही बो देना चाहिए। बाद में बोना तो मन समझाना है।

तीजें चाँवर सीजें। चौथे लोक पतीजें॥

तीन दिन में कड़े चावल मुलायम हो जाते हैं और चार दिन में कठोर हृदय का मनुष्य भी पसीज जाता है।

तीतर के मों लच्छमी।

तीतर की वाणी सफल हो! अथवा क्या पता तीतर क्या कहे? उसके मुंह में तो लक्ष्मी का वास है।

जब किसी अदालत में अथवा व्यक्ति विशेष के पास से किसी महत्त्वपूर्ण निर्णय की प्रतीक्षा की जा रही हो तब कहते हैं। तीतर की बोली शुभ मानते हैं, और यह विश्वास किया जाता है कि उसकी बोली सुनने से यम भाग जाता है। उसी से कहावत बनी है।

तीनऊँ पन ऐंसेईं गये परत पराई पौर।

जो व्यर्थ अपना जीवन नष्ट करे उसके लिए।

तीन कोस लों मिलै जो काना, तौ फिर लौट घरैं आना।

यात्रा में काने का मिलना शुभ नहीं मानते। तीन कोस चल चुकने के पश्चात भी यदि उससे भेंट हो जाय तो लौट कर घर आ जाना चाहिए।

तीन तिकट महा बिकट।

तीन एक से धूर्त आदमी इकट्ठे हो जायं तो उनसे पार पाना कठिन होता है।

तीन-तेरा होबो।

तितर-बितर होना।

तीन-पाँच करबो।

घुमाव-फिराव की बात करना। हुज्जत करना।

तीन पाख दो पानी । जे आईं कुटक दे रानी ॥

कोदों, समा की तरह कुटकी वर्षा ऋतु में होने वाला एक हलका खाद्यान्न है। अन्य सब अनाजों की अपेक्षा उसकी फसल शीघ्र आ जाती है। वर्षा ऋतु में दो बार पानी बरसा नहीं कि तीन पखवारे में वह कटने योग्य हो जाती है। कहावत में यही कहा गया है।

तीन बराती, नौ पौनया[1]।

(१—पहुनई करने वाले, मेहमान।) बराती तो केवल तीन, और उनके साथ मुफ्त की रोटियाँ तोड़ने वाले नौ!

जब किसी उत्सव आदि में प्रमुख आमंत्रित व्यक्तियों की अपेक्षा इधर-उधर के फालतू आदमियों की संख्या अधिक हो।

तीन बुलाये तेरा आये।

एक को बुलाने पर जब चार आ जायें तब कहते हैं।

तीन बुलाये तेरा आये, देखो यहाँ की रीत।
बाहर के आके खा गये घर के गावें गीत।
तीन बुलाये तेरा आये, हुई राम की बानी।
राम भगत ये भमणे के दे दाल में पानी।

तीन में घंटा चलै, तीन में तलवार।
तीनइ में पैना चलै, आलीपुर दरबार।

(१—बैल हाँकने की नुकीली लकड़ी।) आलीपुर राज्य में तीन ही रुपया घंटा बजाने वाले पुजारी को, तीन ही तलवार चलाने वाले सिपाही को और तीन ही हरवाहे को मिलते हैं। ऐसा अंधेर वहाँ है। दे० घर के जान।

तीन में न तेरा में।

ऐसा व्यक्ति जो किसी गिनती में न हो। कहावत का प्रयोग ऐसे अवसर पर होता है जब किसी आदमी की कोई वक़त न हो, परन्तु फिर भी बिना पूछे वह बीच में अपनी राय देने के लिए आ जाये।

तीन में न तेरा में मृदंग बजावें डेरा में।

ऐसा व्यक्ति जो सबसे अलग हो, अथवा जिसे कोई पूछे नहीं। इस

कहावत की उत्पत्ति के संबंध में अनेक कथाएं प्रचलित हैं (देखिए 'सरस्वती' जनवरी, १९५९ में मेरा लेख) बुन्देलखंड में प्रचलित कथा इस प्रकार है :—

एक बार बानपुर के महाराज मर्दनसिंह ने यज्ञ किया। ठाकुरों में बुन्देला, पँवार और धँधेरे ये तीन कुरी वाले श्रेष्ठ माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त तेरह कुरी के ठाकुर और होते हैं। उक्त यज्ञ में इन तीन और तेरह कुरी के ठाकुरों को छोड़ कर एक ऐसे सज्जन पधारे जो इन सबसे बाहर थे और एक साधारण कुरी के समझे जाते थे। यज्ञ के भोज में यह समस्या उपस्थित हुई कि अन्य बड़ी कुरी के ठाकुरों के साथ उनको कहाँ और किस प्रकार बिठाया जाय? बहुत सोच-विचार और जिह्म-जिह्वा के पश्चात अंत में निश्चय यह हुआ कि उनको डेरे पर ही रखा जाय और वहीं उनके लिए भोजन आदि की व्यवस्था कर दी जाय। ऐसा ही किया गया। तभी से उन सज्जन को लेकर कहावत चल पड़ी कि 'तीन में न तेरह में, मृदंग बजावें डेरा में।'

तीन लोक सें मथुरा न्यारी।

अनोखी चाल चलना।

तीरथ गयें मुड़ायें सिद्ध।

बाहर जाने पर कोई ऐसा काम सामने आ पड़े कि उसे करने का फिर अवसर न मिले तो उसे कर ही डालना चाहिए, भले ही उसमें कुछ खर्च हो।

तुम कौन तोप के मोरा सें बाँध कें उड़ा देओ?

तुम हमारा क्या कर लोगे?

तुम जाओ अग्गम, तौ हम जेयें पच्छम।

तुम जाओ पूर्व, तो हम जायेंगे पच्छिम। तुम जो कहोगे हम ठीक उससे उल्टा करेंगे। किसी की नेक सलाह न मानने पर कहते हैं।

तुम जानों, तुमाओ काम जानें।

जब कोई किसी का कहना न मानें और अपने मन की करे।

तुम डार डार, हम पात पात।

अर्थात हम तुम्हें खूब जानते हैं। तुम थोड़े चालाक हो तो हम तुमसे बढ़ कर हैं।

तुम हमाई न कओ, हम तुमाई न कयें।

समान व्यवहार के लिए।

तुमाओ मों नइँ बसात।

झूठे के लिए कहते हैं।

तुमाओ सो हमाओ, हमाओ सो हैं हैं!

ऐसे आदमी के लिए जो अपने मतलब की ही बात करे।

तुमाओ ईमान तुमाये संगे।

तुम्हारा ईमान तुम्हारे साथ। अर्थात् हम तुम्हारी बात का विश्वास करते हैं। भले ही हम धोखा खा जायें।

तुमाई मताई ने मुंस करौ, बुरई करी; कई छोड़ दओ, और बुरई करी।

तुम्हारी माँ ने खसम किया, बुरा किया, कहा—छोड़ दिया, और बुरा किया। हर काम सोच-समझ कर ही करना चाहिए। किसी काम को करके पीछे हटना मूर्खता है।

तुमाये चाटे तौ रुआँ नइँ जमत।

तुम्हारे चाटे हुए तो रोम नहीं जमते। तुम जिस पर कृपा करते हो उसका सत्यानाश ही होकर रहता है। व्यंग में।

ढोर स्नेहवश अपने बछड़ों को जीभ से चाटा करते हैं। उसी से कहावत बनी।

तुमाये जैसे तौ हमाई अंटी[1] में बँदे।

(१—गाँठ।) अर्थात् हमें तुम्हारी परवाह नहीं।

तुमाये जैसे सैकरन देखे।

दे० ऊपर।

तुमाये मठा की तौ आय कड़ी बगरवाई।

तुम्हारे मठे की तो हमने कढ़ी तैयार करायी है! अर्थात् हम क्या तुम्हारा मठा लेने गये थे? व्यर्थ का अहसान जताये जाने पर कहते हैं।

तुमाये मों में घी सक्कर!

शुभ समाचार सुनाने वाले को आशीर्वाद।

तुमें रिसानी हमें पुसानी।

तुम रूठ गये तो अच्छा ही हुआ, हमें भी तुमसे छुट्टी मिली।

तुरत दान, महा कल्यान।

किसी को कोई वस्तु देनी ही है तो फिर तुरंत दे देनी चाहिए।

तुरत मजूरी, चोखो काम।

मजदूर की मजदूरी तुरंत देने से काम अच्छा होता है।

तुलसी अपने राम कों रीझ भजौ कै खीज।
उलटो सूदो जामहै खेत परे कौ बीज॥

तुलसी इक दिन बे हते माँगें मिलै न चून।
किरपा भई भगवान की, लुचई दोनों जून॥

तुलसी कबहुँ न जाइये जनमभूम के गाँव।
दास गये, तुलसी गये, धरौ तुलसिया नाँव॥

तुलसी जग में आयकें सबसें मिलिये धाय।
को जानें किहि भेष में नारायन मिलि जाय॥

तुलसी जग में आय के जग हाँसो तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो पाछें हँसे न कोय॥

तुलसी तीन प्रकार तें हित अनहित पहचान।
परबस परे, परोस बसि, परै मामला जान॥

तुलसी दया न छाँड़िये जब लग घट में प्रान।
कबहूँ दीन दयाल के भनक परेगी कान॥

तुलसी धीरज के धरें कुंजर मन भर खाय।
टूक टूक के कारने स्वान घराँघर जाय॥

तुलसी पैसा पास कौ, सब सें नीक्रौ होय।
होते के बहिन उर बाप हें, अनहोते की जोय॥

तुलसी बुरौ न मानिये जो गँवार कहि जाय।
सावन कैसो नरदवा बुरो भलो बह जाय॥

तुलसी या संसार में भाँत भाँत के लोग।
सब सें हिल मिल चालिये नदी नाव संजोग॥

तेजाब के डूबे हैं।

खूब खरे रुपये हैं। तेजाब में डुबो कर उनकी परीक्षा कर ली गयी है। व्यंग में ऐसे आदमी के लिए प्रयुक्त जो खूब घिसा-पिसा और अनुभवी हो।

तेते पाँव पसारिये जेती चादर होय।

सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना चाहिए।

तेल जरै, बाती जरे, नाव दिया कौ होय।

कष्ट उठा कर काम कोई करे, यश किसी को मिले।

तेल जरै सरकार कौ, मिर्जा खेलें फाग।

दूसरे के पैसे पर मौज उड़ाना।

तेल तौ तिलनईं में सें निकरत।

मुनाफा तो मुनाफे वाली वस्तु से ही उठाया जा सकता है।

तेल देखो, तेल की धार देखो।

किसी काम में जल्दी करना ठीक नहीं। धैर्य-पूर्वक परिणाम की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

इसकी एक कथा है कि किसी राज कुमार के चार मित्र थे, सिपाही, ब्राह्मण, उटेरा और तेली। पिता की मृत्यु के बाद जब वह गद्दी पर बैठा तब उन चारों को उसने अपना मंत्री बनाया। निकट के राजाओं ने उसे इस प्रकार मूर्ख मंत्रियों से घिरा देख कर उस पर चढ़ाई कर दी। राजकुमार ने चारों मंत्रियों को बुलाया और इस विषय में अपनी-अपनी सम्मति देने को कहा। जो सिपाही था उसने तुरंत युद्ध करने की सलाह दी। ब्राह्मण देवता ने कहा—व्यर्थ की मार-काट में क्या रखा। जैसे बने संधि कर लेनी चाहिए। उँटेरे ने कहा—जल्दी किस बात की। देखिये ऊँट किस करौंटा बैठता है। तेली ने भी इसका समर्थन किया और कहा—घबड़ाइए नहीं, अभी तेल देखिए और तेल की धार देखिए। क्या पता क्या हो।

मतलब यह कि जो जिस प्रवृत्ति का था उसने वैसी बात राजा से कही।

तेल न ताई,[1] लगुन दै लिखाई।

(१–तैय्या, जलेबी, मालपुआ आदि बनाने की कढ़ाही।) न तो तेल है और न कढ़ाही, विवाह की लग्न-पत्रिका लिखवा ही दी। उचित प्रबंध के बिना काम करना।

तेल न फुलेल मँगौरा[1] बनें।

(१–मसाला मिली हुई मूँग की पीठी की गोल टिकियों को तल कर बनाया गया पकवान।)

तेल में कारौ है।

कुछ गड़बड़ है।

तेलिन सें धोबिन का घट?

तेलिन के पास तिली कूटने के लिए मूसल होता है और धोबिन के पास कपड़े पीटने के लिए मोंगरी, कौन किस बात में कम?

तेली कें भौत तेल होत तौ का पार चुपरत?

तेली के बहुत तेल होता है तो क्या पहाड़ चुपड़ता है? कोई अपना पैसा व्यर्थ ख़र्च नहीं करता।

तेली के बैल कों घरई में पचास कोस की मजल।

तेली के बैल हो गये।

दे० कोतर के बैल। बहुत परिश्रमी हो गये।

तेली कौ काम तमोली करै, बारा बरस लौं गड़ा में परै।

जो काम जिसके करने का है उसे वही ठीक ढंग से कर सकता है। दूसरा करे तो हानि उठाता है।

तेली कौ बैल बना राखो।

रात दिन काम लेते हैं।

तेली कौ बैल मरे कुमारिन सती होय।

झूठी लल्लो-चप्पो करने पर।

तेली रोवे तेल कों, मकसूदन रोवें खरी कों।

सबको अपने स्वार्थ की चिन्ता रहती है। मकसूदन (मधुसूदन) नाम का कोई आदमी तेली के पास तिली पिरवाने के लिए ले गया। परन्तु उसे तेल के साथ खली वापिस नहीं मिली। दूसरी ओर तेली का यह कहना था कि मधुसूदन के पास तेल अधिक पहुंच गया। खली किस बात की लौटायी जाय? इस तरह अपनी-अपनी जगह दोनों रोते रहे।

तें मोरे घूंघट की राख तौ में तोरी मूँछन की राखों।

तुम मेरी बदनामी न करो तो मैं तुम्हारी बदनामी भी नहीं करूँगी। परस्पर व्यवहार की बात।

तोय बिरानी का परी, अपनी तौ निरबेर।

दूसरों की फिक्र न करके अपना काम देखो।

तोसा[१] सो भरोसा।

(१–तोशा, फा० तोशः, कलेवा, पाथेय।) गाँठ का पैसा वक्त पर काम आता है।

थ

थर न थराई, हरामजादी कुआई।

किसी काम में एहसान की जगह व्यर्थ अपयश हाथ लगना।

थुरमोलू और दुधार, लमथनू और नैनवार।

गाय सस्ती हो और दुधार भी हो, लंबे थनों की हो, और अधिक घी वाली हो। जब कोई कम दामों में बढ़िया चीज़ लेना चाहे तब कहते हैं।

थूंक की नदियाँ पैरत।

झूठ बोलते हैं।

थूंकके चाटत।

कह कर मुकर जाते हैं।

थूंकन सतुआ सानत।

थोड़े खर्च में बड़ा काम करना चाहते हैं।

थैलियाँ सिमा राखो।

थैलियाँ सिला कर रखो। अनुचित माँग करने पर व्यंग में।

थोथा चना बाजे घना।

निकम्मा आदमी बकवाद बहुत करता है।

थोरी कई कबीरदास, भौत कई संतन।

कबीर ने थोड़े में ही सब कुछ कह दिया। दूसरों ने उसे और बढ़ाया।

थोरी करै सो अपुन कों, भौत करै सो गैर कों।

खेती थोड़ी ही अच्छी होती है। बहुत करने से उसका सँभालना कठिन होता है।

थोरे में मजा है।

कोई भी वस्तु थोड़ी खाने में अच्छी लगती है। किसी से थोड़ी बात करने में ही सार है।

थोरो थोरो सब खाने आऊत।

थोड़ा-थोड़ा सभी चीजों का स्वाद लेना चाहिए।

थोरो पढ़े सो हर सें गये। भौत पढ़े सो घर सें गये।।

किसान का लड़का पढ़ा अच्छा नहीं। थोड़ा पढ़े तो स्कूल की हवा लग जाने से खेती के काम का नहीं रहता, और बहुत पढ़ जाय तो नौकर होकर घर से बाहर चला जाता है। वर्त्तमान शिक्षा-प्रणाली पर व्यंग।

द

दँतला[1] खसम की हाँसी, न साँसी[2]।

(१—दँतुला, बड़े दाँतों वाला, जिसके दाँत सदैव बाहर निकले रहते हों। २—साँची, सच्ची, वास्तविक बात।) जिस आदमी की मुखाकृति सदैव एक सी बनी रहे उसके मनोभाव को समझना कठिन होता है।

दई के धोकें चूना खा गये।

ठगे गये। लाभ की आशा से काम करने पर उल्टी हानि उठा गये।

दई-दुआई खरी न खाय। पाछें कोलू चाटन आय।।

बैल दी हुई खरी तो नहीं खाता, पर बाद में कोल्हू चाटता फिरता है। प्रायः लोग कहने और मनाने से काम नहीं करते। अपने आप फिर वही काम भले ही करें।

दई परोसत खोंप लगी।

सुकुमारता की हद। अथवा कोई अच्छा काम करते हुए बुराई पैदा होना।

दई में मूसर पटक दओ।

शुभ कार्य में विघ्न डाल दिया। बना बनाया काम चौपट कर दिया।

दगे साँड़ हैं।

नंबरी साँड़ हैं। बदनाम या चलते-पुर्जे आदमी के लिए कहते हैं।

दच्छया[1] लैबो तौ आसान, पै सीदो[2] दैबो कठिन।

(१—दीक्षा, गुरुमंत्र। २—ब्राह्मण को दक्षिणा के रूप में दी जानेवाली भोजन की बिना पकी सामग्री।) किसी काम की जिम्मेवारी ले लेना तो आसान है, पर उसका निबाहना कठिन है।

इसकी एक कथा है—एक बार एक अहीर ने किसी ब्राह्मण से दीक्षा लेने का विचार किया। इसके लिए उसने एक पंडित को बुलाया। पंडित ने कहा—अच्छी बात है। हम दीक्षा देने को तैयार हैं। परन्तु हम जैसा कहें वैसा करना। अहीर इस पर राजी हो गया। पंडित दूसरे दिन ही दीक्षा देने आया। अहीर से उसने कहा—बैठ पटा पै। अहीर ने कहा—बैठ पटा पै। पंडित ने कहा—तुम बड़े मूर्ख हो। अहीर बोला—तुम बड़े मूर्ख हो। पंडित ने क्रोध में आकर अहीर को एक थप्पड़ जमा दिया। और कहा बदमाशी करते हो। अहीर ने उठ कर पंडित को थप्पड़ जमाना शुरू किया। अब दोनों में घंटों गुत्थम-गुत्था होती रही। अंत में पंडित किसी प्रकार जान बचा कर घर आया। वहाँ उसकी स्त्री राह देख रही थी कि आज पंडित जी दीक्षा देने गये हैं, खूब दक्षिणा मिलेगी। परन्तु पंडित जब घर पहुँचे तो उनकी दशा देख कर वह सन्न होकर रह गयी। इधर अहीर को ध्यान आया कि पंडित जी दीक्षा देकर तो चले गये परन्तु उनका सीदा तो यहीं रखा रहा। अंतः उसने अपनी स्त्री से कहा कि

तुम पंडित जी के घर जाकर सीदा दे आओ। स्त्री सीदा लेकर चली। इधर पंडितानी क्रोध में भरी तो बैठी ही थीं। जैसे ही अहीरिन सीदा लेकर पहुँची उन्होंने उसे मारना शुरू कर दिया। अहीरिन बेचारी किसी प्रकार भाग कर घर आयी। अहीर ने पूछा—सीदा दे आयी ? अहीरिन ने कहा—दच्छया लेना तो आसान, परन्तु सीदा देना कठिन है। तुम सीदा देने गये होते तो पता चलता।

ददा की दोई मीठी।

सब ओर से अपना लाभ चाहने वाले के लिए।

दद्दा तुमने लाख कई, हमनें एकऊ नईं मानीं।

हठधर्मी करने पर।

दद्दा, हम पाँव सिकोर कें उमानों दै आय; कई, तौ बेटा कौन सुख सें पैर लईं।

किसी किसान का लड़का अपने जूतों का नाप देने के लिए गया। अपनी समझ में वह बड़ा होशियार था। यह सोच कर कि जूता छोटा बनने से दाम भी कम देने पड़ेंगे, नाप देते समय पैर सिकोड़ लिया। घर आकर बाप से कहा कि, दद्दा हम पैर सिकोड़ कर नाप दे आये हैं। उत्तर में बाप ने कहा—तो बेटा, जूते पहिन कर कौन सा सुख उठा सकोगे ?

बहुत चतुराई से भी कभी-कभी हानि होती है।

दद्दा, दार रोटी।

बार-बार एक ही बात कह कर किसी को तंग करना।

दबो बानिया देय उधार।

दबा हुआ बनिया उधार देता है।

दम मदार, पैले पार।

लड़कों को किसी काम के लिए प्रोत्साहित करने अथवा किसी कठिन कार्य के पूरा हो जाने और उससे मुक्ति पाने पर प्रयुक्त।

कहते हैं कि मकनपुर के पास, जहाँ मदार साहब की समाधि है, एक छोटा नाला है। यात्री लोग उसे लाँघते समय उपर्युक्त वाक्य का प्रयोग करते हैं, जिसने अब कहावत का रूप धारण कर लिया है। दे० गंगा की गैल।

दम भाई किसके, दम लगाई खिसके।

अपना मतलब गाँठ कर चल देने वालों के लिए कहते हैं।

दम भाई सो निज भाई, और भाई सो सटर-पटर।

एक जगह इकट्ठे होकर बैठने वाले शराबियों और मदकचियों के लिए।

दमरी की घुरिया, नौ पसेरी दानों।

जितने का माल नहीं, उतने से अधिक उस पर खर्च।

दमरी की दार कों नौ दमरी लगतीं।

कोई वस्तु भले ही सस्ती हो, परन्तु उसके उचित उपयोग अथवा रख-रखाव में प्रायः दुगुना-चौगुना पैसा खर्च हो जाता है।

दमरी की दार न्यारी न्यारी टार।

सहयोग से काम न करना। अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना।

दमरी की बछिया जनम की हत्या।

सस्ती वस्तु अंत में मँहगी और कष्टदायक सिद्ध होती है।

दमरी की भाजी, घर भर राजी।

भाजी की प्रशंसा, जो सस्ती और सुलभ होती है। कंजूस के लिए भी व्यंग में।

दमरी के पान बनैनी खाय, कओ राम घर रये कै जाय?

किसी कंजूस के घर का आदमी फिजूलखर्ची करे तो कैसे काम चले? व्यंग में।

दमरी के लानें दस चक्कर लगाउत।

लेन-देन के मामले में बहुत चौकस।

दर्जी के काज-बटन, सुनार की खटाई।
बरेदी की आई और कुरिया की पाई।।

दर्जी कपड़ों की सिलाई के मामले में काज-बटन का, सुनार गहनों के मामले में खटाई में पड़े होने का, बरेदी दूध के लिए गाय के आने का, और कोरी बुनाई के विषय में ताने-बाने के तैयार होने का विलंब बता कर ग्राहकों को टरकाता है।

दसरये के नीलकंठ।

ऐसा व्यक्ति जो बहुत कम दिखायी दे। किसी प्रिय मित्र से बहुत दिनों बाद भेंट हो तब कहते हैं।

दशहरे के दिन प्रातःकाल नीलकंठ के दर्शन शुभ माने जाते हैं। लोग उसे पेड़ों और झुरमुटों में इधर-उधर खोजते फिरते हैं और दैव-संयोग से ही उसके दर्शन होते हैं।

दुरचो फिरत कत द्रुमन में नीलकंठ बिन काज।
काल दशहरा बीति है धर मूरख हिम लाज।—अनीस

दाँत काटी रोटी।

घनिष्ठ मित्रता।

दाँत खट्टे होबो।

खूब हैरान होना। लड़ाई या प्रतिद्वंद्विता में परास्त होना।

दाँत गिनाबो।

निर्धनता या निरीहता दिखाना।

दाँत गिरे उर खुर घिसे, पीठ बोझ नहिं लेय।
एसे बूढ़े बैल कों, कौन बाँध भुस देय॥

बूढ़े बैल के सम्बन्ध में।

दाँत चना बीनबो।

ठोकर खाकर गिरना, दाँत टूटना, मुँह की खाना।

दाँत तिनूका दाबबो।

दया की भीख माँगना; क्षमा याचना करना; हा-हा खाना।

दाँत सें कौंड़ी उठाबो।

अत्यधिक कंजूसी करना।

दाँत दाँत तुम बत्तीस। हमरी तुमरी कौन रीस॥
हम कमायें तुम वैठे खाओ। मरती बेराँ संग न जाओ॥

दाँतों के संबंध में बूढ़े आदमियों का कथन।

दाँतन पसीना आ जेय।

दाँतों पसीना आ जायगा। अत्यन्त परिश्रम-साध्य कार्य के संबंध में।

दाँता-किटकिट करबो।

व्यर्थ की बकवाद करना, तर्क-वितर्क करके परेशान करना।

दाँती करबो।

दे० ऊपर।

दाई मीठे, ददा मीठे, किरिया की की खाँव।

असमंजस में पड़ के कोई काम न कर सकना।

दाई हो मीठी, ददा हो मीठी तो सुर्ग कौन जाये।

दाता के घर लच्छमी, ठाँड़ी रहत हजूर।
जैसें गारा राज[1] कों, भर भर देत मजूर॥

(१—कारीगर।)

दाता दानी सूर नृप, मंत्री बैद सचान[1]।
जे सब निर्भय चाहिये, जामिन[2] जुआ किसान॥

(१—श्येन पक्षी, बाज़। २—जामिनदार)

दाता देय भंडारी कौ पेट फटै।

मालिक तो देने का हुक्म दे, परंतु खजांची को दुःख हो कि क्यों दिया जा रहा है। दानपुण्य के कार्य में जब कोई बाधक बने, अथवा दूसरे को देने से मना करे तब।

जाणारचाचें जातें आणि कोठारचाचें पोट दुखतें।—**मराठी**
(देने वाले का तो पैसा खर्च हो और कोठे वाले का पेट दुखे।)

दाता सें सूम भलो तुरतईं देय जुवाब।

देने का वचन देकर जब कोई बहुत टरकाये तब।

दाद-खाज उर सेउआ बड़भागी कें होयँ।
परे खुजावें खाट पै, बड़ आनंदी होयँ॥

खाज-ग्रस्त लोगों से व्यंग्य में।

दाद खाज सेउआ एक कोढ़ जेऊआ।

दाद, खाज, और सेहुआ भी एक प्रकार का कोढ़ ही है।

दादा परदादा के राज की बातें करबो।

पुराने जमाने के भले दिनों की व्यर्थ चर्चा छेड़ना।

दादू दो-दो ना बनें जा लै बा लै डार।

एक समय में एक ही काम अच्छी तरह हो सकता है।

दान की बछिया कें कान नईं होत।

दान में मिली वस्तु प्रायः निकम्मी होती है।

दान की बछिया के दाँत नईं देखे जात।

मुफ्त की चीज के विषय में क्या देखना कि कैसी है? जैसी मिले वैसी ही अच्छी।

धरमरी गायरा दाँत डाढ़ काँई देखणा—**राजस्थानी**
धर्माची गाई दाँत कांगे नाहीं—**मराठी**
धरमनी गाय ना दांत शा जोवा—**गुजराती**

दान दीन कों दीजिये मिटै दरद की पीर।
ओखद ताकों दीजिये जाके रोग शरीर॥

दान, भारो, दच्छना; इनमें उधार कौ काम ना।

दान, भाड़ा, और दक्षिणा, इनका उधार ठीक नहीं।

दान में सें दान देय, तीन लोक जीत लेय।

दान में मिले हुए पैसे में से जो व्यक्ति दूसरों को दान दे उससे बढ़ कर संसार में कोई नहीं।

दाना देयें न घास, खुरौरौ छः छः बेर।

झूठी सेवा-सुश्रूषा करना। आवश्यक वस्तु न देकर अनावश्यक वस्तु बार-बार देना।

दाना-पानी की बात है।

सब अन्न-जल के अधीन है। वह जहाँ चाहे वहाँ ले जाय।

दाम करै काम।

सब काम पैसे से ही होता है।

दाम देओ गन्नेटी खाओ। टूटै पलकिया[1] जी सें जाओ॥

(१--मेले-तमाशे में लगने वाले चक्करदार हिंडोले की पालकी।) गाँठ के दाम दो और चक्कर खाओ, पालकी टूटे तो प्राणों से हाथ धोओ; ऐसे हिंडोले में बैठने से लाभ क्या? किसी काम में पैसा खर्च करके लोगों की ऐंचातानी भी सहना पड़े तब कहते हैं।

दाम न छिदाम, मिठाई देखें रो रो आवे।

पैसे के बिना किसी वस्तु को लेने की इच्छा करना।

दार भात में मूसरचंद।

दो आदमियों की बात में तीसरा व्यर्थ हस्तक्षेप करने पहुँच जाय तब।

दार, भात, रोटी और बात खोटी।

पेट का धंधा ही संसार में मुख्य है।

दिखनारीं दायजें नइँ आउतीं।

यदि कोई चाहे कि दहेज के साथ वे स्त्रियाँ भी मिल जायँ जो उसे देखने आती हैं, तो यह संभव नहीं।

दिन कों बादर रात कों तारे। चलो कंत जहँ जीवें बारे॥

वर्षाॠतु में दिन में यदि आकाश में बादल घिरे रहते हों, और रात में तारे निकल आते हों, तो फिर समझना चाहिए कि पानी नहीं बरसेगा और अकाल पड़ेगा।

दिन तेर करबो।

किसी प्रकार दिन काटना।

दिन भरबो।

दे० ऊ०।

दिन भर नायँ मायँ, जुंदैयन कपास बीनें।

दिन भर तो इधर-उधर घूमें और चाँदनी में कपास बीननें जायँ। ठीक समय पर काम न करना।

दिन भर नायँ मायँ, रात में उलरों क्यायँ ?

दिन में इधर-उधर घूमें और रात में कहें कि मैं लेटूँ कहाँ ? घर का कोई काम-धंधा न देखने वाले, आवारा और मटरगश्ती करने वाले लड़कों के लिए।

दिया तरें अँधियारो।

जहाँ विशेष प्रबंध और विचार की आशा हो वहाँ ही अंधेर होने पर।

दिवारी के चोंखें पड़ा मोंटो नँईं होत।

दीपावली के दिन माँ का दूध चोंखने से पड़ा मोटा नहीं होता। एक दिन अच्छा भोजन कर लेने से कोई तगड़ा नहीं हो जाता।

दीपावली के दिन ढोरों की पूजा होती है। गाय या भैंसों को दुहा नहीं जाता अपितु उनका सब दूध बछड़ों को पिला दिया जाता है। उसी से कहावत बनी।

दीनदुनिया की खबर नइयाँ।

किसी बात का पता न रखना। काम काज से बेखबर रहना।

दुअन में दो कौंड़ी धरबो।

कौड़ी के खेल में दो का दाव लेने वाले को दो कौड़ी और रख दी गयीं ! हानि की समस्या तैयार हो गयी। झगड़ों को बढ़ा देने के अर्थ में प्रयुक्त।

दुआरे कौ चार, बीच कौ लेखो।

द्वारपूजा के समय मध्य का लेखा। बे अवसर का काम।

दुआर धनी के पर रहो, धका धनी के खाव।
इक दिन ऐसा होयगो, आप धनी हो जाव॥

दुकान कों एक घड़ी कों भूलो, तौ दुकान कये में तोय सब दिन कों भूलों।

दूकान पर हमेशा बैठा रहना चाहिए पता नहीं ग्राहक कब आ जाय।

दुकानदारी लरम की, बहू बिटिया सरम की, सिपाईगिरी गरम की।

दुकानदार तो वही जो विनम्र हो, बहू-बेटी वही जो लज्जाशील हो, और सिपाही वही जो तेज-तर्रार हो।

दुकान फैलावे की जरूरत नइयाँ।

यहाँ सामान खोलने की जरूरत नहीं। किसी आदमी से पिंड छुड़ाने के लिए कहते हैं।

दुख सुख कौ जोड़ा है।

दु:ख के साथ सुख और सुख के साथ दु:ख लगा रहता है।

दुखिया रोवे, सुखिया सोवे।

दुधार गइया की दो लातें सउनें परतीं।

काम करने वाले आदमी की दो बातें भी सहनी पड़ती हैं।

दुनियाँ ठगिये मक्कर सें। रोटी खैये सक्कर सें।।

दुनिया में सीधे-सच्चे आदमी का गुजारा नहीं। जाल-फरेब से लोगों को ठगने वाले आदमी ही मौज से रहते हैं। उन पर व्यंग्य।

दुबधा में दोऊ गये, माया मिली न राम।

चिन्ता करने से कुछ हाथ नहीं लगता।

दूद के दाँत नइँ झरे।

अभी तक बचपन है।

दूद कौ जरौ, मठा फूँक-फूँक कें पियत।

एक बार किसी काम में बहुत हानि हो जाने पर दूसरी बार मनुष्य उस काम को अत्यधिक सावधानी से करता है।

दूद कौ दूद और पानी कौ पानी।

ऐसा न्याय करना कि जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो।

दूदन अनाओ, पूतन फलो।

धन और संतान की वृद्धि हो। बढ़ी-बूढ़ी स्त्रियों का सधवाओं को आशीर्वाद।

दूद-पूत माँगें नईं मिलत।

धन और संतति भाग्य से ही मिलती है। माँगने से नहीं।

दूद-भात छोड़ै, पै संग न छोड़े।

यात्रा में यदि कोई साथी मिल रहा हो तो दूध-भात का खाना भले ही छोड़ दे पर उसका साथ न छोड़े, अर्थात् तुरंत उसका संग पकड़ लेना चाहिए।

दूद में सोंज, मठा में न्यारे।

दे० खीर में सोंज....।

दूबरी और दो असाड़, चरन गईं दूर हार।

गाय एक तो दुबली, फिर एक की जगह दो असाढ़ होने से पानी का अधिक बरसना, उस पर भी जंगल में दूर चरने के लिए जाना। तात्पर्य यह कि इस प्रकार विपत्ति पर विपत्ति कोई कहाँ तक भुगत सकता है?

दूबरे ढोर कों बगईं[१] भौत लगतीं।

(१—मच्छर की तरह का एक छोटा जीव जो ढोरों के शरीर से चिपककर उनका रक्त चूसा करता है।) कमजोर को ही सब रोग घेरते हैं। मरे को मारें साह मदार।

दूर के ढोल सुहावने, नीरे के ढप ढप होयँ।

दूर की बातें अच्छी लगती हैं।

दूर जमाई फूल बिरोबर, गाँव जमाई आदो।
घर जमाई खर की नाईं, मन आये सो लादो॥

दामाद का दूर रहने पर ही आदर होता है।

दूला के संगे बरात सजत।

दूल्हा की तैय्यारी के साथ ही बरात की तैय्यारी होती है।

देओ दार में पान्नी।

किसी बड़ी पंगत में भोजन की सामग्री कम हो जाने पर विनोद में।

देखत की धन[1] नोंनी[2]। राँटा करें न पौनी ॥

(१–बहू या बेटी के लिए प्रेम का संबोधन। २–अच्छी।) घर के काम में सुस्त बहू या बेटी के लिए।

देखत के हम ऊजरे, ऊसर मेरो नाव।
मोरे भरोसे रैयो ना, काड़ बिरानो खाव ॥

ऊसर भूमि में खेती करने की अपेक्षा ऋण लेकर खाना अच्छा।

देख देख कौ चद्दर खूँट। कौन करौंटा बैठे ऊँट ॥

न जाने क्या फैसला हो। दो आदमियों में जब झगड़ा हो और लोग यह जानने को उत्सुक हों कि वह किस प्रकार तै होता है तब कहते हैं।

इस पर एक कहानी है कि किसी कुम्हार और कुँजड़े ने एक ऊँट किराये में किया। एक ओर कुम्हार के बर्त्तन रखे गये और दूसरी ओर कुँजड़े की साग-भाजी। रास्ते में ऊँट बार-बार साग-भाजी में मुँह मारने लगा। तब कुम्हार प्रसन्न हुआ और कहने लगा 'कि चलो अच्छा, मेरा तो यह कोई नुकसान नहीं कर सकता, क्योंकि मेरे तो मिट्टी के बर्त्तन हैं।' इस पर कुँजड़े ने कहा—'घबराते क्यों हो। देखें ऊँट किस करवट बैठता है।' संयोग की बात कि, ठिकाने पर पहुँचने पर ऊँट उसी करवट बैठ गया जिधर कुम्हार के बर्त्तन थे, जिससे वे सबके सब फूट कर चूरचूर हो गये।

गड़बड़ हँसै कुम्हारी की माली का चर रह्या बूँट।
तू के हँसै कुम्हार की किण धड़ बैठे ऊँट।—राज०

देखत माछी नइँ खाई जात !

जान-बूझ कर कोई बुरा काम नहीं किया जाता।

देखा-देखी साधौ जोग।
छीजी काया बाढ़ो रोग ॥

व्यर्थ अनुकरण करने से हानि होती है।

देखादेख परोसन की।

पास-पड़ौस के लोगों के कहने में आकर जब कोई काम करे।

देखी अनदेखी भई।

आँखों से देखी बात भी झूठी पड़ गयी !

देखी तोरी कालपी, बावन पुरा उजार।

कोरा नाम ही नाम, सार कुछ नहीं। (अकबर के जमाने में कालपी एक समृद्ध बस्ती थी। परन्तु अब उजड़ी पड़ी है। चारों ओर खँडहर ही खँडहर नजर आते हैं।)

देखे सें भूँक भगत।

देखने से भूख भगती है। किसी अत्यन्त सुन्दर वस्तु के लिए कहते हैं।

देखो री आँखें, सुनो रे कान !

कोई बहुत अनहोनी बात सामने आने पर।

देरी नाँके कौ पाप लगौ।

घर आने का पाप लगा। भलाई करते बुराई हाथ आयी।

देरी हरी बनी रये !

घर हरा-भरा बना रहे। (आशीर्वाद)

देवतन चढ़ी सुहारी[१]। कूकुर खायें चाय बिलारी॥

(१–पूड़ी।) जो वस्तु घर से बाहर निकल गयी और दूसरों को दी जा चुकी, उसकी चिन्ता क्या ?

देवता तौ बासना के भूँके हैं।

देवता कुछ खाते नहीं। वे तो सच्चे विश्वास से ही प्रसन्न होते हैं।

देवी दिन काटें, पंडा परचो माँगे।

देवी तो किसी प्रकार दिन काट रही हैं और पंडा कहता है कि कुछ चमत्कार दिखाइए।

देवी मरें पेट की पीर, पंडा कहें मोय कला दिखाव।

देवें लाख, बतावें सवा लाख।

झूठी डींग हाँकना।

देस चोरी, परदेस भीक।

जब कोई बहुत दरिद्र होकर चोरी और आवारागर्दी करने लगता है तब उसके लिए कहते हैं।

चोरी परिचित स्थान में ही हो सकती है। इसी प्रकार परदेश में बिना किसी संकोच के भीख माँगी जा सकती है।

देसी गदा, बिलायती रेंकन।

देसी घोड़ी विलायती चाल।

देसैं देसैं ढार[१], कुले कुले ब्योहार।

(१– ढंग।) देश-देश की रीति और कुल-कुल का व्यवहार अलग होता है।

देह धरे के दंड भोगने।

शरीर के साथ बीमारी लगी ही रहती है। जो कष्ट बदा है वह भोगना ही है। प्रायः बीमार आदमी कहता है।

देह धरे कौ फल पाओ।

दे० ऊपर।

दैनो[१] भलो न बाप कौ, बेटी भली न एक।
चलनो भलो न कोस कौ जो बिध राखे टेक।।

(१– ऋण, कर्जा)

दैबो कों दमरी, बिछाबे कों कमरी।

कंजूस के लिए।

दोऊ घोड़न सवार हैं।

किसी काम का दोहरा प्रबंध कर रखना।

दोऊ दीन सें गये पाँड़े। हलुआ मिले न माँड़े।।

लोभवश एक काम छोड़ कर दूसरा करने गये और वह भी न हुआ।

दोऊ पलीतन[1] दै दो तेल। तुम नाँचो, हम देखें खेल॥

(१—पलीता (अ० फलीतः), पंसाखों में लगायी जाने वाली कपड़े की बत्ती, मसाल में लपेटा गया कपड़ा।) जब कोई दो मनुष्यों में झगड़ा करा कर उनका पैसा खर्च करायें और तमाशा देखे, साथ ही अपना उल्लू भी सीधा करे।

दोऊ हातन लड़आ हैं।

दोनों हाथ लड्डू हैं। दोनों ओर से लाभ होना।

दोऊ हातन लड़आ लैकें मरी।

पति के जीवित रहते कोई स्त्री मरे तब उसके लिए।

दो घर कौ पाउनों भूकन मरत।

दो घर का पाहुना भूखों मरता है। किसी काम के लिए दो मनुष्यों पर आश्रित रहने वाला व्यक्ति धोखा खाता है।

दोज कौ बायनो,[1] तीज कों फेर दओ।

(१—वह मिठाई जो उत्सवादि के अवसर पर सगे-संबंधियों तथा इष्ट मित्रों के यहाँ परस्पर व्यवहार के रूप में भेजते हैं।) दोज का बायना तीज को फैर दिया। एहसान लौटाल दिया। किसी का कोई निहोरा नहीं रखा।

दो माटी के बुर(अ)ये होत।

एक की जगह दो मनुष्य सब कुछ कर सकते हैं। संगठन में बड़ी शक्ति होती है।

दौंदर[1] बड़ौ, कै लाबर[2]।

(१—दौंदरा करने वाला, जोर-जोर से बोलने वाला, उपद्रवी। २—झूठ बोलने वाला।) निसंदेह लाबर की अपेक्षा दौंदर ही बड़ा होता है।

दौरो कोस हजार लों, बसे लच्छमी पास।
बिना दिये रघुनाथ के, मिलै न तुलसीदास॥

ध

धजी कौ साँप बनाबो।

धजी का साँप बनाना। थोड़ी बात का बहुत विस्तार करना। झूठ बात बना कर खड़ी करना।

अपनऊँ अरो करें पैलां सें देन उरानो कातीं।
ब्रज की नार बिजत्तर ईसुर, धजी को साँप बनातीं।

धड़ी धड़ी करबो।

किसी की मरम्मत करना। पीटना। बदनामी करना। धड़ी धड़ी करकें लूटौ=अच्छी तरह लूटा।

धन के अँगारूँ मक्कर नाच।

धन के आगे मक्कर नाच। पैसे के लिए आदमी सौ तरह की चालबाजियाँ करता है।

धन के धिगानें हैं।

सब पैसे का खेल है, या सब पैसे का झगड़ा है।

धन के पंद्रा मकर पचीस। चिल्ला जाड़ो, दिन चालीस।।

१५ दिसंबर से १३ या १४ जनवरी तक सूर्य धनुराशि में रहता है, उसके पश्चात मकर में। इस प्रकार धन के पन्द्रह और मकर के पच्चीस, इन चालीस दिनों जाड़ा जोर का पड़ता है। इसी को चिल्ला जाड़ा कहते।

धन दै तनकों राखिये, तन दै रखिये लाज।

धनवंते काँटो लगो दौर परो संसार।

निर्धन गिरे करार सें कोऊ न पूछनहार।।

पा० धनवंते कांटो लगो सब जग परी पुकार।
भोंदू गिरे करार सें कोऊ न पूछनहार।।

पैसा वाला नी बकरी मरी ते बधां गा में जाणी,
गरीब की छोकरी मरी ते कोइ अे नहिं जाणी।—गुजराती

(पैसे वाले की बकरी मरी तो गांव भर ने जाना। गरीब की लड़की मरी तो किसी ने नहीं जाना)।

धनी न धोरी, पिरथीपुर[1] के कोरी।

(१–झाँसी जिले में मऊरानीपुर तहसील का एक छोटा ग्राम, जहाँ किसी समय हाथ के बने कपड़े का अच्छा कारबार चलता था।) जब कोई साधारण आदमी अपने को बहुत महत्त्व दे तब कहते हैं।

धनी पालै, धनी मारै।

धनवान ही रक्षा करता है, और धनवान ही प्राणों का ग्राहक भी बनता है।

धनी हूजे, कै ढोर हूजे।

या तो भगवान धन देवे, या फिर पशु ही बनाये।

धन्न तोरी छाती कों।

धन्य तेरी छाती को (जो ऐसा काम करने का साहस तेरा हुआ)।

धन्न बो दिन, धन्न बा घड़ी।

जब ऐसी अनहोनी घटना घटित हुई।

धन्नों दै कें बैठबो।

कोई काम कराने के लिए किसी के पास अड़ कर बैठना, और जब तक काम न हो तब तक अन्न-जल ग्रहण न करना।

धन्नासेठ के नाती बनें फिरत।

थोड़ी पूँजी वाला जब अपने को बड़ा धनाढ्य समझे तब।

धर जा, मर जा, बिसर जा।

दूसरे का माल हड़प जाने की इच्छा रखने वाले के लिए कहते हैं कि कोई उसके पास धरोहर रख जाय और मर जाय, तथा दूसरे लोग भी भूल जायें तो सब माल-मता उसका हो जाय।

धरती कोऊ की रई न रैये।

धरती न तो किसी की रही, न रहेगी।

धरती ठौर नईं देत।

अत्यंत दीन और दुखी व्यक्ति के लिए।

धरती सबकौ भार सँभारें।

धरती सबका भार सँभाले हुए है।

धर तौ पटको, चढ़बे सब ठाँड़े। (अथवा चढ़बे हम ठाँड़े)।

किसी कठिन काम के मुख्य अंश को स्वयं न करके दूसरों को उसके लिए उकसाना।

धर तौ पटको, मूँछें हम उखार लें।

दे० ऊपर।

धरबे कों मियाँ, सुलगावे कों मियाँ, पीवे कों आप, टिकावे कों मियाँ।।

हुक्के से मतलब है, कि भरने के लिए मियाँ, सुलगाने के लिए मियाँ, पीने को आप और फिर टिकाने को भी मियाँ। किसी से इस प्रकार का फालतू काम लिये जाने पर व्यंग्य।

धरम के दूने।

धोखा-धड़ी का व्यापार करने वाले के लिए व्यंग्य में। दूने तो किसी धंधे में नहीं होते।

धरम की जड़ पताल में।

धर्म की जड़ गहरी होती है।

धरम धक्का खाओ।

कुछ दिनों ठोकरें खाओ, तब अक्ल आयेगी।

धरी की धरी रै जै (ये)।

ऐन मौके पर कुछ करते-धरते नहीं बनेगा। जो बात जहाँ है, वहीं रहेगी।

धाओ, धाओ, धाओ। करम लिखंतो पाओ।।

चाहे जितनी दौड़-धूप करो, जो भाग्य में लिखा है वही मिलता है।

धान कौ गाँव प्यौंर सें जानों जात।

गाँव के बाहर पुआल के ढेर लगे हों तो उससे पता चल जाता है कि यहाँ धान होता है। बाहरी लक्षणों से किसी स्थान की धन-सम्पन्नता का पता चल जाता है।

धान गिरै सुभागे कौ, गोऊँ गिरै अभागे कौ।

धान के पौधों का धरती में गिरना और झुकना अच्छा होता है परन्तु गेहूँ का नहीं।

धान, पान, उखेरा, तीनऊँ पानी के चेरा।

धान, पान और ऊख की खेती के लिए पानी की अधिक आवश्यकता होती है।

धान-पान हो रई।

धान-पान हो रही है। सुकुमार स्त्री के लिए कहते हैं कि बिना पानी के धान-पान की तरह कुम्हला रही है।

धान पुरानो, घी नओ।

चावल तो पुराना और घी नया अच्छा होता है।

धान सी कूटबो।

किसी को डंडों से खूब पीटना।

धायें धन, न माँगे पूत।

दौड़-धूप करने से धन और माँगने से लड़का नहीं मिलता। जो भाग्य में है वही मिलता है।

धावे सो पावे।

परिश्रम करने वाले को उसका फल मिलता है।

धिगानों रोपें।

व्यर्थ का झगड़ा रोपे हुए हैं। दो आदमियों की ऐसी तकरार के लिए कहते हैं जिसका लोग तमाशा देखें।

धींगे की धरती है।

धींगामुश्ती करने वाला आदमी ही दुनिया में आराम से रह सकता है।

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

धीरज धरें हाती नौं मन खात।

धीरज धरना चाहिए। भगवान सबको आवश्यकतानुसार देता है।

सब्र का फल मीठा होता है।

धीरा सो गंभीरा।

धीरज रखने वाला आदमी ही समझिए कि गंभीर है।

उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा।

धीरें धीरें रे मना, धीरें सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, रितु आयें फल होय॥

धीरो काम साहब को।

ईश्वर किसी काम में उतावली नहीं करता। वह जो कुछ करता है, सोच-समझ कर ही करता है।

धुआँ की मोटें बाँधबो।

धुएँ की गठरी बाँधना। व्यर्थ का, या असंभव काम करना।

धुआँ देखबो।

किसी का बुरा तकना। तुमाओ धुआँ देखें, अर्थात तुम मर जाओ।

धूनी पानी कौ संजोग।

दो रमते आदमियों का संयोग से मिलना।

धूरा के पइसा बनाउत।

मुफ्त के पैसे सीधे करते हैं।

धूरा कों पटोरन ढाँकत।

धूल को रेशमी वस्त्र से ढँकते हैं। बेमेल काम करना।

धूरा छानी, ककरा निकरे।

धूल छानने से कंकड़ ही हाथ लगते हैं।

धेला की नथनी पै इत्तो गुमान। सोने की होती तो चलतीं उतान॥

धेले की नथनी पर तो इतना घमंड, सोने की होती तो चित्त होकर चलतीं। रूप या शृंगार का अधिक गर्व करना।

धोके में धवाकर[1] लुट गई।

(१—झाँसी जिले का एक छोटा ग्राम।) अनजाने काम हो गया।

धोबी के घरैं ब्याव, गदा ने छुट्टी पाई।

मालिक के घर आनंद-उत्सव होने से नौकर को भी छुट्टी मिली।

धोबी कौ कुत्ता, घर कौ न घाट कौ।

जब कोई आदमी इधर-उधर मारा-मारा फिरे और कोई भी एक काम ठिकाने से न कर पाये तब उसके लिए कहते हैं।

तुलसी बनी है राम रावरे बनाये,
ना तौ, धोबी कैसो कूकुर न घर कौ न घाट कौ।

धौर चलौ न उपटो खाओ।

न दौड़ कर चलो, न उपेटा लगे। उतावली अच्छी नहीं।

न

नंगन कें नंग आये, पैरें बैठे झंग।

जैसे के यहाँ तैसे ही आते हैं।

नंग न लुटें हजारन में।

नंगे को कोई क्या लूटेगा ?

नंग बड़े परमेसुर तें।

नंगे से ईश्वर भी डरता है, क्योंकि उसका कोई क्या बिगाड़ लेगा ?

नंगा के संगैं नचे बिना हींसा नईं मिलत।

नंगे के साथ नाचे बिना हिस्सा नहीं मिलता। जैसे साथ तैसा ही बनने से काम चलता है।

नंगा ठाँड़ो गैल में चोर बलैयाँ लेय।

जिसके पास कुछ है ही नहीं, उससे कोई लेगा क्या ?

नंगा सो चंगा।

जिसके पास कुछ नहीं वह सदैव मजे में है।

नंगी का सपरे और का निचोरे ?

जिसके पास कोई वस्तु है ही नहीं वह क्या तो स्वयं उसका उपयोग करे, और क्या दूसरों को दे ?

नंगी नचत।

नंगी नचती है। निर्लज्ज स्त्री के लिए।

नंगी नाचै, धमाको होय।

निर्लज्ज की निर्लज्जता छिपी नहीं रहती।

नंगी नाचै, पूतै खाय, बेटा की सों जेई आय।

जब अपनी चाल-ढाल से कोई स्त्री स्वयं अपने को चरित्रहीन प्रकट करती फिरे तब।

इसकी एक कथा है—किसी मनुष्य के दो स्त्रियां थीं। जेठी की गोद में छः महीने का बालक था। एक दिन मौका पाकर छोटी ने उसे मार डाला और कहना शुरू कर दिया कि बड़ी ने मुझे बदनाम करने के लिए यह काम किया है। बड़ी ने लोगों के सामने रोकर कहा—कोई मां होकर अपने लड़के को मार डाले, भला ऐसा भी किसी ने देखा सुना है। मैं स्नान करने गयी थी। इस बीच में इसने उसका गला दबा दिया। सुन कर लोग बड़े आश्चर्य में पड़े और असली अपराधी कौन है यह किसी की समझ में नहीं आया। अंत में मामला गांव के मुखिया के पास पहुँचा। उसने दोनों स्त्रियों को बुला कर कहा—अच्छी बात है मैं अभी इस बात का फैसला करता हूँ कि लड़के को किसने मारा। तुम दो में से जो स्त्री हम लोगों के सामने बिलकुल नंगी होकर खड़ी हो जाये और नाचे उसी को हम निर्दोष समझ लेंगे। सुन कर बड़ी ने कहा—मेरा लड़का का लड़का गया और ऊपर से अपनी लाज-शरम भी खोऊँ। ऐसा तो मैं कदापि नहीं कर सकती भले ही आप मुझे अपराधी समझ लें। छोटी ने कहा—मैंने जब कोई बुरा काम किया ही नहीं तब आप लोगों के सामने नंगी होकर नाचने में क्या डर? और वह कपड़े उतारने के लिए तैयार हो गयी। यह देख कर मुखिया ने तुरंत कहा—बस बस फैसला हो गया—नंगी नाचै, पूतै खाय, बेटा की सों जेई आय। जो नंगी नाचने को तैयार है उसी ने लड़के की हत्या की है। मैं पुत्र की शपथ खाकर कह सकता हूँ कि यही असली अपराधिनी है।

नंगी भली कै मूसर आड़ें।

कोई बेतुका काम करने पर। इसकी एक कथा है कि एक बार कोई स्त्री घर के भीतर नंगी स्नान कर रही थी। इतने में उसका समधी आया, और इधर-उधर किसी को न देख सीधा आँगन में चला आया। स्त्री उसे देखते ही घबरा गयी। लज्जा-निवारण के लिए कोई वस्त्र उस समय उसके पास नहीं था। केवल एक मूसल वहाँ रखा था। कोई और उपाय न देख उसे ही सामने कर लिया। इस पर समधी ने कहा कि तुम यह क्या गजब कर रही हो। इससे तो तुम नंगी ही अच्छी थी।

नंगे सपरें निचोबें का।

दे० नंगी का सपरे।

नंगो नावै बीच बजार।

बेशरम आदमी।

नंद के फंद नंदई जानत।

नंद के फंद नंद ही जानती है। भावज का ननद के लिए कहना।

नंद कें सोई नंद भई।

किसी की ननद की सास के लड़की पैदा हुई। इस पर भावज ने प्रसन्न होकर कहा—चलो, अच्छा हुआ, ननद के भी ननद पैदा हुई। अब इसे पता चलेगा कि ननद होती क्या वस्तु है।

जो दूसरों को तंग करता है उसे भी तंग करने वाला मिल ही जाता है।

नँद कौ नंदेऊ[1], मेरो लगै न कोऊ।

(१—ननदोई, ननद का पति।) दूर के संबंधी के लिए उपेक्षा में कहते हैं।

नँदायरो नइयाँ।

निर्वाह नहीं है। बनती या पटती नहीं है।

न अँदरा न्योतो, न दो बुलाओ।

अंधे को न्योतने पर एक आदमी उसका हाथ पकड़ कर साथ लाने वाला चाहिए। ऐसा काम क्यों करो जिसमें व्यर्थ संकोच में पड़ना पड़े।

न ईंट की देओ, न पथरा कौ दुआओ।

न किसी को ईंट मारो, न पत्थर खाओ।

नई दुकान, तिबरसी गुर माँगें।

नई दुकान और तीन वर्ष का पुराना गुड़ माँगते हैं, जो कहाँ रखा ?

नई नाउन बाँस की नहन्नी।

किसी नौसिखिया के अनोखे ढंग से काम करने पर।

नई बऊ कौ आला गावो।

किसी नई वस्तु की बार-बार प्रशंसा करना।

नई बऊ कौ पालागन।

चार दिन का आदर-सत्कार।

नई बऊ, कुजाँगा खाता।

नयी बहू और कुठौर में फोड़ा। असमंजस का विषय।

नई बात नौ दिना।

किसी नयी बात की चर्चा दस-पाँच दिन ही रहती है। तत्पश्चात वह पुरानी पड़ जाती है।

न उनको ठौर, न उनको और।

जब दो आदमी एक-दूसरे से अपना पिंड छुड़ाना चाहते हों, परन्तु एक-दूसरे के बिना उनका काम भी न चलता हो।

नओं नौ दिना, पुरानो सब दिना।

नयी वस्तु दो-चार दिन में ही पुरानी पड़ जाती है, उसके पश्चात उसे पुरानी वस्तु से ही काम पड़ता है। इसलिए नयी के आगे किसी पुरानी चीज का तिरस्कार ठीक नहीं।

नकटा की नाक कटी, ढाई बित्ता रोज बढ़ी।

निर्लज्ज पर कोई बात असर नहीं करती।

नकटा जिये बुरा हवाल।

बेशरम के लिए कहते हैं।

नकटा ससुर, निर्लज्ज बऊ, आ रे ससुरा कानियाँ[1] कऊँ !

(१—कहानी, किस्सा।) ऐसे घर के लिए कहते हैं जहाँ सभी बहुत निर्लज्ज हों।

नकटी के ब्याव में सौ जोखों।

नंकट वां लगन मों सोलसे बघन—**गुजराती।**
नकटीचे लग्नास सत्राशें विघ्ने—**मराठी।**

नकल में अकल कौ का काम।

नकल के लिए बुद्धि की आवश्यकता नहीं होती।

न कँबे की लाज, न सुनबे की लाज।

बेशरम के लिए।

नगन नगन कोड़ जुअे।

किसी का बुरा चाहना। शाप देना।

नगर बसंते देवा नाम, गाँव बसंते भूता नाम।

नगर में देवता बसते हैं और गाँव में भूत। अर्थात गाँव का रहना अच्छा नहीं।

न घर चैन, न बाहर चैन।

बहुत चिन्ता-ग्रस्त।

नचबे चलीं और घूंघट घालें !

जब कोई नीचा काम करने पर ही उतारू हुए तो शरम क्या ?

नछत्र बली हैं।

भाग्य प्रबल है।

नचनारी के कूले फरकत।

नाचने वाले के कूल्हे फरकते हैं। गुणी आदमी का गुण छिपा नहीं रहता। उसकी किसी न किसी चेष्टा से वह प्रगट हो जाता है।

नचैया के पाँव आप दिखा परत।

नाचेर पा थामे ना—**बंगला**
नाचनारी ना पग ढांक्या न रहे—**गुज०**

नजर में ककरा नचत।

अर्थात बड़ा रौब-दाब है।

न तर घँगरिया, न ऊपर फरिया।

ऐसी स्त्री जिसके पास पहिनने-ओढ़ने को न हो। निर्लज्ज या फूहड़ के लिए भी कह सकते हैं।

न तें मोरी कये खीस निपोरी। न मैं तोरी कओं दाँत निपोरी।।

न तू मेरी बदनामी कर और न मैं तेरी करूँ। परस्पर व्यवहार की बात।

नदी किनारें बगुला बैठो, चुन चुन मछरी खाय।

काल सबको धीरे-धीरे खाता रहता है। धूर्त आदमी को लक्ष्य करके भी कहते हैं।

नदी किनारे रूखड़ा जब तब होय बिनास।

जिसे हमेशा जोखिम का काम करना पड़ता हो उसके जीवन का क्या ठिकाना ?

नदी-नाव संजोग।

आकस्मिक भेंट।

तुलसी या संसार में भाँत भाँत के लोग।
सबसे हिल-मिल चालिये नदी नाव संजोग ।।

नदी में रै कें मगर सें बैर!

बलवान के पास रह कर उससे बैर नहीं किया जा सकता।

न धौर चलो, न गिर परौ।

उतावली अच्छी नहीं।

न नाम लेवा, न पानी देवा।

ऐसा आदमी जिसका कोई न हो। जो निःसंतान हो।

न नौ मन तेल हुइये, न राधा नाचें।

न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेंगी। अयोग्यता छिपाने के लिए ऐसी शर्त पर काम करने को कहना जो संभव न हो।

नन्नां के आँगें ननयावरे की बातें।

अपने से अधिक जानने वाले के सामने अपनी जानकारी बघारना।

नन्नां[१] छबीली ने मो लये।

(१—भाई या काका के लिए संबोधन।) नन्ना को छबीली ने मोह लिया। जब कोई अपने से बड़ा और समझदार दूसरों की बातों में आ जाय तब कहते हैं।

नन्नें-बड़े करत क्वाँरे रै गये।

पहिले उम्र में छोटे होने के कारण विवाह नहीं हो सका, फिर बड़े होने से नहीं हो सका, इस प्रकार छोटे-बड़े करते ही क्वाँरे रह गये! बातों-बातों में ही समय बीत गया, और अभीष्ट पूरा नहीं हो सका।

नन्नें मों बड़ी बात।

जब कोई छोटा बड़ों के मुँह लगे तब।

नन्नों भूत बड़े कों दबकावे।

छोटा भूत यदि बड़े को डाट-डपट बताये तो यह एक आश्चर्य की ही बात है।

न फूंक लैनें, न फटक दैनें।

न हमें (अनाज) फूंक कर लेना है, और न फटक कर देना है। हमें ऐसा लेन-देन नहीं करना जिसमें सरासर घाटा है।

न ब्याये, न बराते गये।

न तो विवाह किया और न किसी की बारात में ही गये। अनुभवहीन व्यक्ति।

न भटन में, न भाजी में।

किसी गिनती में नहीं।

न माँड़ पसाउत के, न माँड़े[१] पऊत के।

(१—मिट्टी के तवे पर सिकी हुई मैदा की पतली रोटियाँ, जो आग पर नहीं सिकती।) किसी योग्य नहीं।

न माँयन के, न मड़वा तर के।

न तो माँय लेने वालों में और न मँड़वा के नीचे बैठने वालों में ही। विवाह में मातृदेवी की पूजा के लिए जो अलग रोटियाँ या पूड़ियाँ तैयार करके रखी जाती हैं वे माँय कहलाती हैं। ये कुटुम्ब वालों को ही प्रसाद के रूप में खाने को दी जाती हैं। कुटुम्ब से बाहर के लोगों को नहीं मिलतीं और न वे उस स्थान में ही जाने पाते हैं जहाँ माँय रखी रहती हैं। इसी प्रकार कुछ विशेष सगे-संबंधियों को ही विवाह में मंडप के नीचे बैठ कर भोजन करने का अधिकार होता है, दूसरे लोग नहीं बैठने पाते। अतः जिसकी कोई वकत न हो ऐसे आदमी के लिए कहावत का प्रयोग होता है।

नमें सो जमें।

स्वभाव का नम्र आदमी ही फलता-फूलता है।

नमें सो भारी।

नम्र आदमी को ही बड़ा समझना चाहिए।

नमंति फलिनो वृक्षा नमंति गुणिनो जनाः। —**संस्कृत**।

नमो नारायन, तौ कई–बच्चा आज, भोजन तोरेई घरे।

किसी साधू बाबा से किसी ने रास्ते चलते प्रणाम किया, तो उसने उत्तर दिया—अच्छा, बेटा आज भोजन तेरे ही घर। जबर्दस्ती की मुसीबत गले पड़ना।

नये गुंडा अंडी कौ फुलेल।

जब कोई नौसिखिया कोई अनोखी या अनुपयुक्त वस्तु काम में लाये तब।

नये गुंडा, कंडा की दरपनी।

दे० ऊपर।

नये जोगी कुल्लन पै जटा।

दे० ऊपर।

नये जोगी गाजर कौ संख।

दे० ऊपर।

नये पुजारी कोलू कौ संख।

दे० ऊपर

नये पुराने हो गये।

बात पुरानी पड़ गयी।

नये सिरे सें जनम भओ।

कठिन बीमारी से अच्छे होने पर।

नर जाने दिन जात है, दिन जाने नर जाय।

मनुष्य समझता है कि दिन जा रहा है, परन्तु दिन के लेखे तो मनुष्य ही जाता है।

नरदवा की बिनती कों गये, बखरी हार आये।

नाबदान की प्रार्थना लेकर गये कि यह हमारा है, हमें दिलवा दिया जाय, परन्तु उल्टे घर हार कर आ गये।

न राँड़ कओ, न निपूती सुनो।

न किसी से बुरी बात कहो, और न उससे अधिक बुरी सुनो।

नरियाँ झुरियाँ कड़ जैहें, निमान कौ पानी निमाने रैहै।

छोटे नदी-नाले तो वह कर निकल जायेंगे, परन्तु धरती के नीचे का पानी नीचे ही रहेगा। ओछी प्रकृति के ऐसे आदमी जो बहुत इतरा कर चलते हैं नष्ट हो जाते हैं, परन्तु गंभीर पुरुष अपनी जगह पर टिके रहते हैं।

न रय बाँस, न बजे बाँसुरी।

जिस वस्तु के रहने से हानि होती हो उसे जड़ से नष्ट कर देना।

न लरका दिया कै (ये) न सोनो हुइये।

किसी ऐसी शर्त के कारण जो पूर्ण न हो सकती हो, काम का अटक जाना। (लोगों में विश्वास प्रचलित है कि छः महीने का दूध पीता बालक यदि मुँह से 'दिया' कह दे तो मिट्टी का दीपक सोने का हो जाता है।)

न सौ लादे, सवा सौ लादे।

कोई काम जैसा थोड़ा किया वैसा बहुत किया।

नाऊ के बार आँगें आऊत।

जब कोई ऐसी बात के विषय में पूछे जिसका वृत्तान्त तुरंत ही ज्ञात होने वाला हो तब।

नाई नाई बाल कितने, जिजमान आगे आयेंगे—**फैलन**

नाऊ नाऊ की बरात, टिपारौं[1] को लै चलै?

(१—मुकुट की आकार की छोटी टोपी। बुन्देलखंड में यह शब्द बाँस की बनी ढक्कनदार टोकनी के अर्थ में प्रयुक्त होता है।)

बराबर के आदमियों में जब कोई छोटा अथवा परिश्रम का कार्य आ पड़े और उसे कोई करने को तैयार न हो तब कहते हैं।

नाक कटी सो कटी, पै घी तौ चाटौ।

किसी ने कनस्टर में मुँह डाल कर घी चाटा, जिससे उसकी नाक कट गयी। तब उसने कहा, नाक कट गयी तो कोई चिन्ता नहीं, घी तो चाटने को मिला। बेशरम के लिए प्रयुक्त।

नाक काट पटोरन पोंछत।

नाक काट कर रेशमी रूमाल से पोंछते हैं। हानि पहुँचा कर सहानुभूति दिखाना।

नाक चना बिनवाबो।

किसी को खूब तंग करना। हैरान करना।

दसमुख-बिबस तिलोक लोकपति बिकल बिनाए नाक चना है। —**तु० गीता**

नाक छिदाउन गईं, कान छिदा कें आ गईं।

गये किसी कार्य के लिए, कोई दूसरा कार्य करके आ गये।

नाक दूर, कैं हँसिया।

कोई आदमी जब किसी काम को करना चाहे और उसके साधन पहिले से मौजूद हों तब कहते हैं कि कौन मना करता है, कर डालिए ऐसा काम।

नाक नकटी, मों फिकार[1]।

(१—काले रंग का, कोदों, समा की तरह का, एक हलका खाद्यान्न।) निर्लज्ज और कुरूप स्त्री के लिए कहते हैं। गाली के रूप में भी प्रयुक्त।

नाक नंगी, गर हमेल[1]।

(१—गले में पहिनने की सिक्कों की माला।) जब किसी स्त्री के पास नित्य-प्रति के पहिनने के साधारण वस्त्राभूषणों की तो कमी हो, परन्तु जो दो एक कीमती गहने या कपड़े उसके पास हों उनको पहिन कर ही लोगों को दिखाती फिरे तब व्यंग्य और ताच्छल्य में उसके लिए प्रयोग करते हैं।

नाक न बाँसो,[1] देखें लोग तमासो।

(१—नाक की ऊपर की हड्डी, बाँसा।) बेशरम के लिए कहते हैं।

नाक पैं माछी नईं बैठन देत।

नाक पर मक्खी नहीं बैठने देता। ऐसा आदमी जो किसी का एहसान लेना पसंद न करे।

नाक सें अफरे बैठे।

किसी वस्तु की इच्छा नहीं। खूब तृप्त हैं। ऊबे बैठे हैं। व्यंग्य में।

नागाजी कूच, निउरे तौ अतीत झूठ।

नागा साधुओं के दल में किसी ने कहा—चलिए बाबा जी, कूच, तो उत्तर मिला—मैं तो पहिले से तैयार खड़ा हूँ। कमर झुकाऊँ तो कहना साधू झूठा था। किसी काम के करने के संबंध में इस प्रकार का विश्वास दिलाने के लिए कहते हैं कि मैं तो तैयार हूँ। मेरी ओर से बेफिक्र रहो।

नाच न आवे आँगन टेढ़ो।

मूर्ख कारीगर साधनों को दोष देता है। किसी काम को करने का तो ढंग मालूम न हो और साज-सामान को बुरा बतायें।

नाचते न जानले उठानेर दोष—**बंगला**

नाचतां रांइना आंगण वांकड़े, येधतां येईना ओली लांकटे—**मराठी**
(नाचना आता नहीं आँगन टेढ़ा; भोजन बनाना आता नहीं, और लकड़ी गीली!)

नाच परौसिन मोरें, तौ मैं ठाँड़ी नाचों तोरें।

तू मेरे ऊपर थोड़ा एहसान करे, तो मैं बहुत करने को तैयार हूँ। परस्पर व्यवहार की बात।

नाठ कौ धन।

निपूते का धन। (किसी को फलता नहीं)

नाती माँगें पूत मिलत।

किसी से बहुत माँगो तब थोड़ा मिलता है।

नाथ[1] पगैया[2] मोरे हात। बच्छा कूँदै नौ नौ हात॥

(१–बैल, भैंस आदि की नाक छेद कर उन्हें वश में करने के लिए डाली जाने वाली डोरी। २–ढोर बाँधने की छोटी रस्सी, पगहा।)

जब कोई आदमी पूर्ण रूप से दूसरे के आश्रित रहते हुए भी अपने को स्वतंत्र और स्वावलंबी बताने की चेष्टा करे तब।

ना दैवे की सौ बातें।

किसी को जब कोई वस्तु नहीं देना, हो तो उसके लिए सौ बहाने बनाये जा सकते हैं।

नान सबके गोड़े धोउत, अपने धोउत लजावे।

नाइन सबके पैर धोती है, परन्तु अपने पैर धोने में लजाती है। अपने हाथ से अपना काम करने में लोगों को प्रायः संकोच होता है।

नान सें पेट नइँ छिपत।

किसी ऐसे मनुष्य से कोई बात नहीं छिपायी जा सकती जिसका वह सब भेद जानता हो।

दाई से पेट नहीं छिपता—**फैलन**

ना बात बिरानी कैये, ना ऐंचातानी सैये।

न व्यर्थ दूसरे की बात किसी से कहो और न इँचे-खिंचे फिरो। किसी के झगड़े में पड़ना ठीक नहीं।

इस पर एक कहानी है कि एक बार किसी सियार की स्त्री ने एक शेर की माँद में जाकर बच्चे दिये। उस समय शेर बाहर था। परन्तु जब वह लौट कर आया तो सियार और सियारनी बड़े घबराये। अंत में कोई और उपाय न देख सियार ने सियारनी से कहा—देख, अब तू एक काम कर। किसी प्रकार बच्चों को रुला दे। मैं पूछूंगा–रानी चकचुइया, बच्चे रोते

क्यों हैं? तुम कहना —राजा शालवाहन—वे भूखे हैं। शेर का ताजा मांस खाने को माँगते हैं। मैं कहूँगा—अच्छी बात है। इस जंगल में शेरों की क्या कमी? एक नहीं, अभी दस मार कर लाता हूँ। माँद के निकट आकर शेर ने उन दोनों की जो इस प्रकार की बातचीत सुनी तो डर के मारे उल्टे पैरों भाग खड़ा हुआ। रास्ते में एक दूसरे सियार से उसकी भेंट हुई। उसके पूछने पर कि भाई, तुम इस तरह तेजी से कहाँ भागे जा रहे हो, शेर ने सारा किस्सा बताया। सुन कर सियार ने हँस कर कहा—भाई तुम भी खूब हो। वह तो हमारी बिरादरी का ही एक सियार है। उसकी स्त्री ने वहाँ बच्चे दिये हैं। विश्वास न हो तो चल कर देख लो। शालवाहन यहाँ कहाँ रखे। परन्तु शेर को इसका विश्वास नहीं हुआ। तब सियार ने कहा अच्छी बात है। तुम अगर समझते हो कि मैं तुम्हें कोई धोखा दे रहा हूँ तो मैं तुम्हारी पूँछ से अपनी पूंछ बाँधे लेता हूँ जिसमें मैं कहीं भाग कर जा न सकूं। बात झूठ निकले तो तुम्हें जो दीखे सो करना। शेर इस बात पर राजी हो गया। एक दूसरे की पूंछ से अपनी पूंछ बाँध कर दोनों माँद की तरफ चल पड़े। इधर पहिले सियार ने जब उनको इस प्रकार आते देखा तो मांद के भीतर से ही चिल्ला कर कहा—शाबाश भाई, शाबाश। तुम अच्छे मौके से आये। मैं स्वयं शेर के शिकार के लिए जा ही रहा था। बच्चे बड़ी देर से भूखे रो रहे हैं। परन्तु यह क्या बात है? मैंने तुमसे दो शेर पकड़ कर लाने को कहा था। परन्तु तुम एक ही लाये? सियार की यह बात सुन कर शेर वहाँ से प्राण लेकर भागा। वह दूसरा सियार चिल्लाता ही रहा कि भाई ठहरो, ठहरो, मुझे कम से कम अपनी पूँछ तो छुड़ा लेने दो। परन्तु शेर ने एक नहीं सुनी। बराबर भागता ही गया और सियार भी उसके पीछे-पीछे बड़ी दूर तक घसिटता गया। लगातार झटके लगने से बेचारे की पूंछ टूट गयी और कई जगह सिर में चोट भी आगायी। अपनी यह दुर्दशा देख कर उसने ऊपर का वाक्य कहा कि ना बात बिरानी कैये, ना ऐंचा तानी सैये।

ना बोले में नौ गुन।

चुप रहने अथवा कम बोलने में बहुत भलाई छिपी रहती है।

नामी चोर मारो जाय। नामी साव कमा खाय॥

ख्याति से कहीं हानि और कहीं लाभ होता है।

नायें गिरौ तौ कुआ, नायें गिरौ तौ खाई।

दोनों ओर विपत्ति।

नारि मुई घर संपति नासी।
मूंड़ मुड़ाये भये संन्यासी ॥

ऐसे लोगों पर व्यंग्य जो स्त्री के मरने अथवा संपत्ति का नाश होने पर साधू हो जाते हैं?

नारी नर कौ नूर है, नारी जग कौ मान।
नारी सें नर ऊपजे, ध्रू, प्रह्लाद समान॥

नाव चढ़े झगड़ालू आवें, पैरत आवें साखी।

वादी और प्रतिवादी तो दोनों आराम से नाव पर चढ़ कर आ रहे हैं और गवाह तैरते आ रहे हैं। उल्टी बात। जब कोई आदमी व्यर्थ दूसरों के लिए कष्ट उठाये और घिसटा-घिसटा फिरे तब।

नाव तौ नन्नी बऊ, और ऊँची धरीं ताड़ सीं।

नाम के विपरीत गुण।

नावसें नाव बँदी।

एक दूसरे पर आश्रित हैं। नाव से नाव बँधी होने पर एक के डूबने पर दूसरी भी डूबेगी।

नाव बड़े दरसन थोरे।

जब कोई किसी का बड़ा नाम सुन कर आये और उसे निराश जाना पड़े तब।

नाव लखेसुरी, मों कुतिया सो।

दे० नाव तौ नन्नी बऊ।

निगत बनेना, सुपेती की फेंट बाँदें।

चलते तो बनता नहीं, रजाई की फेंट बाँध रखी है। सामर्थ्य से बाहर काम करने की हास्यजनक चेष्टा।

निन्नानबे के फेर में परबो।

१—रुपया कमाने की फिक्र सवार हो जाना। २—घर-गृहस्थी की चिन्ता में पड़ जाना। ३—किसी ऐसी समस्या का सामने आ जाना जिसे आसानी से हल न किया जा सके।

इसकी एक कथा है कि किसी गाँव में एक ब्राह्मण रहता था जो बड़ा संतोषी था और चार पैसे रोज में अपना और अपनी स्त्री की गुजर करता था। अधिक पैसे की उसे कभी इच्छा नहीं हुई। जो मिलता उसी में परम सुखी था। उसके एक पड़ोसी से उसका यह सुख नहीं देखा गया। एक दिन चुपके से एक थैली में निन्नानबे रुपये भर कर उनके घर में फेंक दिये। बेचारे गरीब तो थे ही। रुपये देख कर बड़े प्रसन्न हुए। गिने तो एक कम सौ निकले। अब उनको इस बात की चिन्ता हुई कि ये किसी प्रकार पूरे सौ हो जायं। उन्होंने अपना खर्चा घटा कर तीन पैसे रोज का कर दिया। इस प्रकार दो महीने में सौ हो गये। अब उनको इस बात की चिन्ता हुई कि ये किसी प्रकार दो सौ हो जायं। दो सौ से फिर तीन सौ की फिक्र हुई। इस तरह रुपया इकट्ठा करने की चिन्ता ज्यों-ज्यों बढ़ती गयी त्यों-त्यों बेचारे बड़े दुबले हो गये और वह सुख सदा के लिए तिरोहित हो गया, जिसका वे अनुभव किया करते थे।

निन्नें पानी जे पियें, हर्र भूंज कें खायें।
दूदन ब्यारू जे करें, तिन घर बैद न जायें।।

जो प्रातः काल उठते ही निहार मुँह पानी पीते हैं, हर्र भूँज कर खाते हैं, और रात्रि में दूध का सेवन करते हैं वे कभी बीमार नहीं पड़ते।

निबुआ नोंन चुंखा दओ।

कोरा टरका दिया।

निबुरिया जैसी छाँयरी।

नीम के छोटे वृक्ष जैसी छाया। अस्थायी आश्रय।

निमान कौ पानी निमानें जात।

धरती के नीचे का पानी नीचे ही जाता है। जो वस्तु जहाँ की होती है वहीं चली जाती है।

नियत सें बरक्कत होत।

नीयत को साफ़ रखने से आदमी मुनाफे में रहता है।

निर्धन के धन गिरधारी।

निर्धन को भगवान का ही बल रहता है।

निर्बल के बल राम।

दे० ऊपर।

नींद बैरन हो गई।

चिन्ता के कारण नींद न आने पर।

नीकी हू पै फीकी लगै बिन औसर की बात।

बे अवसर की अच्छी बात भी बुरी लगती है।

नीम कौ कीरा नीमईं में मानत।

नीम का कीड़ा नीम में ही सुखी रहता है।

नीम गुन बत्तीस, हर्र गुन छत्तीस।

नीम में बत्तीस गुण हैं, अर्थात वह बत्तीस रोगों में काम आता है और हर्र में छत्तीस।

नीम न मीठे होयँ, खाओ गुर घी सें।

यह कहावत इसी रूप में प्रचलित है। परन्तु उसका शुद्ध रूप है—

नीम न मीठे होयँ, सींचो गुर घी सें।

पयसा सिंचते नित्यम् न निम्बम् मधुरायते—संस्कृत

(नित्य दूध से भी सींचने पर नीम कभी मीठा नहीं होता)

नीर निमाने, अन्न कुठारे।

पानी तो निम्न-स्थल का अर्थात गहराई का, और अन्न कुठिया में रखा निर्दोष रहता है।

नेकी और पूंछ पूंछ।

किसी की भलाई करने में पूछना क्या?

नेकी कौ फल बदी।

जब कोई किसी का उपकार करे और बदले में उल्टे बुराई हाथ लगे।

भाल करते मंद हय—बंगला

नैंचे घर तुसार।

नीचे घर पर ही तुसार पड़ता है। गरीब को ही विपत्तियाँ अधिक सताती हैं।

नैंनूं कौ नाव, पिसान कौ दिया।

मक्खन या घी का तो केवल नाम है, दीपक आटे का बना है। काम कोई करै और यश किसी को मिले, अथवा जो वस्तु जैसी बतायी जाय वैसी न निकले तब कहते हैं।

नौकरी तौ नौकरी, ना करी तौ ना करी, हाँ करी तौ हाँ करी।

नौकरी करै तो मन लगा कर करे, अन्यथा करना नहीं चाहिए।

नौकरी है कै भाईबंदी।

जब नौकर बहुत गैरहाजिरी करे अथवा ठीक ढंग से काम न करे तब।

नौ की लकरियाँ, नब्बे खर्च।

नौ रुपये की लकड़ियाँ लाने में नब्बे खर्च हो गये ! बेतुका खर्च।

नौ खायें, तेरा की भूँक।

लालची आदमी के लिए।

नौ दिन चले अढ़ाई कोस।

बहुत सुस्त काम करने वाले के लिए।

केदारनाथ से बदरीनाथ का अंतर ढाई कोस है। परन्तु रास्ता सीधा न होने से प्रायः पचास कोस चलना पड़ता है जिसमें नौ दिन लगते हैं। उसी से कहावत चली।

नौ नगद न तेरा उधार।

तेरह उधार में बेचने की अपेक्षा नगद नौ में बेचना अच्छा। उधार का व्यापार ठीक नहीं।

नौं नेजा पानी चड़ौ, तौऊ न भींजी कोर।

नौ बर्छा पानी ऊपर चढ़ गया, फिर भी कोर नहीं भीगी। निर्लज्ज के लिए।

नौं नौं अठारा, और दो मिला कें बीस होत।

थोड़ा-थोड़ा करके बहुत होता है।

नौं मईना मताई के पेट में कैसें रये हुइओ।

नौ महीने माँ के पेट में कैसे रहे होगे? चंचल और ऊधमी लड़कों के लिए।

नौं मन गुलिया[1] चाटो।

(१—महुए की गुठली का तेल।) नौ मन गुली का तेल चाटते फिरोगे। अर्थात मारे-मारे फिरोगे। कोई पूछेगा नहीं।

नौ मूँड़ के हो जाओ। (तोऊ तुमाई बात न मानें)

तुम कुछ भी करो, फिर भी तुम्हारी बात नहीं मानेंगे। हठी लड़कों के लिए कहते हैं।

नौ सौ चूहा खाकें बिलाई तप कों चली।

धार्मिकता या संयमशीलता का ढोंग करने वाले के लिए।

इस बिल्लाव्रत की एक कथा है जो महाभारत के उद्योग पर्व में इस प्रकार पढ़ने को मिलती है—एक बार एक बिलाव शक्तिहीन हो जाने के कारण गंगाजी के तट पर ऊर्ध्वबाहु होकर खड़ा हो गया और सब प्राणियों को अपना विश्वास दिलाने के लिए "मैं तप कर रहा हूँ" ऐसी घोषणा करने लगा। इस प्रकार कुछ समय बीत जाने पर पक्षियों को उस पर विश्वास हो गया और वे उसका सम्मान करने लगे। उसने भी समझा कि मेरी तपस्या सफल तो हो गयी। फिर बहुत दिनों के बाद वहाँ चूहे भी आये और उस तपस्वी को देख कर सोचने लगे कि हमारे शत्रु बहुत हैं, इसलिए हमारा मामा बन कर यह बिलाव हममें से जो बूढ़े और बालक हैं उनकी रक्षा किया करे। तब सबने उसे बिलाव के पास जाकर कहा—आप हमारे उत्तम आश्रय और परम सुहृद हैं। अतः हम सब आपकी शरण में आये हैं। आप सर्वदा धर्म में तत्पर रहते हैं। अतः वज्रधर इन्द्र जैसे देवताओं की रक्षा करते हैं उसी प्रकार आप हमारी रक्षा

करें। चूहों के इस प्रकार कहने पर उन्हें भक्षण करने वाले बिलाव ने कहा मैं तप भी करूँ और तुम सबकी रक्षा भी करूँ, ये दोनों काम होने का तो मुझे कोई ढँग नहीं दिखायी देता। फिर भी तुम्हारा हित करने के लिए मुझे तुम्हारी बात भी अवश्य माननी चाहिए। तुम्हें भी नित्य मेरा एक काम करना होगा। मैं कठोर नियमों का पालन करते-करते बहुत थक गया हूँ। मुझे अपने में चलने-फिरने की तनिक भी शक्ति नहीं दिखायी देती। अतः आज से तुम मुझे नित्य-प्रति नदी के तीर तक पहुँचा दिया करो। चूहों ने 'बहुत अच्छा' कह कर उसकी बात स्वीकार कर ली और सब बूढ़े-बालक उसी को सौंप दिये। फिर तो वह पापी बिलाव चूहों को खा-खा कर मोटा हो गया। इधर चूहों की संख्या दिनोंदिन कम होने लगी। तब उन सबने आपस में मिल कर कहा— 'क्यों जी, मामा तो रोज-रोज फूलता जा रहा है और हम बहुत घट गये हैं। इसका क्या कारण है ?' तब उनमें जो एक सबसे बूढ़ा चूहा था उसने कहा— मामा को धर्म की परवा थोड़े ही है। उसने तो ढोंग रच कर हमसे मेलजोल बढ़ा लिया है। जो प्राणी केवल फल मूलादि ही खाता है उसकी विष्ठामें बाल नहीं होते। इसके अंग बराबर पुष्ट होते जा रहे हैं और हम लोग घट रहे हैं। सात-आठ दिन से हमारे कई साथी नहीं दिखायी दे रहे हैं। उस बूढ़े की यह बात सुन कर सब चूहे भाग गये और वह दुष्ट बिलाव भी अपना सा मुँह लेकर चला गया।

यह कथा जातक में भी है। परन्तु वहाँ बिलाव के स्थान पर शृगाल की चर्चा आयी है।

न्यारो पूत परौसी दाखिल[1]।

(१–शरीक, मिला हुआ।) घर से अलग हुआ लड़का पड़ौसी के समान हो जाता है। एक बार किसी से संबंध-विच्छेद हो जाने पर फिर उससे कोई मतलब नहीं रहता।

प

पंछियन के पियें समुद हिलोरें नइं घटतीं।

पक्षियों के पीने से समुद्र का जल कम नहीं होता।

पंडित, बैद, मसालची इनकी उल्टी रीत।
औरन गैल बतायकें आपुन नाकें भींत॥

पँवारो गाऊत फिरत।

व्यर्थ का रोना रोते हैं।

पइसा आई,[1] पइसा बाई, पइसा बिन ना होय सगाई।

(१–माँ) पैसे से ही सब कुछ होता है।

पइसा आऊतन दुख देत, और जातन देत।

पैसा आते दुख देता है और जाते भी।

पइसा कितऊँ डारन में नईं फरत।

पैसा कहीं वृक्षों में नहीं लगता।

पइसा की डुकरो टका मुड़ाई।

जितने की तौ असल वस्तु नहीं, उतने से अधिक उस पर खर्च।

पइसा की भाजी, टका कौ बगार[1]।

(१–बघार। मिर्च, मसाले आदि का छौंक।)

पइसा के कोदों टका पिसाई।

दे० पइसा की डुकरो।

पइसा के लानें सबरे करम करनें परत।

पैसे के लिए सब कर्म करने पड़ते हैं।

पइसा के लानें सरगे थींगरा लगाउत।

पैसे के लिए आकाश में थींगरा लगाते हैं। अर्थात संभव-असंभव सभी कार्य आदमी करता है।

पइसा के सब साथी।

पइसा के सब सगे।

पइसा के सौ गुलाम।

पैसा होने पर चाहे जितने नौकर रख लो। अथवा पैसे के सब चाकर हैं।

पइसा कौ कोऊ पूरो नइँ, और अक्कल कौ कोऊ अधूरो नइँ।

पैसे की सब अपने पास कमी बताते हैं। उसी प्रकार सब अपने को अक्ल का पूरा बताते हैं। कोई यह स्वीकार नहीं करता कि मेरे पास बुद्धि की कमी है।

पइसा कौ खेल है।

संसार में सब काम पैसे से होते हैं।

पइसा फट परौ।

पैसा फट पड़ा। किसी के अचानक धनी बन जाने पर।

पइसा सें पइसा आऊत।

पैसे से पैसा आता है। पैसे को पैसा खींचता है।

पइसा सें सबरी अक्कल आऊत।

पैसे से ही सब बुद्धि आती है।

पइसा हात कौ मैल है।

पैसा हाथ का मैल है। उसके आने का कोई सुख या जाने का रंज नहीं करना चाहिए।

पऊत पऊत की कच्चीं (अथवा खोटीं)।

रोटियाँ तैयार होते-होते भी खाने को मिलेंगी इसका विश्वास नहीं।

पऊत बरा, कै पीलऊँ तेल ?

बरा बनाते हो, या पी लूँ तेल ? जो मिलै वही सही। अथवा मेरा काम नहीं करते हो तो जो मन में आयेगा करूँगा।

पके आम।

वृद्ध के लिए कहते हैं।

पके पान।

अनुभवी आदमी।

पके पै निबौरी मिठात।

पकने पर निबौरी भी मीठी लगती है।

पक्षे चोरी, पक्षे न्याय, पक्ष बिना सो मारो जाय।

दुनिया में सब काम दूसरों के बल या तरफदारी से ही होते हैं।

पचै सो खावे, रुचे सो बोले।

जो पचै वही खाना चाहिए, जो बात दूसरों को अच्छी लगे वही कहनी चाहिए।

पजे कपूत, कबूतर पाले। आदे गोरे, आदे कारे॥

निकम्मे लड़के के लिए।

पटक दो, फिर तो हमने जानी।

पटक दो, मूँछें हम उखार लें।

पढ़िये भैय्या सोई, जामें हँड़िया खुदबुद होई।

वही पढ़ो जिसमें रोटी खाने को मिले।

पढ़े-लिखे की चार आँखें होतीं।

पढ़ा-लिखा आदमी अधिक समझदार होता है।

पढ़े-लिखे मूसर।

पढ़ा-लिखा मूर्ख।

पढ़े सुआ बिलइयन खायें।

कोरे अक्षर-ज्ञान से क्या होता है, यदि उसके साथ बुद्धि-विवेक न हो? तोता इतना पढ़ता है फिर भी उसे बिल्ली खा जाती है।

चतुराई क्या कीजिये, जो नहिं सब्द समाय।
कोटिक गुन सूआ पढ़ै, अंत बिलाई खाय॥

पढ़ो तौ है, पै गुनो नइयाँ।

केवल किताबी ज्ञान रखने वाले के लिए प्रयुक्त।

पढ़ौ तौ पढ़ौ, नई तौ पिंजरा खाली करौ।

काम करो या जाओ। पढ़ो या रास्ता नापो।

पढ़ौ पट्टू सीताराम कई-हम तौ पढ़े पढ़ाये हैं।

धूर्त को उपदेश देना व्यर्थ है।

पढ़ाओ पढ़े ना खूसर। नवाओ नवे ना मूसर॥

मूर्ख पढ़ाने से नहीं पढ़ता। जैसे मूसल झुकाने से नहीं झुकता।

पतरीं चाटत फिरौ।

जूँठन खाते फिरोगे। बुरी गति होगी।

पथरा का पसीजे ?

पत्थर क्या पसीजेगा ? अत्यंत कठोर चित्त से दया या कंजूस से दान की आशा नहीं की जा सकती।

पथरा कों जोंक नइँ लगत।

इसलिए कि उससे कुछ मिलने की आशा नहीं होती।

पथरा तरें हात दबो।

ऐसे संकट में पड़ जाना, जिससे छूटने का उपाय न दिखायी देता हो। बुरी तरह फँस जाना। प्रायः किसी के पास रकम दब जाने पर कहते हैं।

पथरा तरें हात दबै तौ स्यान सें काड़ लेवे।

किसी चक्कर में फँस जाने पर चतुराई से काम लेना चाहिए।

पथरा पै नाव चलावो।

असंभव या अनहोना कार्य करना।

पथरा सें ईंट कोंरी होत।

पत्थर से ईंट मुलायम होती है। दो हानिकर वस्तुओं में से जिससे कम हानि होने वाली हो, उसको ही स्वीकार कर लेना चाहिए।

दगडापेक्षां वीट मऊ—मराठी

पथरा सें मूँड़ मारबो।

असंभव कार्य को करने का प्रयत्न करना।

पनइयन साँप मारबो।

किसी संकट या दुष्ट से छुटकारा पाने के लिए अपर्याप्त साधन से काम लेना।

पर घर कूँदें मूसरचंद।

बिना बुलाये किसी के यहाँ जाना या किसी के काम में हस्तक्षेप करना मूर्खता है।

परदेस कलेस नरेसन कों।

घर से बाहर निकलने पर राजाओं को भी कष्ट होता है।

परदेसी की प्रीत, रैन कौ सपनो।

पर धन बाँधें मूरखनाथ।

मूर्ख आदमी ही दूसरों की रकम अपने साथ लेकर चलता है।

परबस कौ जीबो बुर (अ) ओ।

दूसरे के वश में रह कर जीना बुरा है।

पराधीन सपने सुख नाहीं।

परसन भईं भवानीं, कौरन लागीं खान।

भवानी प्रसन्न हुईं तौ जूठे टुकड़ों से ही पेट भरने लगीं। मौज में आकर ओछे से ओछा काम भी कर डालना।

पर हत बनज, सँदेसन खेती, कड़वारे के दाम।
सजन सावगत जिन करौ, घर हटकत है बाम॥

पराये हाथ से व्यापार, सँदेशों से खेती, और ऋण लेकर साहूकारी नहीं करनी चाहिए।

पराई आँखन देखबो।

दूसरे के भरोसे काम करना।

पराई आसा, मरै उपासा।

दूसरों की आशा में रह कर भूखों मरना पड़ता है।

पराई कनक पै कंडा बीनबो।

दूसरों के आटे के भरोसे ईंधन इकट्ठा करना।

पराई पतरी कौ बड़ो बरा।

दूसरे के हिस्से में आयी हुई वस्तु सदैव अच्छी लगती है।

परायी थाली में घी घणो—**राज०**

पराओ घर थूंक कौ डर।

दूसरों के घर रहने में सुख नहीं।

परेर घर ढुकते डर निजेर घर हेगे भर—**बंगला**

पराओ मूंड़ पसेरी सो।

किसी दूसरे के दुख-दर्द या पैसे की कोई परवा न करना।

पराई सरायँ कों धुआँ देतन कोऊ नईं देखत ?

दूसरे के घर में लगी आग कोई नहीं देखता।

पराये कँदा पै होकें बंदूक घालबो।

दूसरों की ओट लेकर काम करना। टट्टी की ओट शिकार।

पराये खसम के लानें सत्ती होबो।

किसी दसरे के लिए व्यर्थ कष्ट उठाना। झूठी सहानुभूति दिखाना।

पराये घर की थाती।

दूसरे की धरोहर। ऐसी वस्तु जिसे बहुत दिनों तक घर में रखा न जा सके। विवाह योग्य हुई स्यानी लड़की के लिए प्रयुक्त।

पराये घर कौ ईंधन।

दे० ऊपर।

पराये धन पै लच्छमी नारायन।

दूसरों के माल पर गुलछर्रे उड़ाना।

(भोजन के पहिले जय लक्ष्मीनारायण कहने की प्रथा बुन्देलखंड में प्रचलित है।)

पराये पूतन की आसा।

दूसरे के लड़के से सहायता की आशा (व्यर्थ है।)

पराये पूतन सपूती होबो।

पराये पुत्र के सहारे अपने को पुत्रवती मान लेना। दूसरे की वस्तु को अपनी समझ लेना, और यह आशा करना कि समय पर वह काम भी देगी।

पराये माथें सिल फोरबो।

दूसरों को संकट में डाल कर अपना काम बनाना। आयी हुई विपत्ति दूसरों के सिर मढ़ना।

परेर माथाय कांठाल भांगा।—बंगला
(पराये सिर पर कटहल फोड़ना)

पराये सेंदुर पै मूँड़ फोरबो।

दूसरे के सुख-सौभाग्य पर ईर्ष्या करना।

परी गरज मन और है, सरी गरज मन और।

गरज पड़ने पर आदमी का मन जैसा रहता है वैसा गरज पूरी होने पर नहीं रहता।

परी बिछौना फूहर सोवे, राँधो खाये कुत्ता।

निकम्मी और आलसी स्त्री के लिए।

परेवा की सोर।

कबूतर की सोहर। कहते हैं कबूतर की मादा साल में बराबर अंडे देती रहती है। उसी प्रकार किसी घर में जब निरंतर बच्चे पैदा होते रहते हों, और कोई-न-कोई स्त्री सोहर में पड़ी रहती हो तब प्रयुक्त।

पल में परलय होत।

पल में प्रलय होती है। क्षण भर में न जाने क्या से क्या हो सकता है।

पसीना निचोय कौ पइसा।

परिश्रम की कमाई।

पसेरी उठे ना, ब्याई कों मूँड़ मारें।

पसेरी तो उठती नहीं, फिर भी तौलाई का ठेका लेना चाहते हैं। काम करने की सामर्थ्य न होने पर भी उसके लिए हठ करना।

पसेरी भर कौ मूँड़ तौ हलाउत, पइसा भर की जीब नईं हला पाउत।

जब कोई आदमी, विशेषकर कोई छोटा लड़का, किसी बात के उत्तर में केवल अपना सिर हिला देता है और स्पष्ट रूप से हाँ या ना कुछ नहीं कहता तब कहते हैं।

पहिरिये खदा[1], निभैये सदा।

(१–मोटा कपड़ा, खादी।) मितव्ययिता से रहने पर आदमी को जीवन में कभी कष्ट नहीं उठाना पड़ता।

पाँख कौ परेबा करबो।

बात का बतंगड़ बनाना।

"कातन झूठ साँच ना डरतीं, हेरत बींगें धरतीं।
कैना चूक परौ का कइये, कातन जीब पकरतीं।
ऐसी पूरी बिना परोजन, आन बीच में परतीं।
इन खाँ राम दईंना मौतें, सौतें हमें अखरतीं।
ई ब्रज की ब्रजनारी ईसुर, पांख परेवा करतीं॥"

पाँचऊ उँगरियाँ एक सी नईं होतीं।

सब मनुष्य समान नहीं होते।

पाँचऊ घी में।

पाँचों उँगली घी में। जिसके खूब छक्के-पंजे उड़ रहे हों उसके लिए।

पाँच पंच मिल कीजे काज। हारे जीते ना आवै लाज॥

काम सबकी सलाह से करना चाहिए।

पाँच पंडबा और छँट (अ) ये नरायन। (अथवा छँट (अ) ईं द्रोपदी)।

जब कुछ आदमियों में एक और आदमी ऐसा आकर मिल जाये जो उनसे विशेष चतुर हो तब व्यंग्य में।

पाँच पचासै लै गई, पाँचै लै गई एक।
एक टकौना एकै लै गई, परी परी दिन लेख॥

ब्याज की लालच में आदमी मूल से भी हाथ धो बैठता है।

कथा—किसी स्त्री के पास पचास रुपये थे। उन रुपयों को उसने सूद पर लगाना चाहा। घर के लोगों से छिपा कर उसने पचास रुपया एक मनुष्य को एक महीने के वादे पर उधार दिये और दस रुपया सैकड़ा की दर से पांच रुपया ब्याज के पहिले से ही काट लिये। फिर वह पांच रुपया उसने एक दूसरे मनुष्य को एक महीने के वादे पर दिये और ब्याज का एक रुपया काट लिया। इसी प्रकार वह एक रुपया भी उसने एक टका पहिले ही ब्याज का काट कर एक तीसरे मनुष्य को दे दिया। परन्तु उन तीनों ही आसामियों में उसका रुपया मारा गया।

पाँचें आम, पचीसे इमली।

पाँच वर्ष में आम और पच्चीस में इमली फल देती है।

पाँचें मित्र, पचासे ठाकुर, सौअे सगो, उर एकें चाकर।

पाँच रुपये में मित्र, पचास में जमीदार, सौ में दामाद, और एक रुपये में नौकर संतुष्ट हो जाता है।

पाँडेजू की घुरिया हो रइ।

ऐसी वस्तु जिसे चाहे जो माँग ले जाये।

पाँडेजू दोऊ दीन सें गये।

दो में से एक भी कार्य सिद्ध नहीं हुआ।

पाँडेजू पछतेयँ, बेई चनन की खेयँ।

हार कर वही काम करना जो पहिले बहुत मनाने पर भी न किया हो।

पाँत में दुभाँत करबो।

किसी समाज में लोगों से अलग-अलग तरह का व्यवहार करना।

पाँवन में का माँदी रचायें?

पैरों में क्या मेंहदी रचाये हो, (जो इतना सुस्त चलते हो।) शीघ्र काम न करने पर प्रयुक्त।

पाँव में भौंरी है।

ऐसे आदमी के लिए कहते हैं जो किसी एक स्थान पर जम कर न बैठ सके।

पाँव में सनीचर है।

एक स्थान पर सुखपूर्वक न बैठ सकना। घूमते ही रहना।

पाँसो परै, अनाड़ी जीते।

पाँसा ठीक पड़ने से अनाड़ी भी जीतता है। अथवा पाँसा ठीक पड़ने से ही अनाड़ी जीतता है। भाग्य अनुकूल होने से ही कार्यसिद्धि होती है।

पाँसो परै सो दाव, राजा करै सो न्याव।

भाग्यवश जो सामने आ जाय उसे स्वीकार करना पड़ता है।

पाई-पुरिया सी पूरत फिरत।

किसी एक स्थान पर बार-बार इधर से उधर निकलने और काम में अड़चन डालने वाले ऊधमी लड़के के लिए प्रयुक्त। (ताना बनाने के लिए एक निश्चित लंबाई के भीतर थोड़ी-थोड़ी दूर पर गड़ी हुई चौमुखी लकड़ियों में सूत भरने को पाई-पुरिया पूरना कहते हैं। यह कार्य प्रायः स्त्रियाँ ही करती हैं। पुरिया पूरते समय वे बड़ी तेजी से एक छोर से दूसरे छोर पर जातीं और वापिस लौटतीं हैं।)

पाछली रोटी खायें, पाछली बुद्ध होत।

तवे पर जो सबसे अंत में रोटी सिंकती है वह बच्चों को खाने को नहीं दी जाती। लोक-विश्वास है कि उसके खाने से बुद्धि मंद होती है।

पाठे[1] की जर पाठो जानें।

(१—दूर तक फैली हुई चौड़ी चट्टान।) जिस आदमी की कठिनाई वही जानता है।

पान पुरानों घृत नयो उर कुलवंती नार।
जे तीनउँ तब पाइये जब प्रसन्न करतार॥

पान-फूल हो रये।

सुकुमार व्यक्ति के लिए।

पानी उतर गओ।

इज्ज़त-आबरू चली गयी।

पानी कौ डूबो सूकौ नई कड़त।

किसी बुरे काम में पड़ने से उसका कुछ-न-कुछ परिणाम भोगना ही पड़ता है।

पानी धरबो।

उत्तेजित करना। उकसाना।

पानी नों पौंचे नइयाँ, रेवता सें बेंमा छाँटत।

पानी तक पहुँचे नहीं, रेवता से ही हाथ-पैर फेंकते हैं। किसी काम के लिए झूठ-मूठ ही परिश्रम करना।

पानी पीकें जात पूँछबो।

बिना सोचे-विचारे काम करना।

पानी पीजे छान कें, गुरू कीजे जान कें।

पानी छान कर पीना चाहिए और गुरू देखभाल कर करना चाहिए।

पानी पी पी कोसबो।

मन ही मन शाप देना।

पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोई हात उलीचिये, यही स्यानो काम॥

पानी बिन जिन्दगानी कौन काम की।

मान-सम्मान के बिना जीवन किस काम का?

पानी भरी खाल।

अनित्य या क्षण-भंगुर शरीर।

तुलसी को भलो मैं तुम्हारे ही किये कृपालु,
कीजै न विलम्ब बलि पानी भरी खाल है।

पानी में आग लगाबो।

जहाँ झगड़ा संभव न हो वहाँ झगड़ा करा देना।

पानी में परबो।

नष्ट होना। बरबाद होना।

पानी में मीन प्यासी।

साधन-सम्पन्न होते हुए भी किसी वस्तु के लिए तरसना।

पानी सें पतरो का ?

कहीं माँगने पर पानी भी न मिले तब प्रयुक्त।

पाप-पुन्न कौ कोऊ भागी नईं होत।

पाप-पुण्य का फल अपने ही को मिलता है।

पापी कौ धन अकारथ जाय।

बुरी कमाई व्यर्थ जाती है।

पापी कौ धन लाबर खाय।

दे० ऊपर।

पापी पेट सब कराउत।

पेट के लिए सब करना पड़ता है।

पार फट परौ।

पहाड़ फट पड़ा। अचानक कोई भारी विपत्ति आ पड़ना।

पार भये तौ पार हैं, डूब गये तौ पार।

परिणाम हर हालत में अच्छा होगा, यह सोच कर किसी काम को करने का निश्चय करना।

पारवा दूर केई सुहावने लगत।

पहाड़ दूर के ही सुहावने लगते हैं।

पारवा सें मूंड़ मारबौ।

असंभव कार्य को करने का प्रयत्न करना।

पारे[1] सें खटको नईं होत।

(१—पारा, बर्त्तन ढकने की मिट्टी की तश्तरी।) पूर्ण निस्तब्धता है। लड़ाई-झगड़ा शान्त है। किसी को किसी से बोलने की हिम्मत नहीं पड़ती।

पावन[1] गयें भसावन। सैरो[2] गयें बसंत॥

(१–त्यौहार। २–एक प्रकार के गीत जो बसंत में गाये जाते हैं।) बे अवसर का काम। समय के बाद पर्व नहीं मिलता, सैरा बसंत के बाद अच्छा नहीं लगता।

पिंजरा के पंछी नाईं फरफरा रये।

बहुत व्याकुल।

पिंड में सो ब्रह्माण्ड में।

मनुष्य के शरीर में जो ईश्वर निवास करता है वही ब्रह्मांड में व्याप्त है।

पिठी[1] सी बाँटबो।

(१–उर्द की पानी में धुली और बँटी हुई दाल।) किसी को खूब मारना, मरम्मत करना।

काँच से कचरि जात सेस के असेस फन,
कमठ की पीठि पै पिठी सी बाँटियतु है।—**भूषण**

पित्त उबलबो।

पित्त गरम होना। शीघ्र क्रुद्ध हो उठने की प्रवृत्ति होना।

पीठ की मार मारें पेट की न मारें।

किसी को शारीरिक दंड भले ही दे, परन्तु रोज़ी न छीने।

पीठ पाछें कछू होबे।

पीठ पीछे कुछ भी होता रहे, हमें क्या?

पीठ में लट्ठ भवानी करें, सबरो घर पूजा कों चले।

आपत्ति आने पर ही लोग भगवान का स्मरण करते हैं।

पीपरामूर[1] की जर हो गये।

(१–पीपलामूल, एक प्रसिद्ध औषधि।) कोई आत्मीयजन या घनिष्ट मित्र जब बहुत कम दिखायी दे तब प्रयुक्त।

पीसवे कों चल्लोसन[1], गावे कों सीता हरन।

(१–चोकर।) दिखावट तो बहुत, परंतु सार कुछ नहीं।

पुआ पकावो।

मन के लड्डू खाना।

पुन चंदन, पुन पानी; सालिगराम घुर गये तब जानी।

किसी काम को बार-बार करके अंत में उसे बिगाड़ देना।

कथा—एक सेठ जी शालग्राम के बड़े भक्त थे और दिन भर उनकी पूजा किया करते थे। एक दिन उनकी स्त्री ने उनके इस अभ्यास को छुड़ाने के लिए शालग्राम की मूर्त्ति के स्थान पर एक काला जामुन लाकर रख दिया। नित्यप्रति की तरह सेठ जी पूजा करने बैठे तो नहलाते समय ही उँगली की रगड़ से जामुन घुल गया। सेठ जी ने घबरा कर अपनी स्त्री को बुलाया और कहा, देखो आज हमारे शालग्राम जी को क्या हो गया है? स्त्री ने कहा—हो क्या गया? दिन-भर पानी से नहलाते थे, इसलिए घुल गये हैं। अब बैठे रहो। किसकी पूजा करोगे?

पुन्नई आड़ें आऊत।

पुण्य ही समय पर मनुष्य की रक्षा करता है।

पुन्न करौ बीस बिसी, खोज मिटाओ तीस बिसी।

दूसरों का उपकार तो उतना नहीं किया, जितनी स्वयं अपनी हानि कर ली!

पुन्न की जर पताल नों।

पुण्य की जड़ गहरी होती है। किया हुआ सत्कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता।

पुरखा तौ मर गये क्वाँरे, नाती (अ) न के नौ नौ ब्याव।

बहुत डींग हाँकने वाले के लिए।

पुराने मठ पै कलई करबो।

किसी पुरानी वस्तु को नयी बनाने का वृथा प्रयास करना। बुढ़ापे में जवान बनने की चेष्टा।

पुराने चाँवर।

घिसा-पिसा, अनुभवी आदमी।

पुराने पापी।

ऐसा आदमी जो दुनिया के सब रंग-ढंग देख चुका हो; किसी विषय में जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो। (व्यंग्य में)।

पुरुस (अ) ई पारस है।

पुरुष ही पारस है। एक मनुष्य ही दूसरे को अच्छा बनाता है।

पुरुस की माया, बिरछ की छाया।

संसार में पुरुष की ही माया है। पुरुष ही संसार का श्रेष्ठतम प्राणी है, अथवा उसको लेकर ही यह संसार-चक्र चल रहा है।

पूँछत पूँछत लंकै चले जात।

किसी स्थान का रास्ता न भी मालूम हो तौ भी आदमी पूंछते-पूंछते वहाँ जा सकता है।

पूँछता नर पंडित।

दूसरों से पूंछ कर काम करे वही पंडित है। पूंछने से ही आदमी का ज्ञान बढ़ता है।

पूँछबे में का लगत ?

पूँछने में क्या लगता है ? किसी से कोई बात पूँछने में संकोच क्या ?

पूत के पाँव पलना में दिखा परत।

लड़कपन के आचरणों से ही इसका पता चल जाता है कि आगे चल कर लड़का कैसा निकलेगा। किसी कार्य के लक्षण पहिले ही से दिखायी पड़ जाते हैं।

पूत के नाव पुताँड़ी[१] भली।

(१—चौका पोतने के काम आने वाली हाँडी।) लड़का चाहे जैसा बुरा हो, परन्तु न होने से तो अच्छा।

पूरब के भान पच्छिम में उगन लगें।

किसी काम को न करने अथवा किसी के आगे न झुकने की प्रतिज्ञा।

पूरब जनम के फल भोग रये।

पूर्व जन्म के फल भोग रहे हैं। प्रायः बीमार कहता है।

पूरी खेती उनकी कहें, जो हल अपने हात गहें।
आदी खेती उनकी कहें, जो नित हलके संग रहें।
बये बीज उपजे नहिं तहाँ, जो पूछें कै हर है कहाँ।।

खेतीं अपने हाथ से ही होतीं है।

पूरी बिजत्तर।

विकट स्त्री।

पूरे गुरूघंटाल।

बहुत बड़ा चालाक।

पूरौ परबो।

पूरा पड़ना। कार्य पूर्ण हो जाना। सत्यानाश हो जाना।

पूस जाड़ो न माव जाड़ो, जबै पानी तबईं जाड़ो।

सर्दी न तो पूस में पड़ती है और न माघ में, जब पानी बरसे तभी समझो सर्दी।

पूस बोवे, पीस खावे।

पूस में कोई अनाज बोने की अपेक्षा तो अच्छा यह है कि उसे पीस कर खा ले।

पेट करावे बेठ।

पेट बेगार कराता है।

पेट की आग पेटई जानत।

पेट की आग पेट ही जानता है। भूखे का कष्ट भूखा ही जानता है।

पेट की आसा सब करत।

पेट के लिए ही सब काम किया जाता है। जब किसी नौकर या मजदूर को मेहनताना कम मिलता है तब।

पेट के आँगें सब हेट।

पेट के आगे सब वस्तु नीची। पेट सबसे बड़ा।

पेट के पथरा प्यारे होत।

पेट के पत्थर भी प्यारे होते हैं, फिर लड़का चाहे जैसा निकम्मा हो, वह तो प्यारा होगा ही।

पेट कौ पानी न पचबो।

किसी बात को कहे बिना चैन न पड़ना।

पेट परीं गुन देतीं।

पेट पड़ी रोटियाँ समय पर काम देती हैं।

पेट भरे सें काम गकरिया[1] काऊ की।

(१—हाथ की बनी मोटी रोटी।) रोटी किसी अनाज की हो, पेट भरने से काम।

पेट में उरदा से चुर रये।

पेट में उर्द से पक रहे हैं। अनिष्ट की आशंका से घबराना। बहुत चिन्तित होना।

पेट में रई सी फिर रई।

पेट में मथानी सी फिर रही है। हृदय धड़क रहा है। घबराहट हो रही है।

पेट में लात मारबो।

किसी की रोजी छीनना।

पेट रैबो।

अवैध रूप से गर्भ रह जाना।

पेट सें होबो।

गर्भ से होना।

पेट लगी फटबे, खैरात लगी बटबे।

आपत्ति में पड़ने पर ही मनुष्य दान-पुण्य करता है।

पेट सब कराउत।

पेट के लिए अच्छे-बुरे सब कर्म करने पड़ते हैं।

पेट सबकें लगौ।

पेट की चिन्ता सबको करनी पड़ती है।

पेट सें कोऊ सीक कें नइँ आऊत।

पेट से कोई सीख कर नहीं आता। परिश्रम और अभ्यास से ही मनुष्य सब सीखता है।

पेट सें पथरा बाँदबो ।

भूख सहन करना।

पेड़ सें बैर, पतोरन सें नातो।

काम की वस्तु छोड़ कर निकम्मी ग्रहण करना। वृक्ष से शत्रुता और पत्तों से प्रेम।

पैंड़ पैंड़ पै कुनबा डूबे, आँगें धरमराज दरबार।

पग-पग पर तो कुनबा डूब रहा है, और आगे धर्मराज का दरबार है, जिसमें हिसाब देना है। किसी काम को करने के मार्ग में जब बाधाएँ पर बाधाएँ आ रही हों, और काम बिलकुल सिर पर आ गया हो तब प्रयुक्त।

पैरी ओढ़ी धन दिपै, लिपौ पुतौ घर खिलै।

गहने-कपड़ों से सजी स्त्री शोभा देती है, लिपा-पुता घर अच्छा लगता है।

लेपले पूछले बाड़ी, सजले गुजले नारी—बंगला
लीप्यूं गूप्यु आंगणु ने पहेरी ओढ़ी नार—गुजराती

पैंली छेरी, दुसरी गाय, तिसरी भैंस दुही न जाय।

बकरी पहले ब्यान में, गाय दूसरे में, और भैंस तीसरे में अच्छा दूध देती है।

पैंली ताप तुरइया बसी, खीरा देखें खिलखिल हँसी।
जब लओ फूट कौ नाव, डंका दैकें गेरो गाँव।।

ज्वर का पहला आगमन तुरइया के साथ होता है, खीरा देख कर तो वह बहुत प्रसन्न होता है और फूट का नाम लेते ही डंके की चोट गाँव घेर लेता है। अर्थात क्वाँर, कार्तिक के महीने में तुरइया, खीरा और फूट के खाने से ही ज्वर फैलता है। लोक विश्वास।

ताव कहे हुं तुरिया मां बसुं ने गलकुं देखी खड़खड़ हंसु।
जेने घेर जाडी छास, तेने घेर माहरो वास।—गुज०

पैली बिपत बड़ो होय नाव। दूजी बिपत सड़क कौ गाँव॥
तीजी बिपत धनऊँ सें हीन। सब बिपतन में बिपता तीन॥

पहिली विपत्ति तो यह कि नाम बड़ा हो, दूसरी यह कि सड़क के किनारे गाँव हो, तीसरी यह कि पैसा पास में न हो, सब विपत्तियों में ये तीन ही बड़ी विपत्तियाँ हैं।

(नाम बड़ा होने और सड़क के किनारे ही गाँव होने से मेहमान बहुत आते हैं।)

एक दुखेर दुखी आमि गाँयेर कूले बाड़ी।
एक दुखेर दुखी आमि छेले वयसे रांडि।
एक दुखेर दुखी हई आमि धार करि।
एक दुखेर बूड़ो अमि शेषे बिया करि।

—बंगला

(एक तो मैं इस दुख से दुखी हूँ कि गाँव के किनारे घर है, एक इससे कि बाल्यावस्था में रांड़ हो गयी, एक इससे कि ऋण लेता हूँ, एक इससे कि बुढ़ापे में विवाह किया।)

पैलें अपनी आँख कौ मूसर तौ काड़ो। (फिर दूसरे की आँख कौ तिनका काड़ियो)

पहिले अपनी विपत्ति से छुटकारा तो पाओ।

पैलें अपने मों में मुसीका[1] देओ।

(१—वह जालीदार पट्टी जो बैलों के मुँह पर इस उद्देश्य से बाँधी जाती है कि खलिहान में काम करते समय वे अनाज पर मुँह न मारें।) पहिले अपना मुँह तो बंद करो। (फिर दूसरों से चुप रहने को कहना।)

पैलें आरसी में अपनो मों तौ देखो।

मोहन हँसबो होत उजा को, छोड़ो ऐसो साको।
हों कुलबधू साव की बेटी, रहनो बड़े मजा को।
बात न कहो हाथ न पकरो, जौ है काम रजा को।
ईसुर स्याम औरसी लैकें, अपनो मुख तौ ताको।

—ईसुरी

पैलें घर, पाछें बाहर।

पहिले अपना घर सँभाले, फिर बाहर।

पैलें मार, पाछें सँमार।

पहिले आगे बढ़ कर दुश्मन पर हाथ जमा देना चाहिए, बाद में अपने को सँभालना चाहिए।

पैलें मारे सो मीर।

पहिले ही कार्य सम्पन्न करने वाला मुनाफे में रहता है।

पैलें मुंड कटौवल, फिर धरमराज।

पहिले तो किसी काम के लिए कष्ट भोगना पड़ता है। फल बाद में मिलता है।

पैलें लिख, पाछें दै, भूल परै तौ मोसें लै।

पहिले लिख कर बाद में देने से हिसाब में गड़बड़ नहीं पड़ती।

पैलें हँस लो, कै बात कर लो।

पहिले हँस लो, या बात कर लो। दो काम एक साथ नहीं होते।

पैलेई कौर माछी परी।

पहिले कौर में ही मक्खी पड़ी। कार्य के प्रारंभ में ही विघ्न हुआ।

प्रथम ग्रासे मक्षिकापातः—**संस्कृत**

पैलेई चूमा गाल काट खाये।

किसी अवसर से अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए ऐसी हड़बड़ी करना कि सारा काम ही चौपट हो जाय तब।

पैले दिना कौ पाउनो, दूसरे दिना कौ पई, तीसरे दिना रये तौ बेसरम सई।

किसी के घर एक दिन रहने वाला ही पाहुना कहलाता है, दो दिन रहे वह पथिक है और तीन दिन रहने वाले को तो पक्का बेशरम समझना चाहिए।

पैले पारें सब कोऊ जागें, दूजे पारें भोगी।
तीजे पारें रोगी जागें, चौथे पारें जोगी॥

रात के पहिले पहर में सब कोई जागते हैं, दूसरे में भोगी, तीसरे में रोगी और चौथे पहर में योगी जागता है।

पैलो गाहक परमेसुर बिरोबर होत।

पहिला ग्राहक परमेश्वर के समान होता है। दूकानदारों का विश्वास।

पैलो मूरख फाँदे कुआ । दूजो मूरख खेलैं जुआ ।
तीजो मूरख बहिन घर भाई । चौथो मूरख घरे जमाई ॥

पहिला मूर्ख तो वह जो कुआँ फाँदे, दूसरा वह जो जुआ खेले, तीसरा वह जो अपनी बहिन के घर जाकर रहे, चौथा वह जो ससुराल में रहे।

पैलो सुक्ख निरोगी काया । दूजो सुक्ख होय घर माया ।
तीजो सुक्ख पुत्र अधिकारी । चौथो सुक्ख पतिव्रता नारी ॥

पहिला सुख शरीर का नीरोग रहना, दूसरा घर में धन-सम्पत्ति का होना, तीसरा योग्य पुत्र का होना और चौथा पतिव्रता स्त्री का पाना है।

पोपाबाई कौ राज ।

अंधेरखाता। कहा जाता है कि पोपाबाई गुजरात के एक छोटे प्रदेश की रानी थीं। उनके राज्य में इतना अंधेरखाता था कि वह कुशासन और कुव्यवस्था का प्रतीक बन गया है। और उनके नाम से उपर्युक्त कहावत चल पड़ी है।

पोली[१] भरे कोदों, मिरजापुर की हाट ।

(१—अनाज नापने का बर्तन जो लगभग आध सेर का होता है।) छोटे काम का बड़ा आयोजन।

पौनी खों बछिया मारी, गौना सुँगाउत फिरे ।

पौनी की रक्षा के लिए बछिया को मारा, बाद में उसे सूत का पूरा बंडल सुँघाते फिरे। मामला जब बिलकुल उल्टा हो जाय, सोचा कुछ और हो, हो कुछ और जाय, तब प्रयुक्त।

कथा—एक बार एक कोरी अपने घर के सामने बैठा बाहर मैदान में चरखा कात रहा था। इतने में पीछे से एक बछिया आयी और चुपचाप एक पौनी मुँह में लेकर भागने लगी। कोरी ने देखते ही गुस्से में उसे एक डंडा उठा कर मार दिया, जिससे बछिया मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। कोरी यह देख कर घबरा गया और सोचने लगा कि ऐसा न हो कि बछिया मर जाय तो उल्टी आफत सिर आयेगी। पहिले तो उसने उसे उठाने का प्रयत्न किया। परन्तु जब बछिया किसी प्रकार चेत में नहीं आयी तो यह सोच कर कि यह पौनी की भूखी थी, इसलिए सूत का पूरा बंडल सामने रखने और थोड़ा-बहुत खिलाने से शायद होश में आ जाय,

भीतर से एक पूरा बंडल उठा लाया और बार-बार उसे सुंघाने लगा। परन्तु इससे बछिया को होश क्यों आने चला था। थोड़ी देर बाद अपने आप ही चेत में आयी और उठ कर चली गयी।

पौनी सौ पेट, बऊ[1] मार गईं जेट।

(१–बूढ़ी स्त्री)

पेट तौ पौनी की तरह मुलायम, परन्तु रोटियों का ढेर का ढेर बऊ ने खा लिया !

पौ बारा हैं।

लाभ का अवसर मिलना। जीत होना। चौपर के खेल में पौ बारा का दावँ बहुत अच्छा माना जाता है।

प्रीत करे कौ जौ फल पाओ, अपुन थुके उर हमें थुकाओ।

प्रेम करने का यह फल मिला कि स्वयं भी बदनाम हुए और हमें भी बदनाम कराया।

फ

फटकचंद गिरधारी, जिनकें लोटा ना थारी।

फक्कड़ आदमी।

फटे लुँगरे और बूड़े बाप-मताई की काँ नों लाज-सरम करें ?

न तो फटे लुँगरे को ही अलग किया जा सकता है, और न बूढ़े माँ-बाप या सास-ससुर को ही। उनको लेकर काम चलाना ही पड़ता है।

फट्टा लौट गओ !

व्यापार में हानि हो गयी। दिवाला निकल गया।

फरिया न सारी, बड़ी सोभा हमारी।

पहिनने को न तो फरिया है न साँड़ी, फिर भी अपने को बहुत सुन्दर समझती है।

फरै सो नवै।

दे० नमें सो भारी।

फलाने की मताई ने मुंस करो, बुरओ करो, कई छोड़ दओ, और बुरओ करो।

दे० तुमाई मताई ।

फाग की फाग खेल लई और आँग बचा लओ।

अपना काम बना कर चुपचाप अलग हो जाना और दूसरों को आलोचना का अवसर न देना।

फाग के कुटे और दिवारी के लुटे कों कोऊ नईं पूँछत।

होली के हुल्लड़ में यदि कोई पिट जाय और दिवाली में जुए में हार जाय तो उसके लिए कौन चिन्ता करता है ?

फाग खेलत और आँग बचाउत।

झगड़े में पड़ना भी चाहते हैं और अपने को अलग भी रखना चाहते हैं, ये दोनों बातें कैसे संभव हैं ?

फिकर फकीरे खाय।

चिन्ता तो फकीर को भी खा जाती है।

फिकार[1] सें अजवान बनाउत फिरत।

(१—एक मोटा अनाज।) ऊट-पटाँग काम करना। किसी साधारण वस्तु से बड़ी कीमती वस्तु बनाने का प्रयत्न करना।

फिर बेई मोची के मोची।

जैसे थे वैसे ही फिर हो गये।

फिरै तौ चरै।

मैदान में चलने-फिरने ही से ढोर को चरने के लिए घास मिलती है। एक जगह बैठे रहने से पेट कैसे भर सकता है ?

फुरै मंत्र जब कीजे दुराउ।

फूंक फूंक कें पाँव धरओ।

बहुत सँभल कर चलना।

फूँद में हो सरक गये।

किसी काम की जिम्मेवारी से अपने को होशियारी से बचा ले गये।

फूटी तौ सयें आँजी न सयें।

आँख फूट जाय वह स्वीकार, परन्तु अंजन का कष्ट सहना स्वीकार नहीं। थोड़े से खर्च या असुविधा के पीछे अपनी बड़ी हानि कर लेना।

लोकरीति फूटी सहै, आँजी सहैं न कोइ।
तुलसी जो आँजी सहै, सो आँधरो न होइ।।

फूटे ढोल।

बकवादी आदमी।

फूटे बासन पै कलई करबो।

पुरानी वस्तु को नयी बनाने का व्यर्थ प्रयत्न करना।

काए कों अँगिया में कसतीं, करतीं रोज निरौनें।
ईसुर ई फूटे बासन पै, कलई करें का होनें।

फूल तौ कपास कौ और फूल काय कौ। दूद तौ माय कौ और दूद काय कौ। पूत तौ गाय कौ और पूत काय कौ। राजा तौ मेघराज और राजा काय कौ।

फूल न पाती, देवी हा! हा!

झूठा प्रेम दिखाना।

फूस कौ तापबो, उधार कौ खाबो।

दे० उधार को खानो।

फूहर की कड़ी।

निरर्थक कार्य।

फूहर कौ मैल फागुन में उतरत।

फूहड़ का मैल फागुन में उतरता है। रंग पड़ने पर उसे विवश होकर नहाना पड़ता है।

फूहर चालै सब घर हालै।

फूहड़ के चलने से सब घर हिलता है। बेशऊर औरत ठीक ढंग से चलना भी नहीं जानती।

फेरफार चुटिया पै हात।

घुमा-फिरा कर फिर वही बात।

फोकट कौ मिलै तौ हमकों ल्याइयो।

मुफ्त का माल हमको भी देना।

ब

बँदरा बैला जेठो पूत, जौ बिरें कौ कड़े सपूत।

भूरे रंग का बैल और जेठा लड़का जिस किसी का ही अच्छा निकलता है।

बँदी मुठी लाख की।

जब तक किसी के घर की असलियत लोगों पर प्रकट नहीं होती तब तक वह बड़ा आदमी ही माना जाता है।

बँदी मुठी लाख की, खुले पाछें खाक की।

झाँकली मूठ सव्वा लाखाची—मराठी

बँदी रहे, न टके बिकाय।

चीज रखी भले ही रहे, परन्तु ठीक दाम पर ही बिकेगी।

बऊ आई तौ सबनें जानीं।

विशेष घटना घटित होने पर सब पर प्रकट हो जाती है।

बऊत गंगा में हात धोलो।

चलते काम में यश ले लो।

बऊ नौनीं कै बेगर[1]।

(१—अचार का मसाला।) बहू अच्छी या बेगर? पैसा खर्च करने से ही काम अच्छा बनता है। उसके लिए किसी को श्रेय देना व्यर्थ है।

बऊ नौनीं कै घी सक्कर।

दे० ऊपर।

बऊ सरम की, बिटिया करम की।

बहू लज्जाशील और बेटी भाग्यवान अथवा कर्मठ अच्छी होती है।

बखत चूकें जुगन कौ फेर।

समय चूकने पर युगों का अंतर पड़ जाता है। बीता अवसर हाथ नहीं आता

बखत परे की बात।

भाग्य की बात।

बखरी में हर बँधाव, जोतो का मँझोटो ?

घर में हल मँगा कर रखा, तो क्या आँगन जोतोगे ? कोई बड़ा काम छिपा कर नहीं किया जा सकता। अथवा जो काम जहाँ करने का है वहीं किया जाता है।

बगलें बजाबो।

बहुत आनंद मनाना।

बचमन की बाँधी लच्छमी।

लक्ष्मी सत्य के वश में है।

बचन-खुचन कों सीताराम।

किसी को बची-खुची वस्तु देकर टरकाना।

बछिया के ताऊ।

मूर्ख।

बछेरू सें लगै ना, खंचारी[1] सें लगा दै।

(१—मरे हुए बछड़े की खाल का बना ढाँचा जो दूध देने वाली गाय का बछड़ा मर जाने पर उसे दुहने के लिए काम में लाया जाता है।)
जीवित बछड़े की सहायता से तो गाय लगती नहीं, और मरे हुए के खल्लर से लगाने के लिए कहते हैं। जो काम किसी बहुत उपयुक्त साधन से भी नहीं हो सकता उसे एक अनुपयुक्त और अधूरे साधन से करने का व्यर्थ प्रयास करना।

बजार भाव पिटबो।

बुरी तरह पीटना। मरम्मत होना।

बजार लगो नईं, उचक्कन ने डेरा डार दओ।

वस्तु तो तैयार नहीं, चाहने वाले पहिले से आ गये।

बट-पीपर की छाँय, संगत बड़न की।

छाया तो बट-पीपल की और संगत बड़ों की अच्छी होती है।

बटिया खेती साँट-सगाई,[1] जामें नफा कौन ने पाई।

(१—ऐसा विवाह जिसमें कोई अपनी लड़की का संबंध किसी के यहाँ करे तो उसके बदले में उसकी लड़की के साथ अपने या अपने किसी निकट के रिश्तेदार के लड़के का संबंध करने को तैयार हो जाय।) बटिया की खेती और साँटे की सगाई में किसी को लाभ नहीं होता।

बट्टे खाते परबो (अथवा जाबो)।

किये हुए प्रयत्न का व्यर्थ जाना। खटाई में पड़ना। रकम वसूल होने की उम्मेद न होने पर उसे बट्टे खाते डालना या पाड़ना कहते हैं।

बड़न की बड़ी बातें।

बड़े आदमियों की सब बात अलग होती हैं।

बड़न की बात बड़े पहचाना।

बड़ों की बात बड़े ही समझ सकते हैं। बड़े ही बड़ों की क़द्र कर सकते हैं।

कथा है कि एक सियार जंगल में कहीं जा रहा था। उसी सड़क पर एक बैना आ रहा था। कंधे पर धुनकी और हाथ में डंडा। सियार ने समझा कि यह कोई शिकारी है। कहीं ऐसा न हो कि मुझे मार दे। इसलिए दूर से ही खुशामद करके बोला—'कांधे धनुष हाथ में बाना, कहाँ चले दिल्ली सुल्ताना।' सियार की यह बात सुन कर बैना मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। और बोला—'बन के राव, बेर का खाना, बड़न की बात बड़े पहचाना।' उसके बाद बैना के निकट आने पर सियार को अपनी भूल मालूम हुई तो यह कहता हुआ जंगल में भाग गया—'तुक्क तुक्क तैना, हम लड़ई, तुम बैना।'

लड़ई या लड़ईया सियार को कहते हैं।

बड़न की सोंज खेती करी। भुस बाँटतन अबेरा परी॥

बड़े आदमियों के साझे में कोई काम नहीं करना चाहिए। झगड़ा होने पर उनसे कुछ कहा नहीं जा सकता और अंत में अपने को ही हानि उठानी पड़ती है।

बड़न कें जितनी आमदनी उतनो खर्च।

बड़न के भाग में सब को भाग।

बड़ों के भाग्य से दूसरे लोग भी खाते-पीते हैं।

बड़न की आस सब करत।

बड़ों की आशा सब करते हैं।

बड़न कौ बड़ो पेट।

जो जितना बड़ा होता है उसे पैसे की उतनी ही चाह रहती है। अथवा दूसरों के पैसे को वे उतनी ही आसानी से हजम भी कर जाते हैं।

बड़ी नाकवारे बनें फिरत।

बड़ी इज्जत वाले बनते हैं।

बड़ी पातर कौ बड़ौ बरा।

बड़े आदमी का अधिक आदर-सत्कार होता है।

बड़ी फजर चूले पै नजर।

सबेरे उठते ही आदमी को रोटी-पानी का धंधा सूझता है।

बड़ी बऊ, बड़ौ भाग।

दूल्हे से दुलहिन बड़ी हो तो यह सौभाग्य की बात है। अथवा बड़े आदमियों का भाग्य भी बड़ा होता है।

बड़ी बऊ ने जी करौ, फरा[१] पै घी फरौ।

(१—आटे की पानी में सिकी हुई टिकियाँ या पूरियाँ।) बड़ी काकी ने मन किया तो फरा पर घी रखा। झूठा आदर-सत्कार।

बड़ी बड़ाई, फटी रजाई।

दे० नाम बड़े......

बड़ी बड़ी तियें, फुटकनू हरछट।[1]

(१—हलषष्ठी-व्रत जो भादों में कृष्ण-पक्ष में होता है। इस दिन हल का जुता-बोया अन्न नहीं खाया जाता। पूजा के लिए भाड़ में चने आदि भुनवाये जाते हैं। इसी से इसे फुटकनू हरछट कहते हैं।) बड़ी-बड़ी तिथियों के सामने हरछट की क्या बिसात? किसी बड़ी बात के सामने छोटी की क्या गिनती?

बड़ी मार करतार कीं, चित सें दये उतार।

किसी से संबंध विच्छेद कर लेने पर।

बड़ी मुतोरू लंबे कान। हर देखे सें तजें प्रान॥

ऐसा बैल जिसकी मूत्र-स्थली बड़ी और कान लंबे हों खेती के काम का नहीं होता।

बड़े नाव की बड़ी बिपदा।

जो आदमी जितना प्रसिद्ध होता है उसे इधर-उधर की उतनी ही विपत्तियाँ घेरे रहती हैं।

बड़े-बड़े तौ बये जायें, गाड़र थाय लेय।

बड़े-बड़े जिस काम को न कर सकें उसे एक तुच्छ आदमी करने का साहस करे।

बड़े बड़े साँप सँपेरन मारे, बिच्छन दे तुम कन् सें आईं?

सँपेरों ने बड़े-बड़े साँप तो मार डाले, बिच्छनदेवी तुम कहाँ से आयीं? किसी काम में विघ्न डालने वाले या जबर्दस्ती बीच में बोलने वाले उपद्रवी के लिए।

बड़े बोल कौ मों कारो।

अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।

बड़े बोल कौ सिर नंचो।

दे० ऊपर।

बड़े भये तौ का भये, जैसें पेड़ खजूर।
छायँ न बिलमें दो जने फल लागें अत दूर।।

बड़े भये तौ का भये, परे रये फैल में।

बड़े होने से क्या हुआ, यदि जीवन बुरे कर्मों में बिताया।

बड़े भाग सें होत है, दाद, खाज उर राज।

दाद और खाज के खुजलाने से बड़ा कष्ट होता है, और एक विशेष प्रकार का आनंद भी मिलता है। इसलिए इनके रोगी के लिए व्यंग में प्रयोग करते हैं।

बड़े सपूत करौ रुजगार। सोरा सै के करे हजार।।

लड़के की अनुभवहीनता से किसी काम में नुकसान हो जाने पर।

बड़ौ जग्ग कर लओ।

बड़ा यज्ञ कर लिया। किसी छोटे काम का बड़ा ढिढोरा पीटना।

बड़ौ जस कर लओ।

दे० ऊपर।

बड़ौ रन जीत आये।

दे० ऊपर।

बड़ौ लाड़ मोरी मौसी करें, छिनक छिनक दोऊ कौरे भरें।

मेरी मौसी ने बड़ा लाड़-प्यार किया, तो छिनक-छिनक कर घर के दोनों कोनें भर दिये। झूठा प्रेम करने पर।

बत्तीस दाँतन में जैसें जीभ।

बहुत सतर्क होकर चलना।

बदरा घाम।

बड़ा तेज होता है।

बन के जाये, बनई में नई रत।

वन में पैदा हुए वन में ही नहीं रहते। आदमी के दिन सदा एक से नहीं रहते। कथा है कि किसी राजा ने अपनी एक रानी को घर से निकाल दिया। रानी गर्भवती थी। जंगल में उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। संयोग से एक साधू वहाँ जा पहुँचा। उसने रानी को अपनी बेटी की तरह घर रखा और उसके पुत्र का लालन-पालन किया। बाद में बड़े होने पर वह लड़का एक बड़े राज्य का मालिक बन गया, और एक राजा की बेटी से उसका विवाह भी हो गया।

बनतन देर लगत, बिगरतन देर नईं लगत।

बनते देर लगती है, बिगड़ते देर नहीं लगती।

बनी कों बनावे सो बानियाँ।

बने हुए काम को और अधिक अच्छा बना कर दिखाये वही सच्चा वैश्य है।

बनी न बिगारें तौ हम काय के।

जानबूझ कर उपद्रव करने वाले के लिए व्यंग में।

बनी बनी के सब साथी।

अच्छे समय के सब साथी होते हैं, बुरे का कोई नहीं।

बनी सराहिये।

बने काम की सब सराहना करते हैं।

बनें तौ कोऊ के होकें रइये, नईं तौ कोऊ कों करकें रइये।

हो सके तो किसी के प्रेमी बन कर रहिए, या फिर किसी को अपना प्रेमी बना कर रखिए।

बब्बरखाँ के राज की बातें।

पुरानी, धुरानी बातें-जिनसे कोई मतलब नहीं।

बरद बिसाहन जात हौ कंता। कबरा के जिन देखियो दंता॥

ऐसा बैल जिसके शरीर पर धब्बे पड़े हों अच्छा नहीं होता। खरीदने के लिए उसके दाँत भी नहीं देखना चाहिए।

बर मरै चाय कन्या, हमें तो दच्छना सें काम।

स्वार्थी व्यक्ति के लिए।

बरस लगे अगनौआ, पटौ फेर दौ दौआ[१]।

(१—अहीर, किसान।) सावन के महीने में पुष्य नक्षत्र में लगातार वर्षा होने से भूमि को अच्छी तरह जोतने-बखरने का अवकाश नहीं मिलता। अतः किसान को उपदेश दिया गया है कि पुष्य-नक्षत्र का जल बरस रहा है। भलाई इसी में है कि खेती के लिए पट्टे पर जो जमीन ली है वह वापिस कर दीजिए। दे० अगनौआ बतर पऊँ।

बरस लगीं ऊतरा[१], अन्न न खायें कूतरा।

(१—सत्ताईस नक्षत्रों में से एक नक्षत्र जो क्वाँर के महीने में लगता है। उत्तर फल्गुनी।) उत्तरा नक्षत्र में पानी बरसने से रबी की फसल को विशेष लाभ होता है।

बरस लगे हाती,[१] गोऊँ टिके छाती।

(१—हस्त नक्षत्र।) उत्तरा की तरह इसका जल भी रबी की फसल के लिए लाभदायक होता है।

बरसै कऊँ, पै कड़ै तौ ओरछे के पुल[१] तरें हो।

(१—झाँसी—मानिकपुर लाइन पर ओरछा के पास बेतवा पर बना रेल का पुल।) पानी कहीं बरसे पर निकलेगा तो ओरछे के पुल के नीचे होकर ही। अर्थात कोई बात यदि कहीं हुई है तो वह कभी न कभी स्वयं सामने आयेगी ही। उसके लिए चिन्तित होने की आवश्यकता क्या?

बरसो राम झड़ाझड़ियाँ। खाये किसान मरै बनियाँ॥

वर्षा ऋतु आरंभ होने पर लड़के कहा करते हैं।

बराई और बतेसन फरी।

गन्ने का पेड़ और उसमें बताशे लगे हुए। अच्छाई में और भी अच्छाई।

बराती तौ अपने अपने घरै चले जेयें, काम दूल्हा दुलैया सें परै।

फालतू आदमी काम में अड़ंगा डाल कर अलग हो जाते हैं।

बराती भौत हैं, घरई घर के जें लो।

बराती बहुत हैं, पहिले घर के ही सब जीम लो। ऐसा न हो कि बाहर वाले खा जायें और घर के कोरे बैठे रहें।

बरै बो सोनों, जासें कान फटें।

जिस सोने से कान फटें वह आग में जाय।

बर्रन के छत्ता में हात डारबो।

भिड़ों के छत्ते में हाथ डालना। जान-बूझ कर विपत्ति मोल लेना।

बसकारे के आँदरे कों हरोई हरो सूजत।

जो वर्षाऋतु में अंधा हो जाता है उसे केवल एक हरे रंग की स्मृति रह जाती है, और उसे चारों ओर हरा ही हरा सूझता है। दूसरों की असुविधा की कोई परवा न करके जब कोई आदमी हमेशा मजे की ही बात करता है तब कहते हैं।

बसत न राखे आपनी चोरे गारीं देय।

दे० चीज न राखे।

बसूला ज्ञान।

बसूले से जितनी भी लकड़ी छीली जाती है वह सब उसके आगे गिरती है। उसी प्रकार का स्वार्थमय ज्ञान।

बसूला कौ छोलन।

निकम्मा आदमी।

बसोर[1] कौ मठा करें फिरत।

(१—बाँस के बर्त्तन बनाने का काम करने वाली एक जाति।) बसोर का मठा बना रखा है। ऐसी वस्तु जिसका कहीं ठिकाना न लगे।

बहुत गई थोरी रई।

बहुत उम्र बीत गयी, थोड़ी रही है। वह भी भगवान इज्जत के साथ काट दे।

बहुपति, त्रियपति, बालपति, बिना पतिहि कौ देस।
तुलसी ऐसे देश को पत गये कहा अँदेश॥

जिस देश के बहुत से मालिक हों, अथवा जहाँ स्त्री या बालक शासक हों, अथवा जहाँ कोई शासक ही न हो, तो ऐसे देश के नष्ट होने में क्या संदेह ?

बाँझ ब्यानो सोंठ उड़ानो।

बाँझ के बच्चा हुआ तो उसने मनमानी सोंठ खायी। जीवन में पहिली बार किसी को कोई काम करने का अवसर मिले तो वह उसका बहुत प्रदर्शन करता है।

बाँड़ी[1] कये—मैं पूंछ उनारों।

(१—ऐसी गाय या भैंस जिसके पूंछ न हो।) बंडी कहती है कि मैं पूंछ उठाऊँ। तुच्छ व्यक्ति काम करने का हौसला करे तब।

बाँड़ी उजारै जैहे? कई—मैं तो पूँछई उठायें।

बंडी से किसी ने कहा—चल दूसरों का खेत उजाड़ करने चलती है? कहा—मैं तो पहिले से ही पूंछ उठाये हुए हूँ। उपद्रवी आदमी के लिए कहते हैं।

बाँध कें मारें, कत भौत सऊत है।

बाँध कर पीट रहे हैं। कहते हैं—बहुत सहनशील है।

बाँस के भिरे में घमोय[1]।

(१—एक जंगली बूटी जिसके संबंध में कहा जाता है कि यदि वह बाँस के भिरे में उत्पन्न हो जाय तो सबका सब भिरा नष्ट हो जाता है।) अच्छे वंश में बुरे लड़के का उत्पन्न होना।

बाँस कौ खूँट बाँस।

बाँस में से बाँस का ही अंकुर निकलता है।

बाई के बेर अड़ाई सेर।

(१—बहिन-बेटी के लिए संबोधन) किसी वस्तु का उचित मूल्य न आँकना।

बाई[1] जानें अपनी सी हाई।

सबकी हालत अपनीं जैसी समझने पर।

बाई तौ खालें तब बायनों देयँ।

स्वयं खाने को है नहीं दूसरों को क्या खिलायेंगे ?

बाओ कों तिबाओं देने आऊत।

तेज हवा से बच कर चलना पड़ता है।

बाढ़ै पूत पिता के धर्मा, खेती उपजे अपने कर्मा।

पिता के शुभ कर्मों से पुत्र समृद्धिशाली बन सकता है, परन्तु खेती में सफल होने के लिए स्वयं उद्योग करना पड़ता है।

बात करबो मुस्किल है।

जब कोई बोलने ही न दे तब कहते हैं।

बात कौ बतंगड़।

थोड़ी बात को बढ़ा कर कहना।

बात छीलें रूखी, काठ छीलें चीकनो।

बात छीलने से अर्थात गयी गुजरी बात को लेकर बहस करने से तो रूखी और काठ छीलने से चिकना होता है।

बातन में फूल झरत।

बातों में फूल झरते हैं। मधुरभाषी के लिए।

बातन सें पेट नइँ भरत।

बातों से काम नहीं चलता।

बात बात में भाँत है और भाँत भाँत की बात।
बातन हाती पाइये बातन हाती लात॥

बादर देखें पोतला[1] नइँ फोरो जात।

(१–मिट्टी का छोटे मुँह का चपटा बर्त्तन।)

बाप की कमाई पै तागड़धिन्ना।

बाप की कमाई पर मौज उड़ाना।

बाप की मरन, और काल की परन।

विपत्ति पर विपत्ति।

बाप कों पूत पढ़ावे, सोरा दूनी आठ।

बाप से लड़का बढ़ कर।

बाप गुन बेटा, सिपाही गुन घोड़ा।

बाप के गुणों के अनुसार लड़का होता है और सिपाही के अनुसार घोड़ा।

बाप न अजा, तीसरी पैरी।

बाप भी नहीं, अजा भी नहीं, फिर भी अपने को तीसरी पीढ़ी का बताते हैं। डींग हाँकने वाले के लिए।

बाप न मारी लोखड़ी, बेटा तीरंदाज।

जो लंबीचौड़ी डींग हाँके उससे व्यंग में।

बाप-बेटा की बरात, मताई-बिटिया गौरैयाँ[1]।

(१—विवाह उत्सवादि के अवसर पर विशेष रूप से भोजन के लिए आमंत्रित की जाने वाली बिरादरी की सधवा स्त्रियाँ, गौर।) लड़के के विवाह में पिता-पुत्र तो बराती बनें, और माँ-बेटी गौर। जहाँ कोई काम अकेले ही कर लिया जाय और मित्रों को न पूछा जाय वहाँ कहते हैं।

बाप भलो न भैय्या, सब सें बड़ो रुपैय्या।

संसार में रुपया ही सबसे बड़ी वस्तु है।

बाप मरें ना रोये, ससरार गयें ना सोये।

बाप के मरने से बढ़ कर दुःख नही। और ससुराल जाकर सोने से बढ़ कर सुख नहीं।

बाप मरौ सो मरौ, प्रागराज तौ देख आये।

बाप मरा-सो मरा प्रयागराज के दर्शन तो कर आये। किसी की कोई बड़ी हानि हो जाने पर सान्त्वना देने के लिए व्यंग में।

बाप राज खाये न पान, दाँत निपोरें कड़ गये प्रान।

बाप दादा न खइले पान। दांत बिदोरिके निकलल प्रान।—**भोज०**
जन्माउपर खाल्ले पान। आणि थुकतां थुकतां गेला प्राण। —**मराठी।**

बाप सें बेटा सयानो, जई जई में गाँव नसानो।

बाप से बेटा अधिक चतुर है, गाँव इसी-इसी में नष्ट हुआ। बड़े-बूढ़ों के आगे जहाँ लड़के हर बात अपनी चलाते हों वहाँ कहते हैं।

बाप सें बेटा सवाओ।

बाप से बेटा बढ़ कर।

बाप सें बैर, पूत सें सगाई।

बाप से बोलचाल नहीं, लड़के से मित्रता। जिससे काम बन सकता है उससे बात न करना।

बाबा[१] के कान।

(१—सर्प) किसी एक व्यक्ति के कान में धीरे से कही गयी बात जब दूसरा सुन ले तब कहते हैं कि इसके बाबा के कान हैं।

बाबा कौ जी बगली[१] में।

(१—माला रखने की थैली।) साधू को अपनी बगली ही प्यारी होती है।

बाबाजू[१] के बाबा जू, दरबटना के दरबटना।

(१—ग्राम देवता।) एक वस्तु से कई काम निकलना।

बाबा जू के जटा आसीरबाद मेंइ गये।

जब कोई आदमी झूठी वाहवाही में अपना पैसा लुटा दे तब कहते हैं।

मुल्ला की दाढ़ी तबर्रुक में गयी।

एक साधू महाराज लोगों को आशीर्वाद में अपनी दाढ़ी का बाल बांटा करते थे। एक बार वे ऐसे गांव में पहुचे जहाँ सबके सब लोगों ने उनको घेर लिया कि बाल हमको भी दो, हमको भी दो। वावाजी किसे इन्कार करते? वाल बांटना शुरू किया तो और भी भीड़ इकट्ठी होती गयी और अंत में उनकी सब दाढ़ी नुच गयी।

बाबा बैठें ई घर में, पाँव पसारें ऊ घर में।

बाबा बैठते हैं इस घर में, और पाँव पसारते हैं उस घर में। जब कोई आदमी व्यर्थ अपने लिए बहुत सी जगह घेर रखे, अथवा ज़बर्दस्ती दूसरे के काम में जाकर हस्तक्षेप करे तब।

बामी ढिंगा मरे, साँप कौ नाव।

साँप के बिल के पास कोई मरे तो उससे साँप का ही नाम होता है कि उसने काटा।

बा(अ)र की एक सें घर की आदी साजी।

बाहर की एक से घर की आधी (रोटी) अच्छी। भूखा भले ही रहे परन्तु किसी का एहसान लेकर खाना ठीक नहीं।

बा(अ)र के खायें, घर के गीत गायें।

बाहर के लोगों पर व्यर्थ पैसा खर्च किया जाय और घर में तंगी हो।

बार उखारें मुरदा हलको नईं होत।

नाममात्र के सहारे से कोई बड़ा काम पूरा नहीं होता।

बार सी बारीकी और मूसर सो भरौं।

एक-एक पैसे का हिसाब रखना, परन्तु हद दर्जे की फिजूलखर्ची भी करना।

बारा घाट कौ पानी पियें हैं।

अर्थात बहुत अनुभवी हैं, दुनिया देखे हुए हैं।

बारा बंदरचे पाणी प्याला।—**मराठी**

बारा दूनी आठ पढ़ाबो।

किसी को उल्टी शिक्षा देकर अपने काबू में लाना।

बारा बरसें दिल्ली में रये, का भार झोंकत रये ?

बारह वर्ष दिल्ली में रहे, क्या भाड़ झोंकते रहे ? जब कोई अच्छे वातावरण में रह कर भी कुछ सीख न सके और एक साधारण से काम में भी अपनी मूर्खता प्रकट करे तब।

बारा बरस में तौ घूरेई की रतो फिरत।

बारह वर्ष में तो घूरे के भी दिन फिरते हैं। समय पाकर सब के दिन फिरते हैं। कभी न कभी अच्छे दिन अवश्य आते हैं।

उकिरड्याची दैना बारा वर्षांनी देखील फिरतें—**मराठी**

बारा मइना की गैल चलै, छः मइना की ना चलै।

बारह महीने का रास्ता चलै, छः महीने का नहीं। उतावली ठीक नहीं; सब काम धीरज से करना चाहिए।

बारा बरसें सेई कासी, मरन गये मगा की पाटी।

जीवन भर सत्कर्म करते रहने पर भी अंत खराब होना।

बाराबाट होबो।

बरबाद होना।

बारी[1] खेते खाय तौ बिध सें कहा बसाय।

(१–खेत की बाड़।) रक्षक ही भक्षक बन जाय तो इसके लिए क्या किया जाय?

बारू पेरबो।

रेत पेरना। व्यर्थ का काम करना।

बारू पै भींत उठावो।

क्षणस्थायी काम।

बारे पूत, हरीरी साका[1]। इन्हें देख जिन गरबो माता।

(१–शाखा, खेती।) छोटी उम्र के बालक और खेत में खड़ी हरी फ़सल का गर्व नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे कभी भी नष्ट हो सकते हैं।

बालक, मूँछ उर नारी, बारे सें काय न सँवारी।

बालक, मूँछ और स्त्री ये प्रारंभ से ही सँभालने पर सँभलते हैं।

बालापन में बियाव न भये, तरुनाई रस बस न ठये।
वृद्धापन तीरथ ना गये, ते नर सदा बिबूचे रये॥

बाल्यावस्था में जिनका विवाह नहीं हुआ, युवावस्था में जिन्होंने सुखभोग नहीं किया, और बुढ़ापे में जिन्होंने तीर्थ-यात्रा नहीं की वे मनुष्य सदैव गड़बड़झाले में ही पड़े रहे।

बावन बुद्ध बकरिया में, छप्पन बुद्ध गड़रिया में।

बकरी बहुत होशियार होती है, परन्तु उससे अधिक होशियार होता है गड़रिया, जो उस बकरी को पालता-पोसता है।

बासी बचै न कुत्ते खायें।

रोज़ कमाना और रोज़ खाना।

बासे भात में खुदा कौ का साजौ?

बासी भात तो किसी प्रकार भी खाने को प्राप्त किया जा सकता है, उसमें भगवान का क्या एहसान?

बासो खायें बासी बुद्ध होत।

बासी खाने से बुद्धि मंद होती है।

बिंद गओ सो मोती।

जो काम सफल हो वही सच्चा काम। छेद करते समय मोती टूट जाय तो बेकार हो जाता है।

बिख की ओखद बिख।

विष की ओषधि विष। जहर को जहर से ही दूर किया जाता है।

बिगनन[1] अँसुआ नईं आऊत।

(१—बुन्देलखंड में भेड़िये को बिगना कहते हैं।) भेड़ियों को आँसू नहीं आते। कठोर हृदय मनुष्य को दया नहीं आती।

बिगरी बात बनें नहीं, लाख करौ किन कोय।

बिच्छू कौ काटो रोवे, साँप कौ काटौ सोवे।

दुष्ट की मार बुरी होती है।

बिच्छू कौ काटो चोर, न हूँ करै न चूँ।

बदमाश आदमी चुपचाप पिटने पर ठीक रहता है ।

बिच्छू कौ मंतुर जानें नईं, साँप के बिले में हात डारें।

बिच्छू का तो मंत्र नहीं जानते साँप के बिल में हाथ डालते हैं। योग्यता से बाहर काम करने का साहस करना ।

बिछौनन सें लग गये।

बहुत दुर्बल हो गये हैं; बचना कठिन है ।

बिटिया कौ माँगौ होय, बहू कौ माँगौ न होय।

घर में लड़की की ही बात अधिक चलती है। बहू की नहीं।

बिटिया और गैया कों जाँ दोरो मिलत ताँ जात।

लड़की बिनब्याही नहीं रहती। कहीं न कहीं ठिकाने लग ही जाती है।

बिटिया सोहे सासरें, हाती सोहे हतसार।

लड़की तो ससुराल में ही शोभा देती है और हाथी हथसार में।

बिदा होय तौ रोउन लगें, नईं तौ लै पिरिया कंडन कों जायँ।

बिदा हो रही हो तो रोने बैठ जायें, नहीं तो पिरिया लेकर कंडा बीनने जायें। किसी काम में हमारी आवश्यकता हो तो बैठें, अन्यथा अपना दूसरा काम देखें। किसी का व्यर्थ समय नष्ट होने पर कहते हैं ।

विद्या पढ़ संजीवनी निकरे मत के हीन।
तुलसी बिना विवेक के बन में खाये तीन॥

इसकी एक कथा है कि एक बार तीन ब्राह्मण-पुत्र काशी से संस्कृत पढ़ कर अपने घर को लौट रहे थे। वे संजीवनी विद्या जानते थे। रास्ते में एक जंगल में उन्हें एक मरा हुआ शेर मिला। उस पर अपनी विद्या की परीक्षा करने के लिए उसे उन्होंने जीवित कर दिया। परन्तु शेर जैसे ही जीवित हुआ उन तीनों को वह एक ही झपट्टे में खा गया।

यह संजीव जातक है।

बिन कड़ुआ को दिवार?

बिना ऋण निकाले कौन देनेवाला? अथवा जिस पर अपना रुपया उधार आता हो वही माँगने पर दे सकता है, दूसरा कौन देगा?

बिन कुत्तन कौ गाँव बिलो अलबेली डोलें।

जिस गाँव में कुत्ते नहीं होते वहाँ बिल्ली छैल-छबीली बनी घूमती है। जहाँ कोई देखनेवाला नहीं वहाँ धूर्तों की बन आती है।

बिन घरनी घर भूत कौ डेरा।

स्त्री के बिना घर भूत का डेरा है।

बिन देखो चोर साव ब्रिरोबर।

चोर को जब तक चोरी करते पकड़ न लिया जाय तब तक वह ईमानदार ही समझा जाता है।

बिन पंखन के उड़ें चाउत।

बिना पंखों के उड़ना चाहते हैं। पर्याप्त साधन के बिना काम करना।

बिन पइसन कौ तमासो।

बिना पैसों का तमाशा। ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें देखने वाले आनंद लें।

बिन पइसा के परखें मोल, तिनको नाव संखढपोल।

बिना पैसों के जो किसी वस्तु को खरीदने की इच्छा करते हैं वे ढपोलशंख कहलाते हैं।

बिना दूला की बरात।

बिना मालिक की फौज।

बिना धनी की फौज।

दे० ऊपर।

बिना नाथ के पड़ा।

मनचाही करने वाला स्वतंत्र आदमी।

बिना पेंदी के लोटा।

बे सिद्धान्त का आदमी।

बिना बसीले चाकरी, बिना मूँछ कौ ज्वान।
जे तीनऊँ फीके लगें, ज्यों कत्था बिन पान।।

बिना सहारे नौकरी नहीं मिलती।

बिना बुलायें आये, बुरये बुरये गीत गाये।

बिना बुलाये किसी के यहाँ नहीं जाना चाहिए।

बिना रोयें मताई लरका कों दूद नई पियाउत।

बिना माँगे कोई वस्तु नहीं मिलती।

बिना सींगन के बैल।

मूर्ख।

बिपत बिरोबर सुख नहीं जो थोरें दिन की होय।

बिप्र परौसी अजय धन, बिटियन कौ दरबार।
ऐते पै धन ना घटै पीपर राखो दुआर।।

बिप्र, बैद, नाऊ, नृपति, स्वान, सौत, मंजार।
जहाँ जहाँ जे जुरत हैं तहँ तहँ करें बिगार।।

बियाड़े जाओ।

भाड़ में जाओ। बियाड़ बीहड़, या जंगल को कहते हैं।

बियाड़े जाय बो लरका जो बसोर के झारें जिये।

ऐसा लड़का भाड़ में जाय जो बसोर के झाड़ने-फूँकने से जीवित रहे। ऐसी वस्तु किस काम की जिसके लिए किसी तुच्छ व्यक्ति का एहसान लेना पड़े।

बिराने धन कों रोवे चोर।

पराये धन को पाने के लिए हठ करना।

बिरिया सी हला लई।

बेर के वृक्ष को हिलाने से जिस प्रकार सब पके फल एक साथ नीचे गिर पड़ते हैं उसी प्रकार किसी को मारपीट कर सब कपड़े-लत्ते आदि छीन लेना।

बिलइया अपनो एक दाव तोऊ छिपा राखत।

बिल्ली अपना एक दाव फिर भी छिपा रखती है। होशियार आदमी अपना सब हुनर दूसरों को नहीं बताता।

एक बार एक शेर ने बिल्ली के पास जाकर कहा कि मौसी तुम्हें तो शिकार के बहुत से दाव-पेंच आते हैं। कुछ हमें भी सिखाओ। अपना चेला बना लो। बिल्ली इस पर राजी हो गयी। शिकार के जितने हुनर थे शेर को सिखा दिये। इसके बाद क्या हुआ कि एक दिन शेर की नीयत बिगड़ गयी और अचानक बिल्ली पर हमला कर दिया। बिल्ली तुरंत उछल कर पेड़ पर चढ़ गयी और शेर देखता ही रह गया। बोला, मौसी तुमतो कहती थीं कि हमने तुम्हें सब हुनर सिखा दिये। अब बताओ, पेड़ पर कैसे चढ़ूं? यह विद्या तो तुमने सिखायी नहीं। बिल्ली ने उत्तर दिया, भैया, तुम्हें सब कुछ सिखा देती तो आज तुम्हारे हाथों अपने प्राण न खो बैठती!

बिलइया के भाग्गन छींको टूटो।

संयोग से कोई काम बन जाना।

बिलइया के दाँत बिलइये नईं लगत।

बिल्ली के दाँत बिल्ली को नहीं लगते। एक चालाक की चालाकी दूसरे पर नहीं चलती।

बिलइया डंडौतें करबो।

झूठा सम्मान करना। विवश होकर किसी के हाथ-पैर जोड़ते फिरना।

बिले में हात तुम डारौ, मंतुर हम पड़त।

साँप पकड़ने के लिए बिल में हाथ तुम डालो, मंत्र हम पढ़ते हैं। स्वयं अलग रह कर दूसरों को विपत्ति में डालना।

बिस कौ कीरा बिसई में मानत।

विष का कीड़ा विष में ही प्रसन्न रहता है।

विस्वासघातकी महा पातकी।

विश्वासघात से बढ़ कर पाप नहीं।

बीती ताहि बिसार दे आगे की सुध लेय।

बीतौ ब्याव कुमार कौ भाँड़े लै लै जाव।

कुम्हार के यहाँ विवाह हो जाने पर मिट्टी के चाहे जितने बर्त्तन उठा लाओ, क्योंकि उसके यहाँ वही अधिक काम में आते हैं। काम निकल जाने पर वस्तु की कद्र नहीं रहती।

बीदे पै सीदो[1] दैने परत।

(१—सीधा, ब्राह्मण को दक्षिणा म दिया जाने वाला आटा-दाल आदि।) चक्कर में फँसने पर आदमी पैसा खर्च करता है।

बीदो बानिया देय उदार।

दबा हुआ बनिया उधार देता है।

बीदो बानिया सीदो देय।

दे० बीदे पै सीदो....

बुकरिया जैसो मों चलतई रत।

बकरी की तरह मुँह चलता ही रहता है। ऐसे लड़कों के लिए कहते हैं जो दिन भर बकरी की तरह कुछ न कुछ खाते रहते हैं।

बुर (अ) ये दिन कै कें नई आऊत।

बुरे दिन कह कर नहीं आते।

बुर (अ) ये कौ साथी कोऊ नइयाँ।

बुरे का कोई साथी नहीं होता।

बुर (अ) ये काम कौ बुर (अ) ओ हवाल।

बुरे काम का बुरा नतीजा होता है।

बूचई[1] कों तौ घी ताव तो।

(१—बूचा ऐसा कुत्ता जिसके कान कटे हों।) बूचा के लिए ही तो घी गरम किया था! जब कोई फालतू आदमी बीच में आकेर चीज हड़प ले जाय।

बूची कों आन ताव,[१] कानी कों कजरा कौ ताव।

(१—उतावली।) बूची को कोई दूसरा ताव और कानी को काजल का ताव ! जब कोई अयोग्य किसी वस्तु को पाने की इच्छा करे।

बूड़ी गैया बमने जाय, पुन्न होय और टरे बलाय।

बूढ़ी गाय ब्राह्मण को देने से दुहरा लाभ, पुण्य का पुण्य और बला भी टले !

बूड़ी घुरिया लाल लगाम।

बेमेल काम।

बूड़ो और बारो बिरोबर होत।

वृद्ध और बालक इन दोनों की प्रकृति एक सी होती है।

बूड़ो खाय, गाँठ कौ जाय।

निकम्मे आदमी को खिलाना बेकार है।

बूड़ो बरद, पाट की नाथ।

बूढ़ा बैल और उसके लिए रेशम की नाथ !

बूड़ो मरै चाय ज्वान, हत्या सें काम।

जब कोई ऐसा काम करने के लिए विवश हो जाय कि उससे दूसरों की हानि होती हो तब कहते हैं।

बेई चेत चितावें, बेई बनवास दुआवें।

सीता की ननद के संबंध में कहा गया है कि वही तो राम को सावधान करें और वही सीता को वनवास दिलावें।

जनश्रुति है कि लंका से लौटने के बाद एक बार सीता की ननद ने राम से झूठ-मूठ ही कह दिया कि सीता एकान्त में बैठी दीवाल पर रावण का चित्र बना रही थीं, इनको घर से अलग कर देना चाहिए। इस पर ही राम ने सीता को वनवास दे दिया। इधर की उधर भिड़ा कर दो आदमियों में लड़ाई करा देने वाले के लिए प्रयुक्त।

बेई तीन बिसी बेई साठ।

दोनों में कोई अंतर नहीं।

बेई दुखन दूबरी, बेई दो असाड़।

गाय जिस दुख से दुबली, वही सामने आया, अर्थात दो असाढ़ हुए। वर्षा के कारण पहिले ही घास नहीं चर पाती थी और अब और भी भूखों मरेगी। विपत्ति पर विपत्ति।

बेई बाई ससरार कों, बेई गुना[१] गोंठबे कों।

(१–दहेज में देने के लिए बनायी गयी विशेष प्रकार की पूड़ी, जो किनारों पर गोंठी जाती है।) वही बेटी तो ससुराल जाने के लिए, और वही गुना गोंठने के लिए! एक ही आदमी को जब छोटा-बड़ा सब काम करना पड़े तब।

बेई मियाँ दरबार कों, बेई चूलो फूँकबे कों।

दे० बेई बाई ससरार कों।

बेई राज दिमान बेई चूल दिमान।

दे० बेई बाई.... ।

बे औसर कौ बाजो। (साजो नईं लगत)

बे अवसर का काम अच्छा नहीं लगता।

बेगार कौ काम।

मुफ्त का काम।

बेटा एक कुल कौ, तौ बेटी दोई कुलन की।

बेटा एक कुल की लाज रखता है तो बेटी दोनों कुलों की।

बेटा बन कें सबनें खाव, बाप बनकें कोऊ नईं खा पाऊत।

मीठी बात से जो काम निकलता है वह रोब जमाने से नहीं।

बेटा सें बेटी भली जो कुलवंतिन होय।

बेटा है तौ बउएं भौत आ जेयँ।

लड़का है तो बहुएँ बहुत आ जायेंगी। साधन है तो काम भी हो जायगा।

बेची घोड़ी कौन जदाद[१]।

(१–जायदाद, संपत्ति।) जो वस्तु दूसरों को दे दी उसका क्या हिसाब?

बेपारी उर पाउनो तिरिया और तुरंग।
अपने हात सँवारिये लाख लोग होयँ संग।।

व्यापारी, अतिथि, स्त्री और घोड़ा इनको स्वयं ही सँभालना चाहिए, भले ही लाख आदमी साथ हों।

बेपारी उर पाउनो, तिरिया और तुरंग।
ज्यों ज्यों जे ठनगन[1] करें, त्यों त्यों आवे रंग।।

(१—नखरा।)

बेल के मारे बमूर तरें गये और बमूर के मारे बेल तरें।

बेल के नीचे गये तो बेल का फल सिर पर गिरा, बबूल के नीचे गये तो काँटे छिद गये। जहाँ जाओ वहीं विपत्ति; कहीं ठिकाना न लगना।

बेल[1] मँड़वे चड़ गई।

(१—लौकी, तुरई आदि तरकारियों की बेल।) बेल मंडप पर चढ़ गयी। अर्थात् किसी प्रकार काम बन गया।

बेल मँड़वे चड़त नईं दिखात।

अर्थात काम बनता नहीं दिखायी देता।

बेसरम की नाक कटी, हात भर रोज बढ़ी।

निर्लज्ज के लिए।

बैठतो राजा और आऊती बऊ।

गद्दी पर बैठनेवाला नया राजा और घर में आनेवाली नयी बहू, इनकी सब सराहना करते हैं।

बैठबे कों ठौर दै दो, परबे कों हम बना लेयँ।

बैठने को जगह दे दो, लेटने को हम बना लेंगे। किसी जगह एक बार थोड़ा अधिकार जम जाने पर बहुत जमाना आसान हो जाता है।

बैठें बैठें खायँ सें पहाड़ बिला जात।

बैठे-बैठे खाने से पहाड़ भी विलीन हो जाता है। आमदनी के बिना खर्च नहीं चलता।

बोसिया खाईले राजार भंडार टूटे।—**बंगला**

बैठे सें बेगार भली।

बैदई की राँड़ भई।

वैद्य की ही स्त्री विधवा हुई, अर्थात जो वैद्य दूसरों का इलाज करता था वह स्वयं ही बीमार हुआ और मर गया।

बैरा खोदे काँदी, मेव गिनें ना आँदी।

दे० अँदरा खोदे....

बैरागिन[1] बाई कों देउर जेठ की का लाज?

(१--संन्यासिनी।) स्वतंत्र आदमी को सच बात कहने में क्या संकोच?

बैरा मुंस, घर में खुंस, कछू कत, कछू सुंत।

कोई आदमी बहरा था। घर में स्त्री जब नाराज होती तब वह कुछ तो कहती और पति सुनता कुछ और, इससे स्त्री की नाराजी और बढ़ती। बहरे आदमी के लिए कहते हैं।

बैरी कौ मत मानबो, उर तिरिया की सीख।
क्वाँर करें हर जोतनी, तीनऊँ माँगें भीख॥

जो बैरी की सलाह माने, स्त्री के कहने पर चले, और क्वाँर में खेतों की जोताई करे, ऐसे तीनों आदमी भीख माँगते हैं। (रबी की फसल के लिए खेत बहुत पहिले ही तैयार कर लिये जाते हैं। असली जोताई जेठ-असाढ़ में की जाती है, क्वाँर में नहीं।)

बैल चमकना जोत में उर चमकीली नार।
जे बैरी हैं जान के लाज रखे करतार॥

जिस किसान के खेती के काम आने वाले बैल चौंकने-कूदने वाले हों और स्त्री बहुत-बन ठन कर रहती हो तो ये दोनों ही उसके प्राण के शत्रु होते हैं। भगवान ही उसकी लाज रख सकता है।

बैल न कूदै कूदै गौन[1]। जौ तमासो देखे कौन॥

(१--अनाज भरने की खेस।) जब किसी से कोई आक्षेपजनक बात कही जाय, और वह तो उसका कोई उत्तर न दे, परन्तु दूसरा आदमी आवेश में आकर बोल उठे तब कहते हैं।

बैल सिंगारो, ज्वान मुछारो। गोऊँ जवारो, घी रवारो॥

बैल तो सींगोंवाला, मर्द मूँछोंवाला, गेहूँ जवा की बाल की तरह बड़ी बाल वाला और घी रवादार अच्छा होता है।

बोई सिया कौ मायको, बई रावन की गैल।

वहीं तो सीता का मायका और वहीं रावण के निकलने का रास्ता ! बैर-कैर का संग।

बोलती बंद हो जावो।

कुछ कह न सकना। चुप हो जाना।

बोलबे में सार नइयाँ।

जब किसी की कोई बात न सुनी जाय, अथवा कुछ कहना ही व्यर्थ हो तब।

बोल भाई, आन फँसे की हर गंगा।

विवश होकर कोई काम करना।

बोले सो बिबूचे।

दूसरे के बीच में बोलने से परेशानी उठानी पड़ती है।

ब्याज, घूँस, दच्छना, पाछें परें कुच्छना।

ब्याज, घूँस और दक्षिणा का रुपया पिछड़ जाने पर फिर नहीं मिलता।

ब्याज घोड़ा सें अँगारीं चलत।

ब्याज घोड़ा से तेज चलता है। दिन रात बढ़ता रहता है।

ब्याय नइयाँ तौ बरातें तौ करीं।

स्वयं हमारा विवाह नहीं हुआ तो क्या ? परन्तु बरातें तो की हैं। कोई काम स्वयं नहीं किया तो क्या हुआ, उसकी जानकारी तो है।

ब्याय नइयाँ तौ मँड़वा तरें तौ बैठे।

दे० ऊपर।

ब्याय न बराते ग्ये।

ऐसा आदमी जिसे दुनियादारी का कोई अनुभव न हो।

ब्यारी[1] कबहु न छोड़िये, ब्यारी सें बल जाय।
जो ब्यारी औगुन करै (तौ) दुपरे थोरो खाय ।।

(१–ब्यालू; रात्रि का भोजन ।)

ब्याव की पछारी,[1] हाकिम की अगारी।

(१–पहिल, शुरुआत ।) दुःखदायी होती है ।

ब्याव की बारा बरसें बाट हेरी, चलाए[1] की दमदम पारें।

(१–चलाव; द्विरागमन; गौना; विवाह के बाद बहू को लेने जाना ।) विवाह की बारह वर्ष तक प्रतीक्षा की, गौने के लिए आफत मचाये हैं कि अभी हो जाये । किसी काम को पूरा होते हुए देख कर उसके लिए उतावली मचाना ।

ब्याव गाये गाये कौ और खाये खाये कौ।

विवाह में गाना-बजाना और खाना-पीना ही मुख्य है । ये न हों तो विवाह किस काम का ?

ब्याव न चलाव, झूँट-मूँट कौ चाव।

किसी का झूठा आदर-सत्कार करना ।

ब्याव बिगरौ सो बिगरौ, घरइयन कों तौ जुँआँ दो।

ब्याह बिगड़ा सो बिगड़ा, घर के लोगों को तो भोजन करा दो ! जो हुआ सो हुआ, भूखे बैठे रहने से क्या लाभ ?

ब्याव न जानों हाँसी खेल। उड़ जै कुला बिसाउतन तेल ।।

ब्याह को हँसी खेल मत समझो, तेल इकट्ठा करने में ही टोपी उड़ जायगी । तात्पर्य यह कि ब्याह में नाना प्रकार की कठिनाइयाँ सामने आती हैं ।

ब्याव-बरात कौ भर्रो, जितै चाय पर्रो।

ब्याह-बरात में कोई किसी को नहीं पूछता । जहाँ जगह मिले वहाँ लेटो।

ब्याव पाछें पत्तर भारी हो जात।

ब्याह के बाद एक पत्तल का खर्च भी भारी हो जाता है । खर्च में खर्च नहीं आँसता ।

ब्रह्मा के अक्षर।

पक्की बात।

भ

भई गत साँप छछूँदर केरी।

किसी काम को न करते बनता न छोड़ते।

भई छछुंदर सर्प गति, उगलत बने न खात। –तुलसी

(कहते हैं कि साँप जब छछूंदर को पकड़ता है तब यदि उसको उगले तो अंधा हो जाता है और निगले तो कोढ़ी हो जाता है।)

भगत तौ भौत बैकुंठ सकरो।

जब किसी जगह लोगों के बैठने कें लिए स्थान की कमी हो तब।

भगे भूत की लँगोटी भौत।

जिससे कुछ भी मिलने की आशा न हो उससे थोड़ा भी मिल जाये तो बहुत समझो।

भड़भड़िया अच्छो, पेट पापी बुरओ।

जिसके पेट में कोई भी बात न रहे वह अच्छा, परन्तु मन में कपट रखनेवाला बुरा।

भय बिन होय न प्रीत।

भर ज्वानी में माँझा ढीलो।

काम में आलस्य करने वाले नौजवान लड़कों के लिए।

भर ज्वानी में लीद के फक्के।

युवावस्था में अच्छा भोजन खाने को न मिलना।

भरत के प्या[१] ने प्रान लै लये।

(१–पैली, लगभग दस सेर के नाप का अनाज नापने का बर्तन) कथा है, कि राम जब चौदह वर्ष के लिए बन गये तब भरत ने एक बार प्रजा को पैली से नाप-नाप कर अनाज उधार दिया। उसके पश्चात पैली की पेंदी पर जितना अनाज बना उतना ही वापिस लिया। अर्थात दिया तो अधिक और लिया

बहुत ही कम। परंतु फिर भी प्रजा को इससे संतोष न हुआ। राम के वन से लौट कर आने पर उनसे शिकायत की कि महाराज, आपकी अनुपस्थिति में हमें और तो सब सुख रहा, परंतु भरत के प्या ने प्राण ले लिये।

कहावत का अभिप्राय यह कि कोई कितनी ही भलाई करे फिर भी लोगों को आलोचना का अवसर मिल ही जाता है।

भरम गओ तौ सब गओ।

एक बार घर का भेद खुलने से सब इज्जत-आबरू चली जाती है।

भरम भारी खीसा खाली।

नाम तो बहुत, परन्तु गाँठ में कुछ नहीं।

भरम मारै, भरम जिवावै।

बात खुल जाने पर आदमी का मरण हो जाता है। और जब तक बात ढकी रहती है, उसकी रक्षा रहती है।

भरी गाड़ी में सूप भारू नईं होत।

भरी गाड़ी में सूप भारी नहीं होता। बहुत खर्चे में थोड़ा खर्चा आसानी से समा जाता है।

भरल्या गाड्यास सूप जड नाहीं—**मराठी**

भरी सभा में गूँगा बोले।

अयोग्य आदमी के बीच में बोलने की धृष्टता करने पर कहते हैं।

भरी सभा में साख भरें, उनके पुरखा नरकै गिरें।

जो चार आदमियों के सामने झूठी गवाही देते हैं उनके पुरखा नरक में जाते हैं।

भरे-पूरे कौ हूँका भराउत।

जबर्दस्ती 'हाँ' कराते हैं।

भरे समुन्दर में घोंघा प्यासो।

भरोसे की भैंस पड़ा ब्यानी।

मानों कोई विलक्षण बात हुई।

भली कतन का जात।

भली बात कहने में क्या खर्च होता है ?

भली भई जिजी सासरें गईं, जिजी की फरिया मोई कों भई।

ननद के रहते उसकी किसी वस्तु को छूना भी कठिन होता है । इसलिए उसके ससुराल चले जाने पर भावज प्रसन्न होकर कहती है कि, चलो अच्छा हुआ जिजी चली गयीं । उनकी साड़ी तो अब मुझे पहिनने को मिलेगी ।

भले कौ जमानो नइयाँ।

भले का जमाना नहीं ।

भले के सब साथी।

भले कौ नाम रँ जात ।

भले का नाम रह जाता है ।

भाँड़न के घोड़े, खायें भौत चलें थोड़े।

बड़े आदमियों के नौकरों के लिए कहते हैं ।

भाँड़न के संग खेती करी, गा बजा कें अपनी करी।

भाँड़ों के साथ खेती की जाय तो कोई उनसे क्या वसूल कर लेगा ? गा-बजा कर वे तो उसे अपना बना लेंगे।
लफंगों के साथ कोई काम करना मूर्खता है ।

भाँड़ी भई है तौ दो छाबें और सई।

बात बिगड़ी है तौ दो छबले और सही । अर्थात बदनामी ही जब हुई है तो व्यर्थ खर्च क्यों किया जाय ?

किसी सज्जन के यहाँ विवाह में पूड़ियां कम पड़ गयीं। परोसने वालों ने भीतर भंडारे में आकर कहा कि 'भाँड़ी हो रही है' अर्थात बात बिगड़ रही है। इस पर भंडारे में जो आदमी था उसने कहा—'अच्छी बात है, भाँड़ी जब हो ही रही है तो पूड़ियों के दो छबले जो तुम वापिस लाये हो, यहीं रख दो। थोड़ी और भाँड़ी हो जायगी।'

भाई, भतीजो, भानजो, भुइयाँ उर भूपाल।
इन पाँचऊअन कों छोड़कें अंत करौ व्यापार॥

भाई, भनजया सोई, जीमें हँड़िया खुदबुद होई।

भाई-भानजा वही है जिससे काम निकले।

भाग्ग बदो सो होय।

जो भाग्य में लिखा होता है वही होता है।

भाग्गी कें भूत कमाऊत।

भाग्यवानों के सब काम अपने आप हो जाते हैं।

भानुमती के बट्टा।

चालाक आदमी।

भारी ब्याज मूल कों खाये।

बहुत ब्याज के लोभ में मूल भी मारा जाता है।

भिम्म के हाती।

भीम के हाथी। ऐसा आदमी जिसका कहीं ठिकाना न लगे।

जनश्रुति है कि महाभारत के युद्ध में भीम ने शत्रुओं की सेना के हाथी पकड़-पकड़ कर आकाश में फेंक दिये थे जो अब भी वहाँ निरुद्देश्य घूम रहे हैं।

ईसुर भये भिम्म के हाती लगे न कोनऊँ हिल्लें—ईसुरी

भींत लैकें चितेउर करत।

दीवाल हाथ में लेकर चित्रकारी करते हैं। अनहोनी या असंभव काम करना।

भींत भीतरी, कुआ बायरो।

घर की दीवाल भीतर की ओर दबी हुई और कुएँ का घेरा बाहर की ओर फैला हुआ होना चाहिए। इससे वे मजबूत रहते हैं।

भीक छोड़ी, कुत्तन सें बचे।

एक हानि हुई, पर दूसरा लाभ तो हुआ।

भीक में भीक देय, तीन लोक जीत लेय।

दे० दान में दान।

भुगतमान भुगते बने, ज्ञानी मूरख दोय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान सों, मूरख भुगते रोय॥

भुस के मोल मलीदा।

अंधेर की बात।

भुस पै कौ लीपनो, चीकनो ना चाँदनो।

निरर्थक कार्य।

भुस में अँगरा डार, मलंगो दूर भई।

दो आदमियों में लड़ाई-झगड़ा करा कर अलग हो जानेवाले के लिए।

भूँक गयें भोजन मिले, जाड़ो गयें रजाई।
जोबन गयें तिरिया मिली कौन काम की भाई॥

भूँक में चना चिरौंजी।

भूख में चना भी चिरौंजी जैसी स्वादिष्ट लगते हैं।

भूँकी भई धना,[1] तौ खान लगीं चना।

(१—स्त्री के लिए संबोधन।)

भूँकें बेर, अघाने पोंड़ा।

बेर भोजन के पूर्व और गन्ना भोजन के बाद सेवन करना चाहिए।

भूँकें भगत न होय गुपाला।

भूँजी मछरी दौ में परी।

भूँनी हुई मछली पानी में गिर गयी। हाथ में आयी चीज निकल गयी।

भूतन के घर सालिगराम।

भूतों के यहाँ शालिग्राम का क्या काम?

भूतन कें घरै बराई, (और) खसियन के घरै लुगाई।

भूतों के घर ऊख और हिजड़ों के घर लुगाई। असंभव बात।

भूतन कों लोट दिखावो।

भूतों को कलाबाजी दिखाना व्यर्थ है, क्योंकि इसमें तो वे स्वयं दक्ष होते हैं।

भूत प्रान नइँ लेत, पै हलकान तौ कर लेत।

दुष्ट के लिए कहते हैं।

भूल गओ राग-रंग, भूल गई छकड़ी। तीन चीज याद रईं, नोंन तेल लकड़ी।

गृहस्थी के चक्कर में पड़ना।

भूल गई चतुर नार हींग डार दई भात में।

किसी होशियार आदमी से कोई बेढंगी भूल हो जाना।

भूल-चूक लेनी देनी।

हिसाब चुकता करते समय कहते हैं।

भूले बिसरे राम सहाय।

भूले-चूके का ईश्वर मालिक है।

भेड़ कों तौ मुड़नईं मुड़ने।

भेड़ कहीं जाय उसे तो मुड़ना ही है। गरीब को सब जगह विपत्ति।

भैंस कँदोलिया पिय ल्याय। माँगें दूद कहाँ सें आय॥

ऐसी भैंस जिसके कंधे चौड़े हों कँदोलिया कहलाती है। वह दूध कम देती है।

भैंस कुठारी, बैल छतारौ।

भैंस तो वह अच्छी होती है जिसका पीछे का हिस्सा चौड़ा हो, और बैल वह जिसकी छाती चौड़ी हो।

भैंस के सींग भैंस कों भारू नईं होत।

अपने परिवार के किसी एक आदमी का भरण-पोषण करने में किसी को कोई कठिनाई प्रतीत नहीं होती।

भेंसनां सींगडा भेंसने भारी नहि पड़े। —गुजराती
म्हशीचीं शिंगे म्हशीला जड़ नाहींत। —मराठी

भैंस कों कोदों नईं पचत।

ओछे आदमी के पेट में कोई बात नहीं रहती।

भैंसा भैंसन में कै कसाई के खूंटन में।

बुरी संगत में पड़े आदमी के लिए कहते हैं।

भैय्या होय अबोलना तोऊ अपनी बाँह।

भाई से बोलचाल न भी हो तौ भी वह अपना भाई ही है।

भोंदू भाव न जानें, पेट भरे सें काम।

मूर्ख को अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं होता। उसे तो पेट भरने से काम।

भौं परन भूँकत मरन, जौ बरात कौ हेत।

जमीन पर लेटना और भूखों मरना यही बारात का सुख है!

भोजन के पिछारूँ और स्नान के अगारूँ।

भोजन के बाद और स्नान के पहिले ठंड मालूम होती है।

भौंकें ना दर्रायँ, मसकऊँ[1] काट खायँ।

(१—चुपचाप।) कपट का बर्त्ताव करने वाले के लिए।

भौजी की थैलिया, देवरा सराफी करे।

घर के ही किसी आदमी का माल अपने काबू में आ गया हो तो खर्च करते क्या लगता है?

भ्रम कौ भूत।

म

मंगलवारी परै दिवारी। मंड़ घर रोवे बेपारी॥

लोक-विश्वास है कि मंगलवार को दिवाली पड़े तो वह व्यापारियों के लिए शुभ नहीं होती।

मँड़पुआ की नाक पोंछने परत।

माँड़े बनाने वाले की नाक पोंछनी पड़ती है। जिस आदमी से कोई काम लेना होता है उसकी सब तरह से खुशामद करनी पड़ती है।

(माँड़े बनाने वाले के दोनों हाथ गुंदे हुए गीले आटे से सने रहते हैं, और यदि उसकी नाक आ जाय तो दूसरे आदमी को पोंछनी पड़ती है।)

मँड़वा बाँदबे सब आऊत, छोरबे कोऊ नईं आऊत।

मंडप बाँधने सब आते हैं, छोरने कोई नहीं आता। बने काम में सब साथ देते हैं।

(विवाह के अवसर पर मंडप तैयार करने के लिए बिरादरी के पंच बुलाये जाते हैं और उस दिन उनको भोजन भी कराया जाता है।)

मउअन के टपकें धरती नईं फटत।

महुआ के फूलों के टपकने से धरती नहीं फटती। किसी अत्यन्त तुच्छ आदमी से बड़े काम की आशा व्यर्थ है।

(महुआ के फूल चैत में टपकते हैं और उस समय प्रातःकाल फूलों से धरती बिछ जाती है।)

मउआ मेवा बेर कलेवा गुलगुच[१] बड़ी मिठाई।
इतनी चीजें चाहो तो गुड़ाने[२] करौ सगाई।।

(१—महुए का पका हुआ फल। २—मध्यप्रदेश के उस भाग को गोंडवाना कहते हैं जहाँ किसी समय गोंडों का राज्य था। यहाँ के जंगलों में महुआ और बेर बहुत होता है।) महुए का मेवा, बेर का कलेवा और गुलगुच की मिठाई खाना चाहते हो तो गोंडवाने में विवाह करो।

मउआ मोरें भुंजे धरे हैं, लटा[१] धरे हैं कूट।
ग्योड़ें होकें साजन कड़ गये, कौन बात की चूक।।

(१—भुने हुए महुओं को कूट कर और उनमें गरी, चिरौंजी आदि मेवा मिलाकर बनाया गया खाद्य पदार्थ।) महुआ मेरे यहाँ भुने रखे हैं, लटा भी कुटे रखे हैं, फिर मुझसे ऐसी कौन सी भूल हो गयी कि साजन गाँव के पास से निकल गये और हमारे घर नहीं आये।

मकर चकर की घानी। आदो तेल आदो पानी।।

धूर्त्त और कपटी व्यवसायी के लिए प्रयुक्त।

मगरै बुड़कैयाँ सिखाउत।

मगर को डुबकी मारना सिखाते हैं। चालाक को चालाकी क्या सिखाना?

मघा[1] न बरसे भरे न खेत। माता न परसे भरे न पेट॥

(१–भादों के महीने का एक नक्षत्र।) मघा में पानी बरसे बिना खेत नहीं भरते, और माता के परसे बिना पेट नहीं भरता।

मघा-पूर्वा लागीं जोर। उर्द मूँग सब धरो बहोर।
बऊत बने तौ बैयो। नातर बरा बरी कर खैयो॥

मघा और पूर्वा नक्षत्र में खूब पानी बरसने से उर्द और मूँग की फसल को हानि पहुँचती है। इसलिए ऐसे समय में इनको बोते बने तो बो देना चाहिए। अन्यथा अच्छा यह है कि बरा-बरी बनाकर खा लिया जाय।

मछरी के जाये, किन तैराये।

मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाता है? जिसका जो स्वभाव है वह अपने आप आ जाता है। पैतृक गुण किसी को सिखाना नहीं पड़ता।

मठा बिचारे का बिगरें जब बिगरें तब दूद।

किसी बात की हानि तो बड़े आदमियों की ही होती है गरीबों की क्या होगी?

मत बारे की माँ मरे, मत बूढ़े की जोय।

छोटी उम्र में किसी की माँ न मरे, और बुढ़ापे में किसी की स्त्री।

मताई के पेट सें कोऊ सीक कें नईं आऊत।

माँ के पेट से कोई सीख कर नहीं आता।

मताई बाप ने जनम दओ, करम नईं दओ।

माँ-बाप जन्म देते हैं, परन्तु सब अपना-अपना भाग्य साथ लेकर आते हैं।

मताई, मोय पीरें आवें तब जगा दियो, कई—बेटा तुमतो उपतईं कें सबरे गाँव कों जगाउती फिरो।

किसी लड़की के बच्चा होने वाला था। अपनी माँ से उसने कहा—माँ, मुझे जब प्रसव की पीड़ा हो तो जगा देना। माँ ने उत्तर दिया—बेटा, तुम तो स्वयं ही पूरे गाँव को जगाती फिरोगी। जिसे कष्ट होता है वह स्वयं चिल्लाता है।

मन की मनईं में गई।

जो चाहते थे वह नहीं हुआ।

मन के राजा।

मनमानी करने वाला।

मन के लड़ुआ खावो।

हवाई किले बाँधना।

मन के हारें हार है, मन के जीते जीत।

मन कौ चीतौ होय नहिं, प्रभु चीतो तत्काल।

मनुष्य का सोचा कुछ नहीं होता, भगवान जो चाहता है वही होता है।

मन चलत, पै टट्टुआ तौ चलतई नइयाँ।

वृद्धावस्था में शरीर साथ नहीं देता तब कहते हैं।

मन चले कौ सौदा।

जिसे जो वस्तु अच्छी लगती है वही खरीदता है।

मन मन भावे, मूँड़ हलावे।

किसी वस्तु को लेने की आन्तरिक इच्छा होते हुए भी ऊपर से इन्कार करना।

मन महीप के आचरण, दृग दिमान कह देत।

मन की बात चेहरे पर प्रकट हो जाती है।

मनमानी घर जानी।

अपने मन की करना।

मन मालयें, चित्त चँदेरी।

चित्त का स्थिर न होना।

मन में उठी हुलक, तौ का खँजरी का ढुलक।

किसी काम को करने की उमंग मन में उठे तो उसे कर ही डालना चाहिए।

मनायें मनायें खीर न खाई, जूँठी पातर चाटन आई।

अंत में हार कर वही काम करना जिसके लिए पहिले इन्कार कर दिया।

मनुवाँ जंजाली, तू कौन चिरैया पाली।

गृहस्थी के जंजाल के लिए प्रयुक्त।

मनुस बली नहिं होत है, समय होत बलवान।
भीलन लूटी गोपका बेइ अर्जुन बेइ बान॥

भाग्य के सामने मनुष्य की नहीं चलती।

महाभारत में कथा है कि आपस की कलह के कारण यदुवंश जब नष्ट हो गया और भगवान श्रीकृष्ण भी स्वधाम पधार गये तब अर्जुन उस वंश की बची हुई स्त्रियों को लिवाने के लिए द्वारका गये। वहाँ से जब वे हस्तिनापुर लौट रहे थे तब रास्ते में उनको भीलों ने लूट लिया। उनकी वीरता और उनके दिव्यास्त्र कुछ काम नहीं आये।

मरका बैल और टिमकुल जनी। इनके मारें रोवे धनी॥

जिस किसान का बैल मरकहा और स्त्री बनाव-श्रृंगार करने वाली होती है वह सदैव कष्ट भोगता है।

मरका बैल भलो, कैं सूनी सार ।

(१–ढोर बाँधने का स्थान, पशुशाला)। सार सूनी रहे इससे तो मरकहा बैल अच्छा।

अच्छी या बुरी वस्तु कैसी भी हो, बिलकुल न होने से तो फिर भी अच्छी।

मर गई किल्ली काजर कों।

किल्ली काजल लगाने की अभिलाषा में मर गयी! जब कोई काली-कलूटी स्त्री अपने को बहुत सुन्दर बनाने की चेष्टा करे तब उसके लिए कहते हैं।

मरि रे रांड खटाइ बिना। –गढ़वाली

मर गई तौ पठई दं।

मर गयी है तौ भी भेज दो। किसी वस्तु के लिए अनुचित रूप से हठ करना।

कोई मूर्ख आदमी अपनी स्त्री को लिवाने ससुराल गया। परन्तु इस बीच में वहाँ उसकी मृत्यु हो गयी थी। ससुराल वालों ने समाचार सुनाया तो उसे विश्वास नहीं हुआ। बोला—मैं यह सब कुछ नहीं जानता। तुम तो आज ही मेरी स्त्री को मेरे साथ भेज दो।

मरघटा कौ गओ को लौटत ?

मरघट का गया कौन लौटता है ? गयी बात फिर हाथ नहीं आती।

मरदै रोटी, बरदै काँस।

मर्द को अच्छा खाना, और बैल को अच्छा घास चाहिए।

मरबे की फुर्सत नइयाँ।

अर्थात बहुत व्यस्त हैं।

मरबे कों का हाती-घोड़ा जुतत ?

मरने का क्या ठीक ? समय आया मर गये।

मरबो भलो बिदेस कौ जहाँ न अपनो कोय।
माटी खायँ जनावरा, महामहोच्छव होय॥

मरियाँ मुंस, घर में खुंस।

दुबले-पतले मरतुले, पति से स्त्री सदैव रुष्ट रहती है।

मरियाँ मुंस करम ढकना, कोदों की रोटी पिट भरना ।

कोदों की रोटी केवल पेट भरने के लिए होती है, उसी प्रकार मरतुला पति भी केवल सौभाग्य की रक्षा के लिए होता है।

मरी किल्लन काजर देत

मरी किल्लियों को काजल लगाते हैं। निकृष्ट या नष्ट प्रायः वस्तु को सुन्दर बनाने की चेष्टा करते हैं।

मरी किल्ली की नाई लेखबो।

किसी को बिलकुल तुच्छ समझना। परवा न करना।

मरी जायँ मलारैं गावैं।

मरने को हो रही हैं, परन्तु मल्हार गाती हैं। घर में खाने को नहीं, गाना सूझता है।

मरी बछिया बामन के नाव।

निकम्मी वस्तु दूसरे के मत्थे मढ़ना।

मरी मिदरियन छाले पर गये।

मरी मेंढ़की को छाले पड़ गये! कोई छोटा आदमी जब नजाकत दिखाये। मेंढकी को भी जुकाम!

मरे की कौने जानी?

मरने को कौन देख आया?

मरे कों मारें साहू मदार।

दुर्बल को सब सताते हैं।

मरे कौ मर्दन।

मरे को मारना।

मरे ढोर कों किल्लीं छोड़ देती।

जिंससे कुछ मिलने की आशा नहीं होती लोग उसे त्याग देते हैं।

मरे पूत की बड़ी आँखें।

हाथ से जो वस्तु निकल जाती है उसकी सब प्रशंसा करते हैं। मरे आदमी को सब अच्छा कहते है।

मरे बाबा की पस्से सी आँख।

मेल्याचे डोले पशाएवढे। —**मराठी**

(मरे की आँखें हथेली जैंसी)

मुई भैंस ने घी घणो। —**गुजराती**

मरे पूतन हूंका भराउत

मरे लड़के से हाँ कराना चाहते हैं। ऐसा हठ जो पूरा न हो सके।

मरे लौं कौ नातो।

मरने तक ही दुनिया से नाता रहता है।

मरे लौं कौ बैराट[1]।

(१—बैरभाव, शत्रुता) मरने तक के ही सब झगड़े हैं।

मरे सांप की आँखें कुरेदबो।

मरे को मार कर अपनी बहादुरी दिखाना।

मरै न करै, हुकुर हुकुर करै।

ऐसे बूढ़े रोगी से कहते हैं जिसकी सेवा करते-करते लोग ऊब जाते हैं।

मरै न माँचो देय।

न तो मरता है और न चारपाई छोड़ता है। बूढ़े के लिए।

मरै बाप रोवें अजा कौं।

कष्ट तो किसी बात का, रोवें किसी और बात के लिए।

मर्द मुछारौ, बर्द पुछारौ।

मर्द मूँछों वाला और बैल बड़ी पूँछ वाला अच्छा होता है।

मसान कौ भूत।

गले पड़ गया आदमी।

माँग चूँग कें करी तीजा[1]। भोरईं हो गओ बीदक-बीदा॥

(१—भादों सुदी तीज का पर्व, हरतालिका व्रत।) माँग-चूँग कर तो तीज का त्यौहार मनाया और सबेरे ही मुसीबत आ गयी! जिससे पैसा उधार लिया था वह माँगने आ गया।

माँगे की बछिया, पर पर दाँत निहारें।

मुफ्त की चीज का क्या देखना? उसे तो चुपचाप ले लेना चाहिए।

माँगे के बैल अँधिरिया रात।

माँगे के बैल, और अँधेरी रात। तात्पर्य यह कि कोई देखेगा नहीं, मजे में रात भर जोतो। दूसरे की वस्तु का लोग सदैव दुरुपयोग करते हैं।

माँगे के बैल, मसक कें जोत लो।

मँगनी के बैल उनसे खूब कस कर काम ले लो।

माँगे कौ मठा मोल बिरोबर।

माँगी हुई वस्तु सदैव मँहगी पड़ती है, अव्वल तो देने वाले के सौ नखरे सहने पड़ते हैं और फिर ऊपर से एहसान अलग।

माँगें मिलें न चार, पूरे पूरे पुन्न बिन।
इक बिद्या, इक नार, घर संपत, सरीर सुख।।

माँगें मौत नइँ मिलत।

माँगने से कोई वस्तु नहीं मिलती।

माँछी बिडारबे बैठे, संगे जेउन लगे।

मक्खियाँ भगाने बैठे, और साथ खाने लगे। काम कुछ सौंपा गया, करने कुछ लगे।

माँठ[1] कौ माँठ बिगरौ।

(१—मटकी, नील के रंग का खमीर।) माँठ का माँठ बिगड़ा है। पूरा मामला ही गड़बड़ है।

माँस खायें माँस बड़े, घी खायें बल होय।
साग खायें ओझ[1] बड़े, बल कहाँ ते होय।।

(१ उदर, तोंद।)

"शाकेन रोगावर्द्धन्ते पयसा वद्धते तनुः।
घृतेन वर्द्धते वीर्यं मांसान्मांसं प्रवर्द्धते।।"—**चाणक्य नीति**

माघ तिला तिल बाढ़े। फागुन गोड़े काढ़े।।

माघ में दिन थोड़ा-थोड़ा करके बढ़ने लगता है। फागुन के महीने में प्रत्यक्ष बढ़ जाता है।

माघ मास की बादरी, और क्वाँर कौ घाम।
जे दोऊ जो कोऊ सहै करै किसानी काम।।

माटी कत, मोय छू तौ देखो।

मिट्टी कहती है, मुझे छूकर तो देखो। मकान की मरम्मत आदि का काम प्रारंभ में तो थोड़ा जान पड़ता है, परंतु शुरू करते ही बहुत बढ़ जाता है।

माटी की देवी तिलकनइँ कों भईं।

मिट्टी की देवी तिलक लगाने में ही खतम हो गयीं! माँगे-चूँगे में ही किसी वस्तु का धीरे-धीरे करके खतम हो जाना।

माटी छुएँ सोनों होत।

मिट्टी छूने से सोना होता है। भाग्यवान के लिए कहते हैं।

माते की लगुन में लगुन।

बड़े आदमी के काम के साथ अपना भी काम सट जाना।

माते दुके पयाँर में, को कये बैरी होय।

बड़े आदमियों की बात कह कर कौन उनसे बुराई मोल ले ?
कौन कहे कि माते घर के भीतर प्यार में छिपे बैठे हैं।

मान कौ पान भौत होत।

सम्मान के साथ दिया गया पान बड़ी चीज होती है।

मानों तौ देव, नईं तौ पथरा।

विश्वास से ही सब कुछ होता है।

मान्स के कामें मान्स आऊत।

मनुष्य ही मनुष्य के काम आता है।

मान्स कौ मान्स सें काम परत।

मनुष्य का मनुष्य से काम पड़ता है।

मान्स देख कें बात करी जात।

मनुष्य देख कर बात की जाती है। जो मनुष्य जैसा हो उससे वैसी बात करनी चाहिए।

मामा के आँगें ममयावरे की बातें।

जानकार के आगे अपनी समझदारी बघारना।

मार कें भग जइये, खाकें पर रइये।

मार के भाग जाना चाहिए, खाके लेट जाना चाहिए।

मार के आँगें भूत भगत।

मार से सब डरते हैं।

मार[1] जोतियें, कुले ब्याइये।

(१- काले रंग की उपजाऊ जमीन।) खेती करना चाहिए मार की जमीन में, विवाह करना चाहिए उच्च कुल में।

मारते के अँगारूँ और भागते के पछारूँ।

डरपोक के लिए कहते हैं।

मारतेखाँ सें सब डरात।

टेढ़े से सब डरते हैं।

मारी मरें मलारें गावें।

मरती भूखों हैं, परन्तु मल्हार गाने का शौक चर्राया।
पा० मरी जायें मलारे गावें।

मारै और रोउन न देय।

मारे मरें निरसई[1] के, मूँछन कों घी चुपरें।

(१–विपत्ति, गरीबी।) विपत्ति के मारे मरते हैं, परन्तु मूँछों में घी चुपड़ते हैं।

कण्या खाऊन मिशांस तूप लावणें—**मराठी**

मारे मरें निरसई के, दई की डकारें लेयँ।

भीख के टुकड़े बाजार में डकार।

मिठया की बिलइया हो रये।

हलवाई की बिल्ली हो रहे हो। जब कोई किसी बड़े आदमी के यहाँ अपनी घुस-पैठ करके खूब माल-टाल उड़ाये तब कहते हैं।

मियाँ बीबी राजी, तौ का करै काजी।

मियाँ छैल-छटाक, बीबी धूल फटाक।

मियाँ छैल चिकनिया बने फिरते हैं, बीबी धूल फटकती है।

मियाँ तौ छोड़त, पै बीबी नईं छोड़तीं।

जब कोई आदमी किसी के गले पड़ जाये।

मियाँ मरें आफत की ठेल। बीबी कहें शिकारे खेल।।

मियां तो आफत के मारे मरते हैं, बीबी कहती है—यौवन का रस लूटो।

मियाँ मरें, न रोजा टरें।

गले पड़ी मुसीबत के लिए।

मिसरी सी घुर रई।

मिश्री सी घुल रही है। मन ही मन प्रसन्न होना।

मीठे के बस जूँठो खैये।

मीठे के लोभ से जूठा खाना पड़ता है।

मीठो और भर कठौती।

अच्छी वस्तु चाहें और वह भी बहुत, ये दोनों एक साथ नहीं होते।

मीठी बातन पेट नईं भरत।

मीठी बातों से पेट नहीं भरता।

मीठो मीठो गप्प, कर (अ) ओ कर (अ) ओ थू।

अच्छी वस्तु तो अपने लिए चुन लेना और खराब दूसरों के लिए छोड़ देना।

मीन-मेख करबो।

बाल की खाल निकालना। मुहूर्त्त देखने के लिए मीन-मेष आदि राशियों का सूक्ष्म विचार किया जाता है। उसी से कहावत बनी।

मुंगरिया सर गई तौ भड़फोर लाक तोई बनी।

मोंगरी सड़ गयी है, फिर भी भाँड़े-बासन फोड़ने के लायक तो अब भी बनी है। बड़ा आदमी बिगड़ जाने पर भी छोटों को कुछ न कुछ हानि तो पहुँचा ही सकता है।

मुंठी से माते, बारा[१] सी मूँछें।

(१—झाड़ू।) बेमेल बात।

मुंडी गैया सदा कलोर।

बिना सींगों की गाय सदा बछिया ही जान पड़ती है। घर से बेफिक्र और अल्हड़ आदमी के लिए कहते हैं।

मुंड़चीरापन करबो।

मुँड़चीरा फकीरों की तरह किसी काम को करवाने के लिए मूँड़ चीरने की धमकी देना। धरना देकर बैठना।

मुफत कौ चंदन घिस मोरे नंदन।

मुफ्त का माल उड़ाने वाले के लिए कहते हैं।

मुफत कौ माल किये बुर (अ) ओ लगत।

मुफ्त का माल किसे बुरा लगता है? किसी को नहीं।

मुरगी कों तकुअई कौ घाव भौत।

मुरगी को तकुआ का घाव ही बहुत। गरीब आदमी थोड़ी भी हानि सहन नहीं कर सकता।

मुहर्रम की पैदाइस।

मनहूस आदमी।

मूँछन पै ताव दैबो।

अभिमान से मूँछ मरोड़ना। अकड़ दिखाना।

मूँछन कौ झूला डारबो।

मूँछों का झूला डालना। हास्य-जनक काम करना।

मूँड़ कौ मारौ बिच्छू कौं लौं जेय।

कोई आदमी गहरी चोट कहाँ तक सहन कर सकता है।

मूँड़ न सई कपार सई।

मूँड़ न सही कपार सही। अर्थात जो बात तुम कह रहे हो वही हमने भी कही। दोनों में कोई अंतर नहीं।

मूँड़ मुड़ाउतनईं ओरे परे।

कार्य आरम्भ करते ही विघ्न हुआ।

मूरख की सब रैन, चतुर की एक घड़ी।

मूरख के साथ घंटों रहने की अपेक्षा चतुर के साथ एक घड़ी रहना अच्छा। अथवा मूरख जिस काम को घंटों में नहीं कर सकता, चतुर उसे कुछ क्षणों में निपटा देता है।

मूरखन कें का सींग होत?

मूर्खों के क्या सींग होते हैं?

मूरख कों समझाइये, ज्ञान गाँठ को खोइये।

मूरख सें दुख रोओ, रोटा सें घी खोओ।

मूर्ख के सामने अपना दुखड़ा रोना उसी तरह व्यर्थ है जैसे मोटे अनाज की रोटी के साथ घी बरबाद करना।

मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं विरंचि सम।

मूर्ख आदमी को ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते।

मूल सें ब्याज प्यारो, पूत से नाती प्यारो।

मूसर सें ढोल पीटबो।

बेतुका काम करना।

मूसर सें मूँड़ मारबो।

मूर्ख के साथ समय नष्ट करना।

मूसर होतो तौ पाउनों का रिसाकें चलो जातो?

मूसल होता तो क्या पाहुना अप्रसन्न होकर चला जाता? घर में जब कोई वस्तु न हो और उसके लिए किसी को इन्कार करना पड़े तब विनोद में प्रयोग करते हैं।

मेघ समान जल नहीं, आप समान बल नहीं।

नास्तिमेघसमंतोयं नास्तिचात्मसमंबलम्।
नास्तिचक्षुः समंतेजो नास्तिधान्यसमंप्रियम्॥—**चाणक्य नीति**

मैं दूला की मौसी, धर नेग कौ टका।

जब कोई आदमी यह बताये कि 'मैं भी कुछ हूँ' तब व्यंग्य में उसके लिए कहते हैं।

मैन के पुतरा हो रये।

मोम के पुतले हो रहे हैं। कोई बहुत थोड़ी सी बात पर रूठ जाना या आँसू गिराने लगना।

मैर कीं, न माउर कीं।

न मैर में सम्मिलित होने की, और न माहुर लगवाने की। अर्थात किसी गिनती में नहीं। विवाह में एक परिवार के लोग ही मैर (मातृका) की पूजा में भाग लेते हैं। इसी प्रकार माहुर भी उस अवसर पर खास-खास स्त्रियों को ही लगाया जाता है।

मों आवो कौर अपनों नईं होत।

मुँह तक आया कौर भी अपना नहीं होता। अर्थात वह भी कभी-कभी हाथ से छिन जाता है।

मों कौ कौर छुड़ा लओ।

किसी की रोजी छीन ली।

मों कौ कौर नाक में नईं जातो रत।

मुँह का कौर नाक में नहीं चला जायगा। प्रकृति-विरुद्ध कोई काम नहीं होता। प्रायः उस समय कहते हैं जब रात्रि के समय किसी को एकाध मिनट के लिए अँधेरे में बैठ कर भोजन करने का मौका आ जाय और वह शिकायत करे कि रोशनी कहाँ गयी।

मों चीकनो, पेट खालो।

ऊपर से टीम-टाम बनाये रखने वाले के लिए।

मों दूर कै थापर।

जो काम करना है किया जा सकता है। कौन सी बाधा है?

मों देख कें टींका करबो।

अलग अलग आदमियों से अलग-अलग तरह् का बर्त्ताव करना। पक्षपात से काम लेना।

मों देख कें थापर मारबो।

मुँह् देख कर थप्पड़ मारना।

मों देख कें बात करबो।

मुंह् देख कर बात करना।

मों देखी सब कत।

मुँह् देखी सब कह्ते हैं। सब एक दूसरे का मुलाह्जा करते हैं।

मों देखे की प्रीत।

दिखावटी प्रेम।

मों देखो व्यवहार।

झूठा शिष्टाचार करना।

मों धो राखो।

मुँह् धो रखो। अर्थात् तुम जो चाह्ते हो वह् नहीं हो सकता, अथवा तुम इसके योग्य नहीं।

मों पै कछू, पीठ पछारूँ कछू।

मुँह् पर कुछ और पीठ पीछे कुछ और कह्ना।

मों पै कारख पुत गई।

बदनामी हो गयी।

मों माँगी मौत नइँ मिलत।

मनचाहा काम नहीं होता।

मों माँगे दाम नइँ मिलत।

किसी वस्तु के मुंह्-माँगे दाम नहीं मिलते।

मों में आई सो घर कई। (अथवा कै दई)

मुँह में आया सो कह दिया। बिना सोचे-विचारे कहने पर प्रयुक्त।

मों में आओ कौर पिछल गओ।

हाथ में आई वस्तु निकल गयी।

मों में मुसीका[१] दयें रओ।

(१—सुतली की जालीदार पट्टी जो खलिहान में बैलों से काम लेते समय उनके मुँह पर बाँध दी जाती है।) अर्थात चुप रहो। बोलो मत। मौन धारण किये रहो।

मों में राम राम, भीतर कसाई के काम।

पाखंडी साधू के लिए प्रयुक्त।

मोची के मोची रये।

जैसे के तैसे रहे।

मोंटी खाल दूद की हान। पतरी खाल दुधारू जान।।

मोटी खाल वाली गाय कम दूध देती है। पतली खाल वाली दुधार होती है।

मोय न पूँछे कोय, मैं लालन की मौसी।

बीच में जबर्दस्ती आ धमकने वाले को लक्ष्य करके व्यंग्य में।

मोय बूझ, मैं खरा।

अपने को बहुत स्पष्ट-वक्ता बताने वाले पर कटाक्ष।

मोरी खिलाई लुखरो और मोई सें लोखरफंद।

मेरी खिलाई हुई लोमड़ी और मुझसे ही चालबाजी!

मोरी दोऊ मीठी।

मेरी दोनों मीठी अपने को झूठा संतोष प्रदान करना।

मोरें पीसे पिसनारी, मैं राउर[१] पीसन जाँव!

(१—राजफुर। राजमहल। ठाकुरों का घर या मुहल्ला।) मेरे यहाँ तो पिसनहारी पीसती है और मैं ठाकुरों के घर पीसने जाऊँ!

मोरें है सो कोऊ कें नइयाँ।

मेरे है सो किसी के नहीं। अपनी वस्तु का अभिमान करने वाले के लिए कहते हैं।

मोरे आँगे कौ भओ लड़इया और मोई सें अब्बे-तब्बे।

मेरे सामने का पैदा हुआ गीदड़ और मुझसे ही अबे-तबे?

मोरे खुदाय अबरा-डबरा, मोई सें लगे बुलयान!

मेरे खुदाये हुए तो तालाब और मुझसे ही ऊँचे बोल! जिसकी वस्तु वही काम में न ला सके?

मोरे घर सें आग ल्याई, नाव धरो बैसाँदुर[1]!

(१ वैश्वानर, वैदिक अग्नि का एक नाम।) दूसरे के पास से लायी गयी वस्तु को अपनी बता कर उपस्थित करना, और उसके लिए दूसरे का एहसान न मानना।

मोरे तो मम्मा बीच हैं।

मेरे तो मामा मध्यस्थ हैं। किसी काम में दूसरे की ओट लेना।

मोरे बटखरा[1], मोई कों ठगें लेत।

(१–तौलने के बाँट।)

मोरे भरोसें रइयो ना, और बिरानो खान जइयो ना।

मेरे भरोसे रहना मत, और दूसरे के यहाँ भी खाने जाना मत।

मोरो छगन-मगन सोने को!

मेरा लड़का सोने का! अपनी वस्तु का अभिमान करना।

मोसें बची तब और ने पाई!

किसी वस्तु को जब कोई बाँट-बाट कर न खाये और स्वयं सब रख ले तब व्यंग्य में।

मौत की दबाई नइयाँ।

मौत का इलाज नहीं।

मौत के आँगें कोऊ कौ बस नइँ चलत।

मौत के आगे किसी का वश नहीं।

मौत सें सब हारे।

मौसी कौ घर नइयां।

मौसी के घर लाड़-प्यार बहुत होता है। अर्थात जरा सोच-समझ कर काम करो।

म्याऊँ कौ ठौर।

कठिन काम।

म्याऊँ कौ ठौर को पकरै?

असली कठिन काम कौन करे?

इस पर कथा है कि एक बार सब चूहों ने मिल कर परामर्श किया कि बिल्ली हमें मौका पाते ही खा जाती है। अतः उसके गले में एक घंटा बांध दिया जाय तौ उसके आने पर घंटे की आवाज सुन कर हम लोग भाग जाया करेंगे। बात सबको बहुत पसंद आयी। किसी ने कहा—हम बिल्ली की पूँछ पकड़ेंगें। किसी ने कहा—हम टांग पकड़ेंगे। इस तरह सब अपनी-अपनी वीरता बखान करने लगे। तब एक बूढ़े चूहे ने कहा कि यह तो सब ठीक। परन्तु म्याऊँ का ठौर यानी गर्दन कौन पकड़ेगा? यह सुन कर सब चूहे डर के मारे भाग गये।

य

यार की यारी सें काम, बाके फैलन सें का काम।

अपने मतलब से मतलब। कोई बुरा है तो बना रहे।

यार मोरे प्यारे, कुटो न्यारे न्यारे।

संगठन के बिना आदमी पिटता है।

यारन कों खीर, खसम कों थुली।

घर के लोगों की परवा न करना।

यारी करें बड़े फल पाये।

प्रेम का परिणाम अच्छा नहीं होता।

यारी करै सो बावरो कर कें छोड़े कूर।
कै तो ओर निबाहिये, कै फिर रैये दूर॥

(ओर निबाहना=अंत तक अपना कर्त्तव्य पूरा करना।)

र

रंग पै आई कोंसिया, कये खसम सें मंसिया।

लाड़ में आकर धृष्टता-पूर्ण बर्त्ताव करना।

रंग में भंग।

शुभकार्य में विघ्न।

रँड़ुआ की बिटिया और राँड़ कौ लरका। (जे दोऊ बिगर जात)

इसलिए कि लड़की की देखभाल माँ ही कर सकती है और लड़के की पिता।

रँधो भात।

रँधा भात शीघ्र बिगड़ जाता है और एक दिन के बाद ही खाने के योग्य नहीं रहता। अतः कहावत का प्रयोग ऐसी वस्तु के लिए होता है जो बहुत दिनों तक घर में न रखी जा सके, अथवा हज़म न की जा सके, जैसे विवाह के योग्य सयानी लड़की अथवा पराई थाती।

रँधो भात कोके पेट समात?

रँधा भात किसे हज़म हो सकता है?

रँधे भात कौ का राँधिये और गाय गीत कौ का गाइये।

कही बात को बार-बार क्या कहना।

रइये जाके राज में ताकी तैसी कइये।
ऊँट बिलाई लै गई (तौ) हाँजू हाँजू कइये।

रइये भुक्ख तौ रइये सुक्ख।

पेट को थोड़ा खाली रखने से आदमी सुख में रहता है।

रइये लटपट काट दिन, बरु घामें मा सोय।
छाँयं न बाकी बैठिये जो तरु पतरो होय।।

रई बात थोड़ी, जीन लगाम घोड़ी।

कोई व्यक्ति नाममात्र की वस्तु के मिलने से फूल उठे तब उसके प्रति व्यंग्य में।

किसी व्यक्ति को रास्ते में एक चाबुक पड़ी मिल गयी। इस पर उसने प्रसन्न होकर कहा— कि बस अब क्या है, जीन, लगाम, घोड़ी की कसर और रह गयी। चाबुक तो मिल गयी।

रखपत सो रखापत।

दूसरों की इज्जत रखो तो दूसरे तुम्हारी इज्जत रखेंगे।

रतनन के आँगे दिया नईं बरत।

रत्नों के आगे दीपक नहीं जलता।

रन जायँ, न राउर जूझें।

न लड़ाई पर जायँ, न राजा से जूझें। कुछ हो, हमें कोई मतलब नहीं।

रन जीत लओ।

रण जीत लिया। बड़ा काम कर लिया। व्यंग्य में।

रमतूला[१] दैबो।

(१–तुरही की तरह का एक बाजा।) ढिंढोरा पीटना। घोषणा करना।

रये तौ आप सें, नई तौ जाय सगे बाप सें।

अर्थात स्त्री सच्चरित्र रह सकती है तो अपने आप ही, अन्यथा अपने बाप के साथ भी बिगड़ जाती है।

(बुन्देलखंड में यह कहावत इसी रूप में प्रचलित है। परन्तु इसका गढ़वाली रूप है—रौ तौ अपणा आप नि रौ तौ अपणा बाप। अर्थात स्त्री सच्चरित्र रह सकती है तो अपने आप ही अपने बाप के कहने से नहीं।)

रवा[1] धरबो।

(१–सोने-चाँदी के आभूषणों पर छोटा गोल कण जमाने को रवा रखना कहते हैं।) उत्तेजित करना। उकसाना।

रवा पै जवा धरबो।

छोटी वस्तु पर बड़ी वस्तु जमाना। किसी को और अधिक उत्तेजित करना।

रस सें मरै तौ बिस काय कों देवे।

आसानी से काम हो जाय तो झंझट क्यों मोल ली जाय।

रस में बिस घोर दओ।

रंग में भंग कर दिया।

रहमन चाक कुमार कौ माँगें दिया[1] न देय।
छेद में डंडा डार कें चहे नाँद लै लेय॥

१–दीपक, छोटी मलसिया।

रहमन बिगरी आदि[1] की बनै न खरचै दाम।

(१––आरम्भ)

रहमन साँचे सूर कों बैरी करत बखान।

रहमन सोई मीत है भीर[1] परें ठहराय।

(१–कष्ट, विपत्ति।)

राँग सो ढँरका दओ।

राँगा जैसा ढुलका दिया। धीरे से, अथवा ढंग से अपनी बात कह देना। पिघला हुआ राँगा इतनी आसानी से लुढ़कता है कि पता नहीं चलता।

राँड़ के अँसुआ।

दिखावटी रोना।

राँड़ के पाँव सुहागिन लागी, होओ न बाई मोई सी।

जिसके भाग्य में सुख नहीं उसे सुखी बनाने का प्रयत्न करना।

राँड़ कौ गाँव बना राखो।

राँड़ का गाँव बना रखा है।

किसी स्थान पर बहुत मनमानी घरजानी होने पर प्रयुक्त।

राँड़ कौ रोबो बिरथा नईं जात।

राँड़ि के रोअल आ पुरुआ के बहल बिरथा ना जाइ। —भोज०

(राँड़ का रोना और पुरवाई का चलना व्यर्थ नहीं जाता)।

राँड़ कौ साँड़।

विधवा का लड़का, जो पिता के न होने से प्रायः उच्छृंखल बन जाता है।

राँड़ चलै तब ऐंड़ी-बेंड़ी।

राँड़ माँड़ई में खुसी।

गरीब को जो मिल जाय उसी में प्रसन्न रहता है।

राँड़ रोबे, क्वाँरी रोबे, संग लगी सतखसमी रोबे।

बेमतलब की बहुत अधिक सहानुभूति दिखाना।

राँड़, साँड़ उर अरना भैंसा। जे बिचलें तौ होवे कैसा?

राँड़, साँड़ और जंगली भैंसा, इन तीनों को नहीं छेड़ना चाहिए। बिगड़ने पर ये भयंकर रूप धारण कर लेते हैं।

राँड़ी के घर माँड़ी।

गरीब के घर आनंदोत्सव। व्यंग्य में।

राँड़ें तौ रंड़ापो तब काटें जब रंड़ुआ काटन देयँ।

विधवाएँ तो सच्चरित्र तब रहें जब रड़ुँआ रहने दें! ठीक ढँग से रहा तो तब जाय जब मित्र लोग रहने दें।

राँड़ि, रँड़ापा कटिहें कब।
उढ़रन से काटे पइहें तब। —भोज०

राँड़ें राँड़ें जुर मिलीं को किहि देय असीस!

एक से दुःखी मिलें तो कौन किसका दुःख बटाये।

राँड़ें रोवें सेर सेर, ऐबातीं[1] रोवें दो दो सेर।

(१–अहवाती, सधवा।) दुखियों का रोना ठीक है, परन्तु जो सुखी हैं वे भी रोयें तो यह आश्चर्य की बात है। अथवा संसार में कोई सुखी नहीं। दुखी तो रोते ही हैं, सुखी उनसे भी अधिक रोते हैं।

राछरी[1] कों घोड़ा माँगो, पाँव फेरें आइयो।

(१–विवाह के दिन मंडपगृह में प्रवेश करने के पूर्व वर के द्वारा की जाने वाली कन्या के घर की परिक्रमा, जो प्रायः घोड़े पर बैठ कर की जाती है।) राछरी के लिए घोड़ा माँगा और कहते हैं कि अभी लौट कर आना। कोई वस्तु जब मौके पर माँगने से न मिले और बहाना लेकर उसके लिए टरका दिया जाय तब कहते हैं।

राज-काज।

बड़े काम।

राज के लुटे और फागुन के कुटे कों कोऊ नइँ पूंछत।

राजा के द्वारा लूट लिये गये और होली के अवसर पर पिट गये की कौन फिक्र करता है?

राजन की राजा कयें, बाच्छन[1] की को कये।

(१—बादशाहों की।) बड़ों की बात बड़े ही कह सकते हैं, परन्तु जो बहुत बड़े हैं उनकी कौन कहे?

राज भरे की बातें।

व्यर्थ की इधर-उधर की बातें।

राजा करन कौ पारो।

राजा कर्ण का पहर, अर्थात दान का समय। सूर्य अथवा चन्द्र-ग्रहण के समय भंगी बसोर दान माँगते समय कहते हैं।

राजा करै सो न्याव। पाँसो परै सो दाव॥

दे० पाँसों परै सो दाव।

राजा कौ चेरी में, चेरी कौ जी महेरी में।

हर आदमी को अपनी-अपनी पड़ी रहती है।

राजा कौ धन तीन खायें; रोरा, घोरा और दंत निपोरा।

राजा का धन तीन बातों में खर्च होता है, इमारतें बनवाने में, फौज-फाँटा रखने में या खुशामदी दरबारियों में।

राजा छुयें रानी होय।

राजा जिस पर प्रसन्न होता है वही बड़ा आदमी बन जाता है।

राजा बुलायें, ठाँड़ी आवे।

बड़े आदमियों से सब डरते हैं। राजा ने बुलाया तो दौड़ी चली गयी।

राजा बोलें दल हाले।

राजा मरतन तौ मर गये, पै हँसबो नइँ गओ।

कठिन दु:ख भोगते हुए भी जब कोई अपनी आनबान न छोड़े तब प्राय: व्यंग्य में।

राजा मानी सो रानी।

दे० राजा छुये।

राजा हैं, सेरक सोनों भुसई में।

बड़े आदमियों की चर्चा करते समय कहते हैं कि उनका क्या कहना, सेर भर सोना तो उनके यहाँ यों ही भुस में पड़ा रहता है।

राजी-बिरजी दो जनें। झक मारें सौ जनें।।

दो आदमी किसी मामले में राजी हों तो कोई क्या कर सकता है।

रात कें लुखरो घर बनायें, भोर मोरी बलाय सें।

दे० भोर घर।

रात थोरी, स्वाँग भौत।

समय थोड़ा और काम बहुत।

रात भर का घोंट[1] फोरी ?

(१–एक वृक्ष और उसका फल, जो चमड़ा पकाने के काम आता है।)
अर्थात क्या करते रहे ? रात का काम रात में क्यों नहीं किया ?

रात भर का चना दरे ?

दे० ऊपर।

रात भर पीसो पारे सें उठाओ।

परिश्रम बहुत, लाभ थोड़ा।

रात भर मिमयानी, एक बुकेरू ब्यानी।

रात भर रोये, मरौ एकऊ नईं।

रात भरे दिन रीते। पेटन नें जग जीते॥

पेट से संसार हारा है। रात में भरो, दिन में खाली।

रात रतेंबा ना मिलै, छै मइना नों नोंन।
पूँछे चील चमार सों; सो बैला है कौन ?

चील चमार से कहती है कि वह बैल कौन सा है जिसे रात में चारा-दाना नहीं मिलता और छः-छः महीने तक नमक। अभिप्राय यह कि ऐसा बैल बहुत दिनों जीवित नहीं रह सकता। मरे तो माँस खाया जाय।

रानी जाये पूत।

बड़े आदमी के सपूत। व्यंग्य में।

राम झरोखाँ बैठके सबको मुजरा लेत।
जीकी जैसी चाकरी तीकों तैसो देत॥

राम न रूठे, सब जग रूठे।

राम नाम की माया, कऊँ धूप कऊँ छाया।

राम नाम की लूट है लूटत बने सो लूट।
अंत काल पछतायगा प्रान जायेंगे छूट॥

राम नाम के कारने सब धन डारे खोय।
मूरख जानें गिर गयो, दिन दिन दूनों होय॥

राम नाम लड्डू गोपाल नाम घी।
हरि का नाम मिस्री सो घोर घोर पी।।

राम नाम सब कोई कहे, दसरथ कहे न कोय।
एक बार दसरथ कहे, कोट जज्ञ फल होय।।

राम नाम सत्य है।

मुरदे को श्मशान ले जाते समय कहते हैं।

राम बिना दुख कौन हरे । बरखा बिन सागर कौन भरे।।
लच्छमी[1] बिन आदर कौन करे। माता बिन भोजन कौन धरे।।

(१—गृहलक्ष्मी, पत्नी।)

राम भजन कों टेढ़े-मेढ़े, आल्हा कों अन्यारे।
जो कऊँ सुन पायें फाग-दिवारी, खोद खायें गलयारे।।

राम भजन में तो मन नहीं लगता, परन्तु अल्हा सुनने के लिए सदैव तैयार। और यदि कहीं फाग-दिवारी के गीत हो रहे हों तो क्या पूछना। रास्ता ही खंद डालें।

राम भरोसें खेती है।

सब राम का भरोसा है।

राम भरोसे जे रहें, पर्वत पै हरयायँ।
तुलसी बिरवा बाग के, सींचत ही कुम्हलायँ।।

राम मिलाई जोड़ी, इक अंधा इक कोड़ी।

दोनों एक से।

राम राखे, कोऊ न चाखे।

राम रक्षक है तो कोई क्या बिगाड़ सकता है ?

राम राम कर कें दिन तेर करबो।

राम राम करके दिन काटना। कष्ट में रहना।

राम राम कहत ते, उर्दन कों जोतत ते।

विपद्ग्रस्त के लिए।

राम राम कै आवै चाय न कै आवै, माला दम न पावै।

रामभजन का पाखंड।

राम राम भजें जा, जई गैल धरें जा।

राम का भजन करो और जिस रास्ते जा रहे हो उसी पर चले चलो।

राम-लछमन की जोड़ी।

दो सगे भाई जिनमें बहुत प्रेम हो।

रिजाले सें काम परो।

रिजाले अर्थात झगड़ालू से काम पड़ा है।

रिन की अगाई, ब्याव की पछाई।

ऋण की अगाड़ी, विवाह की पिछाड़ी, दोनों कष्टदायक होती हैं। ऋण लेकर बाद में ब्याज समेत चुकाना पड़ता है और विवाह में, उसका सब प्रबंध पहले से ही करना पड़ता है, बाद में छुट्टी मिल जाती है।

रिपट परे की हर गंगा।

अकस्मात लाभ हो जाना। कोई वस्तु अनचाही मिलना।

रीते कुआ पतोरन नइँ भरत।

रीते कुए पत्तों से नहीं भरते। महत्त्वाकांक्षी थोड़े में संतुष्ट नहीं होता।

रुचै सो पचै।

जो वस्तु खाने में अच्छी लगे वह आसानी से पचती भी है।

रूखी खायँ, मूछन खाँ घी चुपरें।

दे० मारे मरें निरसई के।

रूखी जुरें ना, चुपर कें चायँ।

रूखी (रोटी) तो खाने को मिलती नहीं, चुपड़ कर चाहते हैं।

रूखी-सूखी नोंन सें, बाबाजी कयें कौन सें।

रूखी-सूखी नमक से खा लेते हैं, बाबाजी अपनी विपत्ति किससे कहें ?

रूप की रोवे, करम की हँसे।

रूपवती लड़कियों को प्राय: अच्छा घर नहीं मिलता, और वे बैठ कर रोती हैं, परन्तु जिनका भाग्य प्रबल होता है वे अच्छे घर पहुँच कर सुख से जीवन व्यतीत करती हैं। भाग्य ही सब कुछ है, रूप कुछ नहीं।

रेख में मेख मारबो।

भाग्य से लड़ना।

रेवन ककवारे[1] की कुतिया।

ऐसा आदमी जो बहुत दौड़धूप करने पर भी काम में सफल न हो। न इधर का न उधर का।

रेवन ककवारा[1] ये दो गाँव झाँसी जिले में मऊ से गुरसराय जाने वाली सड़क पर पास ही पास हैं। कहानी है कि एक बार इन दोनों गाँवों में पंगत हुई। वहाँ एक कुतिया थी। उसने सोचा कि दोनों जगह का जूठन खाना चाहिए। पहिले रेवन गयी। जाकर देखा कि लोग अब भी भोजन कर रहे हैं। वहाँ विलम्ब देख कर विचार किया कि तब तक ककवारे में जाकर खा आऊँ। परन्तु वहां भी यही हाल देखा तो फिर रेवन वापिस आयी। वहाँ जाकर देखती क्या है कि लोग खाकर चले गये हैं और जूठन भी भंगी उठा ले गये। यह देख कर बहुत घबरायी और उलटे पैरों ककवारे को भागी। परन्तु वहाँ भी पंगत उठ गयी थी और जूठन का कहीं नाम नहीं था। इससे वह बड़ी निराश हुई और भूख के मारे दोनों गाँव के बीच में आकर मर गयी।

रोईं काय ? कई—नंद ने देख लओ।

रोईं क्यों? कहा—नंद ने देख लिया। कोई स्त्री अकेले में भले ही अपने पति के हाथ से नित्य पिटती रहे, परन्तु कोई यदि देख ले, विशेषकर देखने वाली ननद हो, तो वह रो पड़ेगी। दूसरे के सामने अपमान बर्दाश्त नहीं होता।

रोउत काय ? कई—भगवान् ने सकल ऐसी बनाई ?

रोते क्यों? कहा—भगवान ने शकल ही ऐसी बनायी? सदैव मुँह फुलाये रखने वाले के लिए कहते हैं।

रोउत गये, मरे की खबर ल्याये।

बेमन से काम करना। अनिच्छापूर्वक तो गये और फिर लौट कर बुरी खबर लाय।

रोउत हतीं और सासरे में मिलीं।

बहाना मिलने पर मन चाहा काम करना। ससुराल में यदि मायके का कोई आदमी मिल जाय तो स्त्री को रुलाई आ जाती है।

रोग कौ घर खाँसी। लड़ाई कौ घर हाँसी॥

रोजन कों नोंन दैबो।

नील गायों को नमक खिलाना। निरर्थक काम करना।

रोटियन कों रये, बई में ओले-झोले।

रोटियों पर नौकर रहे, उसमें भी झोलझाल। कम मज़दूरी पर काम करना और वह भी पूरी न मिलना।

रोटी ऊपर साग। मोरें तौ नित्तई फाग॥

घर में रोटी और साग खाने को हो, तो क्या पूछना? नित्य फाग-दिवाली है।

रोटियन पै लात मारबो।

रोजी को ठुकराना।

रोयँ बनें ना गायें, मातेजू मों बायें।

कुछ करते-धरते न बनना। अक्क-बक्क भूल जाना।

रो-रो डुकरियन गीत गाये, लरकन खाँ आवे हाँसी।

बुढ़ियों ने रो-रो कर तो गीत गाये, लड़कों को हँसी आती है। किसी के परिश्रम को न सराहना, बल्कि हँसना।

रोवे कों हतीं और मुंस ने मारो।

रोने को थी और इतने में पति ने मार दिया। रोने का बहाना मिल गया।

रौल-चौल होबो।

चहल-पहल होना।

ल

लंका जीत आये।

बड़ा काम कर आये।

लंका में सब बावन गज के।

छोटे भी जहाँ बड़ों के कान काटें।

लंका के जे बड़ छोट सेहो ओन्चास हाथ के—भोजपुरी

लंका कों सोनों बताबो।

लंका को सोना बताना। जहाँ जो वस्तु पहिले से प्रचुर मात्रा में मौजूद है वहाँ उसे ले जाने की हास्यजनक चेष्टा करना।

लँगड़े लूले गये बराते। आगौनी में खाईं लातें॥

कहीं जाने पर अच्छी खातिर न होना।

लँगोटी में फाग खेलबो।

थोड़ा खर्च करके अपना काम बना लेना। फाग केवल लँगोटी में नहीं खेली जाती। उसमें तो अच्छे कपड़े पहिने जाते हैं।

लंपा[१] कैसी बोंड़ी खटकबो।

(१—एक घास का काँटा जो बहुत बारीक होता है और चुभ जाने पर कसकता है।) हृदय में किसी बात का चुभ जाना और बराबर खटकना।

लंपा कैसे ऐंठत।

लंपा की तरह ऐंठते हैं। बहुत अकड़ते हैं। घमंड करते हैं। सीधे बात नहीं करते। लंपीले घास पर पानी डालने से वह एँठता है।

लकरी बेंचत लाखन देखे, घास खोदतन धनधनरा।
अमर हते ते मरतन देखे, तुमई भले मोरे ठनठनरा॥

किसी स्त्री का अपने मूर्ख पति के प्रति कथन। यह पाली नाम-सिद्धि जातक है। बुन्देली में इसकी कथा इस प्रकार है—

एक स्त्री के पति का नाम था ठनठनरा। उसको यह नाम पसंद नहीं था। वह पति के लिए कोई अच्छा नाम ढूढ़ने के लिए निकली। एक व्यक्ति लकड़ियों

का बोझ लिए जा रहा था। उसका नाम था लाखन। दूसरा घास खोद रहा था। उसका नाम था धन-धनरा। एक व्यक्ति मर गया था और उसकी अरथी जा रही थी, उसका नाम था अमर। स्त्री ने यह सब देख-सुन कर मन में सोचा कि नाम से कुछ आता-जाता नहीं, मेरे पति का जो नाम है वही अच्छा और उसने ऊपर की गाथा कही।

राजस्थान में यह कहावत इस प्रकार प्रचलित है:—

अमरा तो म्हे मरता देख्या भागत देख्या सूरा।
कान्ह गुवाल्यो टाट चराभा लिछमी मारै कूड़ा।
आगै सैं तो पाछा भला, नाम भला लहटूरा।

और इसका मराठी रूप यह है:—

अमरसिंग तो मर गये भीक मागे धनपाल
लक्ष्मी तो गोंवरचा बेंची भलें बिचारे ठणठणपाल॥

लकीर के फकीर।

पुरानी ही चाल पर चलने वाले।

लग गओ तौ तीर नईं तौ तुक्का

काम करने पर कुछ न कुछ तो होगा ही।

लगन में बिघन।

शुभकार्य में विघ्न।

लगी बुरई होत।

मन में कोई बात चुभ जाने पर चैन नहीं पड़ता।

लगै न बिलगै रँग चोखो आवे।

मुफ्त में ही काम बनाने का प्रयत्न करना।

लगै बई कौ नाव ओखद।

जिससे रोग अच्छा हो वही दवा।

लटें छुटकार कें खेलबो।

बेशरम बन कर काम करना।

लटे-पटे दिन काटिये।

बुरे दिन भी जैसे बने काटना चाहिए।

लटो हाथी लाख कौ।

बड़ा आदमी बिगड़ने पर भी अपना मूल्य रखता है।

लट्ठन मारीं ना मरें फूलन मारी मर जायें।

रोने का पाखंड करना।

लड़इयन में गोली खोबो।

गीदड़ों में गोली खोना। किसी पर व्यर्थ पैसा खर्च करना।

लड़कवंदोर में परबो।

लड़कों के साथ मिल कर लड़कपन करना।

लड़आ ढँड़क रये।

लड्डू लुढ़क रहे हैं। अर्थात बड़े प्रेम की बातें हो रही हैं।

लड़ें न भिड़ें, जिरा[1] पैरें फिरें।

(१—व्यर्थ बहादुरी की डींग मारना।)

लड़ें साँड़ बारी कौ भुरकन।

दो बड़े आदमियों की लड़ाई में बीच के छोटे आदमी मारे जाते हैं।

लड़ै सिपाई नाव सरदार कौ।

लड़ता सिपाही है नाम सरदार का होता है।

लपकी गाय गुलेंदे[1] खाय। बेर बेर महुआ तर जाय॥

(१—महुआ नामक वृक्ष का पका फल जो खाने में मीठा होता है।) मुफ्त का माल खाने की आदत पड़ जाने पर बार-बार उसी जगह जाना जहाँ खाने को मिलता है।

लपसी सी चाटत।

किसी की बातचीत के बीच में बार-बार बोल उठने वाले के लिए कहते हैं।

लबरा के नौ हर चलें, खेत पै गयें एकऊ नईं।

महान झूठे के लिए प्रयुक्त।

लबा फँसो, तीतर फँसो, तू कित फँसी बटेर।
संगत के परभाव सें, रै गई आँख नटेर॥

बुरे के साथ रह कर निर्दोष भी कष्ट भोगते हैं।

लरका की आँखें छोटी काय ? कई बेई तो खोद-खोदकें काढ़ीं।

लड़के की आँखें छोटी क्यों ? कहा—उनको ही तो खोद-खोद कर निकाला। कोई काम बहुत परिश्रम से किया गया हो, परन्तु दूसरे उसमें कोई अच्छाई न देख कर केवल आलोचना ही करें तब।

लरका के भाग्गन लरकौरी जियत।

पुत्र के भाग्य से पुत्रवती जीवित रहती है। एक के भाग्य से दूसरे का भाग्य लगा रहता है।

लरका कोऊ कौ क्वाँरो नईं रत।

साधन होना चाहिए, किसी का कोई काम रुका नहीं रहता।

लरकन की माया।

सब लड़कों की ही माया है। लड़कों से ही घर शोभा देता है।

लरकन कौ खेल बना राखो।

काम आसान समझ लिया है।

लरका तौ अपनो ब्याउत, इतै मूँछें की पै मरोरत।

लड़का तो अपना ब्याहते हैं, यहाँ मूँछें किस पर मरोड़ते हैं। कोई आदमी निःस्वार्थ भाव से किसी के काम में सहायता कर रहा हो परन्तु वह उल्टे उस पर नाराज़ हो पड़े तब।

लरका भये सयाने, दालुद्दर गये भयाने[1]।

(१–दूसरे ही दिन, सबेरे।) लड़के जब खाने-कमाने लायक हो जाते हैं तब घर से दरिद्रता बिदा माँग जाती है।

लरका सीके नाऊ कौ, मूँड़ कटै किसान[1] कौ।

(१—गाँव में नाई, धोबी आदि जिन लोगों के यहाँ नियमित रूप से काम करते हैं वे उनके किसान कहलाते हैं।) कोई नौसिखिया जबर्दस्ती दूसरे के काम में हाथ डाल कर उसे बिगाड़ दे तब।

लरन जू, मरन जू, चिरंजू।

लड़ कर, मरने की धमकी देकर और 'चिरंजीव रहो' इस तरह का आशीर्वाद देकर, जैसे भी बने तैसे, अपना कार्यसिद्ध करने वाले के लिए।

लल्लू मरें चाय जगधर, हमें का?

अर्थात हमें तो अपने काम से मतलब, कोई मरे।

लस्कर कों का डुकरयईं पीसें?

फौज के लिए क्या बूढ़ी औरतें ही पीसेंगी? अर्थात यह काम क्या मुझे ही करना पड़ेगा?

ब्रिटिश शासन-काल के प्रारंभ के दिनों में गांव में होकर जब कभी गोरों की कोई पैदल पलटन निकलती थी तो गांव भर को उसके लिए रसद जुटानी पड़ती थी और प्रायः बूढ़ी औरतें आटा पीस कर देती थीं।

लाख कई पै एक नईं मानी।

किसी की बात न मानना।

लाख जाय पै साख न जाय।

भले ही धन चला जाय पर इज्ज़त न जाय।

लाख ताँ सवा लाख।

जहाँ इतना खर्च हुआ वहाँ थोड़ा और सही।

लाख बात की एक बात।

सारांश की बात।

पेम सों बिरूधौ जिनि हाहा, हियो रूँधौ जिनि
ऊधौ लाख बातनि की सूधी एक बात है। —आलम

लाख[1] सें कोऊ लखेसरी[2] नईं बनत।

(१-लाह, एक विशेष प्रकार के कीड़ों द्वारा वृक्षों पर बना एक लाल पदार्थ। २-लखपती।) साधारण व्यापार करके कोई बड़ा आदमी नहीं बनता।

लातन की देवी बातन नईं मानतीं।

नीच समझाने से नहीं मानता। पीटना ही उसका इलाज है।

लातन मारी बात फिरबो।

किसी बात का तिरस्कार करना।

लाद देओ, लदाउन देओ, लादनवारो संग दो।

माल लाद दो, लादने की मजदूरी भी दो, और लादने वाला भी साथ दो। एक के बाद एक करके जब कोई आदमी तमाम उचित-अनुचित सुविधाएं माँगता है तब।

लाद दे, लदावन दे, लादन वाला संग दे,
बैठने कुं टट्टू दे और ओढ़ने को पट्टू दे।—गुजराती

लाद लई तब लाज काय की।

जिसने बेशरमी लाद ली उसे शरम कहाँ?

लावर बड़ौ कै दोंदर?

झूठा बड़ा या उपद्रवी? निःसंदेह उपद्रवी बड़ा होता है।

लालच बुरी बलाय।

लालच बुरी बला है।

लाल बुझक्कड़ की उक्तियाँः—

लालबुझक्कड़ बुज्झकें और जिन बुज्झो कोय।
करी-बड़ंगा टार कें ऊपर ही कों लेव।

किसी गाँव में एक छोटा लड़का अपने दोनों हाथ खंभे के दोनों तरफ फैलाये खड़ा था। उसी समय उसके बाप ने उसके हाथ में थोड़े से चने रख दिये। अब सब कोई इस असमंजस में पड़ गये कि हाथ से चना गिराये बिना लड़का कैसे हाथ बाहर निकालेगा। जब किसी की बुद्धि ने कुछ काम न दिया तब लाल

बुझक्कड़ बुलाये गये। उन्होंने आकर सम्मति दी कि ऊपर से कड़ी बड़ंगा हटा-कर लड़के को ऊपर ही ऊपर उठा लिया जाय, इससे अंजलि के चने नहीं गिरेंगे, और लड़का भी निकल आयेगा। इसके सिवाय अन्य उपाय नहीं।

लाल बुझक्कड़ बुज्झकें और जिन बुज्झो कोय।
पाँवन चक्को बाँद कें हिन्न कुदक गओ होय॥

किसी गाँव में होकर कोई हाथी निकल गया था। इस कारण उसके पैर के चिन्ह जमीन पर बने थे। गाँव वाले उस बड़े गोलाकार चिन्ह को देख कर भयभीत हो गये। अपनी शंका को दूर करने के लिए उन्होंने लाल बुझक्कड़ को बुलाया। लाल बुझक्कड़ ने उस चिन्ह को देख कर बताया कि कोई हिरन अपने पैर में चक्की बांध कर कूदा है।

लाल बुझक्कड़ बुज्झ के और जिन बुज्झो कोय।
गड्डमगड्डा दै करौ सो तन-तन सबकों होय॥

एक बार कहीं बड़ी ज्योनार में भंडार में रखे हुए भात में बिल्ली टट्टी कर गयी। सब लोग बड़ी चिन्ता में पड़े कि क्या किया जाय? अंत में लाल बुझक्कड़ ने आकर कहा—इसमें इतनी सोचा-बिचारी की बात क्या। इसे भात में ही गड्डमगड्ड कर दो। थोड़ा-थोड़ा सबको हो जायगा।

लाल बुझक्कड़ बुज्झ कें और जिन बुज्झो कोय।
हाथ काट कें दो करो तब निरवारो होय॥

एक लड़के ने किसी घड़े में अपने दोनों हाथ डाल दिये और उसमें रखे हुए चने मुठी में लेकर एक साथ निकालने लगा। ऐसा करने में उसके हाथ फँस गये। अब न लड़का मुठी खोले और न उसके हाथ निकलें। तब लाल बुझक्कड़ ने आकर कहा कि इसके हाथ काट कर अलग कर दिये जायँ। इसके सिवा विपत्ति से छुटकारा पाने का और कोई उपाय नहीं।

लाल बुझक्कड़ बुज्झ कें और न काहू जानी।
पुरानी होकें गिर पड़ी खुदा की सुरमादानी॥

एक बार लाल बुझक्कड़ अपने मित्रों के साथ कहीं जा रहे थे। इतने में उन लोगों को एक कोल्हू खेत में पड़ा दिखायी दिया। उनके साथियों ने पूछा—अरे

महाराज, यह क्या है? लाल बुझक्कड़ को उनकी बुद्धि पर बड़ा तरस आया और उन्होंने ऊपर की बात कही।

लाल बुझक्कड़ बुज्झ कें और जिन बुज्झो कोय।
कुआ पुरानो हो गओ सो गुद कड़ आई होय॥

एक बार किसी गाँव के एक कुँए में गेंदे का फूल गिर गया। पनहारी जब पानी भरने गयी तो उस पीली-पीली वस्तु को देख कर बड़ी घबरायी कि यह क्या है। अंत में यह खबर लाल बुझक्कड़ के पास पहुँची। उन्होंने आकर बताया कि कुआ बहुत पुराना हो गया है। इसलिए यह उसकी गुद निकल आयी है।

(ये लाल बुझक्कड़ कौन थे और हमारे देश के किस ग्राम को कब अपने जन्म से उन्होंने धन्य किया दुर्भाग्यवश इसका कहीं कुछ पता नहीं चलता। परन्तु कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसे व्यक्तियों का जो गूढ़ से गूढ़ विषयों पर बिना पूछे ही सदैव अपनी सम्मति प्रदान करने के लिए उद्यत रहते हैं, किसी देशकाल में अभाव नहीं रहा। उनको लक्ष्य करके ही लाल बुझक्कड़ की ये उक्तियाँ कही जाती हैं। **—संपादक**)

लासुन खाओ और ब्याध न गई।

अनुचित काम भी किया और कोई लाभ न हुआ।

लासुन घाईं बसात।

लहसुन की तरह गँधाते हैं, अर्थात बुरे लगते हैं।

लिपी-पुती बातें करबो।

गोलमाल बात करना।

लिपो-पुतो आँगन और पैरी-ओढी नार।

ये दोनों देखने में अच्छे लगते हैं।

लील[1] कौ टीका लग गओ।

(१–नीला रंग, नील।) बदनाम हो गये।

लुखरगड़े[1] में फँस गये।

(१–लुखरगड़ा, लोमड़ी का बिल जो संकीर्ण और टेढ़ा-मेढ़ा होता है।) अर्थात चक्कर में पड़ गये।

लुगरयाव लँगूरा बिजरी की लौंकन सें डरात।

जलती हुई लकड़ी दिखा कर भयभीत किया गया बंदर बिजली की चमक से डरता है। एक बार कोई कटु अनुभव हो जाने पर आदमी भविष्य में उस विषय में आवश्यकता से अधिक सावधानी बर्तता है।

लुटे के लुटे और लोड़न कुटे।

लुटे भी और पत्थरों से पिटे भी। दोहरी हानि हुई।

लुड़िये सोनों लगबो।

लोढ़ा से सोने का स्पर्श होना। भाग्योदय होना।

लुवा भैय्या ल्याये, पै काम तौ भौजाई अई सें परै।

ससुराल से कोई लड़की मायके आयी है। उससे कहा जा रहा है कि इस भरोसे मत रहना कि तुम्हें भैया लिवा लाये हैं। काम तो नित्य भावज से ही पड़ेगा। जब कोई किसी एक आदमी के बल-बूते पर दूसरे खास आदमी की अवज्ञा करना चाहे तब कहते हैं।

लूगरन भाँवरें पर रईं।

लूगरों से भाँवरें पड़ रही हैं। किसी काम में क्षण-क्षण पर विघ्न-बाधाएँ आ रही हों तब।

लूगरन भाँवरें पर रईं, नेग कौ टका धरई दो।

दूसरे की विपत्ति की परवाह न करके अपने ही मतलब की बात करना।

लूट कौ मूसरई भौत।

मुफ्त में जो मिला वही अच्छा।

लेंड़ा[1] हाथी घर (अ) ई की फौज मारत।

(१–कायर, निकम्मा।) कायर आदमी घर का ही सत्यानाश करता है।

लैन गईं परथन[1], कुत्ता पींड़[2] उठा लै गओ।

(१–वह सूखा आटा जिसे रोटी बेलने के समय लोई पर लपेटते हैं। २–गुँदे हुए आटे की पिंडी।) एक काम करने गये तब तक दूसरा चौपट हो गया।

लैन गईं पूत, दै आईं भतार।

लाभ के लिए काम किया, उल्टी हानि हो गयी।

लैन गईं सीदो, उल्टो आन बीदो।

किसी ब्राह्मण की स्त्री सीधा लेने गयी, परन्तु इस प्रकार की विपत्ति में पड़ गयी कि उल्टा उसे ही सीधा देना पड़ा। लेने के देने पड़ जाना।

लैना एक न देना दो।

न किसी का एक लेना है, न दो देना है। किसी से कोई प्रयोजन नहीं।

लैना न देना, ऊपर सें तनैना[1]।

(१–भौंहें तानना, नाराज होना।)

लैनो करकें दैनों करिये, मरत न होओ तौ ऊसइँ मरिये।

ऋण लेकर किसी को ऋण दिया जाय तो यह बेमौत मरना है।

लोओ[1] जाने लुहार जानें धोंकनहारे की बलाय जानें।

(१–लोहा।) किसी बात से कोई मतलब न रखना।

लोग कौ मुंस[1] कड़ुआ।

(१–पति, स्वामी।) स्त्री जिस प्रकार अपने पति के वश में रहती है उसी प्रकार मनुष्य यदि किसी के वश में रहता है तो वह ऋण है।

लोग चले मोय हूमस[1] लागी।

(१–उमंग, इच्छा, कामना।) देखा-देखी काम करना। लोग कहीं जा रहे हैं तो उनके साथ जाने की हमें भी इच्छा।

लोबान जरो और मुरदा चेते।

स्वार्थ की बात सुन कर आदमी सजग हो जाता है।

लोभी कौ धन लाबर खाय।

लोभी का धन लफंगे खाते हैं।

लोभी गुरू, लालची चेला, दोऊ नरक में ठेलमठेला।

चाहे गुरू हों या चेला, लोभ करने से दोनों नरक में जाते हैं।

लौटौ बराती और गुजरो गवाई। (जे फिर नईं पूँछे जात)।

लौटा बराती और अदालत में गवाही देकर आया हुआ आदमी इन्हें फिर कोई नहीं पूछता।

स

संकाहूली[1] बन में फूली। सास मरी उर नंद झड़ूली[2]॥

(१—एक जंगली बूटी, शंखपुष्पी । २—झडूले बच्चेवाली, अर्थात पुत्रवती । जिस बच्चे का मुंडन-संस्कार न हुआ हो उसे झडूला या झलरा कहते हैं।) कहावत की प्रथम पंक्ति केवल तुक मिलाने के लिए है।

सास मरी और ननद के लड़का हुआ; हिसाब फिर ज्यों का त्यों।

संगत कीजे साधु की, बनत बनत बन जाय।

संगत गुन अनेक फल

संडामर्कट ।

(१—शंड + अमर्क = शंडामर्क। शंड और अमर्क ये दोनों शुक्राचार्य के पुत्र और प्रहलाद के शिक्षागुरु थे। प्रह्लाद को कृष्णनाम लेने से मना किया करते थे।) उग्र और स्वार्थी व्यक्ति।

संतोषी सदा सुखी।

सँदेसन खेती नईं होत।

खेती स्वयं देखनी पड़ती है। नौकरों या मजदूरों के भरोसे नहीं होती।

संपत सें भेंट नईं दलुद्दर[1] की जेट[2] काय को छोड़ो।

(१—दरिद्रता, गरीबी । २—पोटली, ढेरी) जो मिले वही लो।

संपत सें भेंट नईं दलुद्दर सें लठालठी।

बिना प्रयोजन झगड़ा करने पर कहते हैं।

संपत होय तौ घर भलौ, नातर[1] भलौ बिदेस।

(१—नहीं तो, अन्यथा)

सइयाँ भये कुतवाल अब डर काये को।

सकरें[1] देबी सुमरों तोय, मुकतें[2] खबर बिसर गई मोय।

(१–संकट में। २–मुक्ति होने पर, संकट से छुटकारा पाने पर।)
विपत्ति में सब भगवान का स्मरण करते हैं। बाद में भूल जाते हैं।

सकरे में समदियानो[1]।

(१–दो समधियों या समधिनों के परस्पर मिलने का दस्तूर। समधी के आगत-स्वागत में होने वाला आयोजन, ज्योनार आदि। समधौरा।) छोटी जगह में कोई बड़ा काम फैलाना।

सकल न सूरत, सनीचर कैसी मूरत।

बहुत कुरूप। मनहूस।

सकल[1] बस्त पैदा करै, नोंन गाँठ कौ खाय।
जाको मारो बानिया, जरा-मूर सें जाय॥

(१–वस्तु, चीज।) सच्चा वैश्य वही है जो कमा कर खाये।

सकल बस्त संग्रह करै जब तब आवै काम।

सकल भूमि गोपाल की यामें अटक कहा।

जो यामें अटक रहा, सोई अटक रहा॥

सक्कर के घुल्ला।

शर्मीला आदमी।

सगी सास मानें ना, धोबिन के पाँव लगें।

पुत्र-जन्म होने पर स्त्रियाँ धोबिन, बसोर आदि के पैर छूकर आशीर्वाद लेती हैं। उसी ओर संकेत है।

सत की बाँदी लच्छमी।

लक्ष्मी सत्य से बँधी है। जहाँ सत्य है वहाँ लक्ष्मी रहती हैं।

सतुआ बाँदकें पाछें परबो।

बुरी तरह किसी काम के पीछे पड़ जाना। दम न लेना। दृढ़ संकल्प बनाये रखना।

सत्त तौ सातई घरी कौ होत।

सत्य तौ सात ही घड़ी का होता है। अर्थात सत्य की परीक्षा तो थोड़े में ही हो जाती है। अथवा कोई घड़ी दो घड़ी के लिए भी सत्य के कठिन व्रत का पालन कर सके तो बहुत समझो।

सत्तरा बड़ैरे[1] करिया करे।

(१–बड़ैरा, घर के छप्पर का ऊपरी हिस्सा।) सत्तरह बड़ैरे काले किये, अर्थात सत्तरह घर बदनाम किये। प्रायः दुश्चरित्र स्त्री के लिए कहते हैं।

सदई दिवारी संत घर जो खावे कों होय।

घर में खाने को हो तो सदा ही दिवाली।

सदऊँ कोऊ की नईं रई।

सदा किसी की नहीं रही। किसी का बड़प्पन सदा नहीं बना रहता।

सदऊँ रोउत (अ) ई रये।

सदा रोते ही जन्म बीता। सदैव 'हाय-हाय' करते रहे।

सदा के दुखी, नाव बखतावर।

सदा न फूलैं तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न राजा रन चढ़ें, सदा न जोबन होय॥

सदा दिन एक से नहीं रहते। ये बुन्देलखंड के प्रसिद्ध लोकगीत–'अमानसिंह कौ राछरौ' की प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं जो कहावत बन गयी हैं।

सदा न फूले केतकी, सदा न सावन होय।
सदा न जोबन थिर रहे, सदा न जीवे कोय।

सदा बेल हरयाय।

सदा बेल हरयाती रहे। ब्राह्मणों की ओर से आशीर्वाद।

सदा भुवानी दाहिनी, सम्मुख रहें गनेस।
पाँच देव रच्छा करें, ब्रह्मा, विश्नु, महेस॥

आशीर्वाद।

सन घनों, बन बेगरो, मेंढक फंदें ज्वार।
पेंड़ पेंड़ पै बाजरा, करै दलुद्दर पार॥

सन घना, कपास छिरबिर्रा, मेंढक की कुँदान जितनी दूरी पर ज्वार और कदम कदम पर बाजरा बोना चाहिए।

सबई किसानी हेटी। अगनइयाँ पानी जेठी॥

रबी की फसल को अगहन में पानी मिल जाय तो समझो बड़ा काम हुआ।

सब एकई थैलिया के चट्टा-बट्टा।

सब एक से हैं। चालाकी में कोई कम नहीं।

सब कोऊ मूँछें रखाय तौ चूलो को फूँके?

सब बड़े काम करें तो छोटा कौन करेगा?

सब गुन भरी बेंतरा[1] सोंठ।

(१—एक प्रकार की सोंठ।) धूर्त्त के लिए व्यंग्य में।

सब धन के धिगाने ह।

सब पैसे का खेल है।

सब धरौ रै जैये।

सब धरा रह जायगा। हद से बाहर काम करने पर चेतावनी के रूप में।

सब धान बाईस पसेरी।

जहाँ अच्छे और बुरे, मूर्ख और पंडित, न्याय और अन्याय का कोई विचार न हो वहाँ कहते हैं।

सब बेटा के बाप।

जहाँ सब अपनी-अपनी हुकूमत चलायें।

सबरी निपुर गई।

सब कलई खुल गयी। बहुत चलायो पर एक नहीं चली।

सबरी रामायन हो गई, इतें जोई पतौ नईं कै राम राच्छस हते कै रावन।

सब बात सुन कर भी न समझना।

सबरो स्यान चूलें परौ।

कोई चतुराई काम नहीं आयी।

सबरो स्यान निपुर गओ।

दे० ऊपर।

सब सें भली चुप।

चुप सबसे अच्छी।

सब सें मीठी भूँक।

भूख में सब वस्तु मीठी लगती है।

सब स्वाँग बन जात, अकेलें रुपैया कौ स्वाँग नइँ बनत।

रुपये का काम रुपये से ही निकलता है।

सबै कुलच्छन बाँड़ी पूँछ।

बंडी गाय में बड़े ऐब होते हैं। धूर्त्त के लिए कहते हैं।

सभा बिगारें तीन जन, चुगल, चबाई[1] चोर।

(१–बातूनी।)

समधी, हँड़ा फूटौ है, कै कें का बदला लओ?

लड़की के विवाह में किसी ने फूटा हंडा दहेज में दिया। वर पक्षवालों की ओर से शिकायत की गयी कि 'समधी, हंडा फूटा है।' इस पर किसी समझदार बराती ने कहा 'कहने से लाभ क्या? क्या कह कर बदलवा लिया?'

किसी से कोई ऐसी याचना नहीं करनी चाहिए जो पूरी न हो सके और अपनी बात खाली जाय।

समय चूक पुन का पछताने।

समय देख कें बात करें चइये।

अवसर देखकर बात करना चाहिए।

समय परे की बात बाज पै झपटे बगुला।

भाग्य विपरीत होने पर दुर्बल भी सबल को सताता है।

समय परे पै जानिये जो नर जैसो होय।

समरथ कों नइँ दोस गुसाइँ।

समाचार मड़वा के पाये। जब लाहकौरे[1] भाटा आये॥

(१–लहकौर विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा और दुलहिन एक दूसरे के मुँह में कौर देते हैं।) लहकौर में जब भटे का साग आया तो उससे ही पता चल गया कि लड़की वाले बरात का कैसा स्वागत करेंगे।

समाँ समासें[1] जात है, कोदों भर अदरात।

(१–संध्या समय।) साँवाँ और कोदों को कभी-कभी ऐसा रोग लग जाता है कि वे देखते-देखते नष्ट हो जाते हैं।

सभा सुहाते बोलिये जासों रीझै राय।

समासे के मरे कों कानों रोईअत?

संध्या के मरे को कहाँ तक रोया जाय? अभी से यह हाल तो कैसे पूरा पड़ेगा?

समुन्दर की करार गिरी, कई छींटा मोरे ऊपर परे।

गप्प हाँकना।

समुन्दर में सूखा परबो।

अनहोनी बात।

समुन्दर पाटबो।

असंभव कार्य।

सयानो कौआ गू में चोंच भिड़ाउत।

जो जितना सयाना होता है वह उतना ही नीचा भी देखता है।

सरग उठायें फिरत।

आफत मचाना।

सरग तरैयाँ टोरबो।

आकाश के तारे तोड़ना। असंभव कार्य करना। किसी कार्य में अपनी पूरी शक्ति लगाना।

सरग फटै तौ कानों थींगरा लगाउत ?

विपत्ति का पहाड़ ही टूट पड़े तो कहाँ तक सँभाला जाय ?

सरग मूँड़ पै धरें फिरत।

दे० सरग उठाये फिरत।

सरग सें गिरे बबूर में अटके।

बड़ी विपत्ति से किसी प्रकार निकले तो छोटी में फँस गये।

सरगें आग लगाउत।

स्वर्ग में आग लगाता है, ऐसा आततायी है।

सरगें थिगरा लगाउत।

बहुत काइयाँ।

सरतारो बानिया का करै, सेरई बाँट तौले।

दे० ठालो बानिया।

सरबस जातन जो दिखे आधौ दीजे बाँट।

सरम[1] के अँसुआ निकर गये।

(१—शरम, लाज।) किसी के बेशरम बन जाने पर कहते हैं।

सरमदार अपनी सरम कों मरौ, बेसरम ने कई मोसें डरौ।

शर्मदार ने तो दूसरे का लिहाज किया, परन्तु बेशर्म ने समझा कि यह मुझसे डर गया।

सरमीलो माँगे नईं, गर्बीलो देय नईं।

शर्मीला माँगता नहीं, और गर्वीला बिना माँगे देता नहीं।

सरी[1] गदइया, पीतर कौ खुरौरो।

(१—सड़ी हुई, दुबली पतली, कमजोर।) बेमेल काम।

सरी घुरिया लाल लगाम।

सरौ फफूँड़ौ एकंई भाव।

अंधेर की बात।

सरौ सूत दर्जी कों खोर।

सड़ा हुआ कपड़ा और दर्जी को दोष। अपनी त्रुटि कोई नहीं देखता।

ससरार कौ रैंबो, गदा कौ चड़बो।

ससुराल में बहुत दिनों रहने से अपमान होता है।

ससरार सुख की सार, जो रये दिना दो चार।

ससुरार सुख की सार, पै रहे दिना दो चार।
जो रहे मास पखवार, हाथ में खुरपी बगल में फार।
श्वशुर गृहं परमसुखं त्रिरात्राच्छुनकसमानः।—संस्कृत
सासरा सुखवासरां, ने बे घड़ीनां आसरा,
तीजें दाहड़े रहे तो खाय खासड़ां।—गुजराती
असार संसारे सार श्वशुरेर घर।—बंगला

ससुर खाँ परी हार-फार की, बऊ खाँ परी खँगवार[1] की।

(१—गले में पहिनने का चाँदी या सोने का आभूषण, खँगोरिया, हँसुली।) ससुर को तो हल-बखर की पड़ी है और बहू को इस बात की कब मेरी हँसुली बने। सबको अपनी-अपनी पड़ी रहती है।

सहज पके सो मीठो।

जो काम सहज में बने वही अच्छा होता है।

सहर चँदेरी मो मनवाला। तिरिया राज, खसम पनहारा[1]॥

(१—पानी भरनेवाला, ढीमर, कहार।) चँदेरी नगर मेरी पसंद का है। वहाँ स्त्री का तो राज्य है और राजा पनहारा है। अंधेरगर्दी से जहाँ पूरा लाभ उठाने का अवसर हो वहाँ के लिए कहते हैं।

चँदेरी मध्यभारत का एक प्राचीन नगर है जो पहिले ग्वालियर राज्य में था। ललितपुर से २१ मील दूर बेतवा के तट पर बसा है। सत्तरहवीं शताब्दी के अंत में मुगलों की शक्ति क्षीण होने पर यहाँ बुन्देलों ने अपना आधिपत्य जमा लिया था। लगभग सौ वर्ष तक वे शासन करते रहे। परन्तु सन् १८१५ में महाराज दौलतराव सिंधिया ने तत्कालीन बुन्देला नरेश मोर प्रह्लाद से चँदेरी छीन लिया। मोर प्रह्लाद के संबंध में कहा जाता है कि वह बड़ा शराबी और कायर था। संभव है उपर्युक्त कहावत उसको लेकर ही बनी हो।

साँची बात सादुल्ले[1] कयें, सब के मन सें उतरे रयें।

(१—नाम विशेष। यह औरंगजेब का इतिहास-प्रसिद्ध सेनापति और मंत्री सादुल्ला खां भी हो सकता है। वह अपनी न्यायप्रियता और निर्भीकता के लिए विख्यात है।) सच बात कहनेवाले से सब नाराज रहते हैं।

साँचे कौ जमानो नइयाँ।

सच्चे का जमाना नहीं। जब कोई सच कहे और उसकी बात न मानी जाय तब कहते हैं।

साँचे तौ फाके करें, लाबर[1] लड्डू खायँ।

(१—झूठे।)

साँझें धनुस सकारें पानी।

संध्या को यदि आकाश में इन्द्रधनुष दिखायी दे तो दूसरे दिन पानी बरसता है।

साँड़ साँड़ लरें बारी कौ भुरकन होवे।

साँड़न साँड़न की लड़ाई।

बड़ों बड़ों की लड़ाई।

साँप के गोड़े साँपई कों दिखात।

साँप के पैर साँप को ही दिखायी देते हैं। अपनी विपत्ति आदमी आप ही जानता है, दूसरा नहीं जान सकता।

साँप के फन सें देअ खुजाउत।

साँप के फन से देह खुजाते हैं। जानबूझ कर अनर्थ करते हैं।

साँप के बिले में हात डारबो।

बैठे-ठाले विपत्ति मोल लेना।

साँप के मैर मरे लौं आऊत।

मरते-मरते तक साँप के विष की लहर शरीर में दौड़ती है। दुष्ट और विश्वासघाती का आक्रमण भयंकर होता है।

साँप मरै न लाठी टूटे।

साँप मर जाय, पर लाठी न टूटे। काम बन जाये और हानि भी न हो। युक्ति से काम लेना।

सांमू आँयें नार[1] नईं खात।

(१–नाहर, शेर।) सामने पहुँच जाने पर शेर भी नहीं खाता। आत्म-समर्पण कर देने पर कठोर से कठोर आदमी का हृदय पसीज जाता है।

साँसी कयें मौसी कौ काजर।

सच कहने से मौसी का काजल! सच बात कहने से कोई तिनक उठे तब।

इसकी एक कथा है कि कोई एक व्यक्ति बड़ा मुँहफट और स्पष्टवादी था। लोगों ने इस कारण उसका नाम 'साँचेरैया' रख छोड़ा' था। एक बार साँचेरैया अपनी मौसी के यहाँ गये। धीरे से दरवाजा खोल कर भीतर पहुँचे तो देखते क्या हैं कि मौसी बड़े टिमाक से अपना श्रृंगार कर रही हैं और वहीं मौसिया भी खड़ें हैं। यह देख कर वे उल्टे पैरों बाहर लौट आये और चुपचाप दरवाजे पर बैठ गये। थोड़ी देर बाद मौसी बाहर निकली तो साँचेरैया को बैठा देख कर पूछा—'अरे, तू कब आया?' साँचेरैया ने तुरंत उत्तर दिया 'जब तुम काजल लगा रही थीं और मौसिया खड़े हँस रहे थे।' सुनते ही मौसी आग बबूला हो गयी और—'अरे तोरो खोज मिटे, मौसी से हँसी करत' यह कह कर उसे मारने दौड़ी। साँचेरैया वहाँ से भाग दिये। मौसी भी उनके पीछे दौड़ी। परन्तु वे हाथ नहीं आये और अपने घर वापिस लौट गये। इसके पश्चात सच बोलने के कारण जब कभी कोई विपत्ति उनके सामने आती तो उन्हें काजल वाली घटना का स्मरण हो आता और वे यही कहते कि 'लो सांसी कयें मौसी कौ काजर।'

साँसी कौ रंग रूखो।

सच बात रूखी होती है। सुनने में अच्छीं नहीं लगती।

साइत तें सुतार भलो।

किसी काम का मुहूर्त्त देखने की अपेक्षा उसका प्रबंध ठीक करना अच्छा।

साके[१] कौ ब्याव, सनोरन[२] कौ उजयारौ।

(१—साका कीर्ति यश, २—सनोरा सन की पतली लकड़ी जो शीघ्र जल जाती है।) विवाह की बड़ी ख्याति परन्तु सनोरों का उजियाला ! धूमधाम तो बहुत, काम कुछ नहीं।

साजन-साजन ढुर मिले झूठे परे बसीठ।

लड़ाई-झगड़े के बाद दो मित्र तो आपस में मिल जाते हैं। परन्तु बीच में भिड़ाने वाले बदनाम होते हैं।

साधुअन कों स्वाद सें का काम ?

साधुओं को स्वाद से क्या काम ? अपनी निस्पृहता दिखा कर काम बनाना।

एक साधू महाराज किसी के दरवाजे पर पहुँचे और मक्खन माँगने लगे। भीतर से घर की मालकिन ने उत्तर दिया—'महाराज, अभी तो बिलोया नहीं थोड़ी देर में लें जाइये।' साधू ने कहा—'कोई बात नहीं बाई, बिलोया नहीं तो बिन बिलोया ही दे दो। साधुओं को स्वाद से क्या काम ? स्त्री ने बिना बिलोया दही लाकर दे दिया और साधू ने उससे अपना काम चलाया।

साधू निकरे सैर कों दोइ दीन की खैर।
ना काऊ सें दोस्ती, ना काऊ सें बैर॥

भीख मांगते समय साधू कहते हैं।

साबुन-सज्जी निबुआ नोंन। और दाद की ओखद कौन ?

साबुन, सज्जी, नीबू का रस तथा नमक इनको मिला कर लगाने से दाद अच्छी होती है।

सारस कैसी जोड़ी।

दो घनिष्ठ प्रेमियों के लिए कहते हैं।

सारी[१] न सलराज,[२] सासई सें ररी[३]।

(१—पत्नी की बहिन। २—सलहज, साले की स्त्री। ३—रली, हँसी-मजाक) साली और सलहज नहीं तो सास से ही मजाक। अपने से बड़े से हँसी-मसखरी करने पर।

सालिगराम के सालिगराम दरबटना के दरबटना।

दे० बाबाजू के बाबाजू।

सावन घुरिया भादों गाय, माघ मास जो भैंस ब्याय, जीसें जाय कैं खसमें खाय।

लोगों का विश्वास है कि यदि सावन में घोड़ी, भादों में गाय, और माघ मास में भैंस बियावे तो या तो स्वयं मर जाती है या उसका मालिक मर जाता है।

सावन चलै पुरवाई, तालन तिली बुआई॥

सावन में पुरवाई चलने से पानी नहीं बरसता, इसलिए उन तालाबों में जो रबी की फसल के लिए सुरक्षित रखे गये हों, तिली का बो देना उचित है।

सावन मास चलै पुरवाई।
बरधा बेंच बिसाहो गाई॥

सावन पछवाँ सींक डुलावे। बरसत मेघ कौन बिलगावे॥

सावन में थोड़ी भी पछवाँ चले तो पानी फिर कौन रोक सकता है? अर्थात खूब बरसता है।

सावन में पुरवैया भादों में पछयाव।
हरवारे हर छाँड़ कें लरका जाय जिवाव॥

सावन में यदि पुरवाई और भादों में पछवाँ चले तो फिर सूखा पड़ता है। ऐसी अवस्था में किसान को खेती की आशा छोड़ बाल-बच्चों के भरण-पोषण के लिए कोई दूसरा धंधा करना चाहिए।

सावन ब्यारी जब तब कीजे। भादों बाको नाव न लीजे॥
क्वाँर मास के दो पखवारे। जतन जतन सें टारो प्यारे॥
आदे कातिक होय दिवारी। ठेलमठेला करो ब्यारी॥

सावन में ब्यालू कभी कभी ही करना चाहिए। भादों में उसका नाम नहीं लेना चाहिए। क्वाँर में बहुत सँभल कर रहना चाहिए। उसके बाद आधा कार्त्तिक बीतने पर, जब दिवाली हो जाय, खूब पेट भर भी ब्यालू करे तो कोई चिन्ता की बात नहीं।

सावन में ससरारी गये, पूस में खाये पुआ।
चैत में छैला पूछत डोलें, तुम्हरें केतिक हुआ॥

छैल-चिकनिया किसान पर व्यंग्य। सावन में ससुराल गये। पूस में मौज से पुए खाये। इस तरह अपनी खेती तो चौपट कर दी। अब चैत में दूसरों से पूछते फिरते हैं कि तुम्हारे कितना हुआ ?

सावन सुक्ला सप्तमी जो गरजे अधरात।
(तौ) तुम जैयो पिय मालवा, हम जैहें गुजरात॥

सावन में शुक्ल पक्ष की सप्तमी को यदि आधी रात के समय बादल गरजें तो समझना चाहिए कि सूखा पड़ेगा। इसलिए किसी किसान की स्त्री अपने पति से कह रही है कि हे प्रियतम ! उस दशा में अच्छा यह है कि तुम तो मालवा जाना और मैं गुजरात चली जाऊँगी।

सावन सूखै स्यारी। भादों सूखै उनारी॥

सावन में पानी न बरसने पर खरीफ और भादों में न बरसने पर रबी की फसल को हानि पहुँचती है।

सावन सूखै धान। भादों सूखे गोऊँ॥

सावन में पानी न बरसने से धान और भादों में न बरसने से गेहूँ सूखते हैं।

सास मरी, बऊ कौ राज।

सास के मर जाने पर बहू की मौज बनती है।

सास मरी बऊ ब्यानी, बे फिर तीनऊ के तीन।

लेखा-जोखा फिर ज्यों का त्यों।

सास सें बैर-परोसिन सें नातो।

लड़ाई-झगड़ा करने वाली स्त्री के लिए।

सासे न भावे सो बऊए टिकावे।

सास को जो वस्तु अच्छी नहीं लगती वह बहू को देती है। अपने को कोई चीज पसंद न आने पर उसे दूसरों के मत्थे मढ़ना।

सिंह के बचा सिंह (अ) ई होत।

सिंह के बच्चे सिंह ही होते हैं।

सिंह चड़ी देवी मिलें, गरुड़ चड़े भगवान।
बैल चड़े शिवजी मिलें, अड़े सवारें काम॥

आशीर्वाद।

सिकअये[1] पूत दरबारे नईं जात।

(१—सिखाये हुए) सहज-बुद्धि के बिना कोई काम केवल सिखाने से नहीं किया जा सकता।

मागी अक्कल ने दीधी शिखामण काम आवेनहिं—**गुजराती**
(माँगी हुई अक्ल और दी हुई सीख काम नहीं आती)।

सिर बड़ौ सरदार कौ, पाँव बड़ौ गँवार कौ।

सिर बड़ा सपूत का पैर बड़ा कपूत का।

सिरा सिरा कें खाओ।

ठंडा करके खाओ। उतावली मत मचाओ। धीरज से काम लो।

सिलारे[1] कों सिलारो नईं सुहात।

(१–सिलारा, संस्कृत-शिलकार खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।)
सिलहारे को सिलहारा नहीं सुहाता। एक ही धंधा करने वाले एक दूसरे को नहीं देख सकते।

सींके की टूटन बिलइया की लपकन।

दे० बिलइया के भाग्गन।

सींक होकें घुसे, मूसर होकें कड़े।

किसी जगह थोड़ी घुसपैठ करके पूरा अधिकार जमा लेना।

सींग टोर बछेरुअन में मिलबो।

सींग तोड़ कर बछड़ों में मिलना। जेठाई का ध्यान न रख कर लड़कों में उठना-बैठना और हँसना।

सींग मुड़े माथौ उठौ, मों कौ होवे गोल।
रोम नरम चंचल करन तेज बैल अनमोल।।

अच्छे बैल के लक्षण ।

सीख तौ बाकों दीजिए, जाकों सीख सुहाय।
सीख न दीजे बाँदरे, घर बैय्या कौ जाय।।

मूर्ख को उपदेश नहीं देना चाहिए ।

कथा—किसी जंगल में बबूल के एक पेड़ पर बया पक्षी का एक जोड़ा रहता था। एक दिन जब वे दोनों अपने घोंसले में आनंद से बैठे हुए थे बाहर जोर का पानी बरसने लगा। इतने में वर्षा के जल से भींगा और ठंड से कांपता हुआ एक बंदर आया और वहीं पेड़ के नीचे बैठ गया। उसे इस तरह भींगा हुआ देखकर बया की स्त्री ने कहा:—

मानस कैसे हाथ पाँव, मानस कीसी काया।
चार महीने वर्षा बीती, छप्पर क्यों नहिं छाया ।।

सुनकर बन्दर को बड़ा क्रोध आया और उसे गाली देकर बोला कि अरी चुड़ैल, तेरी इतनी घृष्टता कि मेरी हँसी उड़ाती है। ले अभी तुझे इसका मजा चखाता हूँ। बया ने अपनी स्त्री को समझाया कि तू काहे को बीच में पड़ती है। जब कोई स्वयं कोई बात पूछे तभी कहना चाहिए। परन्तु तब तक बंदर ने पेड़ पर चढ़ कर उनके घोंसले को टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिया। यह कुटी दूषक जातक है। पंचतंत्र में इसकी कथा मिलती है। (१।१८) और कथा-सरित्सागर में भी।

सीखासीख परोसन की, घर में सीख जिठनियाँ की।

दूसरों की बातों में आना ।

सुक्रवार की रात, करै नई बात।

लोक-विश्वास है कि शुक्रवार की रात को कोई काम की बात करने से वह सफल नहीं होती ।

सुख संपत औ औदसा[1] सब काहू कें होय।
ग्यानी काटै ग्यान सें मूरख काटै रोय।।

(१–विपत्ति ।)

सुगर[1] नार औ पोथी पढ़ी।
भरी तुवक[2] औ घोरें चढ़ी॥
इक नागिन दो पंख लजायें।
कैसें बचै तीन के खायें॥

(१–सुघड़ चतुर। २–बंदूक)

सुन सुन गीता फूटे कान। तऊ[1] न उपजो रंचक ग्यान॥

(१–तो भी)

सुनियें सबकी करियें मन की।

बात सबकी सुननी चाहिए, परन्तु करना वही चाहिए जो उचित जान पड़े।

सूकी के संगै तींतीं जर जातीं।

सूखी लकड़ियों के साथ गीली भी जल जाती है। एक के उत्साह से दूसरे भी कुछ न कुछ कर दिखाते हैं।

सूके आम पै टुइयाँ[1] नईं बैठत।

(१–तोता का बच्चा अथवा मादा तोता।) सूखे आम पर टुइयाँ नहीं बैठती। क्योंकि वहां कुछ खाने को नहीं मिलता।

सूकी जुरें ना, चुपरकें और चार ठउआ।

सूखी तो खाने को नहीं मिलतीं, चुपड़ कर चार और खाने को माँगते हैं!

सूके संख बजें दिन राती।

ऊपरी तड़क-भड़क बहुत, पर घर में खाने को नहीं।

सूके हाड़ चबाबो।

भूख से व्याकुल होकर जो मिलै सो खाना।

सूकौ टरका दैबो।

कोरा टरका देना। देना-लेना कुछ नहीं, केवल बातों से संतुष्ट करना।

सूजै न करै, आगौनी[1] दिखा ल्याव।

(१–विवाह के दिन लड़की वाले के दरवाजे पर धूमधाम से दूल्हा समेत बरात के आगमन का दृश्य।) आँख से तो दिखायी नहीं देता, और कहते हैं—बरात का जलूस दिखा लाओ।

सूत न पौनी, कोरी सें लठमलठा।

बिना कारण लड़ाई।

सूदरे सुदामा।

सुदामा की तरह सीधे। व्यंग्य में।

सूदी उँगरियन घी नईं निकरत।

सीधी बातों से काम नहीं निकलता।

सूदे कौ मों कुत्ता चाटत।

सीधे का मुँह कुत्ता चाटता है।

सूदो नाव महेरी[1] को।

(१–मठे के साथ पका कर बनाया गया ज्वार, मक्का आदि का दलिया।) अर्थात हम तो सीधी बात यह जानते हैं। इधर-उधर की बातों का संक्षिप्ती-करण करके कहना।

सूनी सार भली कै मरका बैल?

दे० मरका बैल।

सूने घर कौ पावनो।

सूने घर का पाहुना, आकर चुपचाप लौट जाता है।

सूनो घर भँड़यन[1] कौ राज।

(१–भँड़या, चोर।) जहाँ कोई नहीं होता वहाँ चोर-उचक्कों की बन आती है।

सूप उतार लो, नाव हरई हो जाय।

(१–हलकी) किसी पर बहुत बोझा लदा हो तो थोड़ा कम करने से क्या होता है?

सूप बोलै तो बोलै, चलनी का बोलै, जीमें बहत्तर छेद।

जो स्वयं अवगुणों से भरा है वह भी दूसरों के दोष देखे तो यह हँसी की बात है।

सूप हँसे त हँसे चलनियो हँसे जवना का सहसरि गो छेद—**भोजपुरी**

छाज न बोले छाबड़ी तू क्या बोले चालनी थारे अठोतर सौ बेझ।

—राजस्थानी

वले—छूंचतोर पोंदे केन छेंदा। आपन दोष देखेना जार सार्वांगई चालुनि बेंधा।—**बंगाली**

(चलनी कहती है कि, सुई तेरे पोंद में छेद क्यों? परन्तु अपने दोष नहीं देखती जिसके सर्वांग में छेद ही छेद हैं।)

सूप सें कऊँ सूरज ढकत हैं ?

सूप से भी कहीं सूर्य ढकता है ?

सूरज कों दिया बताउत।

सूर्य को दीपक बताते हैं।

सूरदास की कारी कामर चढ़ै न दूजौ रंग।

जैसे काली कंबली पर दूसरा रंग नहीं चढ़ता उसी तरह किसी आदमी के जन्म-जात स्वभाव को बदला नहीं जा सकता।

सूरदास खल कारी कामरि चढ़ै न दूजौ रंग।

सूरा न्योतो न दो बुलाओ।

दे० न अँदरा न्योतो।

सेंत के धान मौसिया कौ सराध।

दूसरों के पैसे से अपना काम बनाना। मुफ्त का माल लुटाना।

हलवाई की दूकान दादाजी की फातिहा—**फैलन**

सेंत कौ चंदन घिस मोरे लल्लू।

दे० मुफ्त कौ चंदन।

सेर की चार, पसेरी कीं चैया। तुम लेओ चार, हमें देओ चैया॥

सेर की चार और पसेरी की चार, इस तरह चार-चार रोटियाँ बनाओ। चार तुम लो और चार (पसेरीवाली) हमें दो। अपना ही मतलब अधिक देखना।

सेर कों सवा सेर मिलई जात।

सेर को सवा सेर मिल ही जाता है। चालाक के साथ उससे अधिक चालाकी करने वाला मौजूद रहता है।

सेर में पौनी नई कती।

अभी तो कुछ भी काम नहीं हुआ।

सेर सेर राँड़ें रोवें, दो दो सेर ऐबाती।

दे० राँड़ें रोवें।

सेवा करै सो मेवा पावे।

सेवा का फल अच्छा होता है।

सोंज कौ बाप लड़इयन खाओ।

साझे के बाप को सियार खाते हैं। अर्थात साझे का काम सदैव बिगड़ता है।

साझे की हंडी चौराहे पर फूटे—**फैलन**
साझे की मां गंगा न पावे—**फैलन**
सीरी माँ नैं स्यालिया खाय—**राजस्थानी**
(साझे की मां को सियार खाते हैं)।
भागीचें घोड़ें किवणानें मेलें।—**मराठी**
(साझे के घोड़े को कीड़े खाते हैं)।
भाग्यानी भैंस भुखी मरे—**गुजराती**
(साझे की भैंस भूखी मरती है)।
भागेर ठाकुर भोग पाय ना—**बंगला**

सोंज, सगाई, चाकरी (जे) सब राजी के काम।

सोंटा बाजे छमछम, तौ विद्या आवे घमघम।

पिटे बिना विद्या नहीं आती।

सोउत नार जगाउत।

सोता हुआ नाहर जगाते हैं। बैठे-बिठाये विपत्ति मोल लेते हैं।

सोउत बरें जगाउत।

सोती बरें जगाते हैं।

सोटा-लँगोटा से।

जैसे कोई हाथ में लकड़ी लेकर और लँगोट पहिन कर घूमता है उस तरह फक्कड़ बन कर घूमना। खाली हाथ फिरना।

सोने कौ घर माटी कर दओ।

सब घर बरबाद कर दिया।

सोने में सुगंध।

अच्छे में और अच्छाई।

सोने में सुहागा।

अच्छा संयोग जुटना। सुहागा सोने को और उज्ज्वल बनाता है।

सोनों जानिये कसें। मानुस जानिये बसें।

सोने की कसौटी पर कसने से और मनुष्य की पास बसने से परीक्षा होती है।

सोनें पाहावें कमून। माणस पाहावें वसून—मराठी

सोनों छुएँ माटी होत।

अभागे कर्महीन के लिए कहते हैं।

सोनों बिगरो सुनार घर। बिटिया बिगरी बाप घर॥

सोना सुनार के घर जाने से बिगड़ जाता है। (वह उसमें खोट मिलाये बिना नहीं रहता।) उसी प्रकार लड़की भी बाप के घर रहने से बिगड़ती है। क्योंकि मायके में उस पर विशेष नियंत्रण नहीं रह पाता।

बापेर बाड़ी झी नष्ट पान्ता भाते घी नष्ट।—बंगला

(बाप के घर लड़की नष्ट, बासी भात में घी नष्ट)।

सोम, सुक्र, सुरगुरु की जोय, पुहुमी फूल फलंती होय।

सोम, शुक्र और बृहस्पतिवार के दिन जन्म लेनेवाली स्त्री पृथिवी पर खूब फलती-फूलती है।

सोरयें सयान, बीसें ज्ञान, पचीसें भान।

सोलह वर्ष में लड़का सयाना हो जाता है, बीस में उसे बोध होता है, और पच्चीसवें में संसार का अनुभव होने लगता है।

सोरा हात की सारी, आदी जाँग उगारी।

फूहड़ स्त्री के लिए।

सोरा सै के करे हजार।
धी की आँख करौ रुजगार।

घर का ही कोई लड़का अपनी अनुभवहीनता के कारण व्यापार में हानि उठा जाय अथवा कोई और काम चौपट कर दे तब कहते हैं।

सोवे सो खोवै, जागै सो पावै।

जो काम करता है वही पाता है।

सौ के साठ करबो।

नासमझी के कारण व्यापार में हानि उठाना। काम बिगाड़ देना।

सौकीन गुंडा रेंट[1] कौ अतर।

(१—नाक का मैल।) बेमेल सजधज के लिए।

सौ गुंडा एक मुछमुंडा।

एक मुछ मुंडा सौ गुंडों के बराबर होता है।

सौ जनन में परखा लो।

अर्थात हमारी चीज खरी है। चाहे जिसे दिखा लो।

सौ डंड एक लिपटंत।

सौ डंड कुश्ती की एक लिपटंत के बराबर होते हैं। अर्थात डंड से कुश्ती अच्छी होती है।

सौ डंडी एक बुन्देलखंडी।

सौ डंडेवालों अथवा कसरती जवानों की बराबरी एक बुन्देलखंडी करता है। इसमें किसी ने यह पंक्ति भी जोड़ रखी है—सौ बघेलखंडी एक बुन्देलखंडी।

सौत चून की बुरई होत।

सौत आटे की भी बुरी होती है।

सौ बक्का, एक लिक्खा।

सौ बकवादी एक लिखनेवाले के बराबर होते ह ।

सौ बातन की बात।

अर्थात सारांश की बात ।

सौ बेर चोर की एक बेर साव की।

चालाक आदमी कई बार अपराध करके भले ही बच जाय, परन्तु कभी-न-कभी पकड़ा ही जाता है और अपनी चालाकी का दंड पाता है।

सौ मारें और एक न गिनें।

निकम्मे के लिए ।

सौ में फुली, सहस में काना, एक लाख में ऐंचकताना;
ऐंचकताना करी पुकार, में मानी कंजा सें हार।
कंजा मानी वासें हार, जी कें नइआँ छाती बार।

सौ में सती, लाख में जती।

सैकड़ों स्त्रियों में एक सती होती है, और लाखों पुरुषों में एक यती।

सौ लठेंत, एक पटेंत।

सौ लाठीवालों को एक पटेबाज हरा देता है।

सौ लों गिनती, हा हा लों बिनती।

दे० हा-हा लों बिनती।

सौ सयाने एक मता।

सब सयानों की एक ही राय होती है।

सौ ल्यावे राँड़ी, एक न ल्यावे छाँड़ी।

चाहे सौ विधवा भले ही रख ले, परन्तु किसी की छोड़ी हुई स्त्री कभी न रखे।

सौ सुनार की, एक लुहार की।

सुनार की सौ चोट लुहार की एक चोट के बराबर होती है। जबर्दस्त की एक चोट ही भयंकर समझनी चाहिए।

सौ सौ जूता खायें तमासो घुसकें देखें।

लड़ाई झगड़ों की परवा न करके जबर्दस्ती तमाशा देखने वालों पर व्यंग्य।

ह

हँड़िया कौ एक सीत टटोउनें आऊत। (सबरी हँड़िया में हात नईं डारनें आऊत)

हाँड़ी का एक चावल देखने से ही पता चल जाता है कि सब चावल गल गये या नहीं। पूरी हाँड़ी में हाथ डालने की आवश्यकता नहीं पड़ती। एक बात से मन का सारा हाल जान लिया जाता है।

हँड़िया है सरमदार, छः मइना में चुरै दार।
पावनो है गम्मखोर, बरस भर न छोड़े दोर॥

किसी के यहाँ कोई फालतू मेहमान आ गया। घर की मालकिन ने उसे टर-काने के उद्देश्य से कहा—भोजन आपको बहुत विलंब से मिलेगा। मेरी हाँड़ी बहुत शर्मीली है। उसमें छै महीने में दाल पकती है। इस पर मेहमान ने उत्तर दिया—कोई चिन्ता की बात नहीं। मैं भी बड़ा गमखोर हूँ। एक वर्ष तक तुम्हारा घर नहीं छोड़ूंगा। मेहमानदारी करनेवालों पर व्यंग्य।

हंते कों हनिये, पाप-दोख ना गिनिये।

जो दूसरों को मारे उसे मारने में कोई पाप नहीं।

हंस की चाल टीटरी चली, गोड़े उठाकें भों में परी।

दूसरों का अनुकरण करके चलने में हानि उठानी पड़ती है।

हंस लो कै बात कर लो।

एक बार में एक ही काम हो सकता है।

हंसी में निरस।

हँसी-हँसी में झगड़ा हो जाना।

हंसी की हंसी और दुःख कौ दुःख।

एक साथ हँसी और दुख की बात।

हजामत बन गई।

ठग गये ।

हतेरी पैं आम जमाबो।

काम में बहुत उतावली करना ।

हम का गदा चराउत रये ?

हम क्या गधे चराते रहे ? अर्थात हम क्या निरे मूर्ख है ?

हमने कौन तुमाये हात के करिया तिल खाये।

अर्थात हम तुम्हारे किसी बात के ऋणी नहीं ।

लोक-विश्वास है कि किसी मनुष्य या ढोर को काले तिल खिलाने से वह सदैव के लिए वश में हो जाता है । इस विश्वास के अनुसार किसान जब कोई नया बैल खरीद कर लाता है तब उसे काले तिल खिलाता है ।

हम फूटे तुम जाँजरे, हरइँ कें भेंट लो।

हम फूटे हैं और तुम जर्जर, धीरे से भेंट लो ।

किसी मामले में परस्पर झगड़ा न करने और आसानी से काम निकाल लेने के लिए कहते हैं ।

हमें कौन तुमसें मूसर बदलवाँवने।

हमें तुमसे क्या मतलब ? तुम्हारे बिना हमारा कोई काम अटका नहीं रहेगा ।

विवाह में घर से चलते समय वर के सिर पर से मूसल निकालने की प्रथा बुन्देलखण्ड की सभी जातियों में प्रचलित है। कहावत उसी पर आधारित है । एक स्त्री दूल्हा के पीछे खड़ी हुई दूसरी स्त्री को सिर पर से मूसल देती है और वह फिर उसे लौटाल देती है। इस प्रकार सात बार मूसल बदला जाता है ।

हरताल[१] फेरबो।

(१–हड़ताल, एक विषैला खनिज पदार्थ, प्राचीन काल में हस्तलिखित पोथियों के अक्षर मिटाने में उसका उपयोग होता था ।) बने-बनाये काम को चौपट कर देना ।

हर ददा के, बैल ददा के, टिकटिक करतन का लगत।

दूसरों का पैसा खर्च करने में गाँठ का क्या जाता है ?

माले मुफ्त दिले बेरहम ।

फोकट की गाड़ी, फोकट का बैल, और बंदे का टचकारा——गुजराती

करवा कोंहार के, घीव जजमान के स्वाहा स्वाहा——भोजपुरी

हर हाँकें भूँकन मरें, बाबा लाडू खायँ।

जी तोड़ परिश्रम करने वाले तो भूखों मरते हैं और निठल्ले मौज उड़ाते हैं।

हराम की कमाई हराम में गई।

अन्याय का पैसा व्यर्थ ही जाता है।

हरी खेती गाभन गाय। तब जानों जब मों में आय॥

दे० ठाँड़ी खेती।

हरौ हरौ सूजत।

सब काम आसान जान पड़ते हैं। पैसे की कद्र न करने पर प्रयुक्त।

हर्र बहेरो आँवरो, घी सक्कर सें खाय।
हाथी दाबें काँख में सात कोस लों जाय॥

घी-शक्कर के साथ त्रिफला का सेवन करने से बल की वृद्धि होती है।

हर्रा लगै न फिटकरी, रंग चोखो आवे।

खर्च कुछ न हो और काम अच्छा बने ! यह कैसे संभव है ? (पक्का खाकी रंग बनाने के लिए हर्र, बहेड़े के साथ फिटकरी की आवश्यकता पड़ती है।)

हलक सें निकरी खलक में गई।

बात मुँह से निकली और दुनिया में फैली।

हवा कौ रुख परखबो।

समय की गति को देखना।

हवा सें बातें करबो।

बातचीत में बहुत चंचलता दिखाना।

हवा सें लड़बो।

झगड़ालू प्रवृत्ति का होना।

हस्त बरसें तीन होयँ, साली, सक्कर, मास।
हस्त बरसें तीन जायँ तिल, कोदों उर कपास॥

हस्त नक्षत्र में पानी बरसने से धान, ऊख, और उर्द की फसल को लाभ तथा तिल, कोदों और कपास को हानि पहुँचती है।

हाँई कौ मरै, नाँईं कौ जिये।

किसी आदमी से 'हाँ' कह देने पर बाद में काम न किया जाय तो निराशा से वह मरने तुल्य हो जाता है, परन्तु पहिले से ही किसी को 'ना' कर दी जाय तो उसकी कोई हानि नहीं होती।

हाँसी की साँसी।

हँसी में कही हुई बात का सच निकल आना।

हाकिम के तीन और साना के नौ।

हाकिम को रिश्वत में तीन देने पड़ते हैं तो चपरासी माँगता है नौ!

हाकिम चून कौ बुर (अ) ओ होत।

हाकिम आटे का बुरा होता है।

हाकिमी गरम की, दूकानदारी नरम की, दलाली बेसरम की, सराफी भरम[1] की।
दौलत करम की, बात मरम[2] की, और आढ़त धरम की।

(१–दूकान में कितनी पूँजी लगी है, अथवा कितना पैसा पास में है इस बात का खुल न पाना। २–मर्म, सार।)

हाजिर में हुज्जत नईं और गैर की तलास नईं।

जो वस्तु मौजूद है उसे देने में कोई आपत्ति नहीं, और जो नहीं है उसे तलाश करने नहीं जायेंगे। अथवा जो लोग मौजूद हैं उनका स्वागत है, जो नहीं हैं उनकी तलाश क्या करनी?

हात कंगन कों आरसी का ?

प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता ?

हत्थे कंकणं किं दप्पणेण—कर्पूरमंजरी

हात कों हात नईं सूजत।

हाथ को हाथ नहीं सूझता। ऐसा घोर अंधकार है।

हात कौ सच्चौ।

लेन-देन का सच्चा।

हातन पै आम जमाउत।

हाथों पर आम जमाते हैं। जल्दी मचाते हैं। उतावली करते हैं।

हात न मुठी, खुरखुरा उठी।

गाँठ में तो पैसा नहीं, परन्तु चीज खरीदने का शौक।

हात-पाँव के कायले[1] मों में मूँछें जायँ।

(१—काहिल, आलसी।) इतने आलसी हैं कि अपनी मूँछों को भी नहीं सँभाल सकते! मूल कहावत इतनी ही है, परन्तु किसी ने इसमें यह पंक्ति भी जोड़ रक्खी है—'मूँछ बिचारी का करे, हात न फेरो जाय।'

हात-पाँव चलाबो।

गड़बड़ी मचाना। घुस-पैठ की चेष्टा करना।

हात-पाँव सुटुकिया, पेट मटुकिया।

दुबला-पतला आदमी जिसका पेट बड़ा हो, अथवा जो बहुत खाता हो।

हात पै हात धरें बैठे।

अर्थात बेकार बैठे हैं। कोई काम-धंधा नहीं।

हात भर ककरी, नौ हात बीजा।

विलक्षण बात।

हात भर के ज्वान, सवा हात की डाढ़ी।

बेतुकी सजधज।

हात भर लड़इया¹, नौ गज पूँछ।

(१.–सियार, गीदड़।) छोटा आदमी बड़ा आडम्बर करे तब कहते हैं।

हात में कौरा, मूँड़ में टोंकर।

हाथ का कौर सिर में ले जाना। बेढंगा काम करना।

हात में नइयाँ कौंड़ी, गोरी नाक छिदावें।

दे० हात न मुठी।

हात सें पिल्ला छोड़कें कूर कूर करत।

हाथ से पिल्ला छोड़ कर बुलाते हैं, कि आजा, आजा। हाथ में आयी हुई वस्तु को जान बूझ कर निकाल देना और बाद में उसे प्राप्त करने की चेष्टा करते फिरना।

हात हलाउत चले आये।

हाथ हिलाते चले आये। अर्थात जिस काम को करने के लिए भेजा था वह करके नहीं आये। यों ही खाली हाथ वापिस आ गये।

हाती कड़ गओ, पूँछ रै गई।

किसी काम का बहुत सा अंश हो जाना और थोड़े में असमंजस रहना।

हाती के दाँत दिखाउत के और, खात के और।

जब कोई आदमी कहे कुछ और करे कुछ तब प्रयुक्त।

हाती के दाँत बायरें कड़े सो कड़े।

एक बार कोई आदमी बदनाम हुआ सो हुआ। अथवा एक बार किसी का भेद खुला सो खुला।

हाती के पाँव में सब को पाँव समात।

बड़ों के साथ छोटों का निर्वाह होता है।

एक भेष के आसरे जाति वरन छिप जात।
ज्यों हाथी के पाँव में सबको पाँव समात। – वृन्द
सगळ्यांचीं पावलें हत्तीचे पावलांत—मराठी

हाती कौ बोज हाती (अ) ई उठाउत।

हाथी का बोझ हाथी ही उठाता है। बड़ों के काम बड़ों से ही सँभलते हैं।

हाती कों मकोरई[1] सूजत।

(१—मकोरा, एक जंगली कटीली झाड़ी और उसका फल।) हाथी को मकोरा ही सूझते हैं। जिसे जो वस्तु प्रिय होती है उसे वही दिखायी देती है।

हाती कों महावतियन की का कमी?

हाथी को महावतियों की क्या कमी? बड़े आदमियों को सब वस्तुएँ सुलभ रहती हैं।

हाती-घोड़ा बये जायें गदा कये कित्तो पानी।

बड़े-बड़े जिस काम को नहीं कर सकते वहाँ छोटे अपनी करतूत दिखाने आयें!

हाती छूटें, घोड़ा बिचलें।

बहुत भीड़ का होना। औसान डिगना।

हाती डुबकइयाँ खाय, बुकेरू पार पूँछे।

दे० हाती घोड़ा बये जायँ।

हाती तुलें ताँ गदा पासंग[1] में।

(१—तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर करने के लिए रखा गया बाँट।) जहाँ बड़ी चीज का मोल-भाव हो रहा हो वहाँ छोटी को कौन पूछता है?

हाती फिरें गाँव गाँव, जीको हाती बाको नाव।

जिसकी जो वस्तु होती है वह उसी की कहलाती है, फिर वह किसी भी जगह रहे।

हाय-हाय करतन जनम बीतो।

जन्म भर संसार के झगड़ों में फँसे रहे।

हार मानी न्याव पटानी।

दो में से कोई आदमी अपनी ज़िद छोड़ दे तो झगड़ा मिट जाता है।

हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम, जाही बिध राखे राम ताही बिध रहिये।

हारे कौ बिसराम।

परास्त होकर चुप बैठ जाना।

हारे कौ हरनाम।

मनुष्य से जब कुछ और करते-धरते नहीं बनता तब भगवान का भजन सूझता है।

हाले फूले हम फिरें, होत हमारो ब्याव।
तुलसी गाय बजाय कें, देत काठ में पाँव।।

हा-हा खायँ बूढ़े नईं ब्याय जात। (अथवा हा-हा खायँ सगाई—ब्याव नईं होत)

किसी काम में अपनी अधिक गरज दिखाने से वह पूरा नहीं होता।

हा-हा लों बिनती सौ लों गिनती।

जैसे सौ तक गिनती की सीमा है उसी तरह कोई हा-हा खाकर ही बिनती कर सकता है। इससे अधिक क्या करे?

हिन्न[१] के भाई छिकारा[२], बे जायें दस, तौ बे जायें बारा।

(१–हिरन। २–चीतल, स्वर्णमृग।) कोई किसी से कम नहीं।

हिये कौ हार, गरे कौ कठला।

प्रियजन के लिए कहते हैं।

हिसाब जौ जौ कौ, बखसीस सौ सौ को।

हिसाब एक एक कौड़ी का करना चाहिए। इनाम में चाहे जितना देवे।

हींग घाँईं बसात।

हींग की तरह बसाते हैं। अर्थात बुरे लगते हैं। सुहाते नहीं।

हीरन कौ का बंजियत?

हीरे को लेकर बेचने क्या जाना? वह तो घर बैठे ही बिकता है।

हीरा कों कीरा[१] बिगारत।

(१–हीरे के भीतर पड़ी हुई लकीर जिससे हीरे का मोल कम हो जाता है।) एक साधारण दोष भी बड़े आदमियों की महत्ता को कम कर देता है।

हीरा मुख सें ना कहे लाख हमारो मोल।

बड़े आदमी अपने मुंह से अपनी प्रशंसा नहीं करते।

हुक्का-पानी बंद होबो।

जातिच्युत होना।

हुन[1] बरस रई।

(१—हुन, (सं० हूण) मोहर, अशर्फी, सोना।) सोना बरस रहा है। बहुत लाभ हो रहा है।

हुलहुलानी सो धर पलानी।

गाय सुहलाते ही पलहा गयी। इच्छा होते ही किसी काम को करने के लिए तैयार हो जाना।

हेमदान गजदान तें बड़ो दान सन्मान।

सम्मान सबसे बड़ा दान है।

होओ परोसिन मोई सी।

दूसरों को अपना जैसा बनाने की इच्छा करना।

हो गओ ब्याव, कोऊ मोरो का करत?

काम निकल गया, अब मेरा कोई क्या बिगाड़ लेगा?

होती की धोती, अनहोती की लँगोटी।

मिल गयी तो धोती पहिन ली, नहीं तो लँगोटी से ही काम चला लिया।

होती के तीन नाम, परसू, परसा, परसराम।

मनुष्य जिस हैसियत का होता है उसी के अनुसार उसकी इज्जत होने लगती है।

होते को बाप, अनहोते की माँ।

सम्पत्ति में पिता और विपत्ति में माँ काम आती है।

होते निपुन न होते फूहर।

यदि निपुण होते तो मूर्ख की उपाधि न मिलती।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

होनहार के लक्षण पहिले से ही दीख पड़ते हैं।

होनहार होकें रत।

जो होना होता है वह टलता नहीं।

होनी पै कीको बस?

होनहार पर किसका वश?

होम करतन हात जरे।

भलाई करते बुराई मिली।

होम न धूप, देवी हा हा।

झूठा सम्मान करना।

होवे बाके भाग सों भली कतन का जाय।

कोरी सहानुभूतिवालों पर व्यंग्य।

ह्वै है वही जो राम रचि राखा—तुलसी
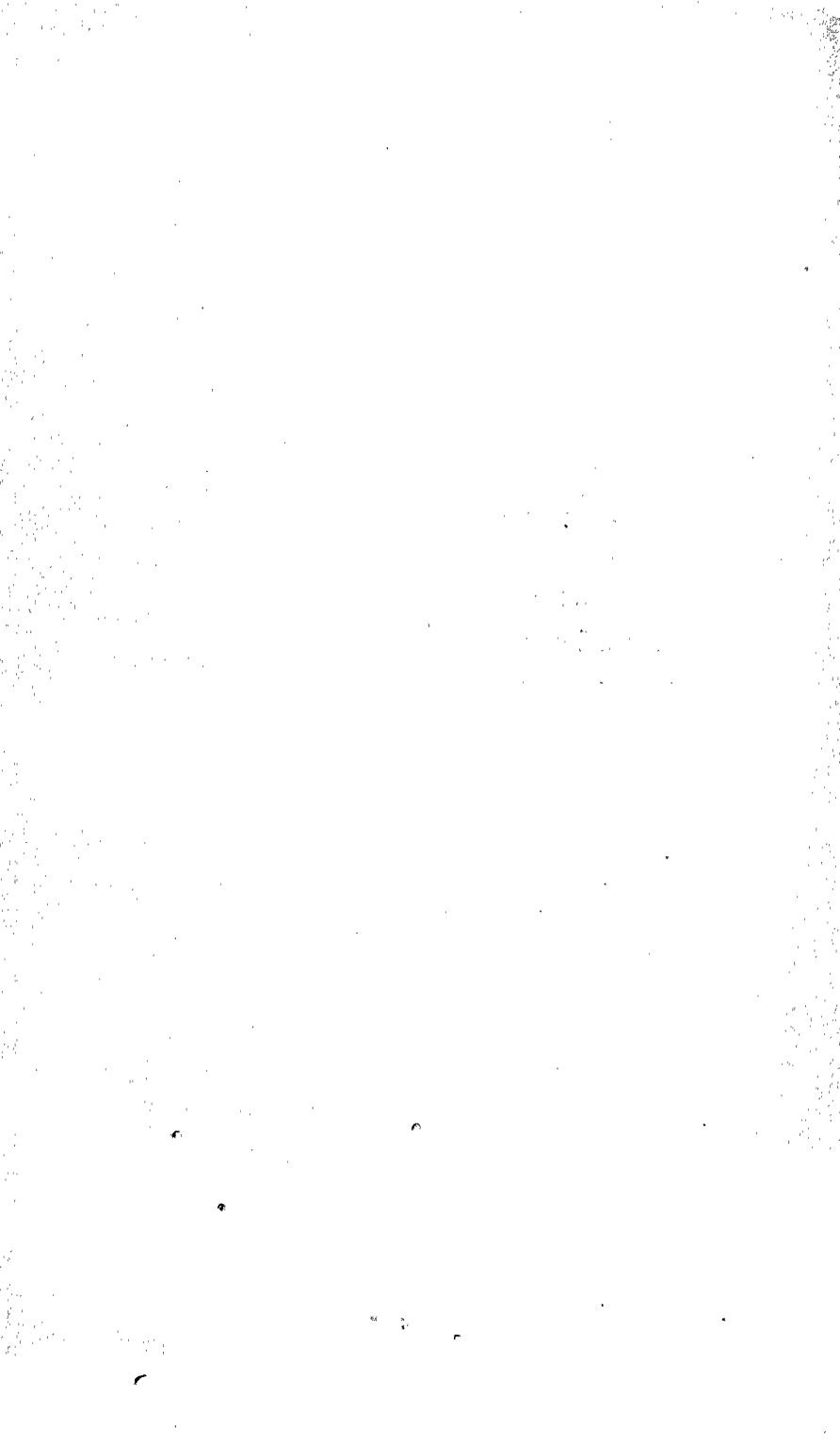
परिशिष्ट १

बाँदा जिले की कहावतें

अंधरे का दिखावे कहे दुइ दाँत है।

अंधे को बैल दिखाया तो कहा कि दो दाँत हैं। अयोग्य से परामर्श करना व्यर्थ है। वह तो अपनी अयोग्यता को छिपा कर गलत सलाह देगा।

अँधरे सियार का पिपरै मेवा।

अंधे सियार के लिए पीपल का फल ही मेवा के समान है।

अगवानू का घोर नहीं फेर का महापात्र का देय का है?

अगवानी के लिए घोड़ा नहीं तो क्या महापात्र को देने के लिए है? मरने पर महापात्र या ब्राह्मण को वस्तु दी जाती है।

अघान बकुली तीस सहरी।

बगुली का पेट भरा हो तो भी तीस मछली खा जाती है।

अभिटै पहार मा घर कै सिलौटी फोरैं।

टकराये पहाड़ से और घर की सिलौटी पर गुस्सा उतारें।

अहिरै धोबिये कौन मिताई। ओहके गधा न ओहके गाई॥

अहीर और धोबी की क्या मित्रता? न उसके पास गधा और न उसके पास गाय। अर्थात मित्रता बराबरी वालों से ही संभव है।

आँधर घोड़ बहिर सवार, दै परमेसुर ढूँढ़ेवार।

अंधा घोड़ा और बहिरा सवार, हे भगवान् ढूँढ़ने वाला दे।

आँधर पाइस पनही फिरे खुझार खुझार।

अंधे को जूती मिली तो पहिन कर रास्ता-कुरास्ता फिरने लगा।

आँधर राजा, बहिर पतुरिया, नाचै जा परतीते है।

अंधा तो राजा और बहिरी नर्त्तकी नाचे जा, विश्वास ही है (कि बहुत अच्छा नाच रही है।)

आई रही माँड़ का, थिरकइ लागी भात का।

माँड़ लेने आयी और थिरकने लगी भात के लिए।

आघा न तियाव, बाबा का बियाव।

घर में तो कुछ है नहीं फिर भी बाबा का विवाह!

आन के माथे नौठौ पतरी।

दूसरे के सिर नौ पत्तल।

आपन खेत पराये बरदा। खेत करैं का मरदी मरदा।

अपना खेत और दूसरों के बैल, फिर क्या, खेती करने को मर्द हैं।

आपन चना न चबाय देय तो हरामजादा कहावै।

ज़बर्दस्ती दूसरे की वस्तु पर अधिकार जमाना।

आपन लोह खोट तो लोहारे कौन दोस।

अपना लोहा ही खोटा तो लुहार को क्या दोष दिया जाय?

आये चैतवा फूले गाल। गये चैतवा बई हवाल॥

चैत की फसल खाकर गाल फूल गये। उसके बाद फिर वही हाल।

ऊपर गोर भीतर कलुआ।

ऊपर तो गोरा, भीतर काला।

ऊपर दुपट्टा तरें बस!

ऊपर दुपट्टा भीतर नंगी।

एक कूकुर धुरियीन[1] चाटे दूसर ओहकर देह चाटे।

(१—आटे का झाड़न-झूरन।)

एक को गड़ही, एक को गंगा।

किसी के भाग्य में पोखरे के स्नान बदे होते हैं और किसी के में गंगा के।

एक डब्बल की दुलही, नौ डब्बल भारा।

एक पैसे की दुलहिन, और नौ पैसे उसे ले चलने का भाड़ा!

एक तो आँधी दूसर बेनवा बाँधे।

एक तो आँधी, फिर ऊपर से पंखा बाँधे चल रहे हैं।

एक तो बोझकी दूसर रीछन खेदी।

एक तो पागल, फिर रीछों ने खदेड़ा।

एक नीबी सकल गाँव सितलहा।

एक नीम का वृक्ष और सभी शीतला रोग से ग्रस्त।

ककरिहा चोर का गढ़िया नहिं मारा जात।

ककरी के चोर को साँग नहीं मारी जाती।

कनुवाँ होय कोंच जाय।

जो काना होता है वह तुरन्त तिनक उठता है। काना को काना कहिए तो चिढ़ जाता है।

कम रुई टनक बेंहना[1]।

(१–धुनकने वाला।) धुनकने के लिए रुई तो थोड़ी और बेंहना मजबूत।

करैं का कुकरम एकादशी उपासी हैं।

करती कुकर्म हैं और एकादशी का व्रत करती हैं।

कलेवा न बियारी, मारैं का महतारी।

खाने-पीने को घर में कुछ नहीं, मारने को माँ।

कूकुर मरैं आवा-जाई।

आने जाने में ही कुत्ता मरा। व्यर्थ के लिए परिश्रम करना।

कोऊ कतौं का चालै, डूना[1] गौने का चालै।

(१–नाम विशेष।) कोई कहीं को जाय, डूना अपना गौना कराने जाय।

खपरा फूट, झगरा टूट।

झगड़े की जड़ ही खत्म हो गयी तो झगड़ा काहे का।

खर रोवें ध्वार बिकाय।

खरी वस्तु को कोई नहीं पूछता, कूड़ा-करकट बिकता है।

खायं गोपा कूटै जयपाल जायं।

अपराध कोई करें, दंड कोई पाये।

खोंख देय, खखार देय, चोर न होय अहमहक आय।

खाँसे और खखारे, तब तो वह चोर नहीं, मूर्ख ही है।

गरे हेवाल देह मा थू थू।

गले में तो हमेल पहिने हैं, पर देखने में गंदी।

गाँव न घोस, एकै कोस।

जब तक दूसरा ग्राम न मिले तो वह दूरी एक मील की ही मानी जाती है।

गिरे मां सब कोऊ चार लातैं मारे।

गिरे को सब सताते हैं।

गीत नार गये बिसर। जब बिटिया आई तिसर॥

स्त्रियों को सोहर के गाने भूल गये जब तीसरी लड़की उत्पन्न हुई।

गुर खाँय का परी, कान छिदाये का परी।

गुड़ खाना पड़ेगा और कान भी छिदाने पड़ेंगे।

गूलर का कोरेवा कतौ खाली न रहै।

गूलर की गोद कहीं खाली नहीं रहती। उसमें सब जगह फल निकलते हैं।

गैं स्वामीनाथन घर भतार मर गये।

गयी स्वामीनाथ की यात्रा को, घर पति मर गये।

गोरी गई ती तोड़ा[1] दिखावै, पर गई कसहा खेत मां।

(१--पैर में पहिनने का एक आभूषण।) तोड़ा दिखाने गयी और पड़ गयी कसैले खेत में।

गोड़ी गाड़ कर बैठना।

धरना देकर बैठना।

रैंया बाबा गुहार लाग, कहै महीं उतान परा हों।

गौरेया बाबा मेरी पुकार सुनिये, तो कहा—मैं ही चित्त पड़ा हूँ।(तुम्हारी क्या सुनूँ ? अपनी विपत्ति का ही निबेरा नहीं कर पाता)।

घर का धान पयारे अमिसना।

घर का धान पुआल में मिलाना।

घर के लड़िका गोही चाटें मामा खाय अमावट।

घर का लड़का तो गुठली चाटता है और मामा अमावट खायें।

घामौ तापब चीलर मारब, एक साथ दो काम निवारब।

धूप तापेंगे और चीलर भी मारेंगे, इस प्रकार एक साथ दो काम निपटायेंगे।

घोड़ी नहावें, कै पानी पियावें।

एक साथ दो काम नहीं किये जा सकते। एक बार में एक ही काम संभव है।

चलै न पावै, कूदै नार।

चल तो पाता नहीं, और नाला फाँदना चाहता है।

चिरई का धन चोंच।

चिड़िया के लिए चोंच ही सबसे बड़ी संपत्ति है क्योंकि उसीसे वह खाती-पीती है, और उसी से हाथ पैरों का काम भी लेती है।

चिलम की जारी आग, बाकी का मारा गाँव।

चिलम की आग से जैसे गाँव नहीं बच पाता, उसी प्रकार बकाया लगान से भी गाँव मारा जाता है।

चीनी सुहारी गोपी खायँ। मूसर लैकें भगोले जायँ॥

शक्कर-पूड़ी तो गोपी खायें और परिश्रम का काम करें भगोले।

छायें गाँव, उठायें भीती।

छाया हुआ गाँव और उठी हुई दीवाल अच्छी लगती है।

छिनरा, चोर, जुआरी, इनसें गंगा तुलसी हारी।

छेरी न बताई तो छेरीवा का गोड़ तो बताई।

बकरी नहीं बतायेगी तो बकरी की टाँग तो बतायेगी! अर्थात किसी बात का कुछ न कुछ पता-सुराख तो चलेगा।

जब तक रही कुठलिया धान। पुवा छाँड़ न खावह् आन॥

जब तक खाने को रहा तब तक खूब मौज उड़ायी।

जबरा करै जबरई, अबरा करै न्याव।

जबर्दस्त तो अन्याय करता है और कमजोर न्याय की माँग करता है।

जबै जाय तीन पाव भीतर। तबै सूझै देव पितर॥

पेट भरे होने पर ही देव और पितर सूझते हैं।

जमात करामात।

संघ में बड़ी शक्ति है।

जोगी का लरका जोगी का नहीं डरात।

जोगी का लड़का जोगी को नहीं डरता।

जोते का हर, गावे का बिरहा।

करते तो किसानी और गाते बिरहा हैं।

जोरू टटोवे गठरी, माता टटोवे अंतरी।

स्त्री तो यही देखती रहती है कि मेरे पति के पास कितना धन है और माँ यह देखती है कि मेरा लड़का भूखा तो नहीं है। तात्पर्य यह कि स्त्री धन चाहती है और माता पुत्र का स्वास्थ्य।

जेत्ता साँप लंबा, उत्ते गोह[1] चाकल।

(१.—छिपकली की जाति का एक जीव।) साँप जितना लंबा, गोह उतनी ही चौड़ी। दोनों एक से। कोई किसी से कम नहीं।

जेत्ता पुरखा दान दीन, गदेलन उत्ता भीख माँगिन।

पुरखों ने जितना दान दिया, लड़कों ने उतनी भीख माँगी! बाप-दादों के नाम को कलंकित किया।

जेह के दूध होत है वा दुधहँडी का नहीं अटकत।

जिसके दूध होता है वह दुधाँड़ी के लिए नहीं अटका रहता।

जं दिन चली तहन दिन खाब। नहीं लौट के घरहिन जाब॥

जितने दिन मुफ्त का खाने को मिलेगा खायेंगे, नहीं तो अपने घर को वापिस जायेंगे।

जैसे उदई तैसे भान, न ओहके चुँदई[1] न ओहके कान।

(१.–चोटी।) सब एक से।

डौल कइत न निहारै, अइड़ी बइड़ी जाय।

अपनी शकल की ओर तो देखती नहीं, ऐंड़ी-बेंड़ी बकती है।

डेरा न डाँड़ी, बदौसा[1] अँधियार।

(१–बाँदा जिले का एक बड़ा क़स्बा।) नाम बड़े दर्शन थोड़े।

तात तात खाय जर जाय खोत है।

गरम-गरम तो खाते हैं, जल जाने पर दोष देते हैं।

तिनगा लागै नाची नाची फिरे।

आग की चिनगारी लगने पर नाची-नाची फिरती है।

तुरुक मारा जाय, बेहना गाल फुलावे।

तुरुक पर मार पड़े और बेहना गाल फुलाये।

तेंदूं की लकड़ी चरमर होय, पहुने के जान पपरी होय।

किसी के घर पाहुना आया। भीतर चूल्हे में तेंदू की लकड़ी जल रही थी जो जलते समय चरमर करती है। उस आवाज को सुन कर पाहुने ने समझा कि कोई पपड़ी खा रहा है और सोचने लगा मुझे भी खाने को मिलेगी।

तेलौके के साध लाग, गरे बाती घुसेरे।

तेल का पकवान खाने की इच्छा हुई तो गले में बाती ठूँसने लगे।

दीनैं न खाय, फिर बीन बीन चबाय।

हाथ से दी हुई वस्तु तो खाता नहीं, बाद में जमीन पर गिरी हुई को बीन-बीन कर चबाता फिरता है।

देखै का बालकी प्रसाद, भोजन का भरपूर।

देय का टूका रटी, बुलावै का नये घरै।

खिलाने को तो रोटी का टुकड़ा, और बुलाते हैं नये घर में।

दो पैसा मां नाव गाजीपुर नहीं जात।

दो पैसे में नाव गाजीपुर नहीं जाती।

न कह मोर छ्वार कै। न मैं कहौं तोर हार कै॥

न तू मेरी घूरे पर की कह, न मैं तेरी खेत पर की कहूँ।

न धोबी के आन परोहा, न गदहा के आन किसान।

न धोबी को दूसरा वाहन और न गधे को दूसरा मालिक।

नये का भोगिया सुसका[1] का जाउर।

(१—पालक, मेंथी आदि का सुखाया हुआ साग) शौकीन खाने वाले, और सूखे साग की खीर।

नवा रूख, बदरहा घाम।

नया तो पेड़ और बदली का घाम जिसे वह सहन नहीं कर सकता।

नाम तुलसीदास, महक बंबई[1] कै नईं।

(१—बन तुलसी।)

पपरी कौनें तेलउकन मां। लौकी कौनें पचहड़े मां॥

पपड़ी की गिनती तेल के कौन से पकवानों में और तूँबी की गिनती कौन से बर्त्तन-भाँड़ों में ?

पहले रोटा, फिर गीता।

संसार में पेट का धंधा मुख्य है।

पानी का मारा पानी बहत है।

आदमी ही आदमी का शत्रु है।

पिसान खात भूँकत नहीं बनत।

आटा खाते समय भोंकते नहीं बनता।

पीस जायँ, खीस न जाय।

पीसने का दंड तो भोगने को तैयार, परंतु हँसना फिर भी नहीं जाता।

पुरान पान, खाँसी न जुकाम।

खाँसी, जुकाम तो कुछ है नहीं, खाने को माँगते हैं पुराना पान।

फटुही घोड़ी, नव सेर दाना।

फटुल्ली घोड़ी के लिए नौ सेर दाना।

फटुही घोड़ी बासदेव असुवार।

फटुल्ली घोड़ी और उस पर बासदेव सवार।

नाव मोतीकुँवर, जोती बिनोरी अस नहीं।

नाम तो मोती कुँवर और चमक बिनोले जैसी भी नहीं।

पचीस कै भैंस लिहिन सुरुक्कै की साधन मरें।

पच्चीस रुपये में तो भैंस खरीदी और दूध पीने की साध से मरे जा रहे हैं।

पनिहाँ साँप, ज्वरिहा नौकर, न उनके विष न उनके रिस।

पानी में रहने वाले सर्प में विष नहीं होता और न बराबर बीमार रहने वाले नौकर में किसी पर रोब-दाब दिखाने की शक्ति।

फूली टोरै, न फरी मझयावै।

फूल तो तोड़ते हैं, फल नहीं तोड़ते।

बकुलन की लड़ाई माँ चोंचन की खटाखट।

बगुलों की लड़ाई में चोचों की खटाखट के सिवा और क्या सुनने को मिलेगा।

बनिया देख कै सूख नहिं खाय जात।

बनिये को देख कर सूखी रोटी नहीं खायी जाती। चुपड़ कर खाने की इच्छा हो आती है।

बह बह मरैं बैलना बाँधे खायँ तुरंग।

बैल तो खेत जोत-जोत कर मरते हैं और घोड़े बँधे हुए आराम से खाते हैं।

बहि बहि जाय हजारन कै, का करैं पौने दो सै की।

हजारों पर जब पानी फिर रहा हो तो सौ दो-सौ की क्या फिक्र की जाय?

बाँझ न बियाय तौ बूढ़ न कहावै।

बाँझ स्त्री के यदि बच्चे न हों तो क्या वह बूढ़ी नहीं कहलायेगी?

बाप-पूत जोते, आँतर[१] को करै।

(१—खेत जोतते समय जोतने से छूट गयी भूमि; अन्तर।) बाप-बेटा तो खेत जोत रहे हैं फिर आँतर कौन करता है?

बाप बताय न जाने, पूत शंख बजावे।

बाप के मुँह से तो बात भी नहीं निकलती और लड़का शंख बजाता है।

बापौ पूत चिकनिया खरका रहै उघार।

बाप और बेटे दोनों छैल-चिकनिया, पशुशाला खुली पड़ी है। अर्थात दोनों निकम्मे; घर का कुछ काम-धंधा नहीं देखते।

बाबा के हैं पुतऊ अनेक, बाँट लेय एकै एक।

बाबा के नाती बहुत हैं, कोई चीज आपस में बाँटें तो एक-एक मुश्किल से हिस्से में पड़ती है।

बिलारी किरपा करैं मूस बड़वा रही।

बिल्ली कृपा करै तो चूहे बढ़ने में क्या लगता है?

बूढ़ भई साक लाग, कजरे का ढकढोरत आवै।

बूढ़ी होने पर भी शौक लगा तो काजल को ढकढोरती आती है, अर्थात आँखों में इतना काजल लगा रखा है कि वह फैल रहा है।

बूढ़ी छेरी बिग[1] बौरावे नरवा हरियर पाती।

(१–बिगना, भेड़िया।) भेड़िया बूढ़ी बकरी को बहकाता है कि चल नाले में वहाँ हरी-हरी पत्ती खाने को मिलेगी।

बैकल कूकुर मिरगा खेदै।

पागल कुत्ता मृग को खदेड़ रहा है, वह नहीं जानता कि मैं उतना द्रुतगामी नहीं।

बैद करैं बैदाई, चंगा करैं भगवान।

बैद बैदगिरी करता है, परन्तु चंगा तो भगवान ही करता है।

भटवा कै घोरी, घर घर जजमानी।

भाट के पास घोड़ी हो तो क्या पूछना ? घर-घर में जजमानी के लिए जाता है।

भाँड़ बूड़ा जाय, कहै नकल करत है।

भाँड़ तो पानी में डूबा जा रहा है, दर्शक कहते हैं कि नकल कर रहा है।

भीतर भूँजी भाँग नहीं, दुआरे में गुंडा नचावें।

घर में तो खाने को नहीं, नाच देखने का शौक।

भुइं बिस्वा भर नाहीं, नाम पृथिवीपती।

भखे भल कि पुतऊ का जूँठ।

भूखे रहना अच्छा या पोते का जूठा खा लेना ?

भैंस का पड़ेरू गाय मा लहावै।

भैंस का पड़ा गाय को चोंखना चाहे।

भ्वासर गई बहुरी भुजावै, भार फूटगा लागी रोवै।

भाड़ में चने भुनाने गयी, भाड़ फूट गया तो बैठ कर रोने लगी।

मँगनी के तेले मां मुगौरा नइं बनत।

मँगनी के तेल में मुंगौरा नहीं बनते।

मगनी मां चुगनी।

माँग कर लायी गयी वस्तु में से दूसरे माँगने लगे।

मनुस कीन्ह सुख सोवै का, कि पाटी[1] लै कै रोवै का ?

(१–खटपाटी, चारपाई की पाटी।) दूसरा पति किया तो आराम से सोने के लिए, न कि पाटी लेकर रोने के लिए।

मर बुढ़िया, बछवा बिया।

बुढ़िया मरी, बछड़ा पैदा हुआ। हिसाब-किताब बराबर।

मर भूख पंसेरिन आई।

भूख, तू अब बिदा माँग, पंसेरिन आ गयी। उससे अब आटा-दाल लेकर खायेंगे। झूठमूठ मन बहलाना।

महुवा न सहुवा, बैठाव डोभरी[1]।

(१–चावल या सिमई के साथ महुओं को पका कर बनाया गया भोजन का पदार्थ।) महुआ इत्यादि तो कुछ है नहीं, कहते हैं डोभरी बनाओ।

मुंगरी होत तो लरका कहै औंघात।

मुँगरिया होती तो लड़का ऊँघता क्यों? उसके सिर से न मारते ?

मूस मुटाई तौ मुरगी अस होई।

चूहा बहुत मोटा होगा, तो मुरगी जितना हो जायेगा।

मैके के महुए मीठ।

मायके के महुए ही अच्छे।

मैछा का मैछा, छन्ना का छन्ना।

मूँछें की मूँछें और छन्ना का छन्ना। बड़ी मूँछ वालों के लिए कहत हैं।

मोटी थूली बनी रहै, पीर गुसइयाँ हर लेय।

मोटी-ताजी बनी रहो, पीड़ा तो भगवान दूर करेगा। बीमार के लिए कहते हैं।

मोरे लरका से जौन गोर होई तौन कोढ़ी होई

मेरे लड़के से जो गोरा हो वह कोढ़ी।

रंग लागत लागत लागत है, भय भागत भागत भागत है।

धीरे-धीरे ही किसी को अपने रास्ते पर लाया जा सकता है।

रकत दिखाय कै देय तौ कौन खुदाय।

अपना बलिदान करके उपार्जित वस्तु में ईश्वर का क्या एहसान।

राख खाय खँ तौ घूरे मां का चक्कर पर गा है।

राख ही खानी है तो घूरे में क्या कमी पड़ गयी है?

रानी हुइकै खैहे का?

रानी होकर खायेगी क्या? खाने को न हो तो रानी होने से लाभ क्या?

रिन की फिकर न धन की चोट। यह कारन धमधूसर मोट॥

रेंड़ी का डंडा गगरी का बजुर अस।

रेंडी का डंडा गगरी के लिए वज्र जैसा।

रेंड़ी के उपजे तेली का का?

रेंड़ी के पैदा होने से तेली को क्या? उसे तो केवल रेंड़ी पेरने की मजदूरी ही मिलेगी?

रोज रोज लोखरी का बियाव।

रोज रोज वही बात।

रोयें राजै नहीं मिलती।

रोने से राज नहीं मिलता।

लकरी का पूत चुरकुटी।

जैसे के तैसे।

लगी तौ लगी, नहीं भाँटा रोटी सही।

कहीं हलुवा पूड़ी मिल गयी तो अच्छा नहीं तो भाटा-रोटी ही सही।

लादत के मिल जाय तो हैरान न कहावे।

(घोड़ा या बैल) लादने को मिल जाये तो खोया हुआ नहीं कहलाता।

लीपै पोते बुचवा ठाँड़।

साफ-सुथरी जगह में कुरूप आदमी।

सकरे मियाँ, फराके बीबी।

मियाँ संकट में पड़े तो बीबी ने छुट्टी पायी।

सब की अवन्ती अच्छी ई न आवें चार।
बिपत, बुढ़ाई, आपदा खेत परे की हार।।

सेंत का हरदी सेंत का डोरा; रंग रंग बाँधै सगले टोला[1]।

(१—मुहल्ला।) मुफ्त का माल खर्च करने में कोई कठिनाई नहीं होती।

हँसिया का गहन, खुरपी का मुकताव।

हँसिया को गिरवी रख कर खुरपी को बंधक से छुड़ाया।

हरी राम तौ देई को, देई राम तो हरी को।

राम छीने तो दे कौन ? राम दे तो छीने कौन ?

हाती के पेट सुहारिन सें नहीं भरत।

हाथी का पेट पूड़ियों से नहीं भरता।

हाती के साथ गाँड़ा न लील।

हाथी के साथ गन्ना मत निगल।

हाती भारा कसँ गदहा का जिव निकरँ।

हाथी पर तो बोझ लादा जाय, गधे के प्राण निकलें।

हिची बिलारी का जुई भारी।

दुर्बल बिल्ली के लिए जुआँ भी भारी होता है।

हिरना अपनी घात, बहेलिया अपनी घात।

सब अपनी-अपनी चिन्ता में।

हींग निकरगै डब्बा महकै।

हींग निकल गयी, पर डिब्बा मँहकता है।

हीरा पयरा[1] मा मूंदे नहिं रहत।

(१—पुआल।) हीरा पुआल में छिपा नहीं रहता।

परिशिष्ट २

बुन्देलखंड के कुछ रोचक दोहे

इश्क, मुश्क, खाँसी, खुसी, सेवन मदिरा पान।
जे नौ दाबे ना दबें, पाप, पुन्य अरु स्यान।।

कागद, केला, पान अरु दासी, दुर्जन, दाम।
जे नौ दाबे ही भले, रहुआ,[1] महुआ, आम।।

तिली, तमाखू, आमरस, सूजी, सुआ, सुनार।
बिन दाबे मानें नहीं, जरिया, जार, गँवार।।

मन, मोती, मूँगा, मतो, डोंड़ा,[2] मठ, गढ़, ताल।
जे नौ फूटे नहिं भले घर फूटें बेहाल।।

खत, डँगरा,[3] बन, बोंगरा, केरा लाई, केश।
जे नौ फूटे चाहिये, दाड़िम, कुसुम विशेष।।

कान, आँख, मोती मतो, गढ़, मढ़ डोंड़ा ताल।
दल, मल, बाजो, बंदुआ,[4] जे फूटे जंजाल।।

कस्तूरी, कदली, तुरी, कपड़ा, कनक, कमान।
जे सब नवतम चाहिये, काम-धाम अरु बाम।।

बस्ती, बैद, तपेस्वरी, पुरोहित, तंदुल, पान।
जे नौ नये ना चाहिये, तेल, दिवान, कृपान।।

१. नौकर। २. नाँव। ३. कचरी, फूट। ४. बंदी, कैदी।

किलो-कोट, मंदिर, महल, द्विज, क्षत्री, गज, बाज।
जे नौ ऊँचे चाहिये, बैद, बराई,[1] नाज।।

तिय घूँघट, कटि, घाँघरो और नारि प्रिय बैन।
इतने जे नीचे भले नमस्कार गुरु दैन।।

दाता, वक्ता, सूरमा, ज्ञानी, गुणी, प्रवीण।
पंडित, कविता, मोखरा[2] जे नौ आगें कीन।।

रोगी, दोषी, सूम, शठ, अज्ञानी, मतिहीन।
चुगल, चबाई, पातकी जे नौ पाछूँ दीन।।

पय, पानी, अरु पानहीं, पान, दान, सम्मान।
जे नौ मोटे चाहिये, साव, राज, दीवान।।

चाँवर, चंदन, चून[3], पट, तीय लंक अरु सूत।
जे नौ पतरे चाहिये, तुला राग रजपूत।।

बस्ती, बैद, तपेस्वरी, बास, बिछौना, खाट।
जे नौ चौड़े चाहिये, हाट, घाट औ बाट।।

पाग, पिछौरा, परदनी[4], खोर[5], गदेला[6], खाट।
जे नौ लंबे चाहिये, हाट, सगाई, घाट।।

हर, हँसिया, कच, फावरा, शिविका, ऊँट प्रमान।
जे नौ टेढ़े चाहिये अंकुश, भोंह कमान।।

दाता, दानी, शूर, नृप, मंत्री, बैद सचान[7]।
जे सब निर्भय चाहिये जामिन, जुआ, किसान।।

१. ईख। २. परदा, नक़ाब। ३. आटा। ४. धोती। ५. दोहरा चादर। ६. गद्दा। ७. बाज पक्षी।

सूचना-विभाग के कुछ प्रमुख प्रकाशन

चाचा नेहरू	१ रु.
अमीर खुसरू	२५ नये पैसे
कालिदास	१० नये पैसे
जगदीश चन्द्र बसु	१० नये पैसे
समाजवाद	७५ नये पैसे
भारतीय बुद्धिजीवी	७५ नये पैसे
अंतरिक्ष यात्रा	७५ नये पैसे
अलकनंदा मंदाकिनी के दो तीर्थ	१ रु.
स्फुट विचार	३ रु.
संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियां	१ रु.
राष्ट्रीय कविताएं	५० नये पैसे
आजादी के तराने	१२ नये पैसे
ग़दर के फूल	४ रु. ५० नये पैसे
नग़मये आजादी	२५ नये पैसे
स्वतंत्र भारत की एक झलक	४ रु. ५० नये पैसे
चन्द्रसखी के लोकगीत और भजन	२ रु.
उत्तर प्रदेश के लोकगीत	२ रु. ५० नये पैसे
निर्माण के स्वर	२५ नये पैसे
वाजिदअली शाह और अवध राज्य का पतन	४ रु. ५० नये पैसे
भारतीय ज्योतिष	८ रु.
भारतीय दर्शन	८ रु.
पश्चिमी दर्शन	४ रु.
स्वतंत्र दिल्ली	४ रु.
जीव जगत	१४ रु.
राइफल	४ रु.
दर्शन संग्रह	४ रु. ५० नये पैसे
हलायुध कोश	२३ रु.
कला और आधुनिक प्रवृत्तियां	३ रु. ५० नये पैसे
कोयला	८ रु.
संगीत शास्त्र	६ रु. ५० नये पैसे
मृत्तिका उद्योग	८ रु.
उर्दू-हिन्दी-शब्द-कोश	१६ रु.
शक्ति—वर्तमान और भविष्य	४ रु.
राजनय	३ रु.
जाति विज्ञान का आधार	७ रु.
संस्कृत नाटककार	४ रु.
भौतिक विज्ञान में क्रान्ति	५ रु. ५० नये पैसे
भारत का भाषा-सर्वेक्षण	७ रु.
भरत का संगीत सिद्धान्त	६ रु. ५० नये पैसे
भारतीय ज्योतिष का इतिहास	४ रु.
तत्व ज्ञान	४ रु.